Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

a Samaj Foundation Chenna

BHUGOL 1951 G.K.V.

Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113728

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

RF 28

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

फरवरी १९४१

COMPILED

सम्पादक:- रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर परिशिष्टांक (एटलस)

"भूगोल" का महासमर अंक लोगों को कैसा पसन्द आया यह आपको विदित हो गया होगा। इस विशाल अंक के निकल जाने के बाद भी समर क्षेत्र में तरह तरह के परिवर्तन हुये हैं। जिन स्थानों को पहले बहुत कम लोग जानते थे उन्हें लड़ाई ने अपूर्व ख्याति दे दी। फिर भी अपने हिन्दी भाषा-भाषियों को उनका ठीक ठीक ज्ञान न हो सका क्योंकि ये नाम शायद ही किसी पुरानी एटलस या भूगोल की पाठ्य पुस्तक में मिलते हैं।

गत जनवरी १९४१ ई० में भूगोल का **'महासमर परिशिष्टांक'** प्रकाशित हो गया। इसमें अकारादि क्रम से प्रायः सभी स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख वर्तमान लड़ाई के सम्बन्ध में आया है।

यू बोट आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका समझना साधारण पाठकों के लिये कठिन है। इन अज्ञात नामों पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी आपको अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद लेख मिलेंगे। आवश्यक चित्र और नकशे भी दिये गये हैं। पृष्ठ-संख्या ८२, मूल्य केवल ।।) है।

जो सज्जन जनवरी १९४१ से "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० भेजकर चालू वर्ष के ग्राहक बन जायँगे उनको यह अंक उसी चन्दे में मिलेगा। फुटकर अंक चाहने वालों को आठ आने के टिकट अथवा मनीआर्डर भेजना चाहिये।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—सहारा का मरु प्रदेश	१
२—अफ्रीका के घड़ियाल	३
३—संयुक्तप्रान्त में सागौन के वृक्ष का लगाया जाना	४
४—मानव जाति के सर्वनाश के लिये बड़ी तोपें	७
५—पत्थर के कोयले की खोज	१०
६—कताई बुनाई द्वारा भूगोल की शिक्षा	११
७—युद्ध की शक्तियाँ	१४
८—रूस की विदेशी नीति	२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113728 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113728

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] फाल्गुन, सं० १९९७, फरवरी, १९४१ [अङ्क १०

सहारा का मरुप्रदेश

सहारा संसार का सब से बड़ा मरु प्रदेश है। सचमुच यह १२०० फुट ऊँचा एक पठार है। इसका क्षेत्रफल ३५ लाख वर्गमील है। इस बड़े मैदान में प्राचीन पहाड़ियां कहीं कहीं फैली हुई हैं। हवा और बालू के कारण नष्ट हो गई हैं। इस बड़े मैदान के उत्तर में अटलस पर्वत, दक्षिण में नाइजीरिया है। इस के पश्चिम की ओर अटलांटिक सागर का समुद्री तट है और पूर्वी सीमा पर चक्करदार हवायें तथा बालू के तूफान चला करते हैं। पर्वतों को सहारा की हवायें उड़ा नहीं सकीं इसी कारण वह अब भी बाकी है। सहारा के रेगिस्तान इन्हीं पहाड़ों के कणों से बना है।

सहारा में ग्रीष्म ऋतु में बहुत ज्यादा गरमी पड़ती है। पश्चिम की ओर खासकर गरमी की प्रचुरता रहती है। सहारा का रात का सब से अधिक ताप० १०४ अंश और गर्मी की रात का ताप ७७ अंश है। दिन में सहारा का ताप १३२'८ अंश नापा जा चुका है। इसकी तुलना अँग्रेजों की लू से करना बेजा नहीं है जिसका ताप ९० अंश होता है।

अधिकांश रेगिस्तानों में रात और दिन का ताप लगभग समान रहता है परन्तु सहारा के रेगिस्तान में यह बात नहीं है। सहारा के पश्चिमी भाग में प्रत्येक शीतकाल की दो या तीन रातों में बरफ जम जाती है। शीत काल में मध्यवर्ती भाग में पाला बहुधा पड़ा करता है।

अटलांटिक सागर के तट पर कुहरा बहुत पड़ता है क्योंकि वहाँ पर सहारा की गरम तथा अटलांटिक सागर की ठंड हवा का मेल होता है। मामूली तौर पर हवा हलकी तथा उथल पुथल वाली होती है। बालू के तूफान बवन्डर, चक्करदार हवायें बहुत चलती हैं और इनके चलने का समय अनिश्चित होता है। सहारा की हवायें बड़ी भयानक तथा खतरनाक होती हैं। ऐसे जलते हुए रेगिस्तान में वही पशु अथवा पौदे जीवित रह सकते हैं जिन्हें बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। जहाँ कहीं भी पानी पाया जाता है वहाँ पर खजूर और टमरिस्क के वृक्ष उगते हैं। सहारा के अन्दर जिन स्थानों पर खजूर टमरिस्क घास और छोटे रेगिस्तानी पौदे होते हैं उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओसिस कहते हैं। रेगिस्तान के पौदे पानी ग्रहण करने में बड़े चतुर होते हैं। कुछ पौदों की पत्तियों में रोंगटे बहुत होते हैं। रात के समय जब ओस पड़ती है तो यह पत्तियाँ ओस के प्रत्येक बून्द को सोख लेती हैं। जेरीको का गुलाब सहारा के पौदों में सबसे निराला है। जैसे शुष्क ऋतु आती है वह अपनी पत्तियों को सिकोड़ कर गेन्द की भाँति गोला हो जाता है। वह रेगिस्तानी वायु में चारों ओर उड़ता रहता है। कभी कभी तो वह सालों उड़ा करता है परन्तु वह अपनी पत्ती का मुंह नहीं खोलता। जब वह नम भूमि या पानी में आता है तो खुलता है और उसमें श्वेत फूल खिल जाते हैं। वह शीघ्र ही जड़ पकड़ लेता है। सहारा से इसके सूखे पौदे खरीद कर संसार के भिन्न स्थानों में ले जा कर घेरों अथवा वाटिकाओं में लगाये जाते हैं।

रेगिस्तान में हिरन तथा बारासिंघे पाये जाते हैं। सहारा से शेरों का नाश हो रहा है। स्यार, लोमड़ी, चूहे, बिज्जू, बिस्तुइंया, बिच्छू, टिड्डी और मक्खियाँ आदि बहुत पाये जाते हैं। बतख और बगुले कहीं कहीं ओसिस के समीप मिलते हैं। दक्षिण-पश्चिम के ऊँचे स्थानों पर शुतुर्मुग घूमते दिखाई पड़ते हैं। सहारा के सीमा पर लकड़बग्घा पाया जाता है परन्तु वह मरुप्रदेश के भीतर कभी नहीं घुसता है।

प्राचीन काल में जब रोम तथा कार्थेज संसार की प्रसिद्ध शक्तिशाली जातियाँ थीं उस समय खोज करने वाले लोग सहारा के मरुस्थल में गये और उस का सम्पत्ति का पता लगाया। उस समय ओसिसों को मिलाने वाले व्यापारिक मार्ग बन गये। कठिन परिश्रमी जातियां नमक, हाथी के दांत और छुहारा, खजूर आदि का व्यापार करने लगे थे। टुम्बकटू उस समय का प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। यह नगर कई सदियों तक एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र बना रहा। आजकल भी यह सहारा के नमक व्यापार का केन्द्र है। जूफ जिले की झीलों से नमक एकत्रित किया जाता है।

अब ऊंट के कारवां के स्थान पर सहारा में मोटर तथा वायुयानों का प्रयोग होने लगा है। अभी हाल ही में फ्रान्सीसियों ने आकाश दिया का मार्ग सहारा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बनाया है। यह आकाश दिया ट्रान्स सहारा हवाई सर्विस को रात में मार्ग बताते हैं। आकाश दिया वाले मीनारों में लोहे के स्तम्भ लगाये गये हैं। वह बड़े ऊँचे हैं जिससे वह उड़ती हुई बालू से ढके नहीं जा सकते हैं। इन आकाश दियों को बीकन कहते हैं। जब संध्या होती है तो यह स्वयम् प्रकाशित हो जाते हैं। इनके अन्दर दो साल तक के लिये लकड़ी भरी जा सकती है।

सहारा से मिला हुआ लीबिया का रेगिस्तान है। यह भूमध्य सागर से सूडान तक फैला हुआ है। इस रेगिस्तान के बलुही पहाड़ियों को पार करता हुआ केवल एक ही मार्ग है। यह मार्ग उत्तर से दक्षिण को कुफारा के ओसिस हो कर जाता है। लीबिया की बालू की पहाड़ियाँ २०० फीट ऊँची हैं। कहीं कहीं इनकी लम्बाई ५० मील है।

रोमन काल में भूमध्य सागर के समीप वाले लीबिया प्रदेश में प्रसिद्ध नगर थे। बालू ने उड़ उड़ कर अधिकांश नगरों को ढक दिया है। लेब्डा के नगर के खण्डहर अब भी बच रहे हैं। यह किसी समय में एक धनी-सुन्दर नगर था। इस नगर की सम्पत्ति को बालू ने बड़ी सावधानी तथा सुरक्षता के साथ अब तक बचा रखा है। यद्यपि बालू के भार से बड़ी दीवारें गिर गई है तो भी बड़े बड़े स्तम्भ तथा कारनिसे अब भी वर्तमान हैं।

१९११ ई० तक लीबिया में टर्की का अधिकार था। १९११ ई० में इटली की एक सेना वहां पहुँची और उसने वहां की राजधानी त्रिपोली पर अधिकार कर लिया। उस समय से लीबिया इटली का उपनवेश हो गया है। अब वहां पर सुन्दर सड़कें बन गई हैं। वहां पर सिंचाई का प्रबन्ध हो रहा है जिससे इटली के लिये कपास उगाई जा सके।

लीबिया का एक बड़ा भाग जानवरों तथा पक्षियों के हेतु अलग कर दिया गया है। यह पशु बिलकुल पालतू से हैं। बनैला शुतुर्मुर्ग भी अब पालतू सा हो गया है। यह केवल इसी कारण है कि उनको मारा नहीं जाता है। इस भाग में एक ऊंचे स्थान पर पत्थर का गुम्बद मिला है जिसके भीतर प्राचीन सामान तथा आभूषण प्राप्त हुये हैं। लीबियो रेगिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जो भाग नील नदी के समीप है वहां सिंचाई होती है इस लिये वह हरा भरा है। पूर्वी अफ्रीका से पैलेस्टाइन तक जो पर्वत है लाल सागर उसी की एक बड़ी रिफ्ट घाटी है। अरब, फारस के रेगिस्तान तथा और ईरान का नमकीन पठार सभी एक बड़े मरुप्रदेश के भाग हैं।

अफ्रीका के घड़ियाल

अफ्रीका की नदियों और झीलों में घड़ियाल बहुत पाये जाते हैं। नदियों के अन्दर रहने वाले पशुओं में यह सबसे अधिक भयानक होता है। मामूली तौर पर यह १५ या १६ फुट लम्बा होता है परन्तु २७ फुट लम्बे घड़ियाल अफ्रीका के समेली की नदी में देखे गये हैं। अफ्रीका के घड़ियाल वहां के लड़कों को समूचा ही निगल जाते हैं। मनुष्य या स्त्री को समूचा निगल जाना उनके लिये सरल कार्य है। घड़ियालों के पेट चीरने पर उनके भीतर गहने, आभूषण तथा मनुष्यों की हड्डियां पाई गई हैं।

घड़ियाल नदियों में जल से निकल कर बाहर तट पर धूप में आनन्दपूर्वक सोते हैं। यह अकेले और समूह के समूह एक साथ रहा करते हैं। इनके जबड़े बड़े भारी होते हैं। जबड़ों के अन्दर तेज़ बड़े बड़े दाँत होते हैं। जब यह किसी वस्तु को पकड़ना चाहता है तो अपना दीर्घ जबड़ा खोल कर पकड़ता है। यह बड़ा भयानक होता है। इसके देखने से ही मनुष्य भयभीत हो जाता है।

घड़ियाल किनारे पर तो सुस्त दिखाई पड़ता है परन्तु पानी के भीतर वह बहुत तेज़ चलता है। घड़ियाल से अधिक फुरती के साथ पानी में शायद ही कोई दूसरा पशु चल सकता हो। इसका ऊपरी चमड़ा बड़ा मोटा, खुरदरा और भारी होता है। वह बड़ा मज़बूत होता है। उसकी शक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह भैंसे और गैंडे को भी पानी में खींच ले जाता है।

एक बार अफ्रीका की एक नदी में एक गैंडा पानी पीने के लिये गया। गैंडे ने जैसे ही पानी के भीतर अपना मुँह डाला। वैसे ही घड़ियाल ने उसे पकड़ लिया। दोनों पशुओं में खासी खींचा तानी हुई आखिरकार घड़ियाल गैंडे को पानी में खींच ही ले गया।

घड़ियाल के सांस की गंध बड़ी खराब होती है। उसके नीचे का भाग कमज़ोर तथा नरम होता है। उसकी पूँछ बड़ी शक्तिशाली होती है। जब वह तट पर लेटता है तो थोड़ी थोड़ी देर में अपनी पूँछ घुमाता रहता है। वह अपनी पूँछ के सहारे जानवरों को पानी के अन्दर धक्का देकर गिरा देता है और फिर आनन्द पूर्वक पानी में जाकर उसे निगल जाता है। घड़ियाल पानी से बाहर निकल कर तीस या चालीस गज़ बाहर लेटते देखे गये हैं।

जब घड़ियाल किसी मनुष्य अथवा जानवर को पानी के अन्दर पकड़ता है तो फिर उसके जीवन की कोई आशा शेष नहीं रह जाती है। अफ्रीका की नदियों में इतने अधिक घड़ियाल होते हैं कि नदी में नहाना बड़ा खतरनाक होता है। वहां लोग बोट पर यात्रा करते हुये भी कभी भूल कर पानी में अँगुली डालने का साहस नहीं करते हैं। यदि कोई अजनबी कभी भूल से अपनी अँगुली पानी में डालने का साहस करता है तो उसका भाग्य प्रबल हो तभी वह बच सकता है नहीं तो शीघ्र ही घड़ियाल उसे पकड़ लेता है। कोई भी चतुर यात्री कभी भी अफ्रीका की किसी नदी को तैर कर अथवा चलकर पार करने का साहस नहीं करता है। घड़ियाल के रहने का स्थान कोई निश्चित नहीं होता है। वह कई घंटे पानी में डूबा रह सकता है।

घड़ियाल को जल में पहिचानना बड़ा कठिन है। उसके नथने का केवल थोड़ा (कुछ इंच) भाग दिखाई पड़ता है। वह तैरते हुये लट्ठे की भांति प्रतीत होते हैं उन्हें निश्चित करना बड़ा कठिन है। बहुधा चतुर से चतुर मनुष्य भी धोका खा जाते हैं और अपनी जान खो बैठते हैं। जब घड़ियाल पानी से निकलता है तो उसका रंग पीला रहता है परन्तु धूप में जाकर रंग बदल जाता है और सूखने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भूरा कीचड़ अथवा तटीय चट्टानों की भांति काला हो जाता है।

घड़ियाल शीत वायु में रहना पसंद नहीं करता है। यह बड़े विस्मय की बात है। जब ग्यारह बारह बजे के समीप धूप तेज़ हो जाती है और हवा का चलना बन्द हो जाता है तब वह पानी के बाहर धूप का स्नान करने के लिये आता है। वह अपने जबड़े खोल कर लेटता है जिससे चिड़ियां उसके जबड़े के कीड़ों को चुन सकें। बहुधा देखा गया है कि जहां कहीं घड़ियाल निकल कर बैठा रहता है। उसके चारों ओर चिड़ियों का समूह जमा रहता है।

घड़ियाल की दृष्टि बड़ी तीव्र होती है। उसके अन्दर श्रवण शक्ति भी विचित्र पाई जाती है। वह पानी की लहर द्वारा एक मील की दूरी पर वाली वस्तु का ज्ञान शीघ्र ही कर लेता है। यदि घड़ियाल एक या आध मील की दूरी पर हो और वह किसी पशु अथवा मनुष्य पर धावा मारना चाहे तो वह सुगमता पूर्वक कर सकता है और पशु अथवा मनुष्य को उसके आने का लेश मात्र भी पता नहीं चल सकता है। वह दरियाई घोड़ों के बच्चों को खाया करता है। मछलियों को बड़े आनन्द के साथ पकड़ पकड़ कर पानी के ऊपर उछालता जाता है और अपने दीर्घ जबड़े द्वारा निगलता जाता है।

घड़ियाल का बैरी मनुष्य और मोनीटर (मगर) नामक पशु है मोनीटर घड़ियाल के अंडे खाता है। मोनीटर बिस्तुइया की शकल का होता है। यह घड़ियाल के अंडे खाकर उसे बहुत कष्ट देता है। मनुष्य बन्दूक द्वारा घड़ियाल का शिकार करते हैं। घड़ियाल का चमड़ा बड़ा मज़बूत होता है। चमड़े के सूटकेस तथा जूते तयार किये जाते हैं। घड़ियाल जल और स्थल दोनों स्थानों के पशुओं का बैरी है। वह जिसे पाता है उसी को अपना आहार बनाता है।

मादा घड़ियाल अंडे देती है। वह अपने अंडों को तट पर बालू में गाड़ देती है। वह धूप में बालू के अन्दर बढ़ते रहते हैं। गाड़े रहने पर भी मोनीटर उन्हें ढूंढ़ कर खा ही डालता है।

घड़ियाल बड़ा भारी होता है। उसे उठाना बहुत कठिन है। उसका ऊपरी चमड़ा इतना सख्त होता है कि काटने से जल्दी नहीं कटता परन्तु नीचे की ओर का चमड़ा शीघ्र ही सरलता पूर्वक कट जाता है।

संयुक्तप्रान्त में सागौन के वृक्षों का लगाया जाना

संयुक्त प्रान्त में बुन्देलखण्ड की पहाड़ियों में सागौन के बन पाये जाते हैं परन्तु इस लेख में बतलाया गया है कि मनुष्य द्वारा संयुक्त प्रान्त में कब सागौन के वृक्ष लगाये गये।

लगभग ६० साल हुये कि सागौन संयुक्तप्रान्त में सर्वप्रथम लगाया गया था। १८७७ ई० में गोरखपुर (रामगढ़) में ३० एकड़ भूमि में सागौन के पौदे लगाये गये परन्तु यह वृक्ष १९२२ ई० में गिरा दिये गये। लगभग उसी समय अपर गङ्गा नहर के किनारे किनारे और रुड़की तथा मेरठ के समीप भी सागौन के पौदे लगाये गये थे। बी० एन० डबल्यू० रेलवे के स्टेशनों पर भी सागौन के वृक्ष कहीं कहीं लगे हैं। देहरादून में सागौन के प्राचीन वृक्ष फैले हुये इधर उधर पाये जाते हैं। सहारनपुर ज़िले में पथरी की तराई और रानीपुर में सागौन के वृक्ष लगभग ६८ वर्ष के लगाये हुये हैं। महाराज सलीमपुर के आम के बाग़ में ३५ वर्ष के लगाये हुये सागौन के वृक्ष हैं। इसके सिवा और भी कई स्थानों पर सागौन के वृक्ष पाये जाते हैं।

परन्तु पिछले २० वर्षों से संयुक्त प्रान्त के वन विभाग ने सागौन के पौदों को लगाने की ओर अपना ध्यान अधिक आकर्षित किया है। संयुक्तप्रान्त में जहां कहीं भी सरकार ने सागौन के पौदे लगवाये हैं वहां उनकी उपज विस्मय जनक हुई है। जिन स्थानों पर सरकार ने सागौन लगाये हैं उन में से कुछ स्थानों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

१—हलद्वानी ज़िला—यहां भावर भूमि में जहां वर्षा अच्छी होती है और भूमि उपजाऊ है वहां पर सागौन के पौदे लगाये गये हैं। इन पौदों की उपज बड़ी अच्छी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—पीलीभीत ज़िला—चिकनी बलुही भूमि में सागौन के पौदे लगाये गये परन्तु वह पौदे लगभग ५० वर्ष तक कठिन शीत में बढ़ने का प्रयत्न करते रहे आखिरकार बढ़ न सके।

३—अफोर स्टेशन प्रान्त—इटावा ज़िले में अर्ध मरुस्थल में जहां पर कँकड़ीली भूमि भी है और जहां कीकर ऐसे सख्त पौदे का उगना भी कठिन है वहाँ सागौन के पौदे लगाये गये थे परन्तु वहाँ भी सफलता नहीं हुई।

४—अफोरस्टेशन प्रान्त—नर्म डंकड़ी भूमि जहाँ कुछ भी नहीं उग सकता वहाँ पर भी सागौन के वृक्ष लगाये गये।

५—तराई और भावर के वन—सर्द तथा नम तराई में भी पौदे लगाये गये।

६—रामनगर प्रान्त—शिवालिक बलुहे पथरीले प्रदेश में पौदे लगाये गये।

७—गोंडा ज़िले और दूसरे स्थान—सख्त मिट्टी वाले स्थानों, बलुहे स्थानों और मध्यम श्रेणी वाली भूमि में वृक्ष लगाये गये।

सचमुच संयुक्त प्रान्त में प्रत्येक प्रकार की भूमि में जहाँ वृक्ष उग सकते हैं या नहीं उग सकते उन स्थानों पर सागौन के पौदे उगाने का प्रयत्न किया गया था। केवल हिमालय के उस प्रदेश में यह वृक्ष नहीं लगाये गये जहाँ पर कि नुकीले सुन्डाकार वृक्ष उगते हैं। जिन स्थानों पर यह वृक्ष उगाने का प्रयत्न किया गया है उनमें से कुछ स्थानों पर सफलता प्राप्त होने की आशा नहीं है। दूसरे और तीसरे नम्बर वाले स्थानों में सागौन की उपज की काफी आशा है क्योंकि वहाँ पौदे होनहार प्रतीत होते हैं। इटावा प्रान्त की खराब भूमि में जो पौदे लगाये गये हैं वह २० फुट तक बढ़ने के पश्चात् बढ़ना बन्द कर दिये हैं परन्तु फिर भी वृक्ष मरे नहीं अभी जीवित हैं यद्यपि और दूसरे वृक्ष उसी अवस्था वाले सूख गये हैं। हलद्वानी के भावर भूमि में जो वृक्ष लगाये गये हैं वह और दूसरे स्थानों के वृक्षों से अधिक होनहार होते हैं क्योंकि वह ४ साल के भीतर ही २५ फुट ऊँचे हो जाते हैं. और उनकी मोटाई ५ से ६ इञ्च तक हो जाती है।

गोरखपुर, गोंडा, खीरी आदि ज़िलों में सागौन के वृक्ष बहुत बड़ी संख्या में उगाये जा रहे हैं। गोरखपुर खास में इसके उगाने का काम बड़े जोरों से किया जा रहा है। गोरखपुर में जो सागौन की लकड़ी होती है वह तीसरे नम्बर की होती है।

सागौन के उगाये जाने का प्रयत्न क्यों हो रहा है? इसका अंतिम परिणाम क्या होगा? और कहाँ तक इसका उगाना हमारे लिये ठीक है? इन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न इस लेख में किया गया है।

संयुक्त प्रान्त में सागौन का उगाया जाना बड़ा ही सरल काम है। इसके काटने में भी हमें शत प्रति शत सफलता हो सकती है। कलम को सरलता पूर्वक लगाने के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। शीतकाल में सूखे गर्म स्थानों में जहाँ कि खेती नहीं होती है वहाँ पर सागौन की कलम लगाई जाती है। जाड़े के दिनों में कलमें जीवित रहती हैं और बरसात में उनमें से गोदे फूट निकलते हैं। घने छायादार स्थानों में भी कलमें लगाई गई हैं और वह भी बिना किसी देख भाल के उगी और बढ़ी हैं। कलमें धोके से उल्टी भी लगा दी गई हैं पर फिर भी वह बढ़ निकली हैं। इस प्रकार यदि कलमों की रक्षा की जाय और उनके लिये भूमि भी अच्छी हो तो हमारी सफलता निश्चय है। यदि कलमों के लिये सभी सुगमतायें प्राप्त हो जावें तो फिर उनका नतीजा बड़ा ही आश्चर्यजनक होता है। १९२९ ई० में हलद्वानी में जो कलमें लगाई गई थीं वह अक्तूबर के महीने तक में ६ फुट से २४ फुट तक बढ़ीं और कोई भी कलम मुर्दा नहीं हुई। सारी कलमें लग गई थीं उनका तो कहना ही क्या है वह तो अब बड़े वृक्ष हो गये हैं। संयुक्तप्रान्त में जहां कहीं भी २० साल के सागौन के वृक्ष मौजूद हैं वहाँ पर बहुत बड़ी संख्या में सागौन के वृक्ष स्वयम् प्राकृतिक रूप से उगने लग गये हैं। रामगढ़ और गोरखपुर में अब सागौन के वृक्ष स्वयम् प्राकृतिक रूप से उगाने लग गये हैं।

जिन भागों में प्राकृतिक पौदे उगे हैं उन स्थानों से लगभग २ लाख कलमें निकाली गई हैं शेष उसी प्रकार उन स्थानों को छोड़ दिया गया है। यह बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखो गई है कि जो पौदे आप से आप उगते हैं वह लगाये जाने वाले पौदों से कहीं अच्छे होते हैं। गोरखपुर और हलद्वानी के सागौन के बन जो ४५ साल के हो गये थे वह एक हज़ार प्रति एकड़ के भाव से बिके हैं। इससे प्रतीत होता है कि सागौन के बनों से काफी आय होती है।

जहाँ कहीं भी साल के बृक्ष नहीं उगते थे वहां (टीक) सागौन के बृक्षों के उगने की काफी आशा है। पूर्वी जिलों में सागौन और दूसरे बनैलू बृक्षों की अपेक्षा अधिक उपयोगी तथा लाभदायक है। यद्यपि वहां पर केवल तीसरी श्रेणी के ही बृक्ष पाये जाते हैं। जिन स्थानों में साल के बन पाये जाते हैं वहां पर साल के स्थान पर सागौन का लगाया जाना ठीक है अथवा साल का रहना ही उपयुक्त है। इस प्रश्न के उत्तर में बन विभाग के लोगों की सम्मति यह है कि जहां पर साल की प्रथम श्रेणी की लकड़ी पैदा होती है। वहां पर सागौन की प्रथम श्रेणी की लकड़ी भी पैदा होगी। इसलिये सागौन साल से कम किसी प्रकार भी उपयोगी नहीं है। यह और दूसरे प्रकार के जङ्गली बृक्षों से कहीं अधिक उपयोगी है। सागौन साल की अपेक्षा शीघ्र बढ़ता तथा तयार होता है। उसकी चक्रगति में भी २० प्रतिशत की कमी होती है इसलिये अर्थ शास्त्र की दृष्टि से भी सागौन अधिक लाभदायक है।

नीचे संयुक्त प्रान्त के सागौन की उपज का विवरण दिया जाता है।

१—रामगढ़ का सागौन (स्वयं उगने वाला) कटने के साथ बढ़ने वाली ऋतुओं के पश्चात्:—

कम से कम वृक्ष की ऊँचाई	=	३० फुट
” ” ” मोटाई	=	४ इंच
ज्यादा से ज्यादा मोटाई	=	७ ”

२—पश्चिमी लाहरा का सागौन:—लगाने से चार बढ़ने वाली ऋतुओं के पश्चात्

पौदों की कम से कम ऊँचाई	=	२२ फुट
” ” ” ” मोटाई	=	२.७ इंच
” अधिक से अधिक मोटाई	=	४ ”

यदि सभी बातों का ध्यान किया जाय तो संयुक्त प्रान्त में सागौन के बन अधिक से अधिक तयार करने की सम्भावना है।

जहां कहीं भी साल के वृक्षों के मध्य सागौन के वृक्ष लगाये गये हैं वहां देखा गया है कि सागौन के वृक्ष साल की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं। यह घास की भांति स्वयं प्राकृतिक रूप से उगता है। संयुक्त प्रान्त में सागौन के बृक्ष में ५ साल में फूल लगते हैं। १० साल में उगाने योग्य बीज होते हैं और २० साल में स्वयं प्राकृतिक रूप से दूसरे पौदे उगने लगते हैं। इसके बढ़ने के लिये काफी रोशनी की आवश्यकता है। पानी, आग और हरियाली (निरावन वाली घास) का इसके पौदे पर कोई भी बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है। अब तक जो पौदे भी खराब हुये हैं वह केवल हिरन की सींगों की रगड़ तथा बन्दूकों की चोट के कारण हुये हैं। गोरखपुर में सागौन और रौगयास साल के वृक्ष साथ ही साथ अगल बगल लगाये गये हैं। सागौन के बृक्षों की ऊँचाई २० फुट तो साल के बृक्ष केवल ४ फुट ऊँचे हैं। गोरखपुर ज़िले में अधौलिया नामक स्थान पर एक साल का जंगल खाली कर दिया गया था वहां पर सागौन के बृक्ष १९२२ ई० में स्वयं पैदा हो गये थे। १७ साल के पश्चात् देखा गया कि साल के बृक्ष जिस प्रकार आरम्भ-काल में उगते थे उसी प्रकार उगे परन्तु सागौन के १९२२ ई० वाले बृक्ष ३० फुट ऊँचे बढ़ गये। यह कहना कठिन है कि अच्छी भूमि में सागौन के बृक्षों का समानता साल या दूसरा कौन सा बृक्ष कर सकता है।

बरमा अथवा मद्रास की भांति संयुक्त प्रान्त में केवल सागौन के बन लगाने का प्रश्न नहीं उठाया जा सकता है क्योंकि उन प्रान्तों में जंगल के अन्दर बहुत से जङ्गली बृक्ष ऐसे होते हैं जो उगाने वाली भूमि पर काफी छाया रखते हैं। सागौन के बनों में बन विभाग ने २० से २० प्रतिशत तक बाँस का लगाया जाना अधिक उपयुक्त समझा है। बाँस का बृक्ष मूल्यवान भी होता है। पहले बाँस के सिवा और दूसरे बृक्ष भी सागौन के साथ मिला कर लगाये जाते थे।

जङ्गल बनाने वाली योजना में साल के बृक्षों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच बीच जो सागौन के वृक्ष लगाये जाते हैं उसका मुख्य कारण यह है कि :—

१—सागौन के जङ्गलों का बनाना साल के बनों के बनाने की अपेक्षा अधिक आसान है।

२—यदि सागौन का वृक्ष एक बार लगा दिया गया तो फिर वह सरलता पूर्वक आप ही आप उगने लगता है।

३—जितने प्रकार के भी पौदे खाली स्थानों को भरने के लिये लगाये जा सकते हैं उनमें सागौन किसी से भी कम उपयोगी नहीं है। सागौन निस्संदेह ही घास आदि पौदों से अधिक उपयोगी तथा मूल्यवान है जो खाली स्थानों को भरे रहते हैं।

४—सागौन साल को अपेक्षा अधिक जल्दी बढ़ता है और इसलिये उसके जङ्गल साल की अपेक्षा अधिक जल्दो तयार होते हैं। इस प्रकार सागौन के बनों की चक्रगति साल के बनों से शीघ्र होती है।

५—अब तक सागौन अच्छी भूमि में नहीं लगाये गये हैं। वह केवल लट्ठों अथवा छोटी बल्लियों के लिये लगाये गये हैं। परन्तु हमें मालूम है कि यदि सागौन के बन लगाये गये तो खराब से खराब सागौन के बन में लट्ठे बड़ी संख्या में प्राप्त हो जायँगे।

साल के बनों में बीच बीच में प्रथम श्रेणी का सागौन अवश्य लगाया जाता है परन्तु फिर साल के वृक्षों का अंत करके सागौन की वृद्धि नहीं की जाती इसका कारण यह है :—

अभी बन विभाग को पूर्ण विश्वास नहीं है कि प्रथम श्रेणी वाले साल के बनों के स्थान में सागौन के प्रथम श्रेणी के बन तयार हो सकते हैं और उनसे बड़े बड़े लट्ठे तथा चौड़े स्लीपर प्राप्त हो सकेंगे।

दूसरा कारण भय का है कि कहीं सागौन के बन तयार होने के पहले ही से सागौन के वृक्ष मर न जावें। तीसरे यह कि यदि सागौन सचमुच ही बनों में उपज सकता है तो फिर उसकी उपज प्राकृतिक रूप में क्यों नहीं हो रही है।

संयुक्त प्रान्त में सागौन के बन केवल इस कारण से बनाये जा रहे हैं कि कम मूल्य वाले बनों का नाश हो जाय अथवा कमी हो जाय और उनके स्थान पर अधिक मूल्य वाले बन हो जावें। इस कारण जहां कहीं भी सागौन की उपज अच्छी दीख पड़ती है वहीं पर सागौन के बन तयार करने की योजना बन विभाग की ओर से की जाती है। साल के बन जो बड़े तथा मोटे वृक्ष वाले नहीं हैं उनके बीच बीच खाली स्थानों पर सागौन के वृक्ष लगाये जाते हैं। इसके सिवा उन स्थानों पर भी सागौन के वृक्ष जंगलों में खाली स्थानों पर लगाने का प्रयत्न किया जाता है जहां पर कि छोटे लट्ठों की आवश्यकता होती है। साल के अच्छे बनों में इसकी उपज करने से अभी बन विभाग कुछ आगा पीछा सोच रहा है।

हमारे प्रान्त में सगौन का स्थान साल के बाद है परन्तु और दूसरे वृक्षों से उसका स्थान ऊँचा है।

मानव जाति के सर्वनाश के लिये बड़ी तोपें

धड़ाके का शब्द पैदा करने के लिये सबसे पहले संसार में गनपाउडर (बारूद) का आविष्कार हुआ। इसका अधिकांश प्रयोग चौदहवीं सदी में किया गया। उस समय बारूद तोप की मोहरी में भर दी जाती थी और उसको दबाने के लिये कोई नरम वस्तु ठोंस दी जाती थी जिससे वह बाहर न निकल सके। उसके पश्चात् नली में लोहे का ठोस गोला भरा जाता था। गोला का सम्बन्ध भरी हुई नरम वस्तु से कर दिया जाता था। नली में थोड़ी सी बारूद फिर डाल दी जाती थी जिससे उसमें आग लगाई जा सके। उसके बाद आग लगाने वाले सूराख से आग लगाई जाती थी। आग लगाने पर तोप का भीषण शब्द होता था और गोला शत्रु के ऊपर जा गिरता था।

आज यह नियम हमारे लिये चाहे जितना खराब मालूम हो परन्तु फिर भी मध्य कालीन समय में इसी नियम से किले ढाये जाते थे। नैपोलियानिक युद्ध में ऐसी ही तोपों का प्रयोग किया गया था। उसके पश्चात् रायफल वाली तोपों का प्रयोग हुआ। १८६८ ई० में उन तोपों का आविष्कार हुआ जिनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे अथवा नीचे की ओर से गोला भरा जाता था। रायफल वाली तोपों की नाल १६ इंच घेरे की बनने लगी जिनका वज़न १०० टन होता था। वर्तमान सदी में मैदानी तोपों, घेरा डालने वाली तोपों और जहाजी तोपों आदि में खूब तरक्की हुई है। तोपों में भी नये नये आविष्कार हुये हैं। गत महायुद्ध तक नये हथियारों का प्रयोग नहीं हुआ था इसलिये हम उन्हें नये आविष्कार ही कहेंगे।

बड़ी तोपों का सर्व प्रथम प्रयोग बेल्जियम में १९१४ ई० में नामूर और लीज के किलों पर किया गया। यह आविष्कार आस्ट्रेलिया का था। यह तोपें स्कोडा मोटर कहलाती हैं। ऐंटवर्प में भी ऐसी ही तोपों का प्रयोग किया गया था। जब ऐंटवर्प पर आक्रमण हुआ था तो १०० हार्सपावर (घोड़े की शक्तिवाली तीन मोटरों का प्रयोग तोपों और उनके सामान के ढोने में किया गया। इन तोपों के लगाने के लिये पहले नींव खोदी गई। उसके बाद तोपों का प्लैट फार्म उसमें डाला गया। प्लैटफार्म पर तोप चढ़ाने वाला भाग बोल्टुओं द्वारा कसा गया। उसके साथ तोप लगाई गई। यह तोप ऐंटवर्प से ७½ मील की दूरी पर लगाई गई थी। तोप की नाल ऊपर की ओर थी। तोप में ८०० पौंड के गोले भर दिये गये थे। यह तोपें इतनी अधिक प्रभावशाली थीं कि ऐंटवर्प शीघ्र ही खाली कर देना पड़ा।

उसके बाद गत महायुद्ध में और भी अधिक बड़ी तोपें बनाई गईं जिनसे फ्रांस के नगरों पर आक्रमण किया गया। पेरिस आदि नगरों पर उन बड़ी तोपों से गोले बारी की गई जो २० मील गोला फेंक सकती थीं। वर्तमान समय में आधुनिक तोपों की शक्ति को बहुत कम लोग जानते हैं कि यह कितनी दूर फेंक सकती हैं। उनके गोलों से कितनी हानि हो सकती है इसका ठीक तौर पर अन्दाज लगाना कठिन है। अब स्थली युद्ध में वायुयानों का प्रयोग आरम्भ होने लगा है। जिससे दूर गोला फेंकने वाली तोपों का प्रयोग बन्द कर दिया गया है। स्थली युद्ध में वायुयानों तथा ट्रैंकों का प्रयोग अधिक किया जा रहा है। इन्हीं के प्रभाव से जर्मनी ने नार्वे, डेनमार्क, बेल्जियम, हालैंड और फ्रांस आदि देशों पर अधिकार कर लिया है।

यह सभी बड़े युद्ध के बड़े हथियारों का प्रयोग नये शक्तिशाली धड़ाके वाली वस्तुओं के आविष्कार के कारण सम्भव हो सका है। आजकल गोलों के अन्दर भीषण धड़ाके वाली वस्तुएँ भरी जाती हैं। गोला स्वयम् धड़ाका पैदा करने वाली वस्तुओं के ज़ोर से फेंका जाता है। यह गोले केवल मनुष्य को ही मारने की शक्ति नहीं रखते हैं वरन् वह उसके सारे सामान को भी नष्ट कर देते हैं।

आज कल जो गोले तोपों में भरे जाते हैं वह बमों की भांति बनाये जाते हैं। आरम्भ में यह बन्दूक की गोलियों की भाँति हुआ करते थे। यह पोले होते थे और इनमें बारूद भरी जाती थी। एक धीरे धीरे जलने वाली बत्ती इसके ऊपर लगानी पड़ती थी। बत्ती को तोप के अन्दर गोला रखने के पहले जलाना पड़ता था। यदि तोप चलाने वाला देरी करता था तो गोला तोप के अन्दर ही फट जाता था जिससे भीषण दुर्घटना होने की शंका रहती थी।

आज कल कई प्रकार के गोले बनाये जाते हैं और वह भिन्न भिन्न कामों में प्रयोग किये जाते हैं। इनमें से जो मनुष्य को मारने और सामान को नष्ट करने के लिये होते हैं वह सब से अच्छे हैं। श्रैपनेल शेल (बीन का गोला) तोप के भीतर एक दूसरी तोप की भांति होता है। इस गोले के भीतर भड़कने वाली वस्तु और बहुत ज्यादा गोलियाँ रहती हैं। धड़ाके के ज़ोर से गोलियाँ चारों ओर छिटक जाती हैं।

मामूली तोप का गोला भीषण धड़ाके वाला होता है और यह आक्रमणकारी सेना द्वारा उन वस्तुओं के सत्यानाश के लिये प्रयोग किया जाता है जो उसके आगे बढ़ने में रुकावट पैदा करती हैं। यह भीषण-धड़ाके वाले गोले जिस स्थान पर गिरते हैं अपने भीषण धड़ाके से अपने चारों ओर की वस्तुओं का सत्यानाश कर देते हैं। उस स्थान पर की हवा इतनी खराब हो जाती है कि उससे मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। गत महायुद्ध के आरम्भ काल में भीषण धड़ाके वाले गोलों का प्रयोग विषैली गैसों के साथ किया जाता था जिसे लीडाइट कहते हैं। ट्रीनीट्रोटोलवेने (टी० एन० टी०) तारकोल से निकाला जाता है। उसका भी प्रयोग गोले में किया जाता था परन्तु इसके तयार करने के लिये भी उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान का मिलना कठिन था। अनोनल (नौसादर और टी० एन० टी० का मिश्रित) का प्रयोग भी किया गया। यह ४० और ६० तथा ८० और २० के अनुपात से मिलाये गये थे। यद्यपि अमाटोल, पिकरिक (धात और कोयले का मिश्रित) और टी० एन० टी० से अधिक शक्तिशाली होती है परन्तु अकेली वह कम धड़ाका करती है। यह सैनिक दृष्टि से फायदे की वस्तु है। जब कोई टुकड़े टुकड़े हो जाता है तो वह अकेले मनुष्यों को मार सकता है तो भी यदि गोली सीधे किसी पर मारा जावे तो वह उसका बिलकुल सत्यानाश कर देगी।

जहाजी तोपों के गोलों में टी० एन० टी० का प्रयोग अधिक होता है लीडाइट (दरयाई सज्जी) लड़ाकू जहाजों के हथियारों को तोड़ने में समर्थ होता है। १९१४ ई० के जटलैण्ड के युद्ध में जो गोले लीडाइट सज्जी से भरे हुये जर्मन लड़ाका जहाज पर मारे गये वह उसके हथियारों को तोड़ने में समर्थ सिद्ध हुये। उसी युद्ध में जर्मन गोले जिनमें टी० एन० टी० भरी हुई थी, उन्होंने क्वीन मैरी, इनडिफेटिगेबिल, इन विंसबुल ब्लैक प्रिन्स और डिफेन्स नामक जहाजों को नष्ट कर डाला था।

स्थल में सुरंगें खोद कर उसके अन्दर धड़ाके वाली वस्तुऐं भर दी जाती हैं और जब उनमें आग लगा दी जाती है तो फिर उससे शत्रु की बड़ी हानि होती है। गत महायुद्ध में मेसाइन्स में ९० हजार पौंड की बारूद एक सुरङ्ग में भरी गई थी। १९१८ ई० में बम हाथ द्वारा और गुलेल द्वारा भी समीप से शत्रुओं पर फेंके गये थे। हाथ से फेंके जाने वाले गोलों को ग्रेनाडे कहते हैं। ग्रेनाडे बमों में सज्जी का प्रयोग किया जाता है और यह उन स्थानों पर प्रयोग किये जाते हैं जहाँ मनुष्य पर इस से सीधा हमला नहीं किया जा सकता है। यद्यपि यह बम क्रीकेट के गेंद के बराबर होता है तो भी यह ६ आदमियों को मार सकता है।

वर्तमान महासमर में हवाई बमों का प्रयोग हो रहा है। यह बम वायुयानों से गिराये जाते हैं। यह बड़े भयानक होते हैं। एक २५० मील प्रति घंटा चलने वाले वायुयान में ५६ मन के गोले भरे जा सकते हैं। वायुयानों के संहार के लिये ऐंटी-एअर-क्रेफ्ट गन (वायुयान संहारिणी तोपें) बनाई गईं हैं तो भी वह बम वर्षकों को उनके कार्य से रोकने में समर्थ नहीं हैं समुद्री लड़ाका जहाज यद्यपि बड़े मजबूत तथा हथियार बन्द होते हैं तो भी यदि वायुयान से बम उनके समीप गिरा दिया जाता है तो भी उसके धड़ाके से जहाज फट जाता है और पानी भर जाने से डूब जाता है परन्तु यदि बम का निशाना लड़ाका जहाज पर ठीक लगा तो फिर वह टूक टूक हो जाता है। लड़ाका जहाजों को बचाने के लिये तैरने वाली वायुयान संहारिणी तोप का प्रयोग किया जाता है। तैरने वाली वायुयान संहारिणी तोप की रक्षा लड़ाका जहाज करता है।

एक और टारपीडो गोला बनाया गया है जिसका प्रयोग टारपिडो बोट अथवा सबमेरीन द्वारा होता है। समुद्री टारपिडो स्वयम् एक गोताखोर जहाज की भांति बना होता है। इसमें इंजिन आदि लगे रहते हैं। जब इसकी नाक (अगला भाग) किसी समुद्री जहाज से टकराती है तो वह उसके अन्दर धड़ाका करके सूराख कर देती है। टारपिडो बोट की चाल ४० नाट प्रति घंटे होती है। हवाई टारपिडो जब समुद्र में गिराया जाता है तो वह एक गोले में घूमता रहता है और जिस जहाज से टकराता है उसे सत्यानाश कर डालता है।

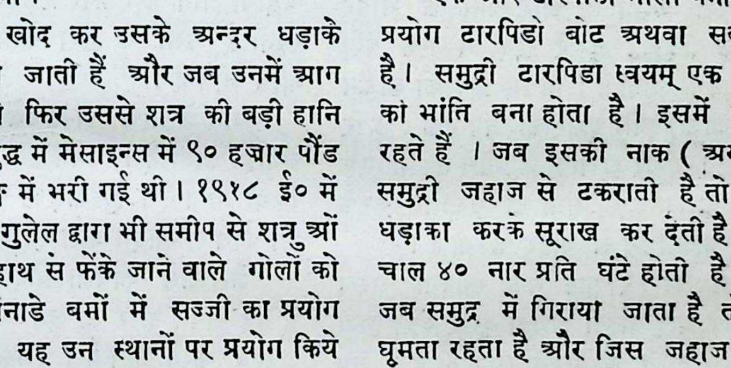

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर के कोयले की खोज

पहले तो कोयले के स्थान का पता लगाना ही कठिन है और यदि पता भी लग जाता है तो फिर भी इंजीनियर को कोयला पाने के पहले और भी बहुत सी बातों का पता लगाना पड़ता है। उसे इस बात की खोज करनी पड़ती है कि जमीन के कितने नीचेकोयले के परत हैं? परत की मोटाई कितनी है, वह पृथ्वी के धरातल से किस कोण पर स्थित है और फिर उसके ऊपर अथवा नीचे कौन सी वस्तु है। इसका पता लगाने के लिये खान के इञ्जीनियर को कुछ इंच चौड़ा एक सूराख पृथ्वी के अन्दर करना पड़ता है। यह सूराख बहुत गहरा करना पड़ता है। बरमे के द्वारा जो कोयला और दूसरे पदार्थ ऊपर आते हैं उसके द्वारा इंजीनियर पता लगाता है कि वहां पर कौन कौन सी वस्तुएं बर्तमान हैं। इसके सिवा वह और भी दूसरी जानने योग्य बातों का पता लगाता है।

पता लगाने के पश्चात् खान खोदने का कार्य आरम्भ होता है। पहले पच्चीस पच्चीस फुट के दो बड़े छेद करने पड़ते हैं। प्रथम छेद से ऊपर की शुद्ध वायु भीतर प्रवेश करती है और खान के भातर फैलती है उसके बाद वह दूसरे छेद से एक पंखे द्वारा ऊपर निकाली जाती है। प्रथम छेद को डाऊन टेक (भीतर ले जाना) और दूसरे को अप टेक (ऊपर लाना) कहते हैं। दूसरे सूराख के नीचे तह में एक पम्प रहता है जो खान के पानी को एकत्रित करके बाहर निकालने वाले छिद्र से बाहर फेंकता है।

इन सूराखों का १२ फुट तक खोदना सरल होता है। उसके बाद बाल्टी अथवा दूसरे यंत्रों द्वारा १२ फुट से नीचे वाली भूमि खोदी जाती है। जब कड़ी चट्टान आ जाती है तो फिर बरमे द्वारा या और किसी दूसरे तरीके से नीचे की मिट्टी खोदी जाती है और उसे बाहर लाया जाता है। छेदों की दीवारों में पहले लकड़ी की और फिर ईंटों की जोड़ाई की जाती है। यदि बरमे द्वारा पता चलता है कि नीचे पानी बहुत है तो फिर उसमें कई एक छोटे छोटे छेद ऊपर भूमि पर करके उनमें नल लगा दिये जाते हैं। उन्हीं नलों द्वारा पानी को जमाने वाली मिश्रित वस्तु डाली जाती है जिससे पानी जम जाता है। उसके पश्चात् जमे हुये पानी को सरलता पूर्वक निकाल बाहर करते हैं। इस प्रकार अधिक पानी निकाल कर बाहर फकने के कष्ट से निवारण होता है। हवाई ढंग से भी पानी बाहर निकाला जाता है।

जब पानी निकल जाता है और तह मिल जाती है तो फिर वह स्थान और भी अधिक चौड़ा बनाया जाता है जिससे बाहर को मार्ग बनाया जा सके। जब बाहर निकालने का मार्ग बन जाता है तब कोयले की खोदाई आरम्भ की जाती है। छिद्र के आस पास जो कोयला रहता है उसे नहीं निकाला जाता है इससे वह छिद्र तथा दूसरे बनाये जाने वाले स्थान को मज़बूत बनाये रखता है।

बने हुये मार्गों के इधर उधर खान खोदने वाले कोयला खोदते हैं। कुदाली और बेलचे से कोयले की खोदाई होती है। टबों में कोयला भर कर नीचे सड़कों अथवा मार्गों पर लाया जाता है। उसके पश्चात् ट्रैंकों द्वारा वह खान के मार्ग पर लाया जाता है जहाँ से वह बड़े पिंजड़ों या जालों के द्वारा ऊपर चढ़ाया जाता है। ऊपर एक बड़ी घूमने वाली मशीन रहती है उसी के द्वारा कोयले वाले पिंजड़े ऊपर खींचे जाते हैं।

खान के नीचे की सड़कें बड़ी मजबूती के साथ बनाई जाती हैं। उनमें ईंट और पत्थर का प्रयोग किया जाता है। इन सड़कों से और दूसरे छोटे मार्ग भी कोयला खोदने वाले स्थानों को बनाये जाते हैं।

जैसे जैसे कोयला खोदने वाले लोग नीचे जाते हैं वह अपने ऊपर की छत को गिरने से संभालने का प्रबन्ध करते जाते हैं। जिस ओर खोदाई होती है उसकी बग़ली को भी टेक लगा कर मज़बूत बनाना पड़ता है जिससे वह गिर न पड़े। यदि लकड़ी के टेक लगाने में किञ्चित् मात्र भी देरी की जाती है तो उसका परिणाम भयानक होता है। यदि लकड़ी की टेक लगाने में देरी की गई तो फिर कोयले का छल्ला गिर पड़ता है और उससे चोट खाकर खान खोदने वाले या तो मर ही जाते हैं या फिर उन्हें गहरी चोट लगती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कताई और बुनाई द्वारा भूगोल की शिक्षा

[ले० प्रहलाद नारायण रायज़ादा एम० ऐ० बी० टी० अलवर]

वर्तमान काल के सभी शिक्षक यह एकमत हो स्वीकार करते हैं कि शिक्षा के भिन्न भिन्न विषय एक दूसरे से बिलकुल पृथक करके नहीं पढ़ाने चाहिये। हाल ही में इस मत के अनुसार चलने के लिये चारों ओर से बड़ी चर्चा हुई है। भिन्न भिन्न विषयों को मिला कर (सम्बन्ध करके) पढ़ने* के दो मत अब तक बतलाये गये हैं। एक मत मिस्टर हरबर्ट का है जो कहते हैं कि चूंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र सुधार है इसलिये मानव जीवन से सम्बन्ध रखने वाले विषय केन्द्र बनाने चाहिये और अन्य सब विषय उनके चारों ओर घिरे हुये हों। दूसरा मत एक अमरीकन शिक्षक कर्नल पारकर साहब का है। उनका कथन है कि प्रकृति निरीक्षण को केन्द्रित स्थान देना उचित है और सब विषय उसके चारों ओर घिरे होने चाहिये जो कि पाठशालाओं के अन्दर सिखलाये जाते हैं।

भिन्न भिन्न विषयों को एक दूसरे के सम्बन्ध में सिखलाने की विधि महात्मा गांधी ने एक बिलकुल नये ढंग पर ही बतलाई है जिसका उद्देश्य तमाम शिक्षा किसी मुख्य कला के द्वारा दिये जाने का है। इस विधि के अनुसार किसी विषय की जगह कोई कोई दस्तकारी केन्द्र बनाया जाती है और उसी के द्वारा सब शिक्षा जो स्कूलों की पढ़ाई में होती है दी जा सकती है। यह विधि वार्धा स्कीम आफ़ ऐज्यूकेशन में बतलाई गई है और बहुत कुछ मतभेद इस पर रहा है। वार्धा योजना का उद्देश्य डाक्टर जाकिर हुसैन के शब्दों में निम्नलिखित है§। अर्थात् इस शिक्षा की इस नई योजना का उद्देश्य मुख्य कर यह नहीं है कि चतुर कारीगर उत्पन्न हों जो किसी कला के कार्य में चतुर हों वरन् शिक्षा हेतु उन उपायों को अन्वेषण करना है जो कि कला में सम्भव हैं।

इस प्रकार की योजना सम्पूर्ण शिक्षा के ढंग में काया पलट कर देने वाली है। इसके मार्ग में कई बाधायें भी अवश्य हैं। पहली अड़चन यह है कि इस विधि के अनुसार पढ़ाने के लिये पुस्तकें नहीं हैं। वर्तमान पुस्तक इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकती दूसरे यह बात भी बिलकुल असम्भव है कि हम प्रत्येक बात जो कि स्कूल की पढ़ाई में लिखी जाती है अथवा रक्खे जाने योग्य है कला द्वार सिखला दें। उसमें से बहुत से भाग हमें पृथक रूप से पढ़ाने पड़ेंगेही। तभी यह सब विषयों को एक दूसरे के सम्बन्ध में पढ़ाने वाली योजना† वास्तविक हितकर हो सकती है। यदि हठधर्मी बश ऐसा प्रयत्न किया भी जायगा तो वह अस्वाभाविक‡ पाठन पद्धति हो जायेगी जिसका पदार्पण हमें कदापि न होने देना चाहिये। इस सम्बन्ध में डी० रैमोन्ट साहब लिखते हैं§ :— एक एक पाठ पढ़ाते समय एक अध्यापक को प्रत्येक सम्बन्धित वस्तु से लाभ उठाना चाहिये जो कि उस विषय को हमें समझाने में सहायक होता है जिसे हम पढ़ाते होते हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि हमें उन्हीं बातों को लेना चाहिये जो सम्बन्धित हैं। वह ही हमारे विषय को समझाने में सहायक हो सकती हैं। यदि हम और विषय भी लेने लगें जो कि पाठ के विषय से सम्बन्ध नहीं रखते तो हमारे पाठ के उद्देश्य की पूर्ति न हो सकेगी।

इस प्रकार की विधि जो वार्धा-योजना में बतलाई गई है कठिन अवश्य है परन्तु वह असम्भव नहीं है। इस लेख में इस बात की जांच करने के लिये प्रयत्न किया गया है कि भूगोल विषय कताई-बुनाई के द्वारा कहां तक पढ़ाया जाना सम्भव है और कताई-बुनाई के द्वारा पढ़ाते हुये उसको कह

*Correlation of studies. §"The object of new education scheme is not primarily the production of craftsmen able to practise some craft mechanically but rather the exploitation for educative purposes of the resources implicit in craft-work." †Correlation or Concentration of studies. ‡Unnatural. §"In giving a lesson the teacher should press into his services every bit of allied material which will help towards a complete grasp of the topic under consideration.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक दूसरे विषयों से सम्बन्ध रखने वाला बना सकते हैं जिससे विषयों को एक दूसरे के सम्बन्ध में पढ़ाने को विधि* सम्भव हो सके। भूगोल की शिक्षा प्राथमिक कक्षाओं में जो पढ़ाई जाती है उसी पर मुख्यतया ध्यान दिया गया है।

आरम्भ के पाठ में अध्यापक को बिना साफ की हुई रुई क्षात्रों को दिखलानी चाहिये और उनसे उनके विषय में थोड़ा सा वार्तालाप करना चाहिये। यदि सम्भव हो तो खेतों में कपास उगती हुई दिखलायें वर्ना कपास के पौदे का चित्र क्लास में लाये। छात्रों की इसमें जानकारी कराये कि कपास किस फसल में उगती है। उसका पौदा कितने समय में बढ़कर फूल देता है और किस प्रकार उसकी फसल काटी जाती है। कपास के बीज भी छात्रों को दिखलाये जावें और कपास के पौदे का चित्र उनसे खिंचवाया जाये और इस प्रकार भूगोल को प्रकृति निरीक्षण व ड्राइंग के विषय से संबन्धित बनाये। तत्पश्चात् भिन्न भिन्न प्रकार की मिट्टी व खाद भिन्न भिन्न जलवायु का संक्षेप में विवरण दिया जा सकता है और यह बतलाया जाये कि कपास के लिये किस प्रकार की मिट्टी व कितनी गर्मी और वर्षा की आवश्यकता होती है। परन्तु भिन्न भिन्न प्रकार की जलवायु व खाद और मिट्टी को बतलाने के लिये जिसकी कपास को आवश्यकता होती है हमें पृथक रूप से पढ़ानी पड़ेगी यह हम कला के द्वारा नहीं पढ़ा सकते।

भारतवर्ष के किस किस सूबे में कितने कपास होते हैं यह भी साथ ही साथ पढ़ाया जा सकता है परन्तु भारतवर्ष के सूबों का ज्ञान पहले से पृथक रूप से पढ़ाना पड़ेगा। ऊँची कक्षाओं में सम्पूर्ण दुनिया में कितनी कपास उगती है उसमें भारतवर्ष का कितना भाग है यह भी बतलाया जा सकता है यही विषय और बारीकी के साथ और ऊँची कक्षा में पढ़ाया जा सकता है। परन्तु वहाँ पर दुनिया के समस्त देशों के बारे में कुछ ज्ञान पृथक रूप से होना अनिवार्य है। भारतवर्ष के भिन्न भिन्न सूबे में दुनिया के मानचित्र में उसकी उपज दिखलाई जा सकती है।

कपास की उपज का विषय समाप्त करके उसके निर्यात का विषय पढ़ाना चाहिये। यह विषय पहले विषय के संबन्ध में ही पढ़ाना चाहिये। यहां पर अध्यापक क्षात्रों के देश प्रेम के भावों को जाग्रत कर सकते हैं। इसके लिये उनको यहां पर बहुत अच्छा अवसर है। "ईश्वर ने हमारे देश को ऐसे ऐसे प्राकृतिक गुरू दिये हैं कि वह इतनी कपास पैदा करता है परन्तु खेद है कि तब भी जितना भारतवर्ष उपजाता है वह सब यहां पर काम में नहीं लाई जाती इससे भी अधिक खेद इस बात का है कि हम कपास बाहर भेजते हैं और सूती बूने हुये कपड़े कता हुआ सूत देश में मँगाते हैं। हम क्यों न स्वयं अपने हाथों से कपास कातें और कपड़े बुनें। देश में फैली हुई बेरोज़गारी को भी इस प्रकार कम करें।

छात्रों को रुई का दबाना व फुलाना‡ भी बतलाकर यहाँ पर भूगोल को विज्ञान से मिला सकते हैं। फिर यह भी बतलाया जा सकता है कि कपास किस प्रकार पेचों से दबा कर गट्ठों में भर कर विदेशों को भेजी जाती है। छोटी कक्षाओं में संक्षेप में और बड़ी कक्षा में पूर्णतया यह भी बतलाया जा सकता है कि व्यापार करने के कौन से तरीके—बैलगाड़ी, मोटर, रेलगाड़ी जहाज़ आदि हैं। तत्पश्चात् व्यापारिक स्थली व सामुद्रिक प्राचीन व वर्तमान मार्ग भी बतलाये जा सकते हैं। यहाँ पर भूगोल का विषय सुगमता से इतिहास से मिलाया जा सकता है। देशों का प्राचीन व्योपार भिन्न भिन्न व्योपारिक मार्ग व बन्दरगाह आदि भी इसके साथ बतलाये जा सकते हैं।

ऊँची कक्षाओं में देश में माल आने व बाहर जाने से रोकने के लिये जो कर† लगाये जाते हैं वह भी बतलाये जा सकते हैं! कर लगाना व उससे देश में कला व कौशल से सम्बन्ध में इसी के साथ बतलाना उचित है और इस प्रकार भूगोल को अर्थशास्त्र विषय§ से सम्बन्धित बनाया जा सकता है। इसी के साथ साथ देशी कपड़ा व देशी माल का इस्तेमाल क्यों करना चाहिये भली प्रकार समझाया जा सकता है। क्या हमें केवल शुद्ध खादी ही पहननी चाहिये। अथवा मील का बुना हुआ स्वदेशी कपड़ा भी पहनना उचित है यह भी बतलाया जा सकता है। और दूसरे विषय जैसे खादी प्रचार, चरखों का प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

*Correlation of studies. ‡Elasticity. †Tariff §Economics.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैक्ट्रीज़ में मजदूरों की दशा आदि भी पढ़ाई जा सकती है और इस प्रकार हम अपने विषय को सामाजिक जीवन व समाज की कुरीतियों से जोड़ व उसको दूर करने के लिये वादाविवाद कर सकते हैं।

हमारे सामाजिक जीवन में भारी परिवर्तन करने वाली एक बात हमारे घरेलू कारखानों को नष्ट करने वाली है। यहां पर एक भारतवासी के प्राचीन समय के सामाजिक जीवन को उसके आधुनिक सामाजिक जीवन से तुलनात्मक अन्तर के कारण उसके सुधार के प्रश्नों को भी ले सकता है। इसी सम्बन्ध में हमारा भोजन, रीति-रिवाज, आर्थिक दशा आदि विषयों को संक्षेप में पढ़ा सकता है और दूसरे देश वालों से तुलना भी कर सकता है।

घरेलू कारखानों के नष्ट हो जाने और मीलों के कारखाने खुल जाने के कारण मजदूर लोग गांवों को छोड़ छोड़ शहरों में रहने लगे। इस प्रकार बड़े बड़े शहर बसने लगे और उनकी जन-संख्या में वृद्धि होने लगी। इससे आगे चलकर हम भारतवर्ष व उसके सूबों व शहरों की जन-संख्या के विषय में आ सकते हैं और इस पर भी गौर कर सकते हैं कि अमुक शहर के उन्नतिशाली होने के क्या क्या कारण हैं ?

अब अध्यापक उन विषयों को ले सकता है जो कताई, बुनाई की उन्नत्ति करने में सहायक होते हैं जैसे हवा की आर्द्रता† मजदूरी। आदि इसके साथ वर्षा, ओस, पाला, कुहरा आदि विषय में लिये जा सकते हैं यहाँ पुनः अपने विषय को विज्ञान से मिला सकता है। मीलों में कताई, बुनाई की वृद्धि कराने वाली एक मुख्य बात शक्ति‡ है। शक्ति किस २ प्रकार की होती है कौन सी शक्ति कहाँ पर अधिक सम्भव व लाभदायक है यह भी बतलाया जा सकता है वाष्प शक्ति को कोयले की आवश्कता होती है। अतएव इसके सम्बन्ध में कोयले की उपज व उसका देश में निर्यात भी बढ़ाया जा सकता है हाइड्रो इलैक्ट्रीसिटी की शक्ति समझने के लिये देश की नदियों का पहले ज्ञान होना अनिवार्य है। उसके सम्बन्धित विषय देश का धरातल नहरें व ऊंचाई भी है।

कोई भी कारखाना जब तक ऐसे कच्चे माल खरीदने व तैयार किया हुआ माल बेचने के लिये अवसर न मिले उन्नति नहीं कर सकता। अतएव सूती माल की देश में खपत व उसके लिये बाहरी माल से बाज़ी लेने की सम्भावना, कच्चा माल मिलने की सम्भावना व बाहर से लाने व ले जाने का खर्चा बरदाश्त करना इत्यादि बहुत से विषय उससे सम्बन्ध रखते हैं जो ऊँची कक्षा में पढ़ाये जा सकते हैं। कुछ और भी विषय जो वर्तमान स्थिति से सम्बन्ध रखते हैं जैसे जापान के इतने सस्ते माल बेचने के कारण खादी के दूसरे कपड़ों से बाज़ी मारने की सम्भावनों, देशी माल व बाहरी माल की तुलना, चरखे व करघों में उन्नति आदि बतलाये जा सकते हैं। वर्तमान काल की सांसारिक घटनाओं का उल्लेख भी इससे सम्बन्ध रखता है अतएव उनका बतलाना व मुख्य कर उनका प्रभाव अनिवार्य है जैसे एबीसीनिया का इटली द्वारा जीता जाना। जर्मनी की उपनिवेशों के लिये मांग, जापान का चीन पर हमला, वर्तमान योरुपीय युद्ध व उसका कारखानों और वस्तुओं के मूल्य पर प्रभाव आदि।

बहुत से ऐसे भी विषय हैं जो भूगोल के विषय से पूरी तौर से सम्बन्ध नहीं रखते। उनको पृथक रूप से पढ़ाना अनिवार्य है जैसे भिन्न भिन्न प्रकार की जमीन की मिट्टी व खाद, देशों की बनस्पति, देशों की सीमा, पहाड़, मैदान, रेगिस्तान आदि। कुछ ऐसे भी विषय हैं जो कताई, बुनाई से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते प्रतीत होते हैं परन्तु उनकी जानकारी अनिवार्य है अतएव उनको पृथक रूप से पढ़ाना पड़ेगा। ऐसे विषय निम्नलिखित उदाहरण के तौर पर दिये जाते हैं। ज्वार-भाटा, समुद्र की धाराएँ, लहरें, सूर्य मंडल, भूचाल, हवायें, चक्रवात व प्रति चक्रवात, ऋतु-परिवर्तन, चन्द्रकला, चन्द्र व सूर्य ग्रहण। यद्यपि इन विषयों को पृथक रूप से पढ़ाना चाहिये परन्तु उनका वर्णन स्थान स्थान पर जहाँ आये पूर्णतया देना व समझाना आवश्यक है जिससे भूगोल के अध्ययन का यह आवश्यक अंग कताई व बुनाई की कला व दूसरे पढ़ाई के विषयों से बिलकुल पृथक न रहे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वरधा योजना के अनुसार भूगोल का विषय कताई, बुनाई के द्वारा अन्य विषयों के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुगमता से भली प्रकार पढ़ाया जा सकता है।

Indegenious industries. † Humidity of air. ‡ Power.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध की शक्तियां

आज कल युद्ध पर आर्थिक विषयों का प्रभाव अधिक पड़ता है। बर्तमान युद्ध का निर्णय युद्ध स्थल में इतना नहीं हो रहा है जितना कारखानों, खानों और कारखाने वाले नगरों में हो रहा है। बेल्जियम फ्रान्स आदि देश इसके उदाहरण हैं। धन ने युद्ध में एक बहुत बड़ा हाथ बटाया है। ब्रिटेन की विजय १९१४ ई० में इसी कारण हुई थी।

सेना के लिये आजकल आवश्यक है कि उसके लिये लड़ने के सामान कारखानों में तयार किये जावें। यदि सेना बहुत बड़ी होती है तो उसके लिये एक बहुत बड़े हथियार बनाने वाले कारखाने की भी आवश्यकता होती है। इंगलैण्ड के फौजी अफसरों ने हथियारों का हिसाब लगाने में ग़लती की थी इसी कारण वह उतने हथियार नहीं तयार कर सके जितने हथियारों की आवश्यकता उनकी सेना को थी। जर्मन सेनापतियों ने इस ओर अधिक ध्यान दिया और इसी कारण उनके पास अँग्रेजों से अधिक हथियार हैं। जर्मन सैनिक ब्रिटिश सैनिक की अपेक्षा अधिक हथियार बन्द हैं। गत महायुद्ध में मशीनगन का प्रयोग भीषणता के साथ किया गया था और यह हथियार युद्ध के विजय करने में भी सहायक हुआ था। आज प्रत्येक जर्मन सैनिक जत्थे के पास १६ मशीनगन हैं और प्रत्येक ब्रिटिश सैनिक जत्थे के पास केवल दो मशीन गनें हैं। गत महायुद्ध में हवाई बम बर्षकों तथा टैंकों का प्रयोग बहुत कम हुआ था। वरन् इनकी उत्पत्ति ही उस समय नहीं हुई थी। कारखानों की क्रान्ति के समय ही गत युद्ध का आरम्भ हो गया था इस कारण सैनिक लोग अनुमान नहीं लगा सके थे कि प्रत्येक सैनिक के पीछे कितनी धातु की आवश्यकता होगी।

युद्ध के जनरल स्टाफ अपनी युद्ध आवश्यकता की पूर्ति के लिये हथियारों का अनुमान लगाने में असमर्थ हुये थे इसी कारण वह कच्चे सामान की आवश्यकता का भी अनुमान ठीक तौर पर नहीं लगा सके और न उन्होंने ब्लाकेड के प्रभाव का ही भली प्रकार अनुमान किया।

गत महायुद्ध के आरम्भ में जर्मन सैनिकों के पास ब्रिटिश सैनिकों से अधिक हथियार युद्ध में थे। जब जर्मनी के एक बड़े कारखाने के मालिक ने अपनी सेवा जर्मन राजकीय युद्ध दफ्तर को अर्पण की थी परन्तु उसकी सेवा अस्वीकार कर दी गई थी। उसने युद्ध के लिये कच्चा सामान देने का वादा किया था। उस समय कच्चे सामान का इतना मूल्य नहीं समझा जाता था। जर्मन सेनापतियों को बाद में अपनी त्रुटि प्रतीत हुई और सामग्री की कमी होने के कारण ही उसे १९१८ ई० में हार हुई।

१९१४ ई० की लड़ाई में संसार के शक्तिशाली राष्ट्रों ने अपनी मानव शक्ति को अनिवार्य सैनिक सेवा द्वारा खूब बढ़ाया था। १९३९ ई० का प्रथम युद्ध है जब कि संसार के प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों ने आरम्भ से ही यह स्वीकार कर लिया कि उनकी समस्त सम्पत्ति तथा धन की आवश्यकता युद्ध में होगी।

जिन युद्ध करने वाले राष्ट्रों के पास बड़े बड़े कारखाने हैं उन्हें कम कारखानों वाले राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक सुगमता है। कारखाने वाले राष्ट्र कृषक राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बने हैं। यह बात गत वर्ष की घटनाओं से भली भांति सिद्ध है कि किस प्रकार जर्मनी ने पोलैंड, नार्वे, डेनमार्क, बेल्जियम, हालैंड और फ्रान्स आदि राष्ट्रों को पराजित किया और उन्हें कुचल डाला। यद्यपि इन राष्ट्रों के पास जर्मनी से कहीं अधिक सेना थी परन्तु जर्मन कारखाने योरुप में उन्नति के शिखर पर हैं और वहां युद्ध के अच्छे से अच्छे हथियार जर्मन सैनिकों के लिये तयार हो रहे हैं। केवल यही बात नहीं है कि जर्मन कारखाने जर्मन सेना को सहायता दे रहे हैं वरन् समस्त जर्मन जाति के रोज़गार, सम्पत्ति तथा धन की खपत युद्ध में हो रही है। बर्तमान युद्ध केवल राजाओं तथा सेनाओं का नहीं वरन् समस्त राष्ट्र तथा जाति का है। इसलिये केवल कारखाने वाले कृषक राष्ट्रों से ही अधिक बलवान नहीं हैं वरन् कारखाने वाले राष्ट्रों में धनी राष्ट्र निर्धन राष्ट्रों से अधिक शक्तिशाली प्रतीत हो रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९१४ ई० के युद्ध में कारखाने के मज़दूर तथा खान खोदने वाले भी युद्ध में सैनिक बना कर भेजे गये थे। बाद में अस्त्रों की पूर्ति करने के लिये कारखाने में भी लोगों की आवश्यकता हुई थी। १९१८ ई० में यह बात देखी गई थी कि एक ब्रिटिश सैनिक के पीछे तीन मनुष्य कारखानों में हथियार तयार करने के लिये लगाने पड़े थे। १९३९ ई० में जो ब्रिटिश सैनिक युद्ध स्थल में गये हैं वह १९१८ ई० के सैनिकों से दुगुने अस्त्रों से सुसज्जित हैं। इस प्रकार प्रत्येक लड़ने वाले सैनिक के पीछे ५ कारखाने में काम करने वालों की आवश्यकता है। १९३९ ई० के युद्ध में सभी राष्ट्रों ने यह नियम सा बना लिया है कि वह हथियार तयार करने वाले कारखानों में अधिक से अधिक मनुष्य लगा रहे हैं और युद्ध में लड़ने के लिये कम से कम लोगों को भेज रहे हैं। उनकी संख्या वही है जितनों की वहां पर हथियारों के चलाने की आवश्यकता है। यह बात १९१४ ई० के बिलकुल विपरीत है।

युद्ध में एक सेना के एक सैनिक की समानता उसके विरुद्ध के दूसरे एक सैनिक से की जा सकती है। परन्तु कारखाने में काम करने वाले मज़दूरों की समानता उसी प्रकार नहीं की जा सकती है। कुछ राष्ट्रों के कारखानों में अधिक धन लगा है। इसलिये उनकी मशीनें अधिक शक्तिशाली हैं और इसी कारण उन कारखानों का एक मज़दूर दूसरे कम सम्पत्ति वाले राष्ट्रों के कारखानों के मज़दूर से अधिक सामान तयार करने की शक्ति रखता है। इस लिये १००० जर्मन सैनिकों का सामना करने के लिये १००० ब्रिटिश सैनिकों की जरूरत है परन्तु १००० जर्मन धन कमाने वालों या कारखाने में काम करने वालों के लिये केवल ५०० अँग्रेजों की जरूरत है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इंगलैंड को जर्मनी की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त है।

युद्ध में व्यस्त राष्ट्रों को अपने राज्य के लिये भोजन, कपड़ा, आश्रय और आराम की सामग्री आदि का भी प्रबन्ध करना पड़ता है जिससे राज्य के सभी लोग सुखी तथा जीवित रहें। आवश्यक वस्तुओं के प्रयोग में कमी की जा सकती है परन्तु इन्हें एकाएक बन्द नहीं किया जा सकता है। जब राज्य के लोगों के पास खाने पीने का सामान होगा तभी वह युद्ध के लिये सामान तयार कर सकेंगे। आर्थिक युद्ध की ओर दृष्टि डालते हुये यह देखना चाहिये कि वहाँ के लोगों की आवश्यक मांगों की पूर्ति करने के पश्चात् उस देश में क्या शेष रह जाता है। यही सम्पत्ति जो शेष रह जाती है वह शान्ति के समय देश में विशेष आनन्द का काम देता है और युद्ध काल में युद्ध के काम आती है।

यदि किसी राष्ट्र की सालाना आय एक करोड़ है तो इसका अर्थ यह है कि एक करोड़ रुपया उस के निवासी लोग साल भर में किसी न किसी तरह उसे व्यय कर सकते हैं। १९३७ ई० में इङ्गलैण्ड की राष्ट्रीय आय ५२,००,००,००० पौंड (लगभग अस्सी करोड़ रुपये) थी और जर्मनी की राष्ट्रीय आय ७ अरब १० करोड़ राएटमार्क (जर्मन सिक्का) थी। यह धन हमारे सिक्कों में ६ करोड़ ७५ लाख रुपये के लगभग होता है। उस साल जर्मनी को अपनी आय से २ करोड़ अधिक मनुष्यों का पालन पोषण करना पड़ा था। इस प्रकार हम देखते हैं कि १९३७ ई० में इङ्गलैंड की युद्ध शक्ति जर्मनी से अधिक थी। निस्संदेह ही जर्मन साम्राज्य की वृद्धि हुई है और अब उसकी आय का ठीक अन्दाज़ लगाना कठिन है तो भी उसके साथ ही साथ हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि इंगलैंड के साथ उसके उपनिवेश हैं और उनकी आय भी इंगलैंड के हाथ में है।

मानव शक्ति तथा सामग्री शक्ति की तुलना करने के पहले इस बात की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है कि युद्ध के अन्दर जितनी आवश्यकता सैनिकों को शिक्षा देने की है उतनी ही शिक्षा की आवश्यकता कारखानों में काम करने वालों के लिये भी है। कोई भी राष्ट्र जब तक अपनी आवश्यकताओं को कम न करेगा वह कदापि अपनी सम्पत्ति युद्ध में नहीं लगा सकता है। इस प्रकार जितने कारखाने तथा यंत्र आवश्यकता से अधिक हैं उनका प्रयोग भी युद्ध में होना आवश्यक है। यह बात कार्य रूप में परिणत करना कुछ कठिन है परन्तु इसके लिये संगठन और राजभक्ति की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव शक्ति का सम्बन्ध जहां तक है वह अधिक धनी राष्ट्रों के पास अधिक पर्याप्त है। यही बढ़ती वाले मजदूर शान्ति के समय आनन्द देने वाली वस्तुओं को तयार करते हैं और युद्ध के समय युद्ध में लड़ने का काम तथा युद्ध के लिये अस्त्र तयार करने का काम करते हैं

मानव शक्ति तथा भोजन सामग्री

जर्मनी अपनी आवश्यकता के लिये अधिकांश भोजन सामग्री अपने यहाँ पैदा करता है। यह बात जर्मनी के लिये बड़ी उपयोगी है। यदि यह बात न होती तो जर्मनी कभी युद्ध कर ही नहीं सकता था। देश के अन्दर किसानों तथा मजदूरों का अधिक होना सामाजिक दृष्टि से अवश्य अधिक लाभदायक है परन्तु साथ ही साथ यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि जर्मनी को अपने यहां भोजन सामग्री तयार करने में कितनी मानव शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। १९३५ ई० में इङ्गलैंड के १४,००,००० मनुष्य मछली मारने तथा खेती के काम करने में लगे थे। उसी साल लगभग ५ अरब रुपये की भोजन सामग्री बाहर से इङ्गलैंड में मँगाई गई थी। उसी साल ५ अरब का सामान तयार करने में १६,००,००० मनुष्य इङ्गलैण्ड के कारखानों में काम करने के लिये लगे थे। इँगलैण्ड में भोजन सामग्री बाहर से आती है वह खेतिहर देशों से सामान मंगाता है और उसके बदले में अपने यहाँ से कारखानों में सामान तयार करके उतने ही मूल्य का सामान उन देशों को भेजता है।

इस प्रकार हिसाब लगाने से इङ्गलैण्ड के ४ करोड़ ५० लाख आदमियों को भोजन देने के लिये ३० लाख आदमियों को काम करना पड़ता है या १०० आदमियों को भोजन देने के लिये ६ मनुष्यों को काम करना पड़ता है। १९३३ ई० में जर्मनी में ९२ लाख मनुष्य खेती का काम करते थे और बाहर से भोजन सामग्री जो आई थी उसके बदले में जो सामान कारखानों का तयार किया हुआ भेजा गया था उसमें ३ लाख मजदूर लगे थे। इस प्रकार जर्मनी को भोजन देने के लिये कुल ९५ लाख या १४ फी सदी आदमी लगते हैं।

मानव शक्ति तथा कच्चा सामान

जर्मनी तथा इङ्गलैंड दोनों देशों में कच्चा सामान बहुत कम पाया जाता है। दोनों देशों में उनकी आवश्यकता से अधिक कोयला पाया जाता है। ब्रिटेन में जर्मनी से ज्यादा कच्चा लोहा पाया जाता है परन्तु दोनों देशों में उनकी आवश्यकता से कम लोहा पाया जाता है। जर्मनी में शोरा और सज्जी पाई जाती है। ब्रिटेन में टीन थोड़ा पाया जाता है। इङ्गलैंड सभी कच्चे सामान विदेशों से मंगाता है और उसके स्थान पर सामान तयार करके उन देशों को भेजता है। पहले जर्मनी भी इङ्गलैंड की तरह ही किया करता था। परन्तु जब से नाज़ी संस्था का उत्थान हुआ है तब से जर्मनी ने अपने यहां ही बाहर से आने वाली वस्तुओं को बनाना आरम्भ कर दिया है। वह जो कुछ खनिज पदार्थ उसके यहां पाये जाते हैं उनका प्रयोग पूर्ण रूप से कर रहा है। जैसे कि ब्रन्जविक में लोहा बहुत पाया जाता है। वह उसका पूर्ण रूप से प्रयोग करने का प्रयत्न कर रहा है परन्तु उसका लोहा इतना खराब है कि उसमें व्यय बहुत ज्यादा पड़ रहा है। जर्मनी के अन्दर जो धातु नहीं पाई जाती है उसके स्थान पर जो वस्तु वहां पाई जाती है उसके प्रयोग करने का उपाय किया जा रहा है। इस प्रकार जर्मनी ने अपने कोयले से पेट्रोल तयार किया है। रबर (बूना) कोयले और चूने से बनाया जाता है। रुई और ऊन के स्थान पर पेड़ के रेशों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयत्न किया है परन्तु फिर भी वह अपना समस्त आवश्यकतायें पूरी नहीं कर सका है। इस प्रकार व्यय भी अधिक पड़ता है। एक टन लोहा इस प्रकार तयार करने में बाहर से एक टन मंगाये हुये लोहे की अपेक्षा अधिक खर्च पड़ता है। इङ्गलैंड में एक गैलन पेट्रोल कोयले से तयार करने में जितना खर्च पड़ता है उतने का दो गैलन पेट्रोल बाहर से मंगाया जा सकता है। प्रायः यही व्यय जर्मनी को भी पेट्रोल तयार करने में पड़ता होगा। लेकिन बाहरी माल न मिलने से अपने यहां महँगा मिलना भी अच्छा है। १९३७ ई० में जर्मनी के बने हुये रबर का मूल्य प्राकृतिक रबर से तीन गुना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इङ्गलैंड तथा जर्मनी के मानव शक्ति की तुलना

इङ्गलैंड की जन-संख्या साढ़े चार करोड़ और जर्मनी की जन-संख्या लगभग ६॥ करोड़ है पर पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया के मिलाने से उसकी जनसंख्या लगभग ११ करोड़ हो जाती है। साथ ही साथ जर्मनी ने अब डेन्मार्क, नार्वे, बेल्जियम, हालैण्ड, फ्रान्स आदि देशों पर अधिकार जमा लिया है इससे जर्मनी की जनसंख्या में वृद्धि हो गई है। इङ्गलैंड के उपनिवेशों में लगभग ११ करोड़ अँग्रेज़ बसे हैं। साथ ही साथ उसके उपनिवेशों की मानव-शक्ति है। कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, मिस्र, अफ्रीका के स्थान, पूर्वी द्वीप समूह के स्थान आदि यह सब ब्रिटेन के आधीन हैं। यह बात अवश्य है कि उपरोक्त देशों से इङ्गलैंड मनमानी फौज की भरती नहीं कर सकता है। परन्तु उसी प्रकार जर्मनी को भी विजय किये हुये देशों में कठिनाई होगी। जर्मनी को अपने विजय किये हुये देशों में भी सेना प्रबन्ध के हेतु कुछ न कुछ अवश्य ही रखनी पड़ेगी। इङ्गलैंड को प्रबन्ध के लिये उतनी ही सेना की आवश्यकता है जितनी कि उसे युद्ध के पहले थी।

आर्थिक दशा

इंगलैंड विदेश से अपने यहां सामान मँगा सकता है। यद्यपि जर्मन गोताखोर जहाज़ों, वायुयानों तथा डुबुकनी नावों (टारपीडो बोट्स) के कारण इङ्गलैंड के सामान भरे जहाज़ों को इङ्गलैंड ले जाने में रुकावट पड़ रही है तो भी वह पथ रक्षक सेना द्वारा अपना काम चला रहा है। इङ्गलैंड अमरीका से सामान सरलता पूर्वक ले सकता है। उसे अमरीकन नीति के अनुसार दाम देकर सामान लेना पड़ता है। वह लिये हुये सामान का मूल्य अपने यहाँ के तयार किये हुये सामान से चुकाता है। जिन देशों के साथ युद्ध के कारण जर्मन ब्यापार बन्द हो गया है वहाँ इँगलैंड अपना तयार किया हुआ सामान बेच सकता है। अमरीका को इंगलैंड ने अपने स्थान ठीके पर देकर भी युद्ध सामग्री लेने का विचार किया है और पश्चिमी द्वीप समूह और दूसरे पश्चिमी कुछ जहाजी तथा हवाई अड्डे उसे देकर ५० विध्वंश कारक जहाज खरीदे भी हैं इसी प्रकार वह आगे भी अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने की सोच रहा है।

शान्ति समय में जर्मनी १० करोड़ पौंड (लगभग १५० करोड़ रुपया) का सामान विदेश को भेजता था। वह ब्यापार अब बन्द हो गया है। इँगलैंड उसे अपने हाथ में ले सकता है और उससे अपनी आय बढ़ा सकता है परन्तु युद्ध काल में सामान अधिक तयार नहीं किया जा सकता है इसलिये इँगलैंड को कर्ज़ लेने की आवश्यकता होगी या उसे अपने मित्रों को फुसला कर रुपया लेना होगा जिसे उसने पहले ऋण दे रक्खा है। इँगलैंड अपने स्थायी कोष का भी प्रयोग कर सकता है। १९३९ ई० में ब्रिटिश नागरिकों के पास २० करोड़ पौंड की सिक्योरिटी और एक अरब पौंड की सिक्योरिटी दूसरे देशों की थी। इँगलैंड इस रुपये से भी अपना काम चला सकता है।

जर्मनी के कोष में भी बहुत वृद्धि हुई है। उसने पोलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, बेल्जियम, हालैंड, फ्रांस आदि देशों पर अधिकार जमा लिया है वह इन देशों के धन का प्रयोग कर सकता है।

इँगलैंड तथा जर्मनी में कोयला समान रूप से पाया जाता है। प्रत्येक देशों में २९ करोड़ टन कोयला सालाना निकाला जाता है। अब जर्मनी की शक्ति कोयले में बढ़ गई होगी। लोहे की आवश्यकता दोनों देशों को है। स्पेन से लोहा इंगलैण्ड आता है। अब जर्मनी के हाथ में स्कैंडीनेविया का लोहा है। मैगनीज की आवश्यकता फौलाद बनाने में पड़ती है यह जर्मनी में होता है। परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य में यह बहुत ज्यादा पाया जाता है। रूस से भी जर्मनी को मैंगनीज़ मिल सकता है।

आगे खनिज पदार्थ तथा आवश्यक वस्तुओं की सूची दी जाती है जिससे जर्मनी और इंगलैण्ड की शक्ति का अन्दाज़ हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इँगलैंड और जर्मनी में पाई जाने वाली वस्तुओं की सूची

	कोयला	मैगनीज़	कच्चा लोहा	लोहे का टुकड़ा	फौलाद	तांबा	सीसा	टीन	निकेल	रुई ऊन	फ्लैक्स	लकड़ी	पेट्रोल	रबर	जस्ता
१—इङ्गलैंड	२००	...	५२·४	१६.६	२१.१	...	३०	...	...	७०	३०	...	७६	...	१०
२—ब्रृटिश उपनिवेश तथा भारतवर्ष	६६·३	१·७	६·९	३·९	३·७	३००	४८०	..	१००	१,८१०	...	१,५१०	६७०	१०	४४०
	२६६·३	१.७	५९·३	२०·५	२४·८	३००	५१०	...	१००	१,८८०	३०	१,५१०	७४०	१०	४५०
१—जर्मनी	२२७·७	...	९·७	१६·३०	२०·०१	३०	९०	...	...	२०	३०	...	४८०	...	१८०
२—चेकोस्लोवेकिया और पोलैंड	६३·८	०·११	२·६	२·४०	३·७८	...	१०	...	...	१०	५०	...	२०	...	८०
	२९१·५	०.११	१२·३	१८·७०	२३.७९	३०	१००	...	...	३०	८०	...	५००	...	२६०

तांबा, सीसा, जस्ता, टीन और निकेल भी युद्ध के लिये बड़ी आवश्यक वस्तुएँ हैं। गोलों के ढांचे तथा बिजली के तार तांबे के बनाये जाते हैं। निकेल का प्रयोग सख्त फौलाद के तयार करने में लगता है। जिसकी ब्रिटेन को बहुत आवश्यकता पड़ती है। सीसा का प्रयोग गोलों तथा गोलियों में किया जाता है। जस्ता और टीन का भी प्रयोग बहुत अधिक होता है। रुई और ऊन की आवश्यकता लड़ाई में बहुत है। यह जर्मनी के पास नहीं हैं वह रूस से यह वस्तुयें प्राप्त कर सकता है। परन्तु उसे यह वस्तुयें मध्य एशिया से प्राप्त हो सकेंगी जो जर्मनी से बहुत दूर स्थित है। फ्लैक्स जर्मनी में तथा बाल्टिक प्रान्तों में बहुत पाया जाता है। इंगलैंड के पास यह नहीं है परन्तु इसका प्रयोग भी वर्तमान युद्ध में कम है। पेट्रोल और रबर की आवश्यकता युद्ध में बहुत है। यह बात ठीक तौर पर नहीं कही जा सकती है कि यह सामग्री जर्मनी में कितनी मात्रा में तयार की जाती है। इँगलैण्ड अपने उपनिवेश, पूर्वी द्वीप समूह, अमरीका, इराक से यह सामान मँगा सकता है। रूमानिया, रूस आदि से जर्मनी को पेट्रोल मिल सकता है। सज्जी और मैगनीज़ की पैदावार जर्मनी में बहुत है।

आगे संसार के उन देशों की तालिका दी जाती है जहाँ से लड़ाई में प्रयोग होने वाली वस्तुयें निर्यात की जाती हैं। तालिका में निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा प्रकट की गई है। तालिका के अंक १० लाख टनों में दिये गये हैं। यह ध्यान देने की बात है कि ओसलो राज्यों तथा डेनूब राज्यों पर प्रायः जर्मनी का प्रभुत्व हो गया है और वहाँ से इंगलैण्ड को सामान अब बिलकुल प्राप्त नहीं हो सकता है। इटली और यूनान युद्ध में सम्मिलित हो गये हैं इसलिये वे अपना सामान विदेशों को न भेज सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ाई में प्रयोग होने वाली वस्तुओं का निर्यात

	कोयला	कच्चा लोहा	मैंगनीज़	लोहे का ढला	फौलाद	तांबा	सीसा	जस्ता	टीन	निकिल	रुई	ऊन	फ्लैक्स	लकड़ी	पेट्रोल	रबर
१—स्पेन, पुर्तगाल और दक्षिणी अमरीका	०·२	४·७	०·४०	...	...	५२०	३००	२००	३०	...	३८०	२००	...	...	३०,०००	२०
२—संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१४·२	१·३	...	०·८	०·३४	२७०	२०	१०	...	...	१,२४०	...	...	...	२२,०००	...
३—एशिया और अफ्रीका (जापान, चीन, स्याम, डच पूर्वी द्वीप समूह, बेल्जियम कांगो और पुर्तगीज़ अफ्रीका)	७	२·२	०·१२	०·३८	०.१०	७०	१०	...	७०	....	१४०	१०	...	२०	१५,०००	४००
४—रूस और बाल्टिक राज्य	१·२	०·३५	·१	०·१४	....	....	...	...	...	...	१६०	...	८०	...	१,८००	...
५—इटली और डेनूब नदी के राष्ट्र (हंगरी, यूगोस्लेविया, रूमानिया और बलगेरिया	०·२	०·६	...	०·०१	०·०२	३०	४०	८०	...	...	...	...	२०	...	५,७००	...
६—यूनान, टर्की, मिस्र, अरब, इराक, ईरान, और अफगानिस्तान	०·३	०·३	...	...	...	...	१०	१०	...	...	४१०	३०	...	...	४,०००	...
७—ओस्लो राज्य (नार्वे, डेनमार्क, फिनलैंड, आइस-लैंड, हालैंड, बेल्जियम और स्विटज़रलैण्ड	११·८	१७·५	०·०१	०·५८	०·४७	३०	१०	३०	...	...	...	६०	१२०	१०	...	...

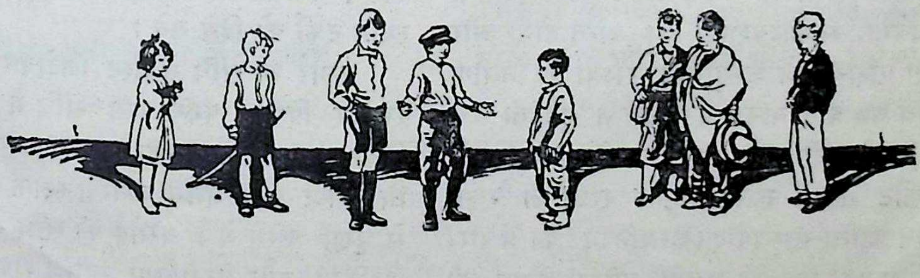

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस की विदेशी नीति

रूस पहले एक छोटा सा राज्य था उस समय उसके राज्य की कोई प्राकृतिक सीमा न थी। ५०० साल तक लगातार युद्ध तथा परिश्रम करने के पश्चात् रूस का साम्राज्य विस्चुला नदी से पीले सागर तक और आर्कटिक बृत्त से काकेशस पर्वत तक फैल गया। साइबेरिया की ओर फैलने में ही रूस को युद्ध नहीं लड़ना पड़ा शेष सभी ओर उसे घोर युद्ध का सामना करना पड़ा था। जब तक रूस को बड़ी नदियों और समुद्रों की प्राकृतिक सीमा नहीं मिली तब तक वह युद्ध करता रहा। उसे युद्ध में बड़ी बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ीं तथा हार स्वीकार करनी पड़ी थी।

इन बड़ी कठिनाइयों का प्रभाव रूस के राजनीतिज्ञों पर पड़ा और वह अपने पड़ोस वाले राष्ट्रों को अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे। सदैव ही रूस अपने समीप वाले राष्ट्रों पर संदेह रखता है। यह बात उसके पश्चिमी समीपवर्ती देशों के लिये और भी अधिक सत्य है। अविश्वास के कारण ही रूस में देश की स्थायी रक्षा की नीति का जन्म हुआ। रूस के बड़े राज्य, उसकी फूट और धन आदि के कारण उसके पश्चिमी समीपवर्ती राष्ट्र सदैव उस पर धावा मारने के लालायित रहते थे। इसी कारण रूस के विदेशी विभाग का ध्यान देश की सीमा की रक्षा की ओर पहले पहल आकर्षित हुआ और यही उसकी प्रधान नीति का कारण बना।

जब १९१७ ई० में रूस में क्रान्ति हुई, जार के शासन का अंत हुआ और प्रजा का राज्य स्थापित हुआ तो रूस की नीति में कुछ अन्तर पड़ गया। रूस के अधिकारियों ने आशा की थी कि योरुप के अन्दर वर्ग-युद्ध हो जावेगा, साम्राज्यशाही का अन्त होगा और योरुप तथा एशिया में कम्यूनिस्ट राज्यों का निर्माण होगा। जब यह बातें योरुप में घटित न हुई तो रूस की नीति फिर बदली और वह अपनी प्राचीन नीति पर फिर लौट गया। रूसी राष्ट्रीय राजा की रक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति-साम्यवाद (कम्यूनिज्म) का प्रचार, संसार में मज़दूरवाद की उन्नति और पूंजीवाद की अवनति रूसी विदेशी नीति के मुख्य आशय हो गये। आदि के रूसी नेता तो अपनी नीति के सच्चे थे परन्तु बाद के नेता अपनी नीति पर जटिल न रहे। इसका एक कारण यह भी था कि संसार में क्रान्ति न हो सकी और क्रान्ति होने की सम्भावना जितनी दूर होती गई उतना ही अधिक रूप में वहां को प्राचीन बातों का प्रचार होता गया।

सोवियट सरकार का आदिकाल जर्मनी से अपने देश की रक्षा के लिये लड़ने में व्यतीत हुआ।

लैनिन रूसी प्रजा को शान्ति देने के लिये जर्मनी से संधि करना चाहता था। उसे आशा थी कि जर्मनी देश का बिना कोई भाग या सैनिक हर्जाना लिये संधि कर लेगा। जर्मन नर्म दल के लोग भी रूस से संधि के इच्छुक थे परन्तु लूडेन डार्फ और होफमैन जर्मन सेनापतियों ने समझ लिया था कि रूस की सैनिक शक्ति निर्बल हो गई है। इसलिये वह रूस को भली भांति परास्त करना चाहते थे। जर्मन अग्रगामी लोग रूस को जर्मन उपनिवेश के लिये अपने अधिकार में करना चाहते थे। यूक्रेन के धनी मैदान पर अधिकार प्राप्त करने के इच्छुक थे। उनकी नीति थी कि वह समस्त रूस पर अधिकार प्राप्त करते परन्तु नर्म दल वाले रूस को स्वतंत्र रख कर अपना मित्र बना कर रखने के इच्छुक थे।

जर्मन साम्राज्यवादियों की विजय हुई और उन्होंने ३ मार्च १९१८ को ब्रेस्टलिटोवास्क और २७ अगस्त १९१८ ई० को बर्लिन की संधि में रूसियों पर अपनी शर्तें लाद दीं। एस्टोनिया, लैटविया, लिथुवेनिया, रूसी पोलैंड और फिनलैंड के प्रान्त जर्मनी ने रूस से ले लिये। यूक्रेन और जार्जिया के प्रान्त स्वतंत्र बनाये गये। कार्स, बातून और अर्दीहम के स्थान टर्की को दिये गये।

वर्साई की संधि ने ब्रेस्ट लिटोवास्क की संधि को रद्द कर दिया। परन्तु रूस संधि में निमंत्रित नहीं किया गया और इसका मुख्य कारण यह था कि मित्र राष्ट्र और जर्मन जनरल स्टाफ दोनों साम्यवाद से घृणा करते थे। वर्साई की संधि में लिथुवानिया, लैटविया और एस्टोनिया स्वतंत्र राष्ट्र बनाये गये। पोलैंड कुछ रूसी भाग लेकर स्वतंत्र बनाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113728

फिनलैंड को स्वतंत्रता दे दी गई। इस प्रकार मित्र राष्ट्रों ने साम्यवादी रूस और योरुप के बीच में विरोधी राज्य स्थापित कर दिये जिससे योरुप और सोवियट मत का प्रभाव न पड़ सके।

१६१९ ई० के आरम्भ काल में रूस में सामान्य वादी तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सभा की स्थापना हुई। इसे कोमिनटर्न कहते हैं। इस संस्था का आशय था कि वह संसार के दूसरे राष्ट्रों में सामान्य वाद के लिये क्रान्ति का प्रचार करे। इसलिये उस काल में रूस की विदेशी नीति इसी रंग में रंगी हुई थी। बबेरिया और हंग्री में अल्प जातीय साम्यवादी एकाधिपत्य की स्थापना भी हुई जिससे लैलिन के विश्वास को कुछ प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। साम्यवाद नीति के सिद्धान्त में यह उल्लेख था कि जिन राष्ट्रों में क्रान्ति होगी उन्हें स्वतंत्र रूप से छोड़ दिया जावेगा और वह रूस से अलग होकर रह सकेंगे। परन्तु कार्य रूप में यह सिद्धान्त परिणत न हो सका। इसका मुख्य कारण यह था कि अपनी स्वयं रक्षा करने के लिये वाध्य था इसलिये वह अपने समीपवर्ती छोटे राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व रखना चाहता था जो राष्ट्र मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध और साथ थे वहां पर साम्यवाद के सिद्धान्तों का पालन किया जाता था और जिन राष्ट्रों से रूस को खतरा था वहां पर इसका पालन पूर्णरूप से नहीं किया जाता था।

जब युद्ध का अंत हुआ तो रूस की दशा बड़ी शोचनीय थी वह अपनी दरिद्रता को दूर करने के लिये अपना व्यापार बढ़ाने के लिये इच्छुक था। उसे अपनी रक्षा भी करनी थी। पूर्व की ओर जापान उसका बैरी था। पश्चिम की ओर जर्मनी तथा दूसरे राष्ट्र थे। सचमुच ही रूस उस समय बड़े संकट में फँसा था।

विश्व क्रान्ति की असफलता

१९२२ ई० तक यह बात साफ हो गई थी कि विश्व क्रान्ति असफल हुई। साम्यवाद की पराजय तथा पूंजीवाद की विजय योरुप में हुई। चीन के साम्यवादी और चियांक-काई-शेक से भी १९२७ ई० में रूस को निराशा हो गई। इसलिये रूस को विदेशों से फिर मित्रता करनी पड़ी।

१९२३ ई० में ईरान, टर्की और जर्मनी से रूस का मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो गया था, परन्तु कोमिनटर्न की नीति के कारण इन देशों में भी रूस के विरुद्ध आवाज़ उठने लगी और साम्यवाद पर रोक लगा दी गई। १९२४ ई० में इँगलैण्ड की मज़दूर सरकार के समय वहां पर साम्यवाद का प्रचार बहुत बढ़ गया था और इँगलैण्ड की प्रजा उससे भयभीत हो गई थी।

स्टैलिन

स्टैलिन पक्का साम्यवादी नहीं है वह एक चतुर राजनीतिज्ञ है। जब उसके हाथ में रूस की बागडोर आई तो उसने रूस की उन्नति की ओर अधिक ध्यान दिया। जब कभी उसके साम्यवादी मित्र उससे कम्यूनिज्म या सदैव क्रान्ति या संसार क्रान्ति की बात छेड़ते थे तो वह एक राज्य के भीतर समाजवाद की चर्चा करता था। वह इसी सिद्धान्त की ओर कम्यूनिस्ट दल का ध्यान आकर्षित करना चाहता था

ट्राटस्की, जिनोवीय, कामेनेव आदि साम्यवादी (कम्यूनिस्ट) रूसी नेता सदैव क्रान्ति और अन्तरराष्ट्रीय क्रान्ति के चाहने वाले थे। स्टैलिन अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिये इन नेताओं को अपने मार्ग से अलग करना चाहता था। इस कारण वह उनके साथ बहुत कम रहने लगा। यही कारण था जो १६२४ और १६३५ ई० के बीच मास्को में १९२८ ई० में कोमिनटर्न लोग केवल एक अन्तर्राष्ट्रीय काँग्रेस कर सके। कांग्रेस में प्रथम पंचसाला योजना रूस के लिये तयार की गई। यह योजना राष्ट्रीय समाजवादी तथा संसार क्रान्ति के सिद्धान्तों के मध्य एक प्रकार की संधि कराने वाली थी। इस कारण इसका विरोध स्थानीय कम्यूनिस्ट दल न कर सका और धीरे धीरे उसका अंत हो गया।

१९२४ से १९२९ तक संसार के लिये शान्ति का समय था। संसार में क्रान्ति के लिये स्थान न था। जापान भी राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया था। रूस को किसी राष्ट्र का भय न था। वह अपने कारखानों को अपनी योजना के अनुसार उन्नति दे रहा था और अपने देश के तैयार सामान को बाहर बेचने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता थी इस कारण रूस ने अपनी विदेशी नीति को बदल दिया और समस्त राष्ट्रों में मैत्री का भाव स्थापित किया। १९२४ ई० में इटली के साथ रूस की संधि हुई। १९२५ ई० में जर्मनी के साथ मित्रता और एक दूसरे पर आक्रमण न करने वाली संधि हुई।

वाइमर सरकार के आधीन जर्मनी में अग्रगामी नेताओं ने रूस का विरोध नहीं किया और रूस की जर्मनी के साथ घनिष्ट मैत्री हो गई। जर्मनी का अपनी सेना को शिक्षा देने के लिये रूस में अच्छा अवसर प्राप्त हो गया। १९३२ ई० तक रूस और जर्मनी के मध्य खूब व्यापार बढ़ा।

पूर्व की ओर गृह युद्ध के कारण चीन की दशा बहुत खराब हो गई थी। इसलिये रूस को पूर्व अथवा पश्चिम से किसी प्रकार का भय नहीं था। उस समय रूस की विदेशी नीति व्यापार निर्यात और विदेशी ऋण पर निर्भर थी।

उस समय संसार के राष्ट्र युद्ध के विरुद्ध थे और शान्ति चाहते थे रूस को भी किसी प्रकार का भय न था इसलिये उसने आक्रमण न करने वाली नीति का अनुशरण किया और अपने समीपवर्ती लैटविया, एस्टोनिया, पोलैंड, रूमानिया, टर्की और ईरान आदि राष्ट्रों से एक दूसरे पर आक्रमण न करने वाली (अनाक्रमण) संधि कर ली। फिनलैंड और फ्रान्स से भी ऐसी ही संधि की गई। इटली के साथ भी मित्रता की संधि की गई। जेनेवा की बैठक में जब डिसआर्मामेन्ट (अशस्त्रीकरण) सभा हुई तो रूस ने कहा कि केवल अशस्त्र होने से ही संसार में शान्ति स्थापित हो सकती है। रूस ने इटली और जर्मनी के साथ सभा में सहमत प्रगट किया था।

१९२९ ई० में जब संसार में आर्थिक संकट में बादल छा गये तो कोमिनटर्न (साम्यवादी) लोगों को संसार क्रान्ति के प्रचार का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। संसार में बेकारी के बादल उमड़ रहे थे। मजदूर, सैनिक, किसान आदि सभी लोगों की स्थिति शोचनीय हो रही थी, उनके बीच क्रान्ति की आग सुलगना कोई कठिन कार्य न था। नाजी संस्था के साथ तो साम्यवादियों ने सहमत किया परन्तु साम्राज्यवादी फैसिस्ट का उन्होंने घोर विरोध किया वह संसार के समाज में क्रान्ति का प्रचार कर रहे थे। उनका प्रचार भी खूब हुआ और योरुप में उनका बोल बाला हो गया। रूस की सरकार विदेशी साम्यवादी दल की रुपये से सहायता कर रही थी और अपने देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये दूसरे देशों की सहायता चाहती थी और अपने व्यापार को उन्नति देने का प्रयत्न कर रही थी।

१९३१ ई० में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया और उसे शीघ्र ही अपने अधिकार में कर लिया। जापान रूसी मंगोलिया की सीमा की ओर बढ़ रहा था। यह रूस के लिये बड़ी भयानक स्थिति थी। रूस में दक्षिण को ओर एकता के प्रश्न पर गृहयुद्ध सा होता दिखाई पड़ रहा था। रूस की प्रथम पंच वर्षीय योजना संकट-काल में होकर चल रही थी। पूर्व की ओर चीन के साथ कूटनीति की संधि के सिवा रूस कुछ भी न कर सकता था। परन्तु उसका नाता चीन से १९१७ ई० में भंग हो चुका था। पश्चिम की ओर एकाधिपतियों की शक्ति बढ़ रही थी। १९३३ ई० में हिटलर की विजय हुई और वह जर्मनी का चान्सलर बना। हिटलर ने अपनी मीन केम्फ नामक पुस्तक में जिस नीति का वर्णन किया था। उसका प्रचार जर्मन अग्रगामी लोग करने लगे। हिटलर ने भी कहा कि हमें अपने राज्य को बढ़ाने की आवश्यकता है परन्तु यदि आज हम इस प्रश्न की ओर ध्यान देते हैं तो हमें रूस की भूमि के सिवा योरुप में और कहीं स्थान दिखाई नहीं पड़ता है। हिटलर ने साम्यवादी दल का तो घोर विरोध किया परन्तु उसने रूस के साथ मित्रता का व्यवहार रक्खा। स्टैलिन ने हिटलर से स्वयं बातचीत करके जर्मनी के साथ आक्रमण न करने वाली संधि करने का विचार किया। वह जापान के साथ युद्ध करना चाहता था परन्तु युद्ध में वह किसी न किसी राष्ट्र की सहायता चाहता था।

सभी योरुपीय राष्ट्र एकत्रित होकर अपनी रक्षा करते हुये शान्ति से रहना चाहते थे। इसी कारण मित्र राष्ट्र की स्थापना हुई थी। रूस उससे अलग था क्योंकि उससे उसके प्रान्त लेकर स्वतंत्र बनाये गये थे अब वही प्रान्त उसके लिये लाभदायक सिद्ध हुये। जर्मनी एकाएक रूस पर आक्रमण न कर सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था इसलिये रूस ने भी अपनी पुरानी नीति की अवहेलना की और १९३४ ई० में वह सहर्ष मित्र राष्ट्र में सम्मिलित हो गया। रूस पश्चिमी राष्ट्रों के साथ मित्रता करने का इच्छुक था परन्तु सब से बड़ी कठिनाई यह थी कि फ्रांस और इंगलैंड रूस तथा साम्यवादी दल का अविश्वास करते थे। इसी बीच १९३५ ई० में रूस की नोति सफल हुई और रूस की संधि फ्रान्स और चेकोस्लोवेकिया के साथ हो गई परन्तु इँगलैंड ने कोई संधि रूस के साथ नहीं की केवल इँगलैण्ड के दो मन्त्रो स्टैलिन से उस साल मिले।

स्टैलिन को इंगलैंड के इस रुख पर शोक हुआ। रूसी पंचवर्षीय योजना समाप्त हुई और दूसरी पञ्च वर्षीय योजना का आरम्भ हुआ। रूस संसार का सबसे अधिक प्रभुत्वशाली, उन्नतिशील देश हो रहा था। रूस संसार शान्ति का नेतृत्व कर रहा था। १९३५ ई० में रूस में एक नया विधान बना दिया गया। रूस के मत को चारों ओर फैलाने लगा। जर्मनी से रूस को भय था। इसलिये रूस की सरकार साम्यवादियों को प्रोत्साहन दिया। साम्यवादी फैसिस्ट दल का विरोध कर रहे थे इस लिये उनका स्वागत पश्चिम के सभी राष्ट्रों में किया गया। १९३६ ई० में फ्रान्स में पापुलर फ्रान्ट गवर्नमेन्ट शक्ति में आई। स्पेन में भी इसी प्रकार स्थापित हुई। चेकोस्लोवेकिया, ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र में भी कम्यूनिस्ट सदस्यों की बृद्धि हो गई। रूस के कम्यूनिस्ट दल के दूत सभी राष्ट्रों में वर्तमान थे इसलिये प्रत्येक देश में स्टैलिन का अच्छा प्रभुत्व हो गया।

रूस की बढ़ती हुई दशा देख कर जर्मनी तथा इटली भयभीत हुये। इस लिये उन्होंने पश्चिमी योरुप को रूस का भय दिलाना आरम्भ किया और कहा कि वह साम्यवादी सर्वनाश से योरुप को बचाना चाहते हैं। जब फ्रान्स और रूस की संधि हुई तो हिटलर ने राइनलैण्ड पर अधिकार कर लिया।

चार मास के पश्चात् स्पेन में गृह युद्ध छिड़ा और यह समाचार ज्ञात हुआ कि जनरल फ्रैंको को इटली से सहायता मिल रहीं है। रूस ने स्पेन की साम्यवादी सरकार को सहायता दी। इसका एक कारण यह भी था कि फ्रान्स की दक्षिणी सोमा पर युद्ध छिड़ने का भय था और फ्रान्स से रूस की संधि हो चुकी थी और साथ ही साथ स्टैलिन रूस पर अपना प्रभुत्व भी जमाना चाहता था। इस कार्य में स्टैलिन को इंगलैंड अथवा फ्रान्स से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिली और वह अपने कार्य में निष्फल हुआ। उस समय पश्चिमी योरुप के कुछ सच्चे राजनीतिज्ञों का विचार था कि सचमुच ही हिटलर और मुसोलनी पश्चिमी सभ्यता के लिये युद्ध कर रहे थे। कुछ लोगों का यह भी ध्यान था कि किसो प्रकार जर्मनी और रूस के बीच युद्ध आरम्भ करा दिया जावे। इसी कारण यह प्रचार किया गया कि हिटलर पूर्व की ओर बढ़ने की उत्कंठा रखता है और उसके लिये तयारी कर रहा है इस प्रचार से स्टैलिन को सन्देह उत्पन्न हो गया।

१९३६ ई० में जर्मनी और जापान से सन्धि हुई। १९३७ ई० में इटली भी जापान के साथ मिल गया फ्रान्स में रेडिकल सरकार की स्थापना हुई और चीन से गृह-युद्ध का अंत हुआ और सभी एक साथ मिलकर जापान का सामना करने लगे।

जर्मनी में प्रचार हो रहा था कि जर्मनी यूक्रेन को अपने अधिकार में कर ले। चेक लोगों का प्रश्न भी छिड़ा था। हिटलर चेकोस्लोवेकिया पर अधिकार करना चाहता था। पश्चिमी राष्ट्र लड़ने को तयार न थे। म्यूनिक में एक सभा हुई। जिस में फ्रान्स, इटली, जर्मनी और इंगलैंड सम्मिलित हुये परन्तु रूस को निमंत्रित नहीं किया गया। रूस ने चेकोस्लोवेकिया की रक्षा का भार उठाया था। इस पश्चिमी नीति से स्टैलिन की आशा पर फिर पानी फिर गया।

रूस ने पोलैंड तथा जर्मना से बातचीत आरम्भ की। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि जब जर्मनी और रूस के बीच शब्दों का युद्ध चल रहा था तो उनके भीतरी सम्बन्ध मैत्री भाव से चलते रहे। उनमें आपस में लेन देन तथा व्यापार होता रहा। कुछ नाजी नेता रूस से मित्रता रखना चाहते थे उन्हीं के प्रभाव के कारण रूस और जर्मनी के बीच मित्रता का व्योहार होता रहा। हिटलर फिर भी साम्यवाद के विरुद्ध चिल्ला रहा था। वह पूर्व की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर बढ़ना चाहता था। हिटलर की चाल पश्चिमी राष्ट्रों की समझ में न आ सकी।

मार्च १९३९ में हिटलर ने बचे हुये चेक प्रान्त पर अधिकार कर लिया और प्रेग नगर पर नाज़ी झण्डा फहराने लगा। इटली भी कोर्सिका, ट्यूनिस और नीस को अपने अधिकार में करने की पुकार लगा रहा था। इंगलैंड को हिटलर की चाल का पता लगा और शीघ्र ही फ्रान्स तथा इंगलैंड ने पोलैंड और रूमानिया को सहायता प्रदान करने का बचन दिया। अप्रैल के महीने में रूस से भी इंगलैंड ने बातचीत करनी आरम्भ की। जर्मनी जो कि कुछ समय पहले यूक्रेन की बांट की बातचीत पोलैंड से कर रहा था, वह वाइमर जर्मन नीति के कारण लौट आया और उसने रूस के साथ घनिष्ट सम्बन्ध करने का निश्चय किया। थोड़े दिनों के पश्चात् रूस और जर्मनी में २४ अगस्त १९३९ को संधि हो गई। जिस प्रकार इंगलैंड ने रूस को धोका दिया था उसी प्रकार उसे भी धोका हुआ। पश्चिमी राष्ट्र चाहते थे कि रूस उनके लिये जर्मनी से युद्ध करे। परन्तु उन्हें यह समझ लेना चाहिये था कि जब उन्होंने रूस के लिये युद्ध नहीं किया था तो फिर रूस उनके लिये युद्ध करने को कैसे तयार हो सकता था। जर्मनी रूस को केवल तटस्थ बनाना चाहता था। इसलिये रूस ने जर्मनी की बात मान ली। पोलैंड पर आक्रमण हुआ और उसे रूस तथा जर्मनी ने बाँट लिया।

पोलैंड के बँटवारे के पश्चात् रूस की हज़ारों मील लम्बी सीमा हो गई जिसमें कोई प्राकृतिक रोक न थी। उसकी सीमा जर्मन राज्य की सीमा से मिल गई। इसलिये उसे अपनी रक्षा के प्रबन्ध करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। अक्तूबर १९३८ ई० में रूस ने टर्की के विदेशी मंत्री को मास्को बुलाया और काला सागर के मार्ग को बन्द करने का परामर्श किया परन्तु परामर्श में उसे असफलता हुई। उसके बाद रूस उत्तर की ओर झुका और उसने बाल्टिक राज्यों से अपनी रक्षा के लिये सन्धि करनी चाही और उन से जहाज़ी सैनिक और हवाई अड्डों की मांग पेश की। फिनलैंड ने उस की मांगें ठुकरा दीं। इस से ३० नवम्बर को लाल सेना ने फिनलैंड पर आक्रमण किया। शीतकाल में फिनिश सेना ने ज़ोरों से रूसी सेना का सामना किया। जब रूस ने देखा कि फिनलैंड की सहायता करते हुये मित्रराष्ट्र जर्मनी पर आक्रमण करेंगे तो उसने तेज़ी से फिनलैंड को देखकर सन्धि कर ली। रूस की नीति बर्तमान युद्ध के सम्बन्ध में यह है कि वह न तो इंगलैंड की विजय देखना चाहता है और न जर्मनी की। वह दोनों को लड़ते लड़ते सर्वनाश होते देखना चाहता है। इसी में उसकी रक्षा हो सकती है। इसी कारण वह ऐसी नीति का अनुसरण कर रहा है जिस से जर्मनी अथवा इंगलैंड दो में से कोई भी अधिक शक्तिशाली न हो जाँय। यदि जर्मनी और इंगलैंड दोनों लड़ते लड़ते नष्ट हो गये तो फिर रूस को अपने राज्य के बढ़ाने और कम्यूनिज़म (साम्यवाद) के प्रचार करने में अधिक सफलता प्राप्त होने की आशा है परन्तु इस युद्ध का अंत कैसे होगा और उसके पश्चात् क्या होगा इसका ठीक अनुमान लगाना अभी असम्भव है।

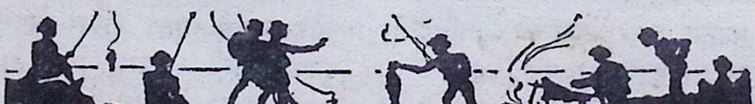

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नई योजना

एकदम नई और महत्वपूर्ण प्रामाणिक पुस्तकमाला

लेखक—"भूगोल"-सम्पादक पं० रामनारायण मिश्र बी॰ए॰

भाग १

।=)

हिन्दी में अनुपम उपयोगी साहित्य की रचना

एक देश पर एक पुस्तक सभी देशों का निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टि-कोण से सर्वांग-पूर्ण विवरणात्मक परिचय।

२०० मासिक भागों में समाप्त

कल्पित उपन्यासों से कहीं अधिक रोचक

वार्षिक ४)

मासिक डाकव्ययसहित

इस पुस्तक-माला में अपने देश के सभी प्रान्तों, देशी राज्यों और संसार के सभी देशों पर लगभग २०० पुस्तकें रहेंगी प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ-संख्या लगभग १५० होगी। कुछ पुस्तकों की रूपरेखा भिन्न भिन्न देशों की यात्रा के अवसर पर तयार की गई थी। कुछ पुस्तके उन उन देशों में ही बैठकर लिखी जावेंगी।

भाग १ ३१ जनवरी १९३९ में प्रकाशित

सुन्दर चित्रों और नकशों से सुसज्जित

आँखों देखा संसार का सच्चा परिचय

अपने शहर के पुस्तक विक्रेता या

"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद

को आर्डर भेजिये।

अब तक इस माला में लंका, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैण्ड और रूस आदि अंक प्रकाशित हो चुके हैं।

यदि आप अब तक हमारे इस पुस्तकाकार सचित्र मासिक देश-दर्शन के ग्राहक नहीं हैं तो ४) रु० भेज कर तुरन्त इसके ग्राहक बन जाइये। नमूने की प्रति के लिये छः आने का टिकट भेजें।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २६० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया— इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों की बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग २८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। संसार का एक बड़ा नक़्शा जिसमें उन जातियों का निवास स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ९० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

मार्च १९५१

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/
Single Copy As 5/

सम्पादक-रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर परिशिष्टांक (एटलस)

"भूगोल" का महासमर अंक लोगों को कैसा पसन्द आया यह आपको विदित हो गया होगा। इस विशाल अंक के निकल जाने के बाद भी समर क्षेत्र में तरह तरह के परिवर्तन हुये हैं। जिन स्थानों को पहले बहुत कम लोग जानते थे उन्हें लड़ाई ने अपूर्व ख्याति दे दी। फिर भी अपने हिन्दी भाषा-भाषियों को उनका ठीक ठीक ज्ञान न हो सका क्योंकि ये नाम शायद ही किसी पुरानी एटलस या भूगोल की पाठ्य पुस्तक में मिलते हैं।

गत जनवरी १९४१ ई० में भूगोल का **'महासमर परिशिष्टांक'** प्रकाशित हो गया। इसमें अकारादि क्रम से प्रायः सभी स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख वर्तमान लड़ाई के सम्बन्ध में आया है।

यू बोट आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका समझना साधारण पाठकों के लिये कठिन है। इन अज्ञात नामों पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी आपको अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद लेख मिलेंगे। आवश्यक चित्र और नकशे भी दिये गये हैं। पृष्ठ-संख्या ८२, मूल्य केवल ।।) है।

जो सज्जन जनवरी १९४१ से "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० भेजकर चालू वर्ष के ग्राहक बन जायँगे उनको यह अंक उसी चन्दे में मिलेगा। फुटकर अंक चाहने वालों को आठ आने के टिकट अथवा मनीआर्डर भेजना चाहिये।

निवेदक—

रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अमरीका की स्वर्ण-समस्या	१
२—सबमेरीन (पनडुब्बा जहाज)	५
३—जर्मनी के लिये रूसी पेट्रोल	८
४—पेरीम और सकोत्रा...	९
५—मोती निकालना	१०
६—श्वेत रीछ	११
७—यूनानी जाति	१२
८—हवाई युद्ध	१५
९—हीरे की खान	१९
१०—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] चैत्र, सं० १९९८, मार्च, १९४१ ई० [अङ्क ११

अमरीका की स्वर्ण समस्या

इस समय संयुक्तराष्ट्र अमरीका के पास पारस मणि का सा हाथ है। जहाँ कहीं अमरीका अपनी भोजन सामग्री भेजता है वह स्वर्णरूप में परिणत होती प्रतीत होती है। उसके बदले अमरीका में तुरन्त सोना पहुँचता है। अमरीका टाइपराइटर, वायुयान, गैसोलिन और रुई आदि बड़ी मात्रा में विदेशों को भेजता है उसके बदले में भी उन देशों से सोना लेता है। अफ्रीकन लोग और रूस के निवासी साइबेरिया की भूमि से सोना खोदते हैं। वह अमरीका के पास जाता है और वहां पृथ्वी के भीतर गाड़ दिया जाता है। अमरीका उस सोने का प्रयोग नहीं कर सकता है और सम्भव है कि वही सोना अमरीका के लिये घातक सिद्ध हो।

अमरीका के पास लगभग ६३,००,००,००,००० रुपये का सोना है। ६ वर्ष पहले अमरीका के पास केवल इसका चौथाई सोना था। ६ साल के भीतर अमरीका में सोने की इतनी अधिकता हुई है जिसे संसार २० सदियों में भी एकत्रित नहीं कर सका है। संसार में जितना ज्ञात सोने का भंडार है उसका ६० प्रतिशत सोना अमरीका में है। वहां पर इतना अधिक सोना है कि योरुप और अमरीका में जितने कागज़ के नोट चलते हैं उनके स्थान पर स्वर्ण सिक्के चलाये जा सकते हैं।

वर्तमान महासमर और उसके पश्चात् भी संसार की स्वर्ण खानों से जो सोना निकलेगा वह भी अमरीका चला जावेगा क्योंकि प्रत्येक औंस सोने के लिये संयुक्तराष्ट्र १२३ रुपये मूल्य देता है। संयुक्त राष्ट्र सोना ले लेता है और उसके बदले में वह संसार को डालर देता है जिसे आजकल संसार के लोग सब से अधिक सुरक्षित मानते हैं।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका के ख़ज़ाने को अब स्वर्ण की आवश्यकता नहीं है। संयुक्त राष्ट्र में स्वर्ण समस्या बड़ी जटिल हो रही है। इस एकत्रित सोने का वहां क्या उपयोग किया जावे? क्या सोने का मोल लेना बन्द कर दिया जाय? क्या सोने का मूल्य घटा दिया जाय? क्या सोना संसार के दूसरे राष्ट्रों को ऋण रूप में दे दिया जावे? क्या उसके सिक्के बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था उससे अधिक सिद्ध हुआ। १८५० ई० में ४,९०,००,००,००० रु० का सोना था। १९३९ ई० में अमरीका ने २,०१,०४,४९,००० रु० का सोना खरीदा। अब प्रश्न यह है कि यह अधिक सोना अमरीका में कहाँ से गया।

इस सोने का कुछ भाग योरुप के उन देशों से आया जिन्होंने भयभीत हो कर अपनी सम्पत्ति को स्वर्ण रूप में बदल ली और सोने के डलों को अमरीका भेज दिया जिस से वह वहाँ सुरक्षित रह सके। युद्ध के बादलों की घनघोर घटाओं को देख कर संसार की सरकारों ने सोने को बेंच कर डालर खरीदे और फिर उससे उन्होंने वायुयान, मशीन, फौलाद इत्यादि युद्ध सामग्री मोल ली। संयुक्त राष्ट्र के तटस्थता कानून के अनुसार योरुपीय देशों को संयुक्त राष्ट्र से सामान लेने के लिये नक़द दाम चुकाना पड़ा। वह नक़द दाम संयुक्तराष्ट्र में एकत्रित कर रहे थे भारत से भी बराबर अमरीका को सोना जा रहा है। १९३४ ई० के बाद से अब तक संयुक्त ने जितना सामान बाहर से मोल लिया उस से दुगुने मूल्य का सामान बाहर से भेजा। इसलिये जितना मूल्य अमरीका को उसके सामान का अधिक प्राप्त हुआ वह उसे सोने के डलों में भेजा गया। १९३४ ई० के बाद ७,००,००,००,००० रुपये का सोना अमरीका अधिक गया।

संयुक्तराष्ट्र के बन्दरगाहों में जितने जहाज़ चल सकते हैं लगभग सभी जहाज़ों से सोना लादने के लिये आर्मर्डकार तथा गाड़ों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक जहाज से ४९,००० रु० का सोना आर्मर्ड कार ले जाती है। संयुक्तराष्ट्र में जितना सोना आता है वह सब उसके खज़ाने के हाथ बेच दिया जाता है। वहाँ से वह फोर्ट नाक्स और केराटकी भेज दिया जाता है। उस सुरक्षित तथा सैनिकों द्वारा घिरे हुये किले में कोई भी अकेले नहीं घूम सकता है। उस किले के चारों ओर खन्दक तथा खाई बनी है जिस में पानी भरा रहता है। वहाँ कोई अकेले नहीं प्रवेश कर सकता है। सदैव दो व्यक्ति जाते हैं जिनमें एक ताकने वाला रहता है। उस किले का द्वार जो फौलाद का बना है उसमें क्या क्या धातें मिश्रित हैं उसे कोई नहीं जानता है। फाटक की मोटाई एक गज़ है और उनका भार ५६० मन है। इसे खोलने के लिये दो मनुष्यों की आवश्यकता पड़ती है। उसकी रखवाली सदैव सशस्त्र सैनिक करते रहते हैं। संसार के इतिहास में यह खजाना सब से बड़ा है। यह खजाना पृथ्वी में गड़ा है और बड़ा खतरनाक है।

बैंक के अन्दर जितना सोना रहता है उतने ही मूल्य के नोट तथा सिक्के चलाये जाते हैं। परन्तु अमरीका में प्रश्न यह है कि अमरीका के पास जो ६,६०,००,००,००० रु० का सोना है उसका वह क्या उपयोग करे? सदैव यह बात सोची जाती रही है कि जो सोना एकत्रित हो रहा है उसे मुद्रा के रूप में बाहर निकालना पड़ेगा। इससे अमरीका का सालाना घाटा एक प्रकार से काटा जा सकेगा और इससे ५,५०,००,००,००,००० रुपये का राष्ट्रीय ऋण भी हटाया जा सकेगा। यदि यह बात मानी जावे कि नोट इत्यादि निकाले जावें तो यह बात सोचनी पड़ती है कि नियमानुसार अमरीका में वहाँ के चलते नोटों का ४० प्रतिशत सोना रिजर्व रहना चाहिये जो लगभग ७० लाख डालर के होता है। परन्तु संयुक्तराष्ट्र के सोने का केवल ४० प्रतिशत भाग ही नोट और दूसरे मुद्रों का मूल्य होता है। यदि सोने के बराबर ही कागज के नोट का अमरीका में संचालन किया जावे तो यह बात संसार के लिये नवीन होगी और उसका परिणाम क्या होगा इसका अनुमान नहीं किया जा सकता है।

संयुक्तराष्ट्र का गेहूँ, रुई और मशीन विदेश भेजा जाता है उसके बदले में वहां सोना जाता है जिसकी उसे कदापि आवश्यकता नहीं है। वह सोना अब अधिक नहीं चाहता है। तो फिर प्रश्न यह है कि आखिर क्या किया जाय जिस से संसार का काम भली भांति चलता रहे।

यदि सोने का मूल्य घटाया जावे तो उससे संयुक्त राष्ट्र के खजाने को हानि होगी। डालर का मूल्य भी घट जावेगा और फिर संसार में आर्थिक तथा व्यापारिक संकट आ जावेगा जिससे संसार को अभी ही छुट्टी मिली है।

एक दूसरा मत यह है कि अमरीका सोना मोल लेना बिलकुल बन्द कर दे। ऐसा होने से वस्तुओं का मूल्य घट जावेगा जिससे बहुत बुरा प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चला दिये जाँय ? यही प्रश्न संयुक्तराष्ट्र के सामने है।

संयुक्तराष्ट्र के खजाने तथा फेडरल रिजर्व के चतुर विशेषज्ञ लोगों ने इन्हीं प्रश्नों पर अपनी विचार धारा के घोड़े दौड़ाए हैं। यह प्रत्येक प्रश्न या तो बिलकुल निरर्थक दिखाई पड़ते हैं या उनका परिणाम और अधिक संकटमय दिखाई पड़ता है। परन्तु यदि संयुक्तराष्ट्र की सरकार अपनी वर्तमान नीति पर ही चलती रहेगी तो कुछ समय के भीतर संसार का समस्त सोना उसके पास चला जावेगा। अभी ही जितना सोना अमरीका के पास है वह उसके लिये बेकार है। मान लिया जाय कि संसार के राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र से किसी दिन कह बैठें अच्छा आप अपना सामान अपने पास रक्खें आज से सोना धन या सिक्का न माना जावेगा, तो फिर संयुक्तराष्ट्र के सोने का क्या होगा ? वह सब निरर्थक सिद्ध होगा।

अमरीका में सोना विचित्र प्रकार से एकत्रित हुआ। जिस समय संसार में व्यापारिक संकट पड़ा था उस समय लोग बैंकों में जा कर सोना अपने सिक्कों के बदले में मांगते थे और बर्तनों तथा सन्दूकों में सिक्के छिपा कर रखते थे। कुछ लोग उसे दूसरे देश भी भेजते थे। उस समय प्रतीत हुआ कि अमरीकन डालर का मूल्य ही न रह जावेगा। उस समय संयुक्त राष्ट्र ने घोषणा की कि वह चलते हुये नोटों तथा डालरों के बदले सोना न देगी। संयुक्त राष्ट्र से सोने का बाहर भेजना बन्द कर दिया गया। इस प्रकार संयुक्तराष्ट्र के खजाने से सोना बाहर जाना बन्द हो गया।

अमरीका के खजाने ने लगभग बहुत काल तक एक औंस सोने का मूल्य लगभग ७५ रु० देती रही। वह उसी भाव से सोना बेचता भी रहा। संयुक्तराष्ट्र ने सोना बेंचना बन्द कर दिया और प्रति औंस सोने का दाम बढ़ा दिया। दाम बढ़ जाने से लोग सोना बेचने लगे। सोने का मूल्य बढ़ा कर १२३ रु० प्रति औंस कर दिया गया। इस का तात्पर्य यह था कि संयुक्तराष्ट्र में वस्तुओं का

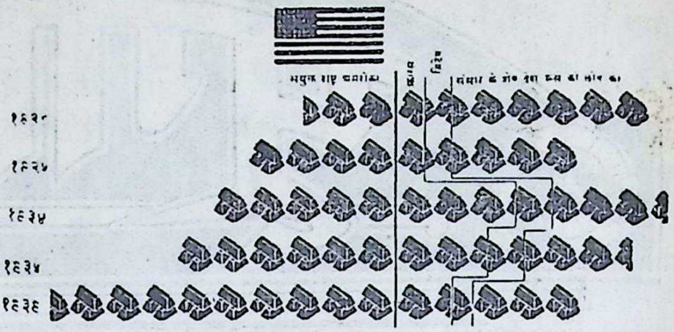

मूल्य बढ़ा दिया जावे और विदेश में घटा दिया जावे जिससे विदेशी लोग अमरीका का सामान मोल ले सकें। जब अमरीका सोने का मूल्य बढ़ा रहा था तो इंगलैंड को एक पौंड के नोट में लगभग १२ रु० का सामान मिलता था। परन्तु जब संयुक्तराष्ट्र ने घोषणा की कि अमरीकन डालर एक औंस के बीसवें भाग के स्थान पर तीसवें भाग के बराबर होगा तो ब्रिटिश लोगों को एक पौंड में १७॥) रुपये का सामान मिलने लगा। उसके बाद संयुक्त राष्ट्र के खजाने ने १२३ रु० एक औंस सोने का मूल्य निश्चित कर दिया। इस से पौंड का मूल्य अमरीकन डालरों के पहले की भांति ही हो गया।

लोगों का अनुमान था कि डालर का मूल्य घटाने से देश की दशा शीघ्र हो सुधर जावेगी परन्तु यह बात नहीं हुई। अमरीका के अधिकांश लोगों का मत है कि सोने का जो मूल्य निश्चित किया गया है वह बहुत अधिक है परन्तु साथ ही बहुत से लोगों का यह भी विचार है कि योरुप के वर्तमान युद्ध के कारण चाहे सोने का मूल्य बढ़ाया जाता और चाहे न बढ़ाया जाता सोना अमरीका में अवश्य बड़ी मात्रा में प्रवेश करता क्योंकि योरुपीय राष्ट्र अमरीका से सामान खरीदते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका की सोने की खानों में समस्त संसार से अधिक सोना निकाला जाता है। वहाँ के निवासियों ने उस सोने को निकालना भी आरम्भ कर दिया है जिसका निकालना पहले हानिकारक था। कनाडा की भी यही दशा है। रूस ने भी बहुत अधिक सोना निकाला और उसके सोने का अधिकाँश भाग संयुक्त राष्ट्र पहुँचा। १९३९ ई० में जितने मूल्य का सोना निकाला गया वह १८५० ई० में जितना सोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था उससे अधिक सिद्ध हुआ। १८५० ई० में ४,९०,००,००,००० रु० का सोना था। १९३९ ई० में अमरीका ने २,०१,०४,४९,००० रु० का सोना खरीदा। अब प्रश्न यह है कि यह अधिक सोना अमरीका में कहाँ से गया।

इस सोने का कुछ भाग योरुप के उन देशों से आया जिन्होंने भयभीत हो कर अपनी सम्पत्ति को स्वर्ण रूप में बदल ली और सोने के डलों को अमरीका भेज दिया जिस से वह वहाँ सुरक्षित रह सके। युद्ध के बादलों की घनघोर घटाओं को देख कर संसार की सरकारों ने सोने को बेच कर डालर खरीदे और फिर उससे उन्होंने वायुयान, मशीन, फौलाद इत्यादि युद्ध सामग्री मोल ली। संयुक्त राष्ट्र के तटस्थता कानून के अनुसार योरुपीय देशों को संयुक्त राष्ट्र से सामान लेने के लिये नक़द दाम चुकाना पड़ा। वह नक़द दाम संयुक्तराष्ट्र में एकत्रित कर रहे थे भारत से भी बराबर अमरीका को सोना जा रहा है। १९३४ ई० के बाद से अब तक संयुक्त ने जितना सामान बाहर से मोल लिया उस से दुगुने मूल्य का सामान बाहर से भेजा। इसलिये जितना मूल्य अमरीका को उसके सामान का अधिक प्राप्त हुआ वह उसे सोने के डलों में भेजा गया। १९३४ ई० के बाद ७,००,००,००,००० रुपये का सोना अमरीका अधिक गया।

संयुक्तराष्ट्र के बन्दरगाहों में जितने जहाज़ चल सकते हैं लगभग सभी जहाज़ों से सोना लादने के लिये आर्मर्डकार तथा गार्डों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक जहाज़ से ४९,००० रु० का सोना आर्मर्ड कार ले जाती है। संयुक्तराष्ट्र में जितना सोना आता है वह सब उसके खज़ाने के हाथ बेच दिया जाता है। वहाँ से वह फोर्ट नाक्स और केराटकी भेज दिया जाता है। उस सुरक्षित तथा सैनिकों द्वारा घिरे हुये किले में कोई भी अकेले नहीं घूम सकता है। उस किले के चारों ओर खन्दक तथा खाई बनी है जिस में पानी भरा रहता है। वहाँ कोई अकेले नहीं प्रवेश कर सकता है। सदैव दो व्यक्ति जाते हैं जिनमें एक ताकने वाला रहता है। उस किले का द्वार जो फौलाद का बना है उसमें क्या क्या धातें मिश्रित हैं उसे कोई नहीं जानता है। फाटक की मोटाई एक गज़ है और उनका भार ५६० मन है। इसे खोलने के लिये दो मनुष्यों की आवश्यकता पड़ती है। उसकी रखवाली सदैव सशस्त्र सैनिक करते रहते हैं। संसार के इतिहास में यह खजाना सब से बड़ा है। यह खजाना पृथ्वी में गड़ा है और बड़ा खतरनाक है।

बैंक के अन्दर जितना सोना रहता है उतने ही मूल्य के नोट तथा सिक्के चलाये जाते हैं। परन्तु अमरीका में प्रश्न यह है कि अमरीका के पास जो ६,६०,००,००,००० रु० का सोना है उसका वह क्या उपयोग करे? सदैव यह बात सोची जाती रही है कि जो सोना एकत्रित हो रहा है उसे मुद्रा के रूप में बाहर निकालना पड़ेगा। इससे अमरीका का सालाना घाटा एक प्रकार से काटा जा सकेगा और इससे ५,५०,००,००,००,००० रुपये का राष्ट्रीय ऋण भी हटाया जा सकेगा। यदि यह बात मानी जावे कि नोट इत्यादि निकाले जावें तो यह बात सोचनी पड़ती है कि नियमानुसार अमरीका में वहाँ के चलते नोटों का ४० प्रतिशत सोना रिजर्व रहना चाहिये जो लगभग ७० लाख डालर के होता है। परन्तु संयुक्तराष्ट्र के सोने का केवल ४० प्रतिशत भाग ही नोट और दूसरे मुद्रों का मूल्य होता है। यदि सोने के बराबर ही कागज के नोट का अमरीका में संचालन किया जावे तो यह बात संसार के लिये नवीन होगी और उसका परिणाम क्या होगा इसका अनुमान नहीं किया जा सकता है।

संयुक्तराष्ट्र का गेहूँ, रुई और मशीन विदेश भेजा जाता है उसके बदले में वहां सोना जाता है जिसकी उसे कदापि आवश्यकता नहीं है। वह सोना अब अधिक नहीं चाहता है। तो फिर प्रश्न यह है कि आखिर क्या किया जाय जिस से संसार का काम भली भांति चलता रहे।

यदि सोने का मूल्य घटाया जावे तो उससे संयुक्त राष्ट्र के खजाने को हानि होगी। डालर का मूल्य भी घट जावेगा और फिर संसार में आर्थिक तथा व्यापारिक संकट आ जावेगा जिससे संसार को अभी ही छुट्टी मिली है।

एक दूसरा मत यह है कि अमरीका सोना मोल लेना बिलकुल बन्द कर दे। ऐसा होने से वस्तुओं का मूल्य घट जावेगा जिससे बहुत बुरा प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा। मध्यस्त कोई मूल्य न होने के कारण देश के भीतर व्यापार का चलन भी कठिन हो जावेगा। सोने में ही किसी वस्तु के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य को हम आँक सकते हैं। इसलिये भिन्न भिन्न देशों के साथ व्यापार करने में सोने की बड़ी आवश्यकता है। यदि सोने का मूल्य न रहा तो फिर केवल वस्तुओं के परिवर्तन द्वारा ही व्यापार का केवल एक साधन रह जावेगा।

डालर ही संसार में एक सिक्का है जिसका मूल्य सोने में नियत है। यदि संयुक्तराष्ट्र सोने के बदले में डालर का देना बन्द कर देता है तो व्यापारिक संसार की स्थिति बड़ी संकटमय हो जावेगी।

संयुक्त राष्ट्र के एक दूसरे आर्थिक विद्वान का मत है कि सोने के सिक्के चलाये जावें। इस प्रकार करोड़ों की मात्रा में सोना प्रजा के हाथ जावेगा परन्तु संयुक्त राष्ट्र के खजाने के दो तिहाई से अधिक सोना प्रजा नहीं ले सकती है। इसके साथ ही साथ सोने का अमरीका में आना नहीं रोका जा सकता है और न अधिक से अधिक सामान बनाने में ही रोक उत्पन्न की जा सकती है।

कुछ विद्वान कहते हैं कि दक्षिणी अमरीका या किसी दूसरे राष्ट्र को जिसके मित्रता की आवश्यकता संयुक्तराष्ट्र को हो उसे ऋण दे दिया जावे। परन्तु ऐसा करने से स्थिति में अधिक सुधार न होगा क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय ऋण का चुकता सोने द्वारा ही किया जा सकता है। संसार में ऐसे बहुत कम राष्ट्र हैं जो नये धन की उत्पत्ति करें और ऋण का चुकता उस धन से कर सकें। वह फिर सोने को ही लाद कर संयुक्तराष्ट्र भेज देंगे और वही स्वर्ण समस्या वहाँ पर फिर उत्पन्न हो जावेगी। अब तक संसार का यह नियम रहा है कि जब सोना खजाने में भरा जाता था तो वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता था। मूल्य बढ़ जाने से सामान बाहर कम जाता था। यही दशा अभी हाल में संयुक्तराष्ट्र की रह चुकी है कि वहाँ पर बाहर से अधिक सामान आता था और कम सामान बाहर भेजा जाता था इसलिये संयुक्तराष्ट्र को विवश होकर सोना बाहर भेजना पड़ा था। योरुप तथा एशिया युद्ध समाप्त होने पर इतना अधिक सामान नहीं तयार कर सकते हैं कि संयुक्तराष्ट्र उनका सामान खरीदे और सोना उन्हें देवे फिर संयुक्तराष्ट्र के निवासी यह बात भी कदापि स्वीकार नहीं कर सकते कि विदेशों से पक्का माल उनके देश में आवे।

इसलिये स्वर्ण समस्या को हल करने के लिये कोई भी उत्तर संयुक्त राष्ट्र के लिये नहीं है। धीरे धीरे संसार का लगभग समस्त सोना संयुक्तराष्ट्र में चला जावेगा और तब फिर क्या होगा?

उस समय संसार के राष्ट्र तथा प्रधान रूप से एकाधिपति वाले राष्ट्र कदाचित् कह बैठेंगे कि वह सोने को मूल्यवान धातु और सिक्का मानने के लिये तयार नहीं है। यह बात तानाशाह (डिक्टेटर) लोग अपने देशों के भीतर अवश्य ही कर सकेंगे। परन्तु उन्हें सोने का प्रयोग या परिवर्तन ढङ्ग का अनुसरण अवश्य करना होगा परिवर्तन करने वाला ढंग बड़ा कठिन है। रूस तथा ब्रिटिश साम्राज्य में सोना अधिक निकलता है। ब्रिटिश साम्राज्य सोने के मूल्य को नहीं छोड़ सकता क्योंकि इससे अफ्रीका तथा कनाडा को बड़ी भारी हानि होगी। ब्रिटिश साम्राज्य में जो सिक्का चलता है वह बड़ा लाभदायक है।

यदि संसार में शान्ति की स्थापना की जावे, सभी देश सुखी बना दिये जावें और व्यापार की उन्नति हो जावे तो स्वर्ण समस्या अपा से आप ही तै हो जावेगी। यदि संसार में धनी राष्ट्र बने रहेंगे तो आवश्य ही सोने का महत्व बना रहेगा और यदि धनी राष्ट्रों का अंत हो जावेगा तो अमरीका क्या करेगा यह बात अभी नहीं कही जा सकती है।

पहले छोटे राष्ट्र जिनके पास थोड़ा या बिलकुल सोना नहीं रहता था वह अपने सिक्के को ब्रिटिश पौंड स्टर्लिंग पर निर्भर रखते थे। उनके सिक्के पौंड के मूल्य के अनुसार ही बनाये जाते थे। युद्ध के प्रारम्भ होने पर इंगलैंड ने पौंड का नियत मूल्य सोने में रखना बन्द कर दिया है। अब अर्जेनटाइन का पेसो, कनाडा का डालर जापान का येन और स्वीडन का क्रोना आदि सिक्के संयुक्त राष्ट्र के डालर पर ही निर्भर हैं।

हो सकता है कि आगे चल कर संयुक्तराष्ट्र अपने सोने की बदौलत संसार के समस्त देशों का बैंकर (महाजन) बन जावे और डालर संसार के बड़े व्यापार का मध्यस्थ हो जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबमेरीन (पनडुब्बा जहाज़)

राबर्ट एच० व्हाइट हेड, जान पी हालैंड और एक लौब्यूफ नामक तीन मनुष्य थे जिन्होंने सबमेरीन जहाज का ढांचा तयार किया था। इन्हीं ढांचों पर संसार के आधुनिक जहाज़ तयार किये जा रहे हैं। पी० हालैण्ड और लौब्य्‌ूफ ने व्हाइट हेड के टारपिडो (जहाज़ नष्ट करने वाला बोट) से सबमेरीन तयार करने का रहस्य मालूम किया था। हमें संसार में तीन प्रकार के सबमेरीन दिखाई पड़ते हैं। एक तो एक हल वाले सबमेरीन, दूसरे दो हल वाले और तीसरे वह जिनमें इन दोनों प्रकार के सबमेरीन का समागम किया गया है। जान पी० हल ने जिस प्रकार का सबमेरीन तयार किया उसी का अनुकरण ब्रिटिश, अमरीकन, जापानी और स्पेनी लोगों ने किया। इस प्रकार के सबमेरीन एक हल वाले होते हैं। लैब्य्‌ूफ के सबमेरीन दो हल वाले होते हैं और जर्मनी, फ्रांस तथा आस्ट्रिया के सबमेरीन उसी प्रकार के बनते हैं। मिश्र ढंग के सबमेरीन लौरेन्टी नामक इटली के रहने वाले ने बनाया था इसलिये इटली पुर्तगाल और ब्राज़ील के पनडुब्बे जहाज़ उसी ढंग के तयार होते हैं।

अधिकांश जहाज़ी बेड़े दो प्रकार के सबमेरीन तयार करते हैं एक तो वह छोटे सबमेरीन होते हैं जो तट की रक्षा के लिये बनाये जाते हैं और दूसरे बड़े सबमेरीन होते हैं। जो बड़े बड़े समुद्रों में जाते हैं और दूसरे बड़े सबमेरीन हैं। जो बड़े बड़े समुद्रों में जाते हैं। छोटे सबमेरीनों का लगभग ६०० टन बज़न का भाग और बड़ों का १००० टन का भाग पानी में डूबा रहता है।

सबमेरीन जहाजों का आधुनिक जहाजी बेड़े में होन। कितना आवश्यक है इसका अनुमान हम बड़े बड़े राष्ट्रों के सबमेरीनों की संख्या देखकर लगा सकते हैं। १६३४ ई० में ग्रेट ब्रिटेन के पास ५१, फ्रांस के पास ८२, संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पास ८४, इटली के पास ६४ और जापान के पास ५७ थे। जर्मनी के पास उस समय केवल १४ और रूस के पास २३ थे। थेम्स ढंग वाले ब्रिटिश सबमेरीन जो १६३१-३५ के बीच बने उनका ऊपरी धरातल १८०० टन का और पानी के भीतर के भाग का भार २,७०० टन था। यह १० हज़ार हार्स पावर (घोड़ों की शक्ति) के हैं। इनकी चाल पानी के ऊपर २२। नाट प्रति घंटा की है। पानी में डूबने पर जो मशीन काम करती है उसकी शक्ति २,५०० हार्स पावर है। पानी के भीतर चाल भी १० नाट प्रति घंटा हो जाती है। सोर्ड-फिस ढंग वाले सबमेरीनों का ६७० से ६६० टन तक के भार का भाग पानी के भीतर डूबा रहता है और १३०० से १५०० हार्स पावर तक के इञ्जिन लगे रहते हैं। ऐसे सबमेरीनों की चाल प्रति घंटा १० से १३¾ नाट होती है।

सबमेरीन जहाजों में दो प्रकार की शक्तियां वर्तमान हैं। एक तो यह कि वह मामूली जहाज की भांति समुद्र के ऊपर चल सकता है दूसरे यह कि पानी के भीतर बिल्कुल डूब कर चल सकता है। जब सबमेरीन (गोताखोर) जहाज को गोता लगाना होता है तो उसके बलास्ट टंकियां (पानी भरने वाले हौज) खोल दी जाती हैं। जब यह पानी से भर जाती है तो भार के कारण गोताखोर जहाज़ पानी के अन्दर डूब जाता है। परन्तु बलास्ट हौज़ बड़ी चतुराई के साथ उतना ही पानी भरने वाले बनाये जाते हैं। जिससे पनडुब्बा डूब न सके नहीं तो वह अधिक भार होने पर पत्थर की भांति डूब जावेगा। जब पानी के हौज़ों को भरना होता है तो गोताखोर जहाज़ की चाल कम करनी पड़ती है। पानी तभी हौज़ों के भीतर जा सकता है जब कि उसकी चाल ४ नाट प्रतिघंटा के हिसाब से हो जाती है नहीं तो तेज चाल में पानी नलों के भीतर प्रवेश नहीं करता है। डुबाने वाले पतवार हाइड्रो प्लेन कहलाते हैं। तेज़ चाल में यह काम नहीं कर सकते हैं। कहा जाता है कि जब तक खास डुबाने वाले हौज़ पूरा भर नहीं जाते तब तक गोताखोर जहाज़ गोता नहीं लगा सकता है। बलास्ट हौज़ों के सिवा और भी दूसरे प्रकार के हौज़ होते हैं। कुछ हौज़ सबमेरीन के मध्यवर्ती भाग में होते हैं। नमकीन पानी स्वच्छ पानी से अधिक मोटा होता है। इसलिये उसका भार भी कम होता है। इसी कारण जब खुले समुद्र में गोताखोर डूबता है तो उसे बलास्टों के अन्दर पानी का भार अधिक करना होता है और जब वह नदी के मुहाने पर पहुँचता है तो बलास्टों का कुछ भार कम करना पड़ता है। परन्तु गोताखोर को भार कम या ज्यादा करने के लिये अधिक नीचे स्वच्छ पानी में जाना पड़ता है।

इञ्जिन चलाने के लिये वायु की आवश्यकता पड़ती है। वायु भरने के लिये दो प्रकार के यन्त्रों से काम लेना पड़ता है एक तो यह कि जब गोताखोर पानी के ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता है और दूसरा वह जब पानी के भीतर डूब जाता है। जब पानी के ऊपर गोताखोर जहाज़ रहता है तो डीसेल इञ्जिन का प्रयोग होता है। १९१९ ई० तक भाप वाले इंजिनों का प्रयोग होता था। उस समय डेसिल इञ्जिन का प्रयोग डूबने के लिये किया जाता था और डूबने के पश्चात् बिजली का इञ्जिन चलता था। १९१० ई० तक पेट्रोल से चलने वाले इञ्जिनों का प्रयोग होता था। परन्तु पेट्रोल से धुएँ का रोकना असम्भव सा हो जाता है। इसी कारण सबमेरीन के भीतर भयानक धड़ाके का खतरा रहता है। गोताखोर जहाज़ के भीतर इञ्जिन के धुयें को एकत्रित करने के लिये एक नियत कमरा होता है। डेसिल इञ्जिनों में बहुत लाभ हैं। एक तो यह कि बहुत कम भार वाली लकड़ी की आवश्यकता होती है इसलिये गोताखोर शीघ्रता से कार्य कर सकता है। कच्चा तेल भी पेट्रोल से सस्ता पड़ता है और साथ ही मामूली दशा में उसके जलने का भय भी नहीं रहता है।

जब गोताखोर जहाज़ डूब जाता है तो फिर बिलकुल नये यन्त्र का प्रयोग करना पड़ता है। आजकल गोताखोर जहाज़ों के अन्दर डीसेल इँजिन का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि इसके प्रयोग करने में अधिक शुद्ध वायु की आवश्यकता पड़ती है और फिर इञ्जिन के चलने से जो गैस तयार होती है उसे भी बाहर निकालने की आवश्यकता होती है। सबमेरीन के भीतर जितनी हवा रक्खी जा सकती है वह ऐसे इंजिन द्वारा शीघ्र ही समाप्त हो जाती है और फिर जब बोट पानी के भीतर रहता है तो वह स्वच्छ वायु प्राप्त भी नहीं कर सकता है। आजकल डीसेल तथा भाप वाले इंजिनों का अभ्यास किया जा रहा है। आशा की जाती है कि शीघ्र किसी न किसी दिन ऐसी बात मालूम हो जावेगी कि एक ही इंजिन नीचे और ऊपर दोनों स्थानों पर उपयोगी हो सकेगा।

वर्तमान समय में गोताखोर जहाज़ बिजली के इंजिन से चलता है। इञ्जिन को बिजली पहुँचाने के लिये एक दूसरे कमरे में बिजली की बैटरियां रहती हैं। बिजली से चलने वाला इंजिन शायद दूसरे प्रकार के इंजिनों से सदा उपयोगी सिद्ध हुआ हो। बिजली से चलने वाले गोताखोर जहाज़ में यह लाभ होता है कि उसमें किसी प्रकार की आहट नहीं होती है। युद्धकाल में युद्ध करने वाले जहाज़ों के आने का समाचार प्राप्त करने के लिये यन्त्र लगाये जाते हैं इसलिये बिना शब्द वाला जहाज़ युद्ध काल में अधिक उपयोगी होता है। यद्यपि यह बात सही है कि गोताखोर के प्राप्लर (ढकेलने वाले अस्त्र) का शब्द सभी अवस्था में होगा परन्तु फिर भी उसका दूसरे जहाज़ों से पहचानना कठिन हो जावेगा। बैटरियों के चलाने में जो शब्द होता है। उसको बन्द कर देना कठिन नहीं है। वह तो सरलता पूर्वक बन्द कर दिया जावेगा और बैटरियां प्राप्लर वाले यन्त्र से ही चलाई जा सकेंगी।

बड़े गोताखोर जहाज़ों के पतवार बिजली के जोर से ठीक किये जाते हैं और छोटे जहाजों के पतवार हाथ से ठीक मार्ग पर लाये जाते हैं। दिशा बतलाने वाले यंत्र पतवार वाले स्थान पर लगे रहते हैं जिससे मालूम होता रहता है कि गोताखोर जहाज किस दिशा को जा रहा है। जहाज की चाल भी पतवार वाले स्थान ही से कम या अधिक की जाती है परन्तु उसमें एक यन्त्र और होता है जिससे कि गोताखोर जहाज किसी भी स्थान पर आवश्यकतानुसार समय तक रोका जा सकता है। नियमानुसार गोताखोर जहाज सदैव चलता रहता है परन्तु फिर भी वह किसी भी स्थान पर घंटों रोका जा सकता है उसका बाहरी देखने वाला यंत्र बाहर देखता रहता है परन्तु उसे कोई नहीं देख सकता।

गोताखोर जहाजों में उसके भीतर रहने वाले सैनिकों को बचाने के लिये बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। प्रत्येक मल्लाह के पास बचाने वाला यन्त्र रहता है। यह यन्त्र उसी प्रकार का होता है जैसा कि सीप निकालने वाले गोताखोर मनुष्यों का होता है। इस यन्त्र के अन्दर जो वायु रहती है उसका प्रयोग यन्त्र रखने वाला बार बार कर सकता है। जो खराब हवा सांस लेने से उत्पन्न होती है वह यन्त्र के भीतर वाली रसाइयों से साफ हो जाती है। सबमरीन से बाहर निकलने के लिये प्रत्येक कमरे में दो बड़े सूराख होते हैं। एक सूराख से मनुष्य समुद्र के भीतर जा सकता है और दूसरे से वह गोताखोर जहाज के भीतर वाले भाग में प्रवेश कर सकता है। गोताखोर से बाहर निकलने में भी निकलने वाले को काफी सावधानी रखनी पड़ती है। जब वह बाहर निकलना चाहता है तो निकलने वाले स्थान पर जाता है और अपने पीछे का ढक्कन चतुरता के साथ ध्यान पूर्वक बन्द कर देता है। तब वह उस यन्त्र को घुमाता है जिससे समुद्र का पानी बचाने वाले यन्त्र को भर देता है। जब भीतर और बाहर के पानी का दबाव बराबर हो जाता है तब वह ढक्कन को हटा देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

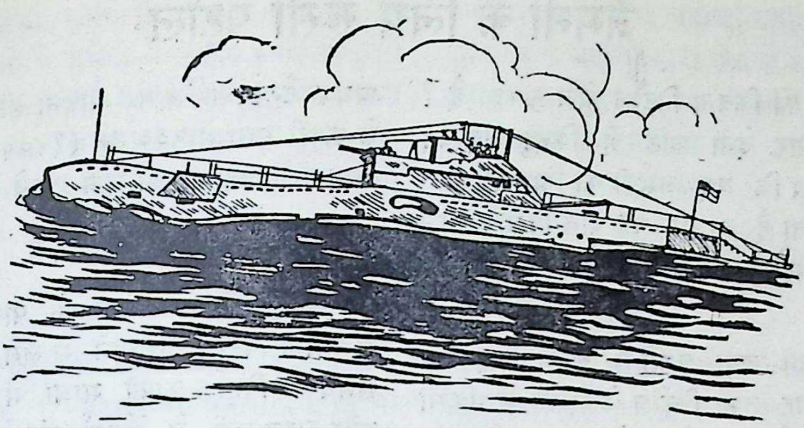

एक विचित्र सबमेरीन (पनडुब्बा जहाज़)

इस प्रकार बचाने वाले यन्त्र के भार से शीघ्र ही पानी के ऊपर आ जाता है परन्तु एकाएक पानी के ऊपर आ जाने पर भी उसके जीवन का भय रहता है क्योंकि वह एकाएक अधिक भार वाले स्थान से हलके भार वाले स्थान पर आ पहुँचता है।

इसके सिवा गोताखोर जहाजों में एक सेफ़्टीकील (बचाने वाली लकड़ी अथवा अस्त्र) रहती है। इसका भार ५ से २० टन तक होता है। जब खतरे की सूचना होती है तो शीघ्र ही इस कील द्वारा पानी के ऊपर आ जाता है परन्तु यदि गोताखोर बहुत ज़्यादा टूट जाता है तो फिर उसका ऊपर आना कठिन हो जाता है।

सबमरीन में एक भाग और होता है जहाँ से जहाज डुबाने वाले गोले चलाये जाते हैं। टारपीडो बोट स्वयम् एक सबमरीन की भांति होता है। वह ४० नाट प्रति घंटे के हिसाब से चलता है। इसके सिर पर एक यन्त्र होता है जिसमें भयानक धड़ाका करने वाली वस्तु रहती है। इस बोट के ऊपर तथा भीतर दोनों ओर ढक्कन होता है। इसके भीतर की ओर नली या खाने बने रहते हैं। यह टारपीडो के फिन्स को मार्ग दिखाते रहते हैं। टारपीडो गोले का भार लगभग २० या २१ मन होता है। यह लगभग ९०० पौंड वायु के भार से फेंका जाता है। गोले के निकलने पर पानी शीघ्र ही भर जाता है। इसके पश्चात् टोपी लगा दी जाती है। फिर नाली का पानी निकाल कर एक दूसरे हौज़ में कर दिया जाता है और फिर उसमें दूसरा टारपीडो गोला रख दिया जाता है। १९१४ ई० के महायुद्ध तक सबमरीन का प्रयोग नहीं किया गया था। उस समय इसका प्रयोग व्यापारिक जहाज़ों के डुबाने के लिये प्रयोग किया गया।

सबमरीन जहाज़ में दो बड़ी कमी है। एक तो यह कि जब वह पानी के भीतर अधिक नीचे रहता है तो अंधा रहता है। जब तक वह जल के धरातल के समीप नहीं आ जाता बाहर देख नहीं सकता दूसरे यह कि यद्यपि पानी के धरातल पर वह २३ नाट की चाल से चल सकता है। परन्तु वह पानी के भीतर ऊपर चलने वाले लड़ाकू जहाज से सुस्त चलता है। चोरी से ही लड़ाकू जहाज़ के नीचे सबमरीन आ सकता है नहीं तो वह कभी भी लड़ाकू जहाज़ को पकड़ नहीं सकता है।

सबमरीन को पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ों से देखना कठिन है। परन्तु सीप्लेन और उड़ने वाले बोट अपने पानी के भीतर पता लगाने वाले यन्त्रों से नीचे वाले गोताखोर जहाज़ का भी पता लगा सकते हैं।

यद्यपि १९१६ ई० में जर्मनी में एक सबमरीन बनाया गया था जो अमरीका सामान लाने के लिये भेजा गया था परन्तु ऐसे बड़े व्यापारिक सबमरीनों को बनाने में बड़ा खर्च पड़ता है और युद्ध काल के सिवा और किसी भी समय उनका प्रयोग नहीं किया जा सकता। १९१६ ई० के पश्चात् आज तक ऐसे व्यापारिक गोताखोर जहाजों का समाचार अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी के लिये रूसी पेट्रौल

रूस, जर्मनी को कितना पिट्रौल भेज सकता है ? इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है किन्तु यदि यह बात मान लो जाय कि वह जर्मनी की आवश्यकतानुसार भेज सकता है तो भी यह बात विचार करने योग्य है कि पिट्रौल को भेजने में कितनी कठिनाइयां हैं।

बाकू के सोतों तथा कुओं से बतूम बन्दरगाह तथा काला सागर तक पिट्रौल के भेजने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है क्योंकि बाकू से बतूम तथा कालासागर तक पाइप लगे हुए हैं।

कालासागर तट तथा बतूम बन्दरगाह से आगे कठिनाइयों का आरम्भ होता है। पहला समुद्री मार्ग बतूम से भूमध्य सागर उत्तरी सागर होता हुआ जर्मनी जाता है। परन्तु इस मार्ग का प्रयोग नहीं हो सकता क्योंकि मित्र सेना ने इस मार्ग को घेर रखा है। दूसरा मार्ग स्थलमार्ग है। इस मार्ग द्वारा सामान वारगा नदी हो कर या बाल्टिक सागर के तट पर आता है और फिर स्थल मार्ग से सामान जा सकता है। परन्तु यह मार्ग बहुत लम्बा है और आवश्यकतानुसार सामान नियत समय पर नहीं पहुँच सकता। इस मार्ग से बहुत कम सामान आवश्यकतानुसार पहुँच सकेगा।

पोलैंड होकर स्थल मार्ग

यदि यह मान लिया जाय कि जर्मन के वैरी राष्ट्रों के जहाज कालासागर में नहीं हैं तो उस दशा में दो मार्गों से पिट्रोल जा सकेगा एक तो बतूम से ओडेसा बन्दरगाह होता हुआ रूमानिया तथा पोलैंड होता हुआ जर्मनी जावेगा। रूमानिया तथा पोलैंड हो कर पिट्रौल ले जाने के साधन नहीं हैं और फिर रूसी तथा जर्मन रेलवे लाइनों में गेज का बड़ा अन्तर है।

दूसरा मार्ग यह है कि डैनूब नदी के बन्दरगाह वियना या रोजेन्स बर्ग तक जहाजों पर पिट्रौल भेजा जाय किन्तु ऐसी दशा में डैनूब नदी के मुहाने पर जहाजों से पिट्रोल उतार कर लाइटर्स (छोटे जहाजों) अथवा टैन्क वार्जेज पर लादना होगा क्योंकि डैनूब के ऊपरी भाग में ५०० टन (१४००० मन) से अधिक बोझ वाले जहाज नहीं चल सकते।

टैंक बार्जेज

जो कुछ टैन्कर जर्मनी के पास हैं वे रूमानिया से जर्मनी पिट्रौल पहुँचाने में लगे हैं फिर भी नियत समय पर पिट्रौल काफी मात्रा में नहीं पहुँच रहा है और राइन नदी से टैंकर्स मंगाने की आवश्यकता पड़ी है। साथ ही साथ डैनूब नदी साल में दो महीने से चार महीने तक बरफ से जमी रहती है और उस में जहाज नहीं चल सकते।

इन मार्गों का अध्ययन करने से यही निर्णय किया जा सकता है कि यदि टैंकर्स द्वारा पिट्रौल भेजा जाय और वे काफी मात्रा में मिल सकें तो भी रूसी पिट्रौल साल में कुछ लाख टन ही भेजा जा सकेगा।

शान्ति के समय में रूमानिया का तेल जर्मनी कान्सटैंज भूमध्य सागर, उत्तरी सागर होकर जर्मन तट पर पहुँचता था और वहाँ से राइन मार्ग अथवा हैम्बर्ग हो कर भीतर पहुँचाया जाता था। दक्षिणी जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया आदि को डैनूब मार्ग से पिट्रौल जाता था।

पिछले साल रूमानिया निर्यात तेल का तीन चौथाई कान्सटैंज़ा मार्ग हो कर ६·१५ प्रतिशत डैनूब मार्ग से और केवल ४ प्रतिशत रेल द्वारा गया था। समुद्री मार्ग अब बन्द है। इस लिये रेल तथा डैनूब के मार्ग से ही तेल जर्मनी जा सकता है किन्तु इन मार्गों से भी जर्मनी काफी मात्रा में तेल नहीं भेजा जा सकता चाहे जर्मनी तथा रूमानिया के सारे रेल के छकड़े तेल ढोने ही में क्यों न लगा दिये जावें।

डैनूब नदी में २१५,००० टन तेल ले जाने वाले जहाज हैं जिसमें ९५ हजार टन के जहाज जर्मनी के मित्र राष्ट्रों के हैं शेष जहाज इंगलैण्ड, फ्रान्स और तटस्थ राष्ट्रों के हैं।

यदि वर्तमान समय में जितने जहाज जर्मनी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैनूब में हैं वे सभी साल में ७ बार तेल भर कर जर्मनी ले जावें तो वे जर्मनी में ६,६०,००० टन तेल पहुँचा सकेंगे किन्तु १९३८ में रूमानिया का जितना तेल जर्मनी गया था उस से यह मात्रा कम होगी।

फिर यदि यह भी मान लिया जाय कि जर्मनी अपने राइन नदी के जहाज़, तटस्थ राष्ट्रों के जहाज़ और दूसरे जहाज़ों द्वारा तेल ले जावे तो वह अधिक उतना ही तेल ले जा सकता है जितना कि वह समुद्री मार्ग से ले जाता था। उससे अधिक तेल वह कदापि नहीं ले जा सकता।

पेरीम और सोकोत्रा

पेरीम और सोकोत्रा द्वीप यद्यपि व्यापार तथा सम्पति की दृष्टि से बहुत कम उपयोगी हैं तो भी शत्रु के हाथों में चले जावेंगे तो फिर बड़ी कठिनाई का सामना अँग्रेजों को करना पड़ेगा।

पेरीम द्वीप का क्षेत्रफल ७ वर्गमील है। यह लाल सागर के द्वार के समीप बाबुल मन्दब की खाड़ी में स्थित है। यह एक उजाड़ तथा बञ्जर द्वीप है और वहां की भूमि आगनेय काली चट्टानों की बनी है। नैपोलियन युद्ध के समय ब्रिटेन ने १७९९ ई० में इस पर अधिकार जमाया था और १८०१ ई० तक वहां अँग्रेज़ी किला तथा सेना रही उसके पश्चात् इसे छोड़ दिया गया। इसका मुख्य कारण यह है कि वहाँ पर पानी की बड़ी कठिनाई है। इसके दक्षिणी तट पर एक सुन्दर बन्दरगाह है।

१८५५ ई० में ब्रिटेन ने पुनः पेरीम पर अधिकार किया उस समय ब्रिटिश जाति लाल सागर को उन्नति देना चाहती थी और लाल सागर के मध्य की भूमि काट कर स्वेज़ नहर बनाना चाहती थी। फ्रान्सीसी सरकार भी पेरीम पर अधिकार करके स्वेज़ नहर के बनाने और लाल सागर पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रही थी। इसी कारण फ्रान्स ने दो जहाज पेरीम के लिये भेजे।

जब फ्रान्सीसी योजना का समाचार अदन के गवर्नर को मिला तो उसने दो फ्रान्सीसी जहाज़ जो पेरीम की ओर जा रहे थे उन्हें रोक लिया और उनके पदाधिकारियों को अपने यहाँ निमंत्रित किया। उन का अँग्रेज़ों ने बड़े हाव-भाव के साथ स्वागत किया। फ्रान्सीसी अफसरों ने भोजन करते समय खूब मदिरा पान किया। उनके बग़ल में एक अँग्रेज महिला बैठी थी। एक फ्रान्सीसी अफ़सर ने नशे के झोंक में आकर फ्रान्सीसी लड़ाकू जहाज़ों के पेरीम जाने का भेद अँग्रेज़ महिला से बता दिया। वह शीघ्र ही अदन के गवर्नर के पास पहुँची और उससे सारा वृत्तांत कह सुनाया। उसी रात को अदन के गवर्नर ने एक ब्रिटिश बोट पेरीम के लिये भेज दिया। जब फ्रान्स के लड़ाका जहाज़ वहाँ पहुँचे तो उन्होंने वहाँ पर लावा चट्टान के ऊपर यूनियन जैक (अँग्रेज़ी झण्डा) फहराता हुआ पाया।

पेरीम का किला बड़ा ही भयानक है उस से लोग बहुत घबड़ाते हैं। संसार के सब से अधिक गर्म स्थानों में उसकी गणना होती है। वहां पर अँग्रेज़ी सेना रहती है। सेना के सिवा वहाँ पर तार से सम्बन्ध रखने वाले कुछ अँग्रेज अफसर तथा प्रकाश-घर के रक्षक रहते हैं। वहां पर और किसी प्रकार की आबादी नहीं है।

सोकोत्रा दूसरा आवश्यक द्वीप इटैलियन सोमालीलैंड के पूर्व है। ग्वार्डाफूई की अंतरीप इटैलियन सोमालीलैंड में है। अंतरीप से सोकोत्रा १०० मील पूर्व की ओर है। यह अदन लाल सागर और स्वेज़ नहर के व्यापारी मार्गों पर अधिकार किये हुये हैं। यहां का मालिक किशिन का राजा है परन्तु १८८६ ई० में प्रबन्ध के लिये यह अँग्रेज़ों के अधिकार में दे दिया गया। साधारणतः द्वीप के अन्दर योरुपीय लोग नहीं रहते हैं। द्वीप में उनका पहुँचना बहुत कठिन है क्योंकि जहाज़ नहीं आते जाते हैं। द्वीप में कोई बन्दरगाह भी नहीं है।

यह द्वीप पेरीम से सुन्दर है। इसकी लम्बाई ७० मील और चौड़ाई २२ मील है। सोकोत्रा की जनसंख्या १० हजार है। प्राचीन काल में सोकोत्रा का द्वीप बड़ा महत्व रखता था। इसे यूनानी लोग इनसेका ट्रेसेस कहते थे। इसका कारण यह था कि उस समय यह द्वीप संसार को इन्सेंस बहुत देता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी समय यह द्वीप यूनानियों के अधिकार में था। वहाँ के कुछ निवासियों का रूप रङ्ग यूनानियों से अब भी मिलता जुलता है। चौदहवीं सदी के पुर्तगाल वालों ने उसे कुछ वर्षों के लिये अधिकार में कर लिया था क्योंकि वहाँ पर समुद्री डाकुओं का अड्डा बन गया था। यह समुद्री डाकू व्यापारिक जहाज़ों को लूट लिया करते थे।

अठारहवीं सदी के आरम्भ काल में ब्रिटिश सरकार ने इस आवश्यक द्वीप को लेने का विचार किया और इस कार्य को करने के लिये ब्रिटिश ऐडमिरैलिटी कमाँडर हैन्स भेजा गया। उसने १,००,००,००० पौं० (लगभग १५,००,००,००० रु०) सोकोत्रा का मूल्य लगाया। उस समय सोकोत्रा में जो राजा था उसने सोकोत्रा को बेचने से इन्कार कर दिया। उसके लगभग ५० साल के पश्चात् इँगलैंड वहां के राजा के बीच राजनैतिक सन्धि हो गई। तब यह ब्रिटिश के अधिकार में आ गया।

सोकोत्रा की भाँति वहाँ पर तीन और द्वीप हैं जो अँग्रेज़ों के अधिकार में हैं परन्तु उनका क्षेत्रफल कम है। इनमें से दो ब्रादर्स (भाई) के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह द्वीप उजाड़ हैं और वहाँ किसी प्रकार की आबादी नहीं है। तीसरे द्वीप का नाम अब्दुल-कूरी है वहाँ पर वहाँ के कुछ प्राचीन निवासी रहते हैं।

वर्तमान समय में ऐतिहासिक परिवर्तन हो रहे हैं। इटली का हौसला दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है इसलिये यह सम्भव हो सकता है कि इन द्वीपों की गणना अन्तर-राष्ट्रीय द्वीपों में हो जावे।

मोती निकालना

मोती निकालते समय मोती पाने का ध्यान कम रहता है परन्तु मोती के सीप का ध्यान अधिक रक्खा जाता है। यद्यपि बाज़ार में एक मोती का मूल्य कई हजार रुपये मिल सकते हैं और एक टन (लगभग २८ मन) सीप का मूल्य केवल २२५० अथवा ३००० रुपये मिल सकते हैं परन्तु सीप का रोज़गार मोती के रोज़गार से कहीं विश्वसनीय है। मलय तथा जापानी लोग बहुधा मोती निकालने का काम करते हैं परन्तु यह देखा गया है कि मोती निकालने वाले आधे से अधिक मोती चुरा लेते हैं।

क्वीन्सलैंड के तट के समीप थर्सडेद्वीप में सीप का कारखाना है। मोती निकालने वाले क्षेत्रों में छोटे छोटे जहाज घूमते रहते हैं। नङ्गे पनडुब्बे लोग पानी में गोता मार कर सीप अथवा मोती निकालते हैं। जब सीप काफी मात्रा में इकट्ठी हो जाती है तो वह बड़े जहाज़ में भरकर बन्दरगाह को पहुँचा दी जाती है। आस्ट्रेलिया की सरकार ने नङ्गे शरीर गोता मारने वाले जापानियों से अधिकार छीन लिया है। इसका मुख्य कारण यह था कि मोती के सीप पानी की अधिक गहराई में पाये जाते हैं। रबर के सूट महँगे मिलते हैं जिसके कारण रबर के सूट पहना कर पनडुब्बों से सीप निकलवाने में अधिक व्यय होता है। पनडुब्बा समुद्र के तली में लगभग ५ मिनट तक रह सकता है तो भी उसे एक बार गोता लगा कर ऊपर आने में एक घंटा लग जाता है। छिछले पानी में गोताखोर अधिक समय तक तली में रह सकते हैं। वे पानी के नीचे जाल के एक झोले में सीप एकट्ठा करते जाते हैं जो बाद को ऊपर खींच लिया जाता है।

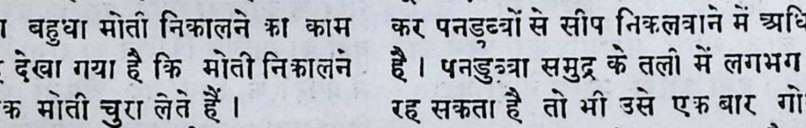

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेत रीछ

वालरस (दरियाई हाथी) की भाँति ध्रुव प्रदेश का रीछ आर्कटिक प्रान्त में पाया जाता है। वह प्राकृतिक रूप से दक्षिण में नहीं पाया जाता है। वह नाक से पूँछ की जड़ तक ७ फुट या इससे भी अधिक लम्बा होता है। उसके बाल श्वेत तथा चमकदार होते हैं। इसका सिर छोटा परन्तु चालाक होता है। यह संसार के अत्यन्त सुन्दर पशुओं में से एक है। ध्रुव प्रदेश के रीछ की नाक, जीभ और मुंह के भीतरी भाग काले होते हैं। इसके पैर के तले भी काले होते हैं। पैर के तलों में एक प्रकार के तले होते हैं जो उसे बरफ पर फिसलने से बचाते हैं।

ध्रुव प्रदेश का रीछ बड़ा मजबूत तैराक होता है। वह बड़ी शिष्टता के साथ डुबकी लगाता है और जल तथा स्थल दोनों स्थानों पर समान रूप से आनन्द पूर्वक रहता है। मादा श्वेत रीछ बहुधा अपने बच्चों को झिड़की देकर तैरना सिखाती हुई देखी गई है। जब तक छोटे रीछ तैरना भली भाँति नहीं सीख जाते तब तक वह अपनी माँ की पूँछ को मुँह से पकड़ कर तैरते हैं।

श्वेत रीछ बड़े साहसी और बहादुर होते हैं। वे समुद्रों के बीच में सुनसान स्थानों पर अकेले बहुधा तैरते हुये देखे गये हैं। यह आइसलैंड तक दक्षिण की ओर आते हुये पाये गये हैं। जब श्वेत रीछ आइसलैंड में पहुँचता है तो यह अपनी लम्बी यात्रा तै करने के पश्चात् बड़ा भूखा हो जाता है। वहाँ पर यह वहाँ के रीछों के समूह में मिल जाता है। श्वेत रीछ बड़े तेज़ तैरने वाले होते हैं। यह चालीस मील तक तटों से दूर खुशी खुशी तैरते हुये चले जाते हैं।

स्थल पर श्वेत रीछ बड़ा तेज़ होता ,है। वह ऊँची नीची भूमि में भी बड़ी फुर्ती के साथ दौड़ सकता है इससे मुठभेड़ होनी बड़े खतरे की बात है। यह बड़ा चतुर होता है। जब यह मनुष्य के सामने पड़ता है और चुपके चुपके बचता हुआ कभी सुस्त कभी तेज़ चलता है तो इसकी अद्भुत चतुराई का परिचय मिलता है।

श्वेत रीछ जब सील मछली को देखता है तो वह अपने शिकार को पकड़ने में बड़ी चतुराई करता है। वह शीघ्रता में छिप कर सील मछली के समीप आकर डुबकी मारता है और एकाएक उसके सामने आ निकलता है। सील मछली पानी के किनारे पर होने के कारण पानी से अलग हो जाती है। वह स्थल की ओर ही भाग सकती है। स्थल पर वह तेज़ी के साथ नहीं चल सकती इसलिये उसके भाग का निर्णय वहीं पर हो जाता है।

श्वेत रीछ केवल दरियाई हाथी से डरता है। वह आर्कटिक प्रान्त भर के पशुओं में केवल दरियाई हाथी का ही संकोच करता है। दरयाई हाथी और उसका युद्ध बराबर का होता है परन्तु श्वेत रीछ उसे मारने के लिये उस पर बड़े बड़े पत्थर के रोड़े लुढ़काता है और इस प्रकार पत्थर के नीचे कुचल कर उसे मार डालता है।

ध्रुव प्रान्त के रीछ का मुख्य भोजन सील मछली, दूसरी मछलियां और चिड़ियां हैं। वह जिस किसी जीव को भी पा जाता है उसे खा डालता है। वह सेवार तथा बैर, मरीलाश, ढूँढ़ने वालों के डेरे, बूट और औषधियों को भी खा जाता है। एस्किमो लोग श्वेत रीछ का शिकार करते हैं और उसे खाते हैं। श्वेत रीछ के मांस को एस्किमो लोग बड़े चाव से खाते हैं। इसके चमड़े और पर का कपड़ा बनाते हैं। वे चमड़े से रस्सियां भी तयार करते हैं। श्वेत रीछों की अँतड़ी की सुन्दर खिड़कियों के अन्दर शीशे के स्थान पर लगाने के सामान तयार किये जाते हैं। श्वेत रीछ का मेदा (पेट) मनुष्य के लिये बड़ा विषैला होता है। यद्यपि कुत्ते उसे बड़े चाव से खाते हैं। शीतकाल के कठिन जाड़े में नर श्वेत रीछ चारों ओर घूमता रहता है परन्तु मादा बरफ के अन्दर गड्ढा खोद कर रहती है जहाँ वह उसी ऋतु में बच्चे देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनानी जाति

वर्तमान समय में यूनानी और पड़ोसी टापुओं के निवासी बलकान देश की एक बहुत ही सुसंगठित जाति हैं। इनमें से अधिकांश लोग नई यूनानी भाषा बोलते हैं, यह धर्म के बड़े कट्टर हैं। सभी यूनानी एक राजनीति के एक ही सूत्र में बंधे हुये हैं।

किन्तु यह बात सदैव न थी, यह एकता सदियों के वादाविवाद और लड़ाई झगड़ों के बाद प्राप्त हुई है। नई खोज और पुराने इतिहास के देखने से पता चलता है कि जब अब से ४००० वर्ष पूर्व हेलेन जाति एशियाई रूस से यहां आई तो उसने यहां के निवासियों को अपने से अधिक सभ्य पाया। होमर इस जाति को 'ईश्वरीय प्लौस्जियन' कहा करता था। इस जाति ने जो कि सच्चा प्राचीन निवासी यूनान की है धीरे धीरे हेलेन जाति की सभ्यता को मान लिया और उसी में घुल मिल गई। फिर कुछ शताब्दियों के पीछे यूगोस्लैव जाति कारपेथियन से चलकर डेनूब नदी को पार किया और बलकान प्रदेश में फैल गई। जिसके कारण प्लौस्जियन जाति बिलकुल उसी में मिलकर छिन्न भिन्न हो गई। दसवीं सदी में जब कि वैज़ेनटाइन राजा कन्सटैन्टाइन पोरफीरोजिनाइटस राजा था उस समय तक सारे देश में स्लैव ही स्लैव बसे थे और यह देश ही स्लैव देश हो गया था।

फिर कुछ सदियों पीछे यह देश अलबानी बन गया था क्योंकि इटेलियन जाति ने टास्कस जाति को सताया और वह भाग कर अन्दर घुसी, यहां तक कि कुछ समय तक अलबानी भाषा मामूली तौर पर अकरनानिया, अटीका, एथेन्स, इत्यादि प्रदेशों में बोली जाने लगी। अब भी करीब २ लाख अलबानी यूनान में हैं और उनमें करीब ४०,००० अलबानी भाषा बोलते हैं किन्तु बीच में प्राचीन यूनानी सभ्यता का पुनर्जन्म हुआ तो यूनान वाले १८३० में तुर्की राज्य से स्वतंत्र हो गये और फिर वही पुराने शुद्ध यूनानी बन गये हैं।

इस प्रकार वर्तमान समय में यूनान के निवासी फिर उन्हीं पुराने निवासियों के से भाषा, मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं में हो गये हैं। नई यूनानी भाषा जैसी कि एथेन्स के अखबारों में लिखते हैं, पुरानी यूनानी से कुछ विरुद्ध सी है तथापि उसको एक सी बनाने के लिये भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। यहाँ तक कि यहाँ की वर्नाक्यूलर और देहाती भाषा भी इस भाषा से लगभग मिलती जुलती है। इसका लैटिन भाषा से बहुत ही निकटवर्ती सम्बन्ध है।

यहाँ के निवासियों की सूरत दो प्रकार की है। पहली आर्य जाति, जो लम्बी, गोरी, मुलायम और सुन्दर शरीर वाली, लम्बे सर, लम्बी सीधी या कुछ महराबदार नाक, छोटे मुख तथा नीली या पीली आँख वाली होती है जिसको संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उनकी सूरत बिलकुल वैसी ही है जैसी कि पुराने कलाकार चित्रित करते थे किन्तु दूसरी जाति सरमैटियन या योगोस्लाव हैं। इस जाति के लोग मझोले कद वाले छोटे चौड़े सिर वाले, गहरे भूरे या काले बाल वाले और छोटी चपटी नाक वाले गोरे रंग के होते हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से कम सुन्दर होती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ न तो फ्रांस की स्त्रियों की भांति ऐसे चेहरे वाली ही होती हैं कि जिससे उनके चेहरे से उनकी अच्छाई टपके, न रोमन स्त्रियों की भांति सुन्दरता की खान ही होती हैं और न तुर्की स्त्रियों की भांति उनमें सुन्दर मुलायम ढंग ही पाये जाते हैं। सचमुच सुन्दर स्त्री का यहां मिलना ही कठिन है। पास के कुछ टापुओं और ऊँचे पहाड़ी प्रदेशों में जहां स्लाव जाति नहीं घुस पाई वहीं पर सुन्दर युवतियाँ देखी जा सकती हैं। यहां के मर्द स्त्रियों के विरुद्ध बहुत ही सुन्दर होते हैं। उनका लम्बा चौड़ा, मोटा सुडौल शरीर होता है। लम्बी गोली नाक व बड़ी बड़ी मूँछें उनके चेहरे की सुन्दरता को और भी बढ़ा देती हैं।

अलबानी जाति से यूनानी लोगों ने अपना राष्ट्रीय पहिनाव उधार सा लिया है। उनकी लाल टोपी में रेशमी झब्बा लगा होता है जिसको वे एक अजीब ढंग से लगाते हैं और सुनहरा बेलदार छोटा वास्कट पहनते हैं। सफेद कुर्ता पहनते हैं जिसके ऊपर एक बड़ी पेटी होती है। जिसमें वे अपनी रूमाल, तम्बाकू की थैली, पिस्तौल, स्याही और कलम तथा अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथियार रखते हैं। स्त्रियों का पहनावा बहुत भिन्न है। यहाँ तक कि प्रत्येक गांव का अपना अपना पहिनावा अलग अलग है किन्तु एथेन की स्त्रियाँ रेशम या सूत का कुर्ता पहनती हैं। मखमल का वेस्ट कोट जो सामने खुला रहता है। एक लाल कपड़ा सर पर जो कानों तक लटकता रहता है या बालदार रेशमी कपड़ा होता है।

सभ्य और पढ़ी लिखी समाज को छोड़ कर सभी लोग अपना कष्टमय जीवन दुख के साथ अपने कष्टदायक घरों में बिताते हैं। इन घरों को देखने से पता चलता है कि शायद इनको कभी भी यूरोपियन सभ्यता की हवा भी नहीं लगी है। कुर्सियाँ और मेजें इन घरों में कदाचित ही पाई जाती हैं। इसलिये भोजन चटाइयों और कपड़ों को बिछाकर करते हैं। अलबानी जाति की भांति ये लोग भी चादर बिछा कर सोते हैं। और शायद ही कभी चारपाई का प्रयोग करते हैं। गर्मी के दिनों में तो यूं ही गलियों, सड़कों और छतों पर पड़े रहते हैं। साबुन या कंघी तो उनके लिये एक बहुत ही आराम की वस्तु है। देहाती घर तो केवल पत्थर की एक कुटी होता है जिसमें एक भी खिड़की नहीं होती और रात को सभी मर्द, स्त्री, बच्चे उसी में बन्द रहते हैं। स्त्रियों के लिये घरेलू सामान इत्यादि रखने के बन्दोबस्त करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यथार्थ रूप में उनके यहाँ घर में ऐसे सामान होते नहीं। झाड़ू, साबुन इत्यादि बहुत ही कम होते हैं। सीना, कातना और बेल बूटे का कार्य तो बहुत कम होता है। तब भी स्त्रियों का जीवन बहुत कष्टमय होता है। यद्यपि तुर्की स्त्रियों की भांति इनमें पर्दा नहीं होता तो भी ये कम बाहर जाया करती हैं और उनको परेशानी कम होती है। ये अजनबी होती हैं और मर्दों के साथ चलने में बहुत ही लज्जा करती हैं और 'मास्टर' नाम से ही घबराती हैं। इसी नाम से वे अपने मर्दों को पुकारती हैं। ये बेचारी खेतों का और भोजन सामग्री बनाने का सभी कार्य करती हैं। यूनानी लोग एक खास ढंग की रसोई बनाते हैं जिसको बाहरी जाति बिलकुल पसन्द नहीं करती, इस रसोई में रोटी होती है, जैतून का खारा पानी या अचार कोई छोटी मुर्गी, बकरे या भेड़ का बच्चा नमकीन कपड़े में लपेटा हुआ होता है। ईस्टर के रविवार को रसोई में एक दूसरी विशेषता यह होती है कि एक बकरी या भेड़ का बच्चा जिसके भीतर मसाला और मज़ेदार घासें भरी होती हैं एक लोहे के छड़ पर रख कर तेज़ जलती अग्नि में भूना जाता है। शराब को धूप या राल के शर्बत के साथ मिला कर पीते हैं या राकी शराब में मिलाकर पीते हैं या केवल गल बधनी पीते हैं जिसमें सफेद झाग पैदा हो जाता है।

सदियों लड़ाई, झड़प और बहस आत्म-ज्ञान सिद्धान्तों पर होने के पश्चात् कट्टर रोमन चर्च १०४३ ई० में यहाँ के रोम चर्च के साथ मिला दिया गया और १८६४ के विधानानुसार स्टेट रिलीजन बनाया गया जिसमें मतानुयाइयों को पूरी स्वतंत्रता प्राप्त हुई। १८३३ ई० में इसका इन्तज़ाम एक स्थाई संस्था होली सेनड, स्वच्छ सभा, स्नान सभा के हाथ में दिया गया। एथेन्स के मेट्रापोलिटन भी पांच पादरियों के साथ होली सेनड को सहायता के लिये रहें। इस प्रकार कुस्तुन्तुनिया के पाट्रियार्क का प्रभाव पड़ा। यहाँ की पुरोहिती २१ आर्च-बिशप और २८ बिशपों के बीच है जिसमें यूनान, टर्की और एशियाई रूम के पादरी हैं। अर्थात जितने भी लोगों का नाता पुराने कट्टर चर्च और होली सेनेड से है सभी उसके पुरोहित हैं। यूनानी और ईसाई हैं जो अब भी रोमन पानटिफ रोम के पादरी के मानने वाले हैं वे यूनियेस्ट के नाम से प्रसिद्ध हैं उनके वही यूनानी, सीरियन, काप टिकन इत्यादि रीति रिवाजों के मानने वाले हैं। कट्टर सनातनी मन्त्री (पोप जो पापा का अपभ्रंश है और जिसके पिता के अर्थ हैं) सभी धार्मिक कार्यों को पुरानी यूनानी भाषा में करते हैं और ब्याह और अर्थी दाह संस्कारों में यही लोग प्रधान का कार्य करते हैं। संस्कारों की प्रथा प्रत्येक जगह एक ही सी है किन्तु ये संस्कार स्वयं भीतरी बातों में एक जगह से दूसरी जगह भिन्न भिन्न हैं। इस प्रकार एक प्रांत में ब्याह के पश्चात् स्त्री व पुरुष को एक तख्ते या गद्दे पर खड़ा होना पड़ता है और बाकी शराबी उनके चारों ओर खड़े होकर उनके बड़ाई के गाने गाते हैं या प्रशंसा करते हैं और जब लड़की ससुराल जाने लगती है तो जोड़े के ऊपर चावल या कपास के बीजों की वर्षा की जाती है। घर पर पहुँच कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुलहिन की सास दुलहिन को एक ग्लास शहद और पानी जीवन प्रेममय और मीठा बनाने के लिये चिन्ह स्वरूप में देती है। ये बातें ऐसी हैं जो बहुत ही प्राचीन हैं और एशिया और योरुप के प्राचीन निवासियों के बीच भी पाई जाती हैं।

यूनानी लोग व्याह के मामले में बहुत ही सख्त होते हैं। यहाँ ऐसे कुछ व्यक्ति होते हैं जिनका व्यवसाय ही व्याह कराना होता है। पहले पहल लड़की का पिता ऐसे लोगों को बुलाता है और लड़की के लिये लड़का ढूँढ़ने के लिये कहता है। दहेज की प्रथा यहाँ भी प्रचलित सी है। इस प्रकार बर का मोल भाव सा होता है जब दहेज तै हो जाने के बाद मंगनी होती है और बर गवाहों के सन्मुख बताता है और फिर बर और लड़की के बीच अंगूठियाँ बदली जाती हैं उस समय बर को उसके दोस्त बधाई देते हैं। और वर को लड़की के यहाँ जाने की पूरी स्वतंत्रता होती है। ऐसी दशा में लड़की उतनी ही लज्जावती होती है जितनी की व्याही स्त्री। इसके पश्चात् मई का महीना छोड़ किसी समय भी शादी हो सकती है। मालूम होता है इन बातों में यूनानी और लोगों से भिन्न हैं। मामूली तौर पर जैतून पक जाने के बाद पतझड़ के दिनों में व्याह होता है और अच्छी साईत इस समय पूर्णिमा के बाद रविवार दिन की होती है।

कुछ प्रान्तों में इक़रारनामे की एक नक़ल दूल्हे को भेजी जाती है। जो उसके बदले में लड़की के लिये कुछ मिठाई फल इत्यादि और ससुर सास के लिये एक सुराही शराब भेजता है। तब फिर सभी का ध्यान चार दिन तक "शादी की रोटी" की ओर रहता है जिसके लिये आटा मिल से पिसाना पड़ता है। आटा घर आने पर एक नाद में गूँधा जाता है, इस समय एक लड़का तलवार लिये एक ओर ताकता है और एक लड़की दूसरी ओर कुछ सिक्के और व्याह की अंगूठी में खेल करती बहाना किये खड़ी रहती है। जब रोटी बनाई जाती है तो सने हुये आटे को थोड़ा थोड़ा करके बैठी हुई जमात के बीच बाँट दिया जाता है, प्रत्येक मनुष्य अपने आटे में अँगूठी पाने की उसी प्रकार आशा करते हैं जिस प्रकार कि इंगलैंड में लड़के अपनी वर्ष गाँठ के दिन की रोटी में पाने की आशा रखते हैं। सौभाग्यशाली इनमें जो होता है वह अँगूठी को दूल्हे से किसी इनाम या जुर्माने पर बदलता है, संध्या समय रोटी एक सेर पानी के कटोरे पर रक्खी जाती है और उसके चारों ओर तीन बार घूम कर कुमार लड़के और लड़कियाँ शादी की रोटी का गान गाते हैं। उसके पश्चात् रोटी को तोड़ कर उसमें इंजीर और दूसरे फल मिलाकर जोड़े के ऊपर फेंकते हैं यह उनके सौभाग्यशाली होने का एक चिन्ह है। कुम्वारस यहाँ प्रतिष्ठित पुरुष होते हैं जो शादियों में बहुत बड़ा कार्य करते हैं और खासकर ग़रीबों के बीच तो उन्हें निमन्त्रण भी करने पड़ते हैं और यदि स्त्री और बच्चे ग़रीब मुहताज हो गये तो उनकी देख भाल भी करनी पड़ती है। इस प्रकार यहाँ के सम्मानित पुरुष और ग़रीबों के बीच पक्का नाता जुड़ता है, और ऐसा पुरुष अपने को एक अच्छे सलाह देने वाले या सरपरस्त के स्थान पर पाता है। शादी के दिन दोबारा अंगूठियों का अदल बदल होता है और काली बुलसी चारों तरफ चलाई जाती है और एक ग्लास शराब, अँगूठी की शक्ल की एक रोटी और एक चम्मच दूल्हे को दी जाती है, जो शराब को पी लेने के बाद गिलास में कुछ रुपये डाल देता है और दूसरी वस्तुएँ सब से अधिक प्रतिष्ठित पुरुष को दे देता है। जब जोड़े चर्च में जाते हैं तो अल्टर के पास पहुँचते हैं। वहाँ तीसरी बार फिर अँगूठियाँ बदली जाती हैं। उसके बाद जोड़े के सिरों पर नारंगी के बौर का ताज रक्खा जाता है और पादरी तीन बार उनको आल्टर के चारों ओर घुमा कर उनके सर से ताज हटाता है, उनको बर्दान देता है और शादी मंजूरी देता और दूसरों को बनाता है। गड़रियों के बीच तो अब भी स्त्रियों को भगा ले जाने वाली प्रथा की नक़ल बाकी है। एक बड़ी बरात हथियारबन्द दूल्हन को लेने आती है और अगुवानी करने वाले एक प्रकार का दिखावटी युद्ध उनसे करते हैं जो केवल एक तमाशा सा होता है। इस प्रकार खुशी खुशी सब कार्य समाप्त होता है।

अर्थी संस्कार में खुली हुई अर्थी के आगे बहुत से लोग चलते हैं और मृतक शरीर कपड़े में लपेटा हुआ एक तकिये के सहारे लेटाया रहता है। ऐसा मालूम होता है कि कदाचित् वह किसी निमंत्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्टी में जा रहा हो। अर्थी के पीछे छोटे छोटे पादरी एक बड़े क्रास और चर्च के झंडे लेकर चलते हैं। बड़ा पादरी चमकीले पहनाव में रहता है और रोने वाले कुछ लोग सफेद कपड़े में धीमी आवाज में रोते साथ जाते हैं। क़ब्र में मुर्दे के सर के नीचे एक सिरहाना मिट्टी का लगाया जाता है और क़फ़न के ऊपर हलका सा ढक्कन रख दिया जाता है। साइप्रस में सिरहाना मिट्टी का नहीं बल्कि नींबू के फूलों और पत्तियों का रहता है और कुछ अनाज या भाजन मुर्दे के भोजन के लिये रख दिया जाता है। किसी भी मृत्यु के बाद घर तीन दिन तक साफ नहीं किया जाता और झाडू शीघ्र ही जला दी जाती है।

उत्तरी यूनान में स्त्रियाँ दुख प्रकट करने को स्वेत वस्त्र पहनती हैं। उनका सिर खुला रहता है और बाल बिखरे रहते हैं। घर के किवाड़ जब तक मृतक शरीर नहीं उठाया जाता पड़ोसियों के लिये खुले रहते हैं। मृतक के आत्मा की शांति के लिये वही क्रियाएँ की जाती हैं जो और ईसाई देशों में होती हैं। प्राचीन रिवाजों के विरुद्ध एक नई वर्तमान पद्धति यह चली है कि बड़ा पादरी अपने असली पहनाव में अपनी कुर्सी पर सोधा बैठा हुआ क़ब्र तक जाता है।

हवाई युद्ध

योरुपीय युद्ध से सिद्ध होता है कि स्थानीय तथा हवाई शक्ति के प्रबल होने से विजय शीघ्र प्राप्त हो सकती है। इसके कारण सफलता बहुत शीघ्रता के साथ होती है। यह पाठ जर्मनो ने अपनो हवाई शक्ति तथा स्थलीय शक्ति द्वारा नार्वे, हालैंड, बेल्जियम और फ्रान्स विजय कर के सिखाया है। यही पाठ रूस ने फिनलैण्ड को जीत कर के सिखाया है। फिनलैंड के युद्ध में रूसी सेना ने स्थलीय युद्ध में बड़ी त्रुटि की थी परन्तु उसकी समस्त त्रुटियां हवाई शक्ति के कारण सफलीभूत हुईं।

रूस को स्थलीय तथा हवाई शक्ति में प्रधानता प्राप्त है। फिनलैण्ड के पास प्रथम श्रेणी के १०० से कम वायुयान थे। उसके पास कुल लगभग १५० वायुयान थे। रूस के पास प्रथम श्रेणी में कितने वायुयान थे इसका ठीक ठीक पता नहीं है परन्तु उसके पास शायद ४ हजार से ५ हजार तक प्रथम श्रेणी के वायुयान हैं। करेलियन स्थल संयोजक के युद्ध में १५ फरवरी सन् १९४० ई० को ५०० रूसी वायुयान हवा में उड़े थे। उसके बाद उसी मास में १००० वायुयान समस्त फिनलैण्ड में उड़ते हुये दिखाई पड़े।

रूसी अच्छे मशीन वाले नहीं थे। अकेली सीट (जगह) वाले लड़ाके वायुयान प्रति घंटा २४८ मील की गति से चलने वाले थे। उनके अन्दर युद्ध सामग्री भी कम रक्खी जा सकती थी। एस० बी० के बम्ब वर्षक की अधिक से अधिक चाल १५० मील प्रति घंटे की थी। वह ६०० मोल तक उड़ कर बम गिरा सकता था। दूसरी टी० एस० के० बी० २६, बमबर्षक वायुयान १३०० मील तक जा कर बम गिराता था। उसकी भी गति २५० मील प्रति घंटा थी। वर्तमान लड़ाका जहाज इन दोनों को मार कर गिरा सकते थे। फिनलैण्ड के भी अच्छी मशीन वाले नहीं थे। इंगलैण्ड से ग्लैडियेटर और ग्लेनहीम बम बर्षक वायुयान तथा वायुयान वाले १५७०० बम फिनलैण्ड भेजे गये। अमरीका और फ्रान्स से भी कुछ वायुयान गये फिर भी फिनलैण्ड की हवाई शक्ति रूस से कहीं कम थी।

रूस ने फिनलैण्ड पर भीषण बम बर्षा की थी। नागरिक लोगों पर बम गिराये गये। अस्पतालों पर बम गिरे। हेलसिंकी, वीपुरी और हैङ्को नगर भीषण बम बर्षा कर के नष्ट कर दिये गये। रेडक्रास सोसायटी के लोग भीषण बम बर्षा के कारण अपनी सहायता नहीं पहुँचा सकते थे। वे भयभीत हो रहे थे। उनके अस्पतालों पर भी बम गिराये गये थे। रूस की स्थलीय शक्ति भी फिनलैण्ड से कहीं बढ़ कर थी। "रूसीम रोलर" स्थल पर बड़ा काम कर रहे थे, उन्हें वायुयानों से सहायता मिल रही थी। वास्तव में हवाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा स्थल शक्ति के प्रबल और अधिक शक्ति होने के कारण ही रूस को फिनलैण्ड पर विजय प्राप्त हुई।

पश्चिमी सीमा पर पोलैण्ड की विजय के पश्चात् शान्त बनी रही। जर्मन सेना वहाँ शान्ति पूर्वक एकत्रित होती रही। इंगलैण्ड तथा फ्रान्स की वायुयान सेना (अडवान्स्ड एअर स्ट्राथकिंग फोर्स) ८ महीने तक बिलकुल चुप रही। उसने जर्मनी की सेना को स्वतंत्रतापूर्वक पश्चिमी सीमा पर एकत्रित होने से नहीं रोका। अंग्रेज तथा फ्रान्सीसी वायुयान बर्लिन पर भी नहीं उड़े यद्यपि जर्मनी के लोग युद्ध के श्री गणेश होने से ही बर्लिन पर हवाई आक्रमण होने की शंका कर रहे थे। १९ जनवरी १९४० ई० को डाक्टर गोबेल्स अपने भाषण में कह रहा था कि हम आशा करते थे कि प्रत्येक दिन दोपहर के पश्चात् बर्लिन पर अँग्रेज़ तथा फ्रान्सीसी वायुयान आक्रमण करेंगे परन्तु कोई भी आक्रमण नहीं हुआ।

जर्मनी ने भी इंगलैण्ड अथवा फ्रान्स पर किसी प्रकार का हवाई आक्रमण नहीं किया था। लन्दन पर भी उस समय हवाई आक्रमण नहीं हुआ। ब्रिटिश एक्सपिडीशनरी सेना शान्ति पूर्वक योरुप के तट में उतरी और फ्रान्स, बेल्जियम में प्रवेश कर गई। उसे रोकने अथवा नष्ट करने का किञ्चित् मात्र भी प्रयत्न जर्मनी ने नहीं किया। वह सेना रक्षक लाइन पर स्वतंत्रतापूर्वक पहुँच गई।

दोनों ओर से ८ महीने तक किसी प्रकार का हवाई आक्रमण नहीं हुआ। इसका भेद क्या है? क्या कारण था जिससे न तो जर्मनी ने ब्रिटेन अथवा फ्रान्स को सेना को रोकने का प्रयत्न किया और न ब्रिटेन और फ्रान्स ने जर्मनी की सेना को रोका इस का ठीक रहस्य अभी ज्ञात नहीं है परन्तु शायद इसका भेद यह था कि दोनों ओर से हवाई युद्ध की तयारियां हो रही थीं और दोनों ओर के लोग हवाई आक्रमण की हानि तथा खतरे से डर रहे थे और अपनी निर्बलता तथा सफलता का परिचय एक दूसरे को देना नहीं चाहते थे।

राइनमेटल-बोर्सिग आर्मीमेराट कारखाने में ९ सितम्बर १९३९ ई० को मार्शल गोरिंग ने कहा था कि यदि ब्रिटिश वायुयान हमारे देश पर अपने प्रचार वाली नोटिसें गिरायेंगे तो हम नोटिसों के बदले में बम बर्षा करेंगे। ३० नवम्बर को एम-डाडियर ने कहा यदि शत्रु ने हमारे गांवों पर बम गिराया तो हम भी उसके उत्तर में उसी नीति से उत्तर देंगे। १६ मार्च १९४० ई० को स्कापाफ्लो में आर्कनी मेनलैण्ड पर बम वर्षा की गई तो एक नागरिक की मृत्यु हुई थी और ७ व्यक्ति घायल हुये थे। उसके उत्तर में १९ मार्च को रायल एअर फोर्स ने सिल्ट के हार्नम स्थल हवाई अड्डे पर बम गिराया था। नार्वे के आक्रमण के पश्चात् सिल्ट पर फिर हवाई आक्रमण हुआ था। २३ और २४ अप्रैल को रात में वेस्टरलैण्ड हवाई स्टेशन पर भीषण हवाई आक्रमण किया गया था। अल्बोर्ग के हवाई अड्डे पर भी बम गिराये गये थे। यह बात इस लिये की गई थी कि डेन्मार्क पर आक्रमण करने के लिये जर्मनी हवाई अड्डों का प्रयोग न कर सके।

नार्वे में जर्मनी ने हवाई आक्रमण बड़े प्रकोप के साथ किया था। नामासे, अण्डलसनेस, एल्वेरम, स्टेङ्कजेर नगरों और बहुत से गाँवों पर बम बहुत बड़ी संख्या में गिराये गये और उन्हें नष्ट किया गया। शान्त प्रजा पर मशीनगनों द्वारा गोले चलाये गये थे। हवाई आक्रमण का प्रयोग भयभीत करने के लिये पूर्ण रूप से किया गया था। जर्मन हवाई शक्ति के कारण ही अँग्रेजों ने ट्रांढियम पर अधिकार नहीं किया था। इसी कारण ब्रिटिश सेना नार्वे अधिक संख्या में नहीं भेजी गई थी और जो वहां थी उसे हटा लेना आवश्यक प्रतीत हुआ था।

जर्मनी की हवाई शक्ति के कारण ही ब्रिटेन ने मध्यवर्ती नार्वे के युद्ध में भाग लिया था और जर्मनी के सैनिक स्थलों पर बम गिराया था। १७ मई १९४० ई० को ब्रिटिश बम वर्षकों ने जर्मनी के हैम्बर्ग, ब्रीमेन और हेनोवर के तेल के कारखानों पर बम वर्षा की। सितम्बर १९४० ई० तक हैम्बर्ग पर ३६, ब्रीमेन पर ३१ और हनोवर पर १६ बार ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा था। जर्मनी ने इसका विरोध किया था और कहा था कि ब्रिटिश वायुयान नागरिकों पर बम गिरा रहे हैं। ब्रिटिश वायुयान जान बूझ कर नागरिकों पर बम नहीं गिराते थे हां अचानक सैनिक अड्डों के समीप होने से उनका घायल होना आवश्यक ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी पर आक्रमण न करने वाली नीति का समर्थन मिस्टर चर्चिल ने किया था और कहा था कि "हम जर्मनी की भांति तयार नहीं हैं। हम युद्ध आरम्भ होने के समय से अधिक संगठित हैं और हमारे रक्षक सामान प्रबल हैं। हम अपनी प्रजा की रक्षा के लिये तयारी कर चुके हैं और हमारी प्रजा पर बम गिराने वालों को ठीक तौर पर सज़ा दी जावेगी"।

बहुत से लोग बृटेन की आक्रमण न करने वाली नीति के विरुद्ध थे। मिस्टर एमरी और डफ कूपर दोनों की राय थी कि अँग्रेज और अधिक कड़ी नीति का अनुसरण करें। लार्ड ट्रेञ्चार्ड जो ब्रिटिश सैनिक हवाई सेना का एक प्रधान व्यक्ति है उसने ८ मई १९४० ई० को कहा था कि हमको जर्मनी के उन स्थानों को अवश्य बमवर्षा करके नष्ट कर देना चाहिये जो स्थान रोज़ नये वायुयान तयार कर रहे हैं। अँग्रेज अपनी प्रतिज्ञा के कारण कदाचित् हवाई आक्रमण करने से पीछे हट रहे थे।

जब जर्मनी ने हालैंड पर आक्रमण किया तो उसने मई के दूसरे सप्ताह से अपना हवाई आक्रमण इंगलैंड पर भी आरम्भ किया। राटर्डम नगर को जर्मन वायुयानों ने बम वर्षा करके नष्ट कर डाला। बेल्जियम में टौर्नाय, लोवेन, निवेलेस और नामूर आदि नगरों पर बड़े भीषण आक्रमण जर्मन बम वर्षकों ने किये। फ्रान्स के रेलवे तथा हवाई स्टेशनों (नैन्सी, लियोन, लिली, कोलमार, लक्सेविल, पोनट्-वायसे, बेथूने, लेन्स, हेज़ब्रौक, अबेविली और लओन) पर जर्मनी ने भीषण हवाई आक्रमण किये। केराट के बन में भी जर्मन वायुयानों ने लगलगभग ४४ बम गिराये। मित्र सेना के वायुयानों ने भी उसके फल स्वरूप जर्मन सेना, मार्ग तथा मशीनों पर बम बर्षा किया।

उसके पश्चात् से आर० ए० एफ० के वायुयान जर्मनी के हवाई अड्डे, तेल के कारखानों और मशीन तथा वायुयान तयार करने वाले कारखानों, आने जाने के मार्गों आदि पर लगातार आक्रमण करते रहे। फोक उल्फ डारनियर, जँकरे, गोथा और मेसर्सचेमिट आदि वायुयान जिस कारखानों में तयार किये जाते थे उनपर भीषण बम बर्षा की गई। बी० एन० डबल्यू और डैमलेर-बेन्ज के कारखाने जहाँ वायुयानों के इञ्जिन तयार किये जाते थे वहां पर भी बम बर्षा ब्रिटिश वायुयानों ने किया। जर्मन का हैम नामक रेलवे केन्द्र जहाँ से पश्चिमी जर्मनी का सामान मंगाया तथा भेजा जाता है वहाँ पर सितम्बर तक में ६० हवाई आक्रमण हुये। डोर्ट मण्ड एम्स नहर जिससे बहुत अधिक सामान आता जाता था उसे दो बार बम बर्षा करके नष्ट किया गया। हैमबर्ग, ब्रेमेन, विलियम्स हेविन, कील कक्सहेविन आदि समुद्री अड्डों पर बहुत ज्यादा हवाई आक्रमण हुये।

इन हवाई आक्रमणों से जर्मनी के कारखानों तथा आर्थिक स्थिति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। पिलसेन के स्कोडा नामक शस्त्र तयार करने वाले कारखाने पर भी भीषण आक्रमण ब्रिटिश वायुयानों ने किया। नैपुल्स के सैनिक स्थान पर लन्दन से उड़ने वाले वायुयानों ने बम गिराया। जर्मनी को सचमुच आर० ए० एफ० के इन आक्रमणों से इतनी घबड़ाहट प्रतीत हुई कि उसने ब्रिटेन की शक्ति को सत्यानाश करने का विचार किया। वह ब्रिटेन पर आक्रमण करने की बात सोचने लगा। दक्षिणी पूर्वी इँगलैंड पर आक्रमण करने का निश्चय जर्मनी ने किया। उस भाग को आर० ए० एफ० के वायुयानों से खाली करना आवश्यक था क्योंकि हवाई आक्रमण होना ही सम्भव था।

१५ अगस्त को इङ्गलैंड के दक्षिणी हवाई तथा समुद्री अड्डों पर भीषण आक्रमण हुआ। आक्रमणकारी वायुयानों में अधिकांश जङ्कर्स वायुयान तथा ४८७ गोताखोर बम वर्षक थे। जिन्हें 'स्तुका' कहते हैं। मई और जून में इन्हीं बम वर्षकों की सहायता से जर्मनी ने फ्रान्स पर अधिकार जमाया था। ट्रूप कैरियर (सेना ढोने वाले) वायुयानों ने भी जर्मनी की सफलता में बहुत बड़ा भाग लिया है। यह जंकर्स संख्या में ५२ थे। ८७ गोताखोर वायुयानों ने इङ्गलैंड के आक्रमण में भाग लिया जिसमें उन्हें भीषण हानि उठानी पड़ी।

डंकिर्क की रक्षा करने में आर०ए०एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के वायुयानों का सामना किया था। इसलिये जब उनका आक्रमण इङ्गलैंड के तट पर हुआ उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ी। स्पिट फायर वायु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यानों ने १३ अगस्त को ६ जर्मन वायुयान गिराये। १५ अगस्त को १८० जर्मन वायुयान गिराये गये और स्तुका वायुयानों को मृत्यु के घाट उतरना पड़ा जिसमें आक्रमण के भाग्य पर मुहर लग गई।

जर्मनी ने इङ्गलैंड पर एकाएक आक्रमण करने के लिये हालैण्ड, बेल्जियम और उत्तर फ्रान्स के तटों पर हवाई जहाजों, समुद्री जहाजों और जल सेना को एकत्रित करना आरम्भ किया। वह इङ्गलिश चैनल पर धावा मारना चाहता था। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने स्चेल्ट, आरटैन्ड, कैले, बलोल लेहार्वे लौरियण्ट पर धावा करके और बम वर्षा करके जर्मनी की इस योजना को भी नष्ट कर दिया। सेना से भरे जहाजों पर रात में आर० ए० एफ० के वायुयान ने आक्रमण किया जिससे बहुत से सैनिक डूब गये, बहुत से जल मरे। १५ सितम्बर को फिर दक्षिणी इङ्गलैंड पर भीषण आक्रमण जर्मन वायुयानों ने किया और पहले से भी बुरी दशा उनकी की गई और लगभग १३२ जर्मन वायुयान नष्ट किये गये। हवाई युद्ध में इतने वायुयान कभी भी एक दिन में नष्ट नहीं हुये थे।

लफ्टवाके (जर्मनी) के बम वर्षकों को इङ्गलैंड के रक्षक साधनों को वेध कर दिन में भीतर प्रवेश करना कठिन था इसलिये रात में इङ्गलैंड के नगरों पर आक्रमण किये गये। परन्तु रात में आक्रमण करने के लिये लफ्टवाके के उड़ाकों को शिक्षा नहीं प्रदान की गई थी। आर०ए०एफ० के वायुयान रात और दिन दोनों समय आक्रमण करने में निपुण हैं। बम गिराने के स्थानों का पता लगाना जर्मन वायुयानों को कठिन होता था। बिना स्थान का पता लगाये बम गिराना मूर्खता है क्योंकि बमों का मूल्य अधिक होता है।

जर्मन बम वर्षकों ने लन्दन तथा इङ्गलैण्ड के और दूसरे नगरों पर भी बम वर्षा की। दिन में वायुयानों से रक्षा करने के लिये अच्छे साधन थे। परन्तु रात में रक्षक-साधनों की कमी थी। जर्मन बम वर्षकों ने जिस निर्दयता के साथ बम बर्षाये हैं उसका उत्तर यदि पाँसा फिरा तो ब्रिटिश वायुयान अवश्य ही देने का प्रयत्न करेंगे।

भीषण संग्राम आ रहा है। ब्रिटेन और ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति तगड़ी हो रही है। लफ्टवाके के वायुयान संख्या में आर० ए० एफ० के वायुयानों से अधिक हैं। प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल ने कहा है कि इङ्गलैंड में इस समय जर्मनी से अधिक वायुयान तयार हो रहे हैं और फिर अमरीका से आना अभी आरम्भ ही हुआ है। शीघ्र ही अमरीकन वायुयानों की बाढ़ आने वाली है। संयुक्तराष्ट्र से प्रति मास ५०० वायुयान आते थे, दिसम्बर में उनकी संख्या ७०० प्रतिमास और वर्तमान काल में १००० प्रति मास होने वाली है। कनाड़ा भी ३६० वायुयान वसंत १९४१ तक में प्रति मास भेजने को कह रहा है। प्रधान मन्त्री चर्चिल का कथन है कि १९४१ ई० में इङ्गलैण्ड हवाई शक्ति में जर्मनी से बढ़ जावेगा और वायु पर उसका प्रभुत्व हो जावेगा।

ब्रिटेन के एअर मार्शल सर फिलिप जोबर्ट ने २४ अक्तूबर को बतलाया था कि ब्रिटिश वायुयान जर्मन वायुयानों से अधिक मजबूत तथा अच्छे हैं। वह १९४१ ई० तक और अधिक अच्छे हो जावेंगे। बेल, ब्रूस्टेर, कर्टिस और लाकहीड लड़ाके वायुयान तथा डगलस, बोइँग और मार्टिन बम वर्षक वायुयान नये वायुयान से अधिक प्रशंसनीय होंगे। अभी तक लाकहीड हडसन वायुयान की मशीन अच्छी समझी जाती है परन्तु लाकहीड वेगा का नम्बर उससे भी अधिक बढ़ जावेगा। जर्मनी में भी वायुयानों को अधिक अच्छा तयार करने में उन्नति की जावेगी परन्तु अमरीका की सहायता से इँगलैण्ड ही प्रभुत्व रख सकेगा और संख्या में भी इंगलैण्ड की प्रधानता हो जावेगी तो फिर इस बड़े युद्ध का अंत शीघ्र ही हो जावेगा।

अब तक जर्मनी ने हवाई तथा स्थली शक्ति की सहायता से विजय प्राप्त की है। आगे यह देखना है कि क्या समुद्री तथा हवाई शक्ति के समागम से सफलता प्राप्त होगी? यह बात सिद्ध हो चुकी है कि वायुयानों के आविष्कार से समुद्री जहाजों का किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँची है। विध्वंश कारक स्लूप, सुरंग साफ करने वाले जहाज वायुयानों द्वारा डुबाये जा चुके हैं परन्तु अभी बड़े जहाज इनके द्वारा नहीं डूबे हैं। वायुयान तथा समुद्री जहाज के युद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वायुयान ही को हानि हुई है। अब यह देखना है कि क्या हवाई तथा जलशक्ति मिलकर हवाई तथा स्थल शक्ति पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। यही इंगलैंड और जर्मनी के मध्य है।

निश्चय ही स्थली युद्ध होगा। मध्य पूर्व में सेनाओं में संघर्ष होगा। इटली के साथ जो युद्ध अब तक हुआ है उसमें स्थल के ऊपर ब्रिटेन को इटली के ऊपर विजय प्राप्त हुई है। यदि इंगलैंड शक्तिशाली बना रहता है तो इटली अथवा जर्मनी को किसी प्रकार का भी लाभ नहीं हो सकेगा। यदि ब्रिटेन की जल तथा हवाई शक्ति बढ़ती रही तो फिर जर्मनी को विजय प्राप्त नहीं हो सकती। ब्रिटेन ने भीषण हवाई बेड़े के तयारी का भार उठाया है उसमें धुरी राष्ट्रों को विजय प्राप्त करना कठिन होगी। यही युद्ध के तीसरे क्षेत्र में देखना शेष है कि संघर्ष कैसा होता है।

हीरे की खान

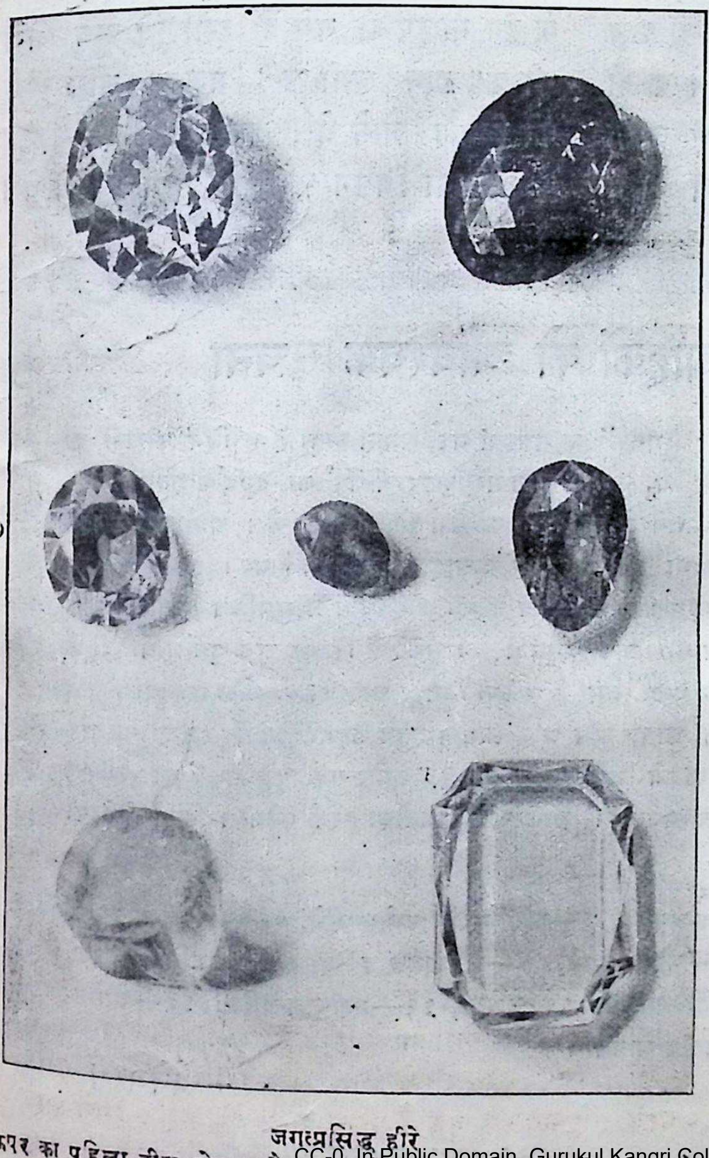

जगत्प्रसिद्ध हीरे

ऊपर का पहिला हीरा कोहनूर है, दूसरी पंक्ति में बीच का हीरा बिना कटा है

हीरे की खान के पता लगाने का नियम यह है कि उसके ऊपर की मिट्टी हटा दी जाती है और नीली भूमि को ढकी हुई छोड़ देते हैं। उसके पश्चात् रंगमहलों के सहारे भूमि के भीतर काम करने वाले हीरे वाली चट्टान में सूराख करते हैं और उसे तोड़ डालते हैं। नीली भूमि तोड़ने के पश्चात् ऊपर बराबर भूमि पर लाई जाती है। बराबर भूमि को फ्लोर (फर्श) कहते हैं वहाँ पर नीली मिट्टी फैला दी जाती है। मिट्टी फैलाने के बाद उसमें से झाड़ियाँ और घास साफ कर दी जाती है। बड़े बेलनों से मिट्टी बराबर कर दी जाती है। डे बियर्स और किम्बरले में यह फ़्लोर हज़ारों एकड़ में बने हैं। फ्लोर के ऊपर एक फुट ऊँची नीली मिट्टी बिछाई जाती है। मिट्टी बिछाने के पश्चात् उसे छोड़ दिया जाता है जिससे वह सूर्य के प्रकाश और वर्षा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण चूर चूर हो जावे। अधिक जल्दी करने के लिये ही बेलनों का प्रयोग किया जाता है।

नीली मिट्टी को चूर चूर करने के लिये जलवायु के अनुसार तीन से छः महीने तक का समय चाहिये। जब मिट्टी चूर करने का काम समाप्त हो जाता है तो वह ट्रंक में भर कर चक्की के गले में डाली जाती है। वह वहां पर घूमते हुये बेलनों और नलों में अच्छी तरह साफ हो जाती है। साफ करने वाली कल से हीरा और भारी पदार्थ अलग करने वाली मशीन में लाये जाते हैं। अलग करने वाली मशीन में कई प्रकार की चलनियाँ होती हैं। जिससे छोटे बड़े हीरे सभी अलग हो जाते हैं।

जब कभी भी खान के अन्दर भारी धड़ाका करके चट्टान तोड़ी जाती है कोई न कोई दुर्घटना अवश्य हो जाती है परन्तु हीरे की खान में सबसे बड़ा भय मानसिक होता है। हीरे की खान में काम करने वाले मज़दूर लोग अवश्य ही लालच में पड़ कर हीरे की चोरी करते हैं। अब उनके चोरी करने के ढंग मालूम हो गये हैं इसलिये अब चोरी भी कम होने लगी है। मजदूर लोग हीरों को निगल जाते थे। एक बार एक मज़दूर पकड़ा गया जिसने २१ हीरे निगल लिये थे।

"भूगोल" के ग्राहकों को आवश्यक सूचना

अप्रैल १९४१ का अंक भेज कर "भूगोल" का सत्रहवां वर्ष समाप्त होता है। जिन सज्जनों का चन्दा अप्रैल १९४१ में समाप्त होता है वे कृपया आगामी अठारहवें वर्ष का वार्षिक मूल्य ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज दें क्योंकि वी० पी० भेजने से चार आने का खर्च अधिक पड़ता है। आगामी अठारहवें वर्ष का विशेषाङ्क "आसाम-अंक" होगा जो मई, जून, जुलाई का संयुक्ताङ्क होगा। इसमें लगभग १६० पृष्ठ होंगे। यह आसाम के एक बड़े नक़शे, कई अन्य नक़शों और चित्रों से सुसज्जित रहेगा। इसकी विषय-सूची नीचे दी जाती है जिसे देख कर आप अनुमान कर सकते हैं कि यह अंक भूगोल प्रेमियों के कितने काम का होगा। जिन ग्राहकों का चन्दा जमा है अथवा जिनका चन्दा ३० अप्रैल तक आ जायगा उन्हें यह अंक उनके चन्दे में ही मिलेगा। कागज़ और अन्य सामान बहुत महँगा होने के कारण यह अंक परिमित संख्या में ही छापा जा रहा है इसलिये नये ग्राहकों को ३० अप्रैल तक "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० अवश्य भेज देना चाहिये अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस अंक की संक्षिप्त विषय-सूची नीचे दी जाती है:—

१—विषय-प्रवेश, २—भौगोलिक-अवस्था, ३—व्यापार और उद्योग-धन्धे, ४—चाय का व्यवसाय, ५—पार्वत्य और सीमान्त जातियाँ, ६—प्रसिद्ध स्थान, ७—राजनैतिक इतिहास, ८—धार्मिक अवस्था, ९—सामाजिक अवस्था, १०—भाषा और साहित्य, ११—शिक्षा, १२—महापुरुष-चरित्र, १३—शासन-व्यवस्था, १४—उपसंहार और १५—पठनीय सामग्री।

—मैनेजर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ दिसम्बर—एलबसन सड़क पर यूनानी सेना ने इटली की सेना का पीछा किया। भागती हुई इटली की सेना पर आगे की ओर से विद्रोही अल्बेनियन लोगों ने छापा मारा। इस प्रकार इटली की सेना पर आगे और पीछे दोनों ओर से गोलाबारी हुई।

२ दिसम्बर—डच तट के समीप शत्रु के सामान ले जाने वाले समुद्री जहाज पर ब्रिटिश टारपेडो मोटर बोटों तथा वायुयानों ने धावा मारा और ८००० टन का एक जहाज डुबो दिया।

रात के समय इंगलैण्ड के लन्दन आदि नगरों पर जर्मन वायुयानों ने आक्रमण किया जिसके फलस्वरूप कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुए। एक वायुयान गिराया गया।

युगोस्लैव-अल्बेनियन सीमा पर यूनानी सेना आगे बढ़ने लगी है।

३ दिसम्बर—सीदी बरानी में इटली के वायुयानों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आक्रमण करके बम्ब गिराया जिससे इटली के दो तीन इञ्जिन वाले और दो दो इञ्जिन वाले वायुयान नष्ट हुए। इटैलियन पूर्वी अफ्रीका में मेतामा-गोंदर सड़क पर मोटर पर जाने वाली इटैलियन सेना पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा।

उत्तर की ओर इटली की सेना हटने लगी। एड्रियाटिक तट पर इटली की १००० सेना को यूनानी लोगों ने पकड़ लिया।

विलियम्सहेविन के बन्दरगाह पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मारा और बड़ी हानि पहुँचाई।

४ दिसम्बर—जर्मनी और रूमानिया के बीच १० साल के लिये सन्धि हुई।

सान्ती क्वारंटा के समीप यूनानी सेना पहुँची। आर्गेरोकास्त्रो की पहाड़ियों पर यूनानी लोगों का अधिकार हो गया।

५ दिसम्बर—यूनानी सेना ने प्रेमेली गाँव पर अधिकार कर लिया और अर्गीरोकास्त्रो नगर को घेर लिया। यह नगर अल्बेनिया में इटली सेना का प्रधान अड्डा है।

इटली तथा जर्मनी पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मारा और भीषण हानि कारखानों को पहुँचाई। सीदी बरानी और सोलुम स्थानों पर भी हवाई आक्रमण हुए।

इंगलैण्ड पर शत्रु वायुयानों ने हवाई आक्रमण किया। सिनेमाघर पर बम्ब गिरा जिससे कुछ हानि हुई। लगभग १५ वायुयान गिराये गये। दो ब्रिटिश वायुयान नष्ट हुए। जर्मन सुरंगों के कारण चार ट्रालर जहाज अंग्रेज़ों के डूबे। ब्रिटिश चैनल पर बड़ी तोपों द्वारा गोलेबारी हुई।

आर्गेरोकास्त्रो अल्बेनिया के सैनिक अड्डे तथा सान्तीक्वारेण्टा पर यूनानी सेना का अधिकार हो गया। बहुत सा सामान यूनानी लोगों के हाथ लगा और एक इटैलियन सेना पकड़ी गई।

६ दिसम्बर—दक्षिणी अटलांटिक सागर में ब्रिटिश करनारवोन कैसिल नामक लड़ाका जहाज तथा जर्मन वायुयानों में युद्ध हुआ। ब्रिटिश जहाज का कुछ भाग बम्ब गिरने से नष्ट हो गया। अफ्रीकन मरुस्थल में ब्रिटिश सेना को विजय प्राप्त होने लगी। कसाला के उत्तर शत्रु सामान ले जाने वाला जहाज तथा ट्यूरिन पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आक्रमण किया।

शत्रु वायुयानों ने इंगलैण्ड पर धावा किया और विंडसर के क़िले, हालीसूर भवन तथा ग्रीनविच के नक्षत्र-गृह पर बम्ब गिराये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ईन्ववेविन हाम और लग्नॉरियन्ट पर धावा करके बम्ब गिराये। एथेन्स नगर में अर्गेमोकास्त्रो की विजय पर खुशी मनाई गई।

७ दिसम्बर—यूनानी सेना ने बेलिबनों नगर पर अधिकार कर लिया। स्कुम्बी नदी के तटीय भाग में भीषण युद्ध होता रहा और इटली की सेना यूनानी सेना को कुत्रा की ओर जाने से रोकती रही। ६०० इटैलियन सैनिकों को यूनानी लोगों ने गिरफ्तार किया।

जर्मन वायुयानों ने रात में ब्रिस्टल नगर पर आक्रमण किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने डन्कर्क और बोजोन नगरों पर आक्रमण किया।

८ दिसम्बर—इटली के जल सेना के प्रधान एडमिरल क्वागनारी ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। यूनानी सेना अल्बेनिया में आगे बढ़ी।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने रुह प्रान्त के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारखानों, पर बम वर्षा किया । डुसेल्डार्फ प्रान्त में भी बम गिराये गये । शत्रुवायुयानों ने भी लन्दन पर धावा मारा और बम गिराया जिससे लन्दन के कई भवन नष्ट हुये । कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुये ।

६ दिसम्बर—इटली की सेना अल्बेनिया में पीछे हटी, यूनानी सेना आगे बढ़ती रही । आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मन सैनिक अड्डों तथा कारखानों पर धावा मारा ।

१० दिसम्बर—मिस्र की जो ब्रिटिश सेना ग्रेज़ियानी के अधिकार में थी उसने सीदी बरानी के दक्षिणी इटली की सेना पर छापा मारा और ५०० सशस्त्र सैनिकों को पकड़ लिया । अल्बेनिया में यूनानी सेना आगे बढ़ी ।

११ दिसम्बर—सीदी बरानी के समीप ब्रिटिश सेना ने आर्मर्ड भाग में दो इटैलियन सेना को काट दिया और ४००० सैनिकों को पकड़ लिया ।

बर्लिन में हिटलर ने शस्त्र बनाने वाले कई हजार मज़दूर समाज को भाषण दिया और कहा कि यदि हम हार जाते हैं तो हमारा अन्त हो जावेगा ।

ब्रिटिश के वायुयानों ने जर्मनी के वायुयान बनाने वाले कारखानों तथा जहाज़ी घाटों पर बम गिराया ।

१२ दिसम्बर—खियामारा पहाड़ी, प्रेमेती प्रान्त, स्कुम्बी घाटी, मोस्कोपोलिस, मोट्रा पर्वत, लिन, अर्गेरोकास्ट्रा के उत्तर, कोड्रा गांव मोका पर्वत आदि स्थानों पर यूनानी सेना, शत्रु सेना का सामना करती आगे बढ़ रही थी ।

सीदी बरानी पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया। ६००० इटैलियन सेना पकड़ी गई । यह अँग्रेज़ सेना की एक मुख्य विजय है ।

जर्मन वायुयानों ने पश्चिमी, मध्यवर्ती तथा दक्षिणी पूर्वी तटीय नगरों पर हवाई आक्रमण करके बम बर्षा की । बहुत से घर ढा गये । कवेण्ट्री नगर के ३० चर्चों में केवल ६ चर्च सुरक्षित बच रहे शेष नष्ट हो गये । आर० ए० एफ० के वायुयानों ने भी दक्षिणी जर्मनी के नगरों पर हवाई आक्रमण किया ।

१३ दिसम्बर—जर्मन वायुयानों ने बरमिंघम पर धावा मारा । उन्होंने एटन कालेज पर बम गिराये । यह स्कूल ५०० बर्ष पहले हेनरी षष्टम द्वारा स्थापित किया गया था। लीबिया में इटली की सेना की हार हुई । ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी ।

१४ दिसम्बर—एड्रियाटिक तट पर यूनानी सेना ने इटली की सेना को परास्त कर भीषण हानि पहुँचाई । ब्रिटिश सेना ने लीबिया में इटली की सेना को पीछे हटा दिया और बढ़ती चली गई । आर०ए०एफ० के वायुयानों ने तो ब्रुक और एल एडेन हवाई अड्डे पर आक्रमण किया और कई शत्रु के वायुयान नष्ट किये ।

जर्मन वायुयानों ने शेफील्ड प्रान्त में धावा मारा और बम गिराया । ब्रिटिश टारपीडो बोट ने ४ हज़ार टन के एक जर्मन जहाज को नार्वे के तट पर डुबो दिया ।

१५ दिसम्बर—जर्मनों के नगरों में आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बम गिरा कर भीषण आग लगा दिया । जिसमें बड़ी हानि हुई है ।

मिस्र-लीबिया सीमा पर ब्रिटिश और शत्रु सेना में भीषण युद्ध हुआ । हवाई युद्ध भी बड़े जोर से हुआ । ब्रिटिश सेना आगे बढ़ती रही और उसने ३०,००० इटैलियन पकड़ लिये । अल्बेनिया में यूनानी सेना का आगे बढ़ना कुछ कम हो गया ।

आयरलैंड तट के ४०० मील उत्तर-पश्चिम एक कनाडा लाइनर जहाज वेस्टर्न प्रिन्स डुबो दिया गया । जहाज में कनैडा की युद्ध सामग्री लदी हुई थी ।

१६ दिसम्बर—मिस्र-लीबिया सीमा को पार करके ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी । तटीय भाग को शत्रु सेना पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम गिराया । लीबिया प्रान्त में ब्रिटिश सेना जोरों के साथ आगे बढ़ती रही ।

१७ दिसम्बर—सोलुम और कपूज़ो के गढ़ों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया । ब्रिटिश वायुयान शत्रु सेना पर बम गिराते रहे । कई एक शत्रु वायुयान पकड़े गये । ब्रिटिश सेना बर्दिया की ओर बढ़ने लगी । अल्बेनिया में इटली की सेना समुद्र में भगने लगी और यूनानी आगे बढ़ने लगे ।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बर्लिन तथा कील के जहाज़ी अड्डे पर भीषण बम बर्षा किया । बर्लिन की सुरँग रेलवे को हानि पहुँची ।

१८ दिसम्बर—नैपियर स्टार नामक ब्रिटिश लाइनर उत्तरी अटलाण्टिक में जर्मन सबमरीन (पनडुब्बे) द्वारा डुबाया गया ।

इटैलियन सुमालीलैण्ड के शत्रु एल-वाक गढ़ पर ब्रिटिश अधिकार हो गया । बार्दिया की शत्रु से तोब्रूकान की ओर हटाई गई । बनर दर्रे होकर जर्मन सेना ने इटली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रवेश किया। जर्मनी के मैनरहीम स्थान पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब गिराये।

१६ दिसम्बर—बार्दिया में मित्र सेना ने २ शत्रु सेना को काट कर आगे बढ़ी। शत्रु सेना को परास्त मिली कुछ इटैलियन लोग पकड़े गये।

उत्तरी जर्मनी और इटली में आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मारा। मैनरहीम नगर में भीषण आग लगाई गई। मिलान पर बम्ब गिराये गये।

२० दिसम्बर—यूनानी सेना ने इटली की सेना को हराया और कई नये स्थानों पर अधिकार जमा लिया। ६०० इटैलियन सैनिक, कुछ अफसर और कुछ इटली के टैंक पकड़े गये। वलोना और दुर्राजो में ब्रिटिश तोपों ने गोलेबारी किया। एड्रियाटिक सागर के तट तथा अट्राण्टों की सुरँग भरी खाड़ी में होकर ब्रिटिश लड़ाके जहाज भीतर घुस गये और उन्होंने शत्रु के जहाज़ों को मार भगाया। ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने शत्रु के सामान ले जाने वाले एक जहाज़ को डुबो दिया। रुहर प्रान्त के कारखानों, इटली और ब्रिण्डसी पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मार कर बम गिराया।

अटलाण्टिक सागर में कार्लटोन नामक ब्रिटिश स्टीमर शत्रु टारपीडो बोट द्वारा डुबाया गया।

२१ दिसम्बर—बर्लिन तथा जर्मनी के आक्रमणकारी अड्डों पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा।

बर्दिया पर ब्रिटिश सेना ने लगातार गोलाबारी किया। लीबिया में मित्र सेना आगे बढ़ी।

२२ दिसम्बर—ब्रिटिश वायुयानों ने शत्रु के समुद्री अड्डों पर धावा मार कर बम्ब वर्षा की। जापान के सैनिक प्रतिनिधियों ने इटली और जर्मनी के लिये प्रस्थान किया। बोलोन पोर्ट पर ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ ने आक्रमण किया।

२३ दिसम्बर—मैनचिस्टर नगर पर युद्ध का सबसे भीषण शत्रु हवाई आक्रमण हुआ। बम्ब के प्रकोप से भीषण आग लगी जो कई मील तक दिखाई पड़ती थी। बहुत से घर तथा दूकानें नष्ट हो गईं। कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुये। ४ घंटे तक लगातार हवाई आक्रमण होता रहा।

मर्सीसाइड और पूर्वी मध्यवर्ती नगरों पर भी आक्रमण हुआ। कामन्स सभा के भवन पर शत्रु ने बम्ब गिराये जिससे कुछ भाग नष्ट हो गया।

चिमारा के एड्रियाटिक सागर के तट पर यूनान का अधिकार हो गया। टेपेलिनी में इटली की सेना ने यूनानी सेना का सामना किया।

२४ दिसम्बर—अल्बेनिया में भीषण युद्ध हुआ। लीबिया में आर० ए० एफ० ने घोर हवाई आक्रमण किया। शत्रु तथा मित्र वायुयानों में घोर संग्राम हुआ। कई शत्रु-वायुयान गिराये गये।

ब्रिटिश के वायुयानों ने हिटलर के आक्रमण करने वाले अड्डों पर धावा मार कर बम्ब गिराया। दक्षिणी जर्मनी के मैनरहीम आदि नगरों पर भी शत्रु वायुयानों ने धावा मारा। ब्रिटिश रायल एयर फोर्स और जर्मनी के लफ्ट वाफे के बीच में समझौता हुआ कि बड़े दिन के त्योहार के दिनों में आक्रमण बन्द रक्खे जावें।

२५ दिसम्बर—बर्दिया को मित्र सेना ने घेर लिया। ट्रिपोली के इटेलिन बन्दरगाह पर ब्रिटिश लड़ाके जहाजों तथा वायुयानों ने धावा मार कर बहुत से घरों, समुद्री हवाई जहाजों के स्टेशनों आदि को नष्ट कर डाला। यूनानी सेना ने चिमारा पर अधिकार कर लिया। बहुत सा लड़ाई का सामान, आठ तोपें और इटैलियन सैनिक भी पकड़े गये। कैस्टल बेनीटो और ट्रिपोली पर ब्रिटिश वायुयानों का आक्रमण हुआ जिससे कई स्थानों पर आग लग गई।

वेलोना की ओर यूनानी सेना बढ़ी। ब्रिटिश वायुयानों ने भीषण बम्ब वर्षा किया। इटली की सेना उत्तर-पश्चिम को ओर हटी। गज़ाला पर आर० ए० एफ़ ने बम्ब गिराये।

२६ दिसम्बर—यूनानी सेना ने लिन पर अधिकार किया और एल्बासन की ओर बढ़ी।

२७ दिसम्बर—दक्षिणी प्रशान्त सागर में शत्रु जहाज आया और उसने नारू के द्वीप पर गोलाबारी किया। शत्रु जहाज पर जापानी झंडा लगा था। डच तथा ब्रिटिश जहाजों ने कुछ भाग में सुरँगें बिछा चार्ल्स प्राट नामक संयुक्त राष्ट्र का टैंकर जहाज डूबा जिससे २२ आदमी डूब गये। जर्मन जहाज को पकड़ने का प्रयत्न किया गया परन्तु पता नहीं चला। नाज़ी सामान ले जाने वाले जहाज़ को डच वेस्ट इंडीज के समुद्र में डच जहाज ने डुबाया।

चिमारा के उत्तर-पूर्व यूनानी सेना बढ़ी और उसने बहुत सा लड़ाई का सामान तथा कुछ शत्रु सेना पकड़ लिया। कोर्फू द्वीप पर इटली वायुयानों ने हवाई आक्रमण करके २१ स्त्री तथा बच्चों को मार डाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ दिसम्बर—बड़े दिन की छुट्टियों के पश्चात् आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आक्रमणकारी बन्दरगाहों पर धावा मारा। बर्लिन पर भी हवाई आक्रमण किया गया। लन्दन पर जर्मन वायुयानों ने भीषण आक्रमण किया और हानि पहुँचाई।

२९ दिसम्बर—फ्रान्स के प्रधान पेटां ने हिटलर की मांग अस्वीकार किया। ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण कारी बन्दरगाहों तथा फोकउलक, लग्रोरियन्ट, लरोडरेज़, मेरिगनाक आदि स्थानों पर भीषण बम्ब वर्षा की। वायुयान प्रति मिनट १०० बम गिरा रहे थे। शत्रु के सामान ले जानेवाले जहाज में बम्ब द्वारा आग लगा दी गई।

३० दिसम्बर—प्रेसीडेन्ट रुजवेल्ट ने इंगलैण्ड को अधिक सहायता देने का बचन दिया।

जर्मन वायुयानों ने लन्दन पर भीषण आक्रमण तथा बम्ब बर्षा की। शत्रु ने आग लगाने वाले बम्ब गिरा कर नगर के घरों को जला देने का प्रयत्न किया। उत्तरी अटलांटिक सागर में नाजी वायुयानों ने ब्रिटिश पथरचक जहाजों पर बम्ब गिरा कर उन्हें नष्ट करने का यत्न किया। लन्दन में ७ नाज़ी वायुयान गिराये गये।

३१ दिसम्बर—नाज़ी वायुयानों ने आग लगाने वाले बमों की वर्षा करके समस्त लन्दन नगर में आग लगा देने का यत्न किया। नगर के ९ प्रसिद्ध चर्च, गिल्ड हाल, ओल्ड बैली आदि भवन नष्ट किये गये। चीपसाइड में सभी भवन नष्ट कर दिये गये। नाजी सेना ने इटली और रूमानिया की ओर प्रस्थान किया।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के नगरों पर बम गिराया। यूनानी सेना आगे बढ़ी और पांग्रेडेट्ज़ नगर के पश्चिम नये स्थान पर जा डटी।

१ जनवरी १९४१—ब्रिटिश तोपों ने बारदिया में गोलेबारी की। ब्रिटिश के वायुयानों ने भी आक्रमण किया। २० हज़ार इटैलियन सेना बारदिया में घेरी गई।

२ जनवरी—लन्दन पर जर्मन हवाई हमलों से जो भवन नष्ट हुए थे उन्हें बिलकुल गिरा देने का काम होता रहा। भवनों की आग बुझाने के लिये आग बुझाने वाले इञ्जिन ७२ घंटे तक काम करते रहे।

ब्रिटिश लड़ाका जहाजों ने एड्रियाटिक सागर में सामान से भरे हुए इटली के चार जहाजों को डुबो दिया।

३ जनवरी—पश्चिमी इंगलैण्ड के नगरों पर भीषण बम वर्षा हुई। कारडिफ नगर की गलियों में बम गिराये गये। अधिकांश आग लगाने वाले बमों का प्रयोग किया गया। मालूम होता था कि अग्नि वर्षा हो रही है। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ब्रेमेन पर धावा मारा। ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज ने इटली के यू-बोट को डुबो दिया। डाकर से कैसब्लाङ्का जाते समय फ्रान्सीसी पनडुब्बा जहाज डुबाया गया।

४ जनवरी—इटली के जहाजी अड्डों पर ब्रिटिश वायुयानों ने भीषण हमला किया। बारदिया में ५००० इटैलियन सैनिक पकड़े गये। आस्ट्रेलियन सेना ने टैंकों की सहायता से बारदिया की रक्षक सेना को एक स्थान पर तोड़ दिया।

इटली की सेना ने यूनानी सेना के प्रतिकूल धावा मारा।

५ जनवरी—बारदिया की मध्यवर्ती रक्षक लाइन को तोड़ कर ब्रिटिश सेना ने ८ हज़ार इटैलियन सैनिकों को पकड़ लिया। ब्रिस्टल नगर पर शत्रु वायुयानों ने भीषण बम वर्षा किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ब्रमेन नगर में बमों द्वारा आग लगा दिया।

६ जनवरी—बारदिया पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया। कुल ३०,००० इटैलियन पकड़े गये।

७ जनवरी—ब्रिटिश सेना तोब्रूक बन्दरगाह की ओर बढ़ी। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने अफ्रीका के तटीय इटैलियन अड्डों पर बम वर्षा किया

८ जनवरी—इटली की सेना ने एल एडेम के हवाई अड्डे को खाली कर दिया। तोब्रूक के समीप ब्रिटिश मशीन वाली सेना पहुँच गई। एबीसीनिया की सीमा पर ब्रिटिश सेना पहुँच गई। रूमानिया में फिर से विद्रोह की आग प्रज्वलित हो उठी। ग्रीनलैंड पर संयुक्त राष्ट्र की सेना ने अधिकार कर लिया। वेस्टमिनिस्टर भवन चर्च और हाल पर जर्मन हवाई जहाज़ों ने भी भीषण बम वर्षा किया

९ जनवरी—थाईलैंड (स्याम) की सरकार ने फ्रांसीसी इँडोचीन पर युद्ध घोषणा किया। ब्रिटिश सेना तोब्रूक की ओर बढ़ती हुई हज़ाला पहुँच गई। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने शत्रु के जहाज़ी तथा हवाई अड्डों पर आक्रमण किया।

१० जहाज़ी—थाइलैंड की सेना इण्डोचीन के पश्चिमी प्रान्त कम्बोडिया में प्रवेश कर गई। थाईलैंड की हवाई सेना ने भीषण बम वर्षा किया और सिसोपोन नगर में आग लगा दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ जनवरी—तोब्रूक को ब्रिटिश सेना ने चारों ओर से घेर लिया। ब्रिटिश वायुयानों ने फ्राँसीसी तट को पार करके बम वर्षा की। दक्षिणइंगलैंड के नगरों पर शत्रु वायुयानों ने धावा मारा और भीषण हानि पहुँचाई। यूनानी सेना ने क्लिसूरा नगर पर अधिकार जमा लिया।

१२ जनवरी—आर० ए० एफ० ब्रिटिश के वायुयानों ने टयूरिन तथा डच और बेल्जियम तट पर आक्रमण करके बम गिराये।

१३ जनवरी—मिस्र लीबिया की सीमा पर जेराबूब का इटैलियन गढ़ ब्रिटिश सेना ने घेर लिया। ब्रिटिश वायुयानों ने उत्तरी अफ्रीका के इटैलियन अड्डों पर भीषण बम वर्षा की। इटैलियन सेना ने डर्ना, मारतूक, एल तमीमा और एल गुज़ाला आदि हवाई अड्डे छोड़ दिये हैं। एबीसीनिया की सीमा पर हेल सेलासी इथोपिया का राजा ब्रिटिश अफ़सरों से मिला। एबीसीनिया में इटली के विरुद्ध विद्रोह हो गया।

१४ जनवरी—यूनानी सेना ने मध्यवर्ती भाग में इटैलियन सेना पर अचानक छापा मारा जिससे वह बड़े संकट में पड़ गई। इटली के वायुयानों ने कोर्फू द्वीप के दक्षिण एक छोटे बन्दरगाह पर आक्रमण किया।

१५ जनवरी—मध्यवर्ती रूमसागर में शत्रु के वायुयानों ने ब्रिटिश लड़ाके जहाज़ों पर सामान यूनान जा रहा था। इलस्ट्रियस जहाज में वायुयान भरे थे वह और साउथम्पटम तथा गैलण नामक जहाज नष्ट हुये। प्लिमथ बन्दरगाह पर शत्रु वायुयानों ने दो घंटे तक हवाई आक्रमण किया।

नार्वे तट पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा। फ्रान्सीसी सेना ने थाइलैंड पर प्रत्याक्रमण किया परन्तु उसकी हार हुई।

१६ जनवरी—नाज़ी हवाई तथा जहाजी अड्डों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने भीषण हमला किया कैटानिया में चालीस शत्रु वायुयान नष्ट हुये। लफ़्ट वाफे के हवाई अड्डे रूम सागर में बनाये गये। अधिक जर्मन सेना रूमानिया में पहुँची। शत्रु के हवाई आक्रमण के कारण ब्रिटिश क्रूशियर डूब गया।

१७ जनवरी—विलियम्स हेविम पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा। ब्रिस्टल नगर पर अग्नि बम्बों की बर्षा हुई। ५ आर० ए० एफ० के जहाज नष्ट हुये एड्रियाटिक सागर में लगूरिया नामक इटली का जहाज यूनानी लोगों ने डुबो दिया।

१८ जनवरी—वायुयानों ने दक्षिणी वेल्स पर भीषण धावा मारा। ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मन शस्त्र बनाने वाले कारखानों पर बम्ब गिराये।

१९ जनवरी—सारडीनिया नामक इटली का सामान ले जाने वाला जहाज यूनानी पनडुब्बे जहाज द्वारा डुबाया गया। स्वेज नहर पर शत्रु वायुयानों ने बम्ब गिराये। यूनानी सेना ने नए स्थानों पर अधिकार किया।

२१ जनवरी—हिटलर और मुसोलनी सम्मेलन हुआ। जापान के विदेशी मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र को चेतावनी दिया। एरीट्रिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी। स्याम की खाड़ी में थाईलैण्ड और फ्रान्सीसी सेना में समुद्री युद्ध हुआ। अल्बेनिया में भीषण युद्ध हुआ।

२२ जनवरी—रूमानिया में आइरन गार्ड ने विद्रोह किया बलोना पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब गिराया। अल्बेनिया में ४०,००० इटैलियन मारे गये।

२३ जनवरी—ब्रिटिश सेना ने तोब्रूक में प्रवेश किया। बन्दरगाह पर इटली के ठहरे हुये जहाज़ में आग लगा दी गई। ब्रिटिश विध्वंश कारी एक जहाज़ डुबो दिया गया। जापान ने थाईलैंड और इन्डोचीन के मामले में मध्यस्थ होकर झगड़ा समाप्त करने का बचन दिया।

२४ जनवरी—तोब्रूक में २० हज़ार इटैलियन सेना पकड़ी गई एरीट्रिया में ४० मील तक ब्रिटिश सेना घुस गई। हेलसेलासी ने एबीसीनिया में प्रवेश किया। रूमानिया में प्रवेश किया। रूमानिया की स्थित में सुधार हुआ।

२५ जनवरी—रूमानिमा में रेजीमेन्ट ने शान्त स्थापित किया। ६०० विद्रोही पकड़े गये। थाईलैण्ड और इण्डोचीन के मध्य लड़ाई समाप्त हो गई जापान ने मध्यस्त का काम किया। ब्रिटिश सेना ने अबीसीनिया में प्रवेश किया।

२६ जनवरी—डेर्ना अंग्रेज़ों के अधिकार में होगया। नाज़ी सेना ने इटली में प्रवेश किया। इटली की सेना का नैतृत्व जर्मन अफसरों के हाथों में किया गया। जापान ने संयुक्त राष्ट्र को चेतावनी दिया कि मित्रता के भाव रखना असम्भव है। अल्बेनिया में यूनानी तथा इटली की सेना के मध्य भीषण युद्ध हुआ।

२७ जनवरी—डेर्ना नगर पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया। एरीट्रिया में ब्रिटिश सेना और आगे बढ़ी। जर्मनी की सेना ने इटली में प्रवेश किया। मुसोलनी की सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नैतृत्व जर्मन अफसरों के हाथ में दिया गया। मार्शल ग्रैज़ियानी इटैलियन प्रधान सेनापति के पद से अलग कर दिया गया।

२८ जनवरी—यूनानी सेना आगे बढ़ी। इरीट्रिया में ब्रिटिश सेना को विजय प्राप्त हुई। एबीसीनिया में इटली की सेना पश्चिम की ओर हटी।

२९ जनवरी—ब्रिटिश तथा यूनानी वायुयानों ने इटली के प्रधान सैनिक स्थानों पर आक्रमण किया। रोम नगर में विद्रोह हो गया। मिलान और ट्रीस्ट नगर में विद्रोही पकड़े गये। वावेल की मित्र सेना अगोदांत पहुँची। इरीट्रिया में शत्रु सेना समुद्र की ओर भाग कर अपने प्राणों की रक्षा करती रही।

३० जनवरी—बर्लिन में भाषण देते हुये हिटलर ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को चेतावनी दिया और कहा कि वह युद्ध से बाहर रहे। स्वेज़ नहर पर शत्रु वायुयानों ने बम गिराया परन्तु कोई हानि नहीं हुई। इंडोचीन में युद्ध समाप्त हो गया।

३१ जनवरी—लन्दन और दूसरे नगरों पर शत्रु वायुयानों ने बम गिराये जिससे बड़ी हानि हुई। थाईलैंड और इण्डोचीन के मध्य क्षणिक संधि पर हस्ताक्षर हुये। थाईलैंड ने युद्ध सम्बन्धी भूमि पर अधिकार कर लिया।

१ फरवरी—यूनानी लोगों ने १९६० नामक पर्वतीय चोटी पर अधिकार कर लिया। ट्रिपोली पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आक्रमण किया। हिटलर ने विची सरकार से कहा कि वह जर्मनी का साथ दे। माल्टा द्वीप पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ और दो वायुयान गिराये गये।

२ फरवरी—यूनानी सेना आगे बढ़ी और उसने कई नये स्थानों पर अधिकार किया तथा कुछ अस्त्र तथा मोटरें यूनानियों के हाथ लगीं। इटली का एक जहाज डुबाया गया।

३ फरवरी—इरीट्रिया में शत्रु की प्रथम रक्षक लाइन टूट गई। ब्रिटिश सेना ने बरेराटू पर अधिकार किया। बेनीटो गढ़ पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम गिराया।

४ फरवरी—यूनानी सेना ने लगभग समस्त दक्षिणी अल्बेनिया पर अधिकार कर लिया। शत्रु वायुयानों ने लन्दन नगर पर आक्रमण किया परन्तु अधिक हानि नहीं हुई।

५ फरवरी—हिटलर ने पेटेंस सरकार को सूचित किया कि फ्रैंको-जर्मन सम्बन्ध भली भांति फरवरी के अंत तक में तै कर दिये जावेंगे। ब्रिटिश वायुयानों ने डसेल डार्फ पर तथा फ्रांसीसी तट पर बम गिराया। सुमालीलैंड के सीमा वाले शत्रु गढ़ों पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। बेङ्गाज़ी के आवागमन के मार्ग पर बम वर्षा की गई।

६ फरवरी—लन्दन पर हवाई आक्रमण हुआ। इटली के टैंकों द्वारा किये गये आक्रमण को यूनानी सेना ने रोक दिया और माल्टा पर इटली के वायुयानों ने आक्रमण किया और तीन शत्रु वायुयान गिराये गये। बेङ्गाज़ी की ब्रिटिश सेना बढ़ी और उसने लगभग १५०० कैदी पकड़े और हर एक प्रकार की युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी।

७ फरवरी—इटली की सेना को यूनानी सेना ने परास्त किया। ब्रिटिश वायुयानों ने शत्रु के आक्रमणकारी बन्दरगाहों पर धावा मारा। बेङ्गाज़ी पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया।

८ फरवरी—यूनानी लोगों ने अल्बेनिया में भीषण गोलाबारी की। ब्रिटिश वायुयानों ने भी बम्ब बर्षा की। बोलोन और कैले पर भीषण बम्ब बर्षा मित्र वायुयानों ने किया। बम के धड़ाके से केण्ट तट हिलने लगा। अबीसीनिया में गोण्ड किले पर ब्रिटिश अधिकार हो गया।

९ फरवरी—ब्रिटेन की राएलनैवी ने जिनोआ पर गोलाबारी की। हिटलर के डिप्टी रुडोल्फ हेस ने बर्लिन में भाषण दिया जिसमें उसने कहा कि यू-बोट का युद्ध शीघ्र ही आरम्भ होने वाला है। लीबिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी और उसने एल-अघीला पर अधिकार कर लिया।

१० फरवरी—ब्रिटिश बायुयानों ने शत्रु बन्दरगाहों पर बम्ब वर्षा की।

११ फरवरी—अल्बेनिया में इटैलियन सेना की हार हुई। इरीट्रिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी। १२००० सैनिक बेङ्गाजी में पकड़े गये। रोडसे द्वीप के हवाई अड्डों पर हवाई आक्रमण हुआ। बाल्कन प्रायद्वीप पर आक्रमण करने के लिये जर्मन सेना ने तयारी की। जनरल फ्रैंको ने हिटलर से मिलने के लिये प्रस्थान किया।

१२ फरवरी—बल्गेरिया में १००० जर्मन वायुयान पहुँचे और उन्होंने सभी हवाई अड्डों पर अधिकार कर लिया। आस्टेण्ड पर ब्रिटिश लड़ाके जहाज ने गोलाबारी किया। ब्रिटिश वायुयानों ने उत्तरी जर्मनी के हनोवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक रेलवे केन्द्र पर भीषण आक्रमण किया। अबीसीनिया में टोडेनयांग और नामरमूथ नाम के दो शत्रु गढ़ों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया। लन्दन पर शत्रु वायुयानों ने बम्ब गिराये जिससे कुछ हानि हुई।

१३ फरवरी—अदिसअबाबा पर मित्र वायुयानों ने बम्ब वर्षा की। इटली-जर्मन सीमा बन्द कर दी गई। कान्टैन्ज़ा में ५० हजार जर्मन सेना पहुँची। फ्रैंको-मुसोलिनी सम्मेलन हुआ। अलबेनिया के युद्ध में यूनानी सेना टेपेलेनी के समीप पहुँची।

१४—संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने ४६ विध्वंश कारक जहाज इङ्गलैंड को दिये। इंगलिश पथ रक्षक सेना और इंगलैंड पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ। यूगोस्लैविया के मन्त्री हिटलर से मिलने गये।

१५ फर्वरी—करेन के समीप शत्रु तथा मित्र सेना में भीषण युद्ध हुआ। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने शत्रु हवाई तथा समुद्री अड्डों पर धावा मारा। टेपेलीनी प्रान्त में यूनानी सेना आगे बढ़ी। लन्दन तथा इङ्गलैंड के दूसरे नगरों पर जर्मन वायुयानों ने अग्नि बर्षक बम्ब गिराये। मदीरा और अज़ोर्स के मध्य ब्रिटिश पथ रक्षक सेना पर जर्मन पाकेट बैटिलशिप ने धावा मारा और ६ जहाज़ों को डुबो दिया।

१६ फर्वरी—बल्गेरिया में नाज़ी सेना बाल्कन पर आक्रमण की तयारी करने लगी। अलबेनिया की राजधानी पर यूनानी सेना ने बम्ब बर्षा की। ब्रिटिश वायुयानों ने शत्रु के अड्डों पर इतनी भीषण बम बर्षा की कि अग्नि की ज्वालायें ब्रिटिश तट से दिखाई देने लगीं।

१७ फर्वरी—रूमानिया का समुद्र संकटपूर्ण घोषित किया गया। सिंगापुर के समुद्र में सुरंगें बिछाई गईं। थाईलैण्ड की सरकार ने अँग्रेज़ों को देश छोड़ने की आज्ञा दी।

मास्को पोलिस-टेपेलिन प्रान्त में यूनानी सेना ने इटली की ग्यारहवीं सेना को हरा दिया और २००० सैनिकों को कैद किया।

कुणुक पर ब्रिटिश अधिकार हुआ और ब्रिटिश वायुयानों में डोडेकनीज़ तथा रोड्स के द्वीपों पर आक्रमण करके बम्ब बर्षा की।

१८ फरवरी—रूमानिया ने अपने समीप के समुद्र को संकटमय घोषित कर दिया।

१९ फरवरी—टर्की और बल्गेरिया में अनाक्रमण सन्धि हो गई।

२० फरवरी—टर्की ने थ्रेस प्रान्त में अपनी फौज कम कर ली।

२१ फरवरी—क्लीसुरा-टेपेलिनी रणक्षेत्र में यूनानियों ने इटेलियन फौज को क्षति पहुँचाई।

पूर्वी ब्रिटेन पर जर्मन हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये।

२२ फरवरी—प्रशान्त महासागर में शान्ति रखने के लिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने २०० बम्ब बर्षक हवाई जहाज सिंगापुर को भेजे।

२३ फरवरी—अफ्रीका के जूबालैंड प्रदेश में ब्रिटिश फौजों ने इटेलियन फौजों को भगाकर अधिकार कर लिया।

२४ फरवरी—ब्रिटिश महिलायें बल्गेरिया की राजधानी सोफिया छोड़ रही हैं।

ब्रिटेन के स्वान्सी बन्दरगाह पर लगातार तीन रातों को जर्मन हवाई हमले हुये।

२५ फरवरी—डोवर के पास ब्रिटिश और जर्मन लड़ाका हवाई जहाजों में लड़ाई हुई।

२६ फरवरी—अफ्रीका के इरीट्रिया प्रदेश में ब्रिटिश फौजों को हरा कर कब-कब स्थान को ले लिया। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने आदिसअबाबा के हवाई स्टेशन पर बम्ब गिराये।

२७ फरवरी—जर्मनी ने यूनान पर हमला करने की धमकी दी। हर हिटलर ने यह भी घोषित किया कि इसी मार्च महीने में नये जर्मन पनडुब्बे जहाज़ ब्रिटिश बेड़े पर प्रहार करेंगे।

२८ फरवरी—जर्मनी ने बल्गेरिया पर आक्रमण करने की तयारी कर ली। ६०० से अधिक जर्मन बम्ब बर्षक हवाई जहाज़ रूमानिया में एकत्रित हो गये।

१ मार्च—सुमालीलैंड में इटेलियन फौज पीछे हटी १००० इटेलियन सिपाही पकड़ लिये गये।

२ मार्च—ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने अलबेनिया में बम्ब गिराये।

बल्गेरिया ने जर्मनी से मित्रता पूर्ण सन्धि कर ली और जर्मन फौजें बल्गेरिया में घुस आईं।

३ मार्च—फ्रांस की विची सरकार ने थाई देश और फ्रेंच इन्डोचीन के झगड़े के सम्बन्ध में जापान की शर्तें मान लीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ मार्च—जर्मन फौजों ने बलगेरिया पर अधिकार कर लिया। सोफिया में रात को अन्धेरा रखने की आज्ञा हो गई। टर्की ने विदेशी जहाजों को आज्ञा दी कि वे अपने आने की सूचना दें और तुर्की पाइलट (मांझी) लेकर ही प्रवेश करें।

५ मार्च—जर्मन सेना यूनानी सीमा पर एकत्रित हुई। जापान की सेना इन्डोचीन की सीमा पर अचानक उतरी। फ्रांस ने जापान की शर्तें स्वीकार कर लिया। अल्बेनिया में इटली की सेना की हार हुई।

६ मार्च—लफोटन द्वीपसमूह पर ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े ने आक्रमण करके ६ जर्मन तथा एक नार्वेजियन जहाज़ डुबो दिये। १८००० टन की हानि शत्रु को पहुँची। दक्षिणी चीन में जापानी सेना ने ८५ मील रेलवे लाइन पर अधिकार कर लिया।

७ मार्च—थाईलैंड तथा इंडोचीन की क्षणिक संधि का अन्त हुआ। किस्मायू (लफोटेन द्वीप समूह) पर अधिकार करने में ७ शत्रु जहाज नष्ट हुये। इटैलियन सुमाली लैंड में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

८ मार्च—फ्रैंको थाईलैण्ड संधि निश्चय हो गई। हस्ताक्षर ९ मार्च को होंगे।

अबीसीनिया के युद्ध में वहां के वीर सैनिक आगे बढ़े। अल्बेनिया में शत्रुसेना की हार हुई और यूनानी सेना ने नए स्थानों पर अधिकार किया।

९ मार्च—इंगलैंड को सहायता देने के लिये संयुक्त-राष्ट्र ने प्रबन्ध किया। माल्टा पर आक्रमण हुआ। मग-दीशू हरार सड़क पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया।

१० मार्च—जर्मन बमवर्षकों ने इंगलैंड के कई नगरों तथा लन्दन पर तीन आक्रमण किये। नाचघर में बम गिरा जिससे नाचने वाली लड़कियां छत के नीचे दब गईं। सुमाली लैंड में ब्रिटिश सेना ने गैब्रे-डारे पर अधिकार जमा लिया।

११ मार्च—यूगास्लेविया का विदेशी मन्त्री वियना गया। जर्मन द्वारा अधिकार किये हुये फ्रांस पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम गिराये। यूनानी सेना ने इटली की सेना को अल्बेनिया में परास्त किया और फैसिस्ट ग्रैंडकौन्सिल के एक सदस्य को गिरफ्तार किया। ब्रिटिश सेना अदिस अबाबा से १३० मील की दूरी पर पहुँच गई।

१२ मार्च—प्रेसीडेंट रुज़वेल्ट ने ब्रिटेन की सहायता देने वाले बिल पर अपने हस्ताक्षर किये। पोर्टस्माउथ बन्दरगाह पर नाज़ी बमवर्षकों का धावा हुआ। ७ शत्रु वायु-यान गिराये गये। दो लाख नाज़ी सेना टर्की और यूनानी सीमा की ओर चली। अल्बेनिया में इटली की सेना को यूनानी सेना ने परास्त किया।

१३ मार्च—मत्सूका जापानी विदेशी मंत्री ने बर्लिन के लिये राएच के निमंत्रण पर प्रस्थान किया। अबीसीनिया में अँग्रेज़ी सेना दो दिन में १२० मील आगे बढ़ी।

जर्मन वायुयानों ने मर्सी साइड बन्दरगाह पर और ब्रिटिश वायुयानों ने ब्रेमेन, हैम्बर्ग और बर्लिन पर बम गिराये। मुसोलनी अल्बानिया गया, भीषण इटैलियन आक्रमण की तयारी होने लगी।

१४ मार्च—अल्बानिया और अफ्रीका में ब्रिटिश वायुयानों तथा शत्रु के वायुयानों से युद्ध हुआ। १४ इटैलियन वायुयान गिराये गये।

१५ मार्च—क्लाइडसाइड और मोर्सी साइड पर जर्मन वायुयानों ने धावा मारा और १३ वायुयान गिराये गये। अल्बेनिया और अफ्रीका में ब्रिटिश वायुयानों तथा इटली के वायुयानों में युद्ध हुआ। १५ इटली के वायुयान गिराये गये। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१६ मार्च—इटली ने अल्बेनिया की विजय की अन्तिम तयारी किया। रुज़वेल्ट ने ब्रिटेन, यूनान और चीन को सहायता देने का वचन दिया। क्लाइडसाइड पर फिर नाज़ी हवाई आक्रमण हुआ।

१७ मार्च—पश्चिमी इंगलैंड के नगरों पर जर्मन वायु-यानों ने भीषण बम वर्षा किया। ब्रिटिश बम बर्षकों ने लोरियण्ट के गोतेख़ोर जहाजों के अड्डों पर बम गिराए। अटलांटिक सागरी युद्ध में ब्रिटिश जहाजों पर जर्मन बम बर्षकों ने बम गिराए।

अँग्रेज़ी सेना ने बेर बेरा पर फिर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश सुमालीलैंड में हवाई तथा समुद्री सेनाएँ पहुँच गईं। ब्रिस्टल नगर पर जर्मन बम बर्षकों ने बम बर्षा किया। वहां का नाचघर जिसमें दर्शकगण भरे थे टूट गया।

१८ मार्च—टेवेलियो के चारों ओर भीषण युद्ध हुआ। इटली की सेना को घिर जाने का भय था। जर्मन आक्रमण के कारण मर्सी साइड में जर्मन हवाई आक्रमण के कारण ५०० मरे तथा ५०० घायल हुए उसी प्रकार क्लाइड में ५०० मरे और १३०० घायल हुये।

इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री ने अपने भाषण में कहा कि जर्मन जहाज इंगलैण्ड तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मध्य सभी हवाई मार्ग बन्द करना चाहते हैं। उन्होंने एक सप्ताह में २४ ब्रिटिश जहाज डुबोए। जर्मन जहाज बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ रक्षक सेना वाले जहाज़ों को भी डुबो रहे थे। टर्की और जर्मनी के मध्य राजनैतिक बातचीत हुई।

१९ मार्च—ब्रिटिश सेना ने जिगजीगा पर अधिकार कर लिया। अल्बानिया में इटैलियन सेना को यूनानी सेना ने परास्त किया।

२० मार्च—ब्रिटिश सबमेरीन ने इटली के जहाज़ों को समुद्र में डुबाया। बलोना सड़क के अन्तिम नगर टेपेलिनी पर यूनानी सेना ने अधिकार कर लिया। जर्मनी के आक्रमणकारी बन्दरगाहों पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मारा। लन्दन नगर में ४ जर्मन वायुयानों ने बम वर्षा किया।

२१ मार्च—ब्रिटिश बम बर्षकों ने कलोने नगर पर धावा मारा। टर्की के प्रेसीडेंएट इनेनू का उत्तर राजदूत ने हिटलर को दे दिया।

यूगोस्लाविया के तीन मंत्रियों ने त्याग पत्र दे दिये। प्लाई माउथ बन्दरगाह पर कई घंटे तक जर्मन बम बर्षक वायुयान भीषण धड़ाके तथा आग लगाने वाले बम गिराते रहे। तीन चर्च तथा दो अस्पताल नष्ट हुए। अल्बेनिया में इटली की टैंक वाली सेना ने जो धावा मारा वह पीछे हटा दिया गया।

२२ मार्च—प्लाई माउथ इंगलैएड के प्रसिद्ध बन्दरगाह पर जर्मन बम बर्षकों ने ३० हज़ार आग लगाने तथा भीषण धड़ाका करने वाले बम गिराये जिससे काफी हानि हुई। रूस ने टर्की को विश्वास दिलाया कि उसे दबाने तथा परेशान करने की नीति पर वह न चलेगा।

२३ मार्च—केरेन पर ब्रिटिश वायुयानों ने भीषण बम वर्षा किया।

२४ मार्च—ब्रिटिश बमबर्षकों ने बर्लिन पर १० हज़ार आग लगाने वाले बम गिराये। पोलिश उड़ाकों ने बम बर्षाने में भाग लिया। केरेन के समीप ब्रिटिश तथा इटैलियन सेना में भीषण युद्ध हुआ। माल्टा पर जर्मन बम बर्षकों ने धावा मारा और १३ वायुयान गिराये गये। नाज़ी आक्रमणकारी जहाज का पीछा अटलांटिक सागर में ब्रिटिश जहाज़ों ने किया।

२५ मार्च—मत्सूका जापान के विदेशी मंत्री ने बर्लिन को प्रस्थान किया। सोवियट ने घोषणा किया कि यदि टर्की पर आक्रमण होगा तो वह तटस्थ रहेगा। यूगोस्लाव मन्त्री वियना को धुरी राष्ट्रों के पास संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये चल पड़े। जर्मन सेना ने यूनान की ओर प्रस्थान किया।

२६ मार्च—यूगोस्लाविया में संधि के विरोध में बलवा कई स्थानों पर हुआ। नाज़ी सेना ने भय दिखाया कि वह शान्ति स्थापित करने को मजबूर होगी। अटलांटिक सागरी जहाज़ी अड्डों को इंगलैएड ने संयुक्तराष्ट्र को ठीके पर दिया। परीटा में ब्रिटिश सेना बढ़ी। शत्रु सेना ने लीबिया में रक्षक स्थानों पर अधिकार किया। मत्सूका जापानी विदेशी मन्त्री बर्लिन पहुँचा।

२७ मार्च—ब्रिटेन ने अपनी समस्त शक्ति के साथ यूगोस्लाविया की सहायता का बचन दिया। लन्दन तथा बर्लिन पर हवाई आक्रमण हुये।

२८ मार्च—यूगोस्लाविया में सैनिक बिप्लव, प्रधान मन्त्री गिरफ़्तार, राजकुमार पाल देश से भाग गया। शासन सेना ने अपने हाथ में ले लिया। यूगोस्लाविया के छोटे राजकुमार पिटर ने घोषणा कर के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले लिया। जर्मनी ने यूगोस्लाविया से संधि के सम्बन्ध में पूछताछ किया। हरार और क्रेन पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया।

२९ मार्च—आयोनियन सागर में ब्रिटिश तथा इटैलियन जलसेना के मध्य मुठभेड़ हुई जिसके कारण शत्रु का बड़ा लड़ाका जहाज़ टूट गया तथा एक क्रूशियर जहाज डूब गया। अल्बेनिया के तट पर यूनानी ग़ोताखोर ट्रीटन नामक जहाज ने कार्विया नामक इटैलियन जहाज को डुबो दिया। केरेन के पूर्व ब्रिटिश सेना बढ़ी, इटैलियन सेना स्मर्ना की ओर भागने लगी।

३० मार्च—संयुक्त राष्ट्र की सरकार ने अपने हथियार बन्द सनिकों का पहरा धुरी-राष्ट्रों के जहाज़ों पर लगा दिया। पूर्वी रूम सागरी युद्ध में पांच इटली के जहाज़ डूबे।

दिरेदावा को इटली की सेना ने खाली कर दिया। ब्रिटिश सेना स्मर्ना की ओर बढ़ी। त्रिपौली बन्दरगाह पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम गिराये।

३१ मार्च—यूगोस्लाविया में क्रोट जाति ने इटली के विरुद्ध जुलूस निकाले तथा जल्से किये। आस्ट्रिया की सीमा बन्द कर दी गई। जर्मन तथा इटैलियन लोग यूगोस्लाविया छोड़ने लगे। इस लिये नये संकट का भय उत्पन्न हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २९० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया— इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ९० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—भूगोल कार्यालय प्रयाग।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

अगस्त १९४१

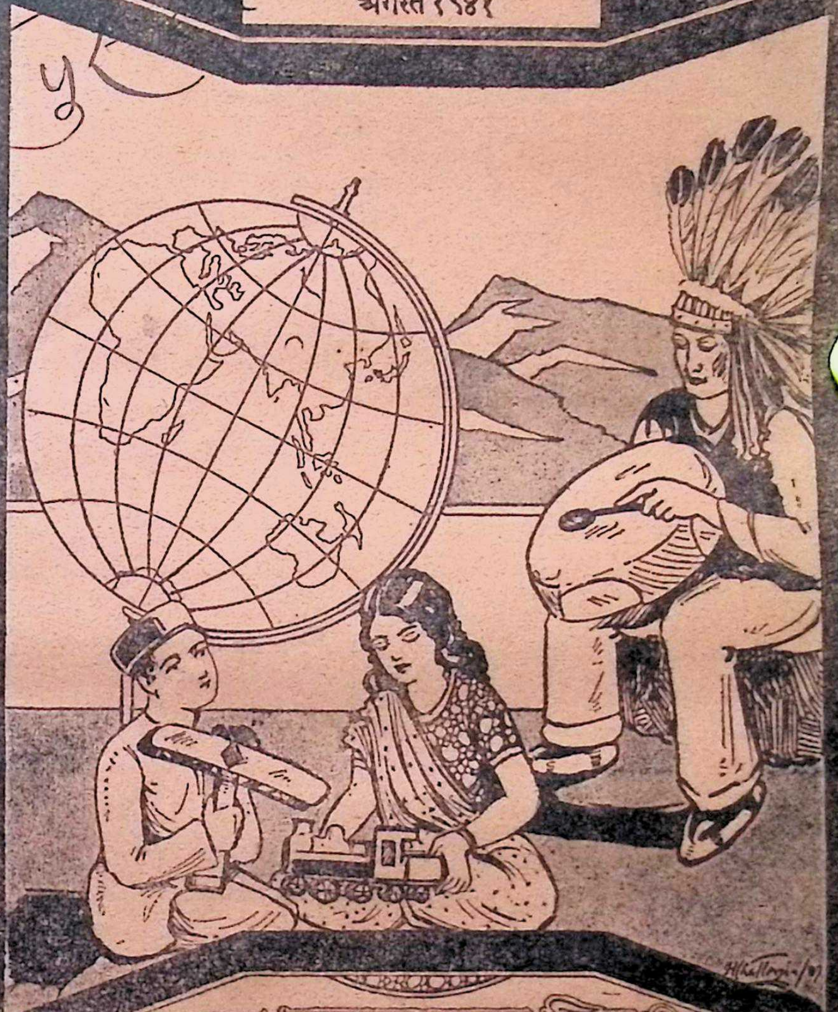

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी.ए.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगा तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा असानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ||=) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित ||) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य -)||

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १|) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—सोवियट रूस की सैनिक शक्ति	१
२—झांसी का धरातल	५
३—योरुप में भोजन सामग्री और राजनैतिक नियंत्रण	९
४—अल्बेनिया	१५
५—नाजी लोगों की कारबारी शक्ति	२०
६—टैंक	२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] भाद्रपद, सं० १९९८, अगस्त, १९४१ ई [अङ्क ४

सोवियट रूस की सैनिक शक्ति

गत छः सप्ताह से जर्मनी और रूस के बीच में ऐसा भयानक युद्ध हो रहा है जैसा संसार में पहले कभी नहीं हुआ था। इस युद्ध में रूसी सेना ऐसी वीरता से लड़ी कि उसके मित्र और शत्रु दोनों ही ने उसकी प्रशंसा की है। लाल (रूसी) सेना ने जो वीरता का संग्राम किया है उसका इतिहास मानव जाति की स्वतंत्रता तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा। सैनिक लोग अचम्भे के साथ प्रश्न करते हैं कि ऐसी कौन सी वस्तु है जो लाल सेना को शक्ति प्रदान करती है? क्या विश्वविख्यात अक्तूबर मास की क्रान्ति ने इस क्षेत्र की रचना की है?

लाल सेना की सब से बड़ी विशेषता यह है कि समस्त रूसी समाज ने इसे बनाया है। प्राचीन रूसी सेना किसी एक व्यक्ति से सम्बन्ध रखती थी और विशेष लोग ही उसके मालिक तथा जन्म दाता होते थे। लाल सेना मजदूरों और किसानों की सेना है जिसके संगठन कर्ता तथा अफसर उन्हीं के भाई बन्धु हैं। वह जानती है कि राजनीति के क्षेत्र में उसे क्या करना है। वास्तव में रूसी क्रान्ति ने वहाँ रूसी अफसरों और साधारण मनुष्यों को अपूर्व शिक्षा दी थी।

रूसी वायु-सेना

वर्तमान युद्ध में वायुयान रूसी सब से अधिक आवश्यक शस्त्र है। विमानों द्वारा शत्रु के देश में और रण-स्थल के पिछले भाग में आक्रमण किया जाता है। टैंक तथा और दूसरी स्थलीय सेना के साथ साथ विमानों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है। योरुप में रूसी वायु सेना सब से अधिक बड़ी है। रूस में यदि जितने विमान वाहक रण स्थल में हैं उनसे पांचगुने अपनी हवाई शिक्षा समाप्त कर चुके हैं और लड़ने के लिये तयार हैं। १९३६ ई० में १,५०,००० विमान वाहकों को शिक्षा प्रदान की गई थी। सोवियट हवाई सेना में ऐसे ऐसे व्यक्ति हैं जो ६ लाख मील आकाश में उड़ चुके हैं। वहां के विमान तथा उड़ाके दोनों अपने कार्य में बड़े कुशल हैं। लाल सेना के विमानों की ठीक संख्या का निर्णय करना कठिन है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषज्ञों का अनुमान है कि वहाँ प्रायः ३० हजार वायुयान हैं।

रूस में भांति भांति के वायुयान हैं। कुछ विमान बहुत भारी कुछ मध्यम श्रेणी के कुछ हलके बम्ब वर्षक हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से लड़ाका तेज विमान हैं। मध्यम श्रेणी और हलके बम्ब वर्षकों विमान डुबकी मारने वाले नीचे उड़कर बम्ब गिराने वाले) बम्ब वर्षकों का काम देते हैं यदि सोवियट रूस के पास डुबकी मार कर या नीचे उड़कर बम्ब गिराने के लिये विशेष ढङ्ग के विमान हैं। सोवियट रूस अपने भारी बम्ब वर्षक वायुयानों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। १९३७ ई० में वहां पर एक ६ इञ्जिन का भारी बम्ब वर्षक वायुयान था। १९४१ में रूस में ८ इञ्जिन वाले बम्ब वर्षक विमान बनाए गये हैं जो १० टन (२८० मन के बम्ब के गोले भर कर २५०० मील तक उड़ सकते हैं। रूस में देश की रक्षा करने वाले जो विमान हैं उनमें आगे और पीछे दोनों ओर मशीनगन लगी रहती है। यह विमान शत्रु के देश के भीतर दूर तक लड़ाका विमानों की सहायता के बिना ही जा सकता है। यह ३०० मील तक पूरा बम्बों का बोझ लेकर उड़ सकता है और विमान संहारिणी तोपों से बच कर वापस आ सकता है। दूसरे भांति के (SKB-17) बम्ब वर्षक विशेष रूप से विख्यात है। यह संसार में केवल एक बम्ब वर्षक है जो अपने पंखों में मशीन गन ले जाता है और अपनी नाक से एक इञ्च की तोप से गोले चलाता है।

सोवियट विमान चाल और सजावट में योरुपीय विमानों की दशा विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। १९३६ ई० में भी रूप में बहुत बड़ी संख्या में तेज चलाने वाले विमान थे। जेड के वी-१९ (ZKB-19) नामक विमान २८८०० फुट की ऊँचाई पर ३०० मील प्रति घंटा की चाल से उड़ता है। यह एक अद्भुत बात है क्योंकि आज भी जर्मनी और इङ्गलैंड के ३५० मील प्रति घंटा चलने वाले विमान काम में नहीं लाए गये हैं १९४० ई० में सोवियट वायु सेना में और अधिक वृद्धि हुई और एल ६१ और एल ५१ नामक विमान क्षेत्र में आये यह विमान २४,००० फुट की ऊँचाई पर भी ४५० मील प्रति घंटा की चाल से यात्रा करते हैं। इन विमानों में कितनी सामग्री रहती है इसका पता नहीं है वरन् यह अनुमान किया जाता है कि इसमें ८ मशीनगनें आगे और दो पीछे लगी रहती हैं।

सोवियट राष्ट्र ने ही सर्व प्रथम वायु-युद्ध में क्रान्ति उत्पन्न की थी। जर्मन लोगों से बहुत पहले सोवियट रूस ने पाराट्रप्स (पेराचूट की सहायता से विमान से उतरने वाली सेना) का प्रयोग किया था। लाल वायुसेना में ५००० सेना ढोने वाले विमान हैं। यह विमान सुसज्जित सैनिकों की पूर्ण सेना को शत्रु सेना के ठीक पीछे उतार देते हैं। कहा जाता है कि सोवियट विमान १५ सैनिक डिवीजन या दस्ते एक ही बार में ले जा सकते हैं। सोवियट रूस में लगभग १० लाख स्थाई हवाई सैनिक और लगभग १० लाख पैराचूट सैनिक हैं। गतवर्ष यूक्रेन में जो सैनिक प्रदर्शन हुआ था उससे ५ लाख गुब्बारे वाले सैनिक उतारे गये थे। बेसारेबिया प्रान्त पर जब रूस ने अधिकार किया था तो सोवियट विमान छोटे टैंकों को लाद कर वहां ले गये थे।

रूसी पैदल सेना

१९३५ ई० में रूस में १५ लाख पैदल सेना का संगठन किया गया था। सेना में मोटरों और टैंकों का संगठन भी अच्छा किया गया है। १९३६ ई० में ९ लाख टैंक तथा मोटर चलाने वाले ड्राइवरों को शिक्षा दी गई थी जिससे वह मशीन वाली सेना में काम कर सकें सोवियट कृषि में मशीनों का प्रयोग भी बहुत होता है। रूस में ट्रैक्टर ड्राइवर लाखों की संख्या में है। वह लोग संकट काल में सेना में काम करने के लिये बुला लिये जाते हैं। रूस में अफसरों की टोली भी बहुत बड़ी है। १९४० ई० सोवियट सैनिक कालेजों में ३०,००० विद्यार्थियों को शिक्षा मिली थी। इस प्रकार उच्च स्थान का नैत्रित्व करने के लिये प्रतिवर्ष ७००० कुशल सैनिक तयार हो जाते हैं। अधिकांश रूसी सैनिक २५ से ४० वर्ष की अवस्था वाले हैं। सोवियट सेना में योरुप के सभी राष्ट्रों से अधिक नवयुवक सैनिक अफसर हैं सेना में युवा तथा शारीरिक स्फूर्ति से अफसरों की ही आवश्यकता रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि एक वर्ष की शिक्षा पा कर रूसी सैनिक किसी भी युद्ध स्थल में संचालन-कार्य कर सकता है। रूस के पास एक करोड़ पचास लाख कुशल शिक्षित सैनिक हैं और ५० लाख ऐसे सैनिक हैं जिनका कुछ थोड़ी शिक्षा मिली है।

बर्तमान युद्ध-कौशल में सेना में मोटरों का होना बड़ा आवश्यक है। ½ अश्व शक्ति वाला मोटर एक ट्रेडिल मशीन चला लेता है। आटा पीसने की चक्की में पांच हार्स पावर (अश्व शक्ति) का मोटर लगता है। रूस में युद्ध सम्बन्धी मोटर से चलने वाली इतनी मशीनों का प्रयाग होता है कि रूसी सेना के प्रत्येक सैनिक के साथ औसत से २० अश्व शक्ति का मोटर लगी है। जर्मनी के प्रत्येक सैनिक के पीछे केवल २५ अश्व शक्ति (हार्स पावर) शक्ति है। एक मोटर वाली सेना में ढाई से तीन हजार तक सभी भांति के मोटर गाड़ियाँ रहती हैं। सोवियट कारखानों में इतनी बड़ी मशीनें हैं कि वे बड़ी से बड़ी मशीन वाली सेना की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।

टैंक सेना

लाल सेना में १५ हजार से २० हजार तक भिन्न भिन्न भांति के टैङ्क (मशीनगन वाली मोटर लारियां) हैं। लाल सेना के नेताओं ने टैङ्कों की आवश्यकता बहुत पहले ही अनुभव की थी। इसी कारण प्रत्येक ६ महीने के पश्चात् रूस में नये टैंक बनाये गये हैं। सोवियट रूस में भारी, मध्यम श्रेणी, हलके और जल-स्थल पर टैंक हैं। पीछा करने अथवा पकड़ने के लिये तेज फुर्तीले टैङ्क होते हैं। इसी प्रकार के २२४० मन के टैंक से जर्मनी ने फ्रान्स में प्रवेश किया था। सोवियट किलेबन्द लाइनों को तोड़ने के लिये रूस के पास १०० टन वाले टैङ्क बहुत अधिक संख्या में हैं। इन्हीं टैङ्कों की सहायता से मैनरहीम लाइन को तोड़ा गया था। प्रथम कुछ दिनों तक जर्मन सेना के विरुद्ध ५२ टन के टैंक बड़ी कुशलता से लड़े थे।

सोवियट टैंकों का प्रयोग विमानों के साथ बड़ी कुशलता से होता है। सोवियट टैङ्कों के बाहकों (चलाने वालों) को बेतार के तार की उत्तम शिक्षा प्रदान की जाती है। कुछ बाहकों को १० हजार मील तक की देख भाल करनी पड़ी है। हासान झील और चांगकूफेङ्ग की लड़ाइयों में सोवियट टैङ्कों ने बड़ी कुशलता से जापानियों का सामना किया था इसी से जापानी संधि करने पर विवश हुये थे। उन्हीं लड़ाइयों में ज्वाला (लपट) फेंकने वाले टैङ्कों का प्रयोग सर्व प्रथम किया गया था। जिसमें बड़ी सफलता प्राप्त हुई थी। सोवियट २८०० मन के टैंक टीजी-५-टी का चाल २५ मील प्रति घंटा है। उसमें १० सैनिक रहते हैं उसमें १०.५ सेण्टी मीटर की, ६ इंच की हाउइटजअर (एक प्रकार की तोप) दो ३३ मिली मीटर तोपें, दो भारी मशीन गनें तथा दो जुड़वाँ विमान संहारिणी तोपें रहती हैं। इसका एक ही टैंक इतनी गोलीयाँ छोड़ता है जितनी एक मशीन से चलने वाली बैट्री छोड़ सकती है। सोवियट रूस के पास ५० टैङ्क सैन्यदल (ब्रिगेड) हैं। जापानी समाचार के अनुसार रूस के पास ३५ भारी टैङ्कों वाले और १००० छोटे टैङ्कों वाले सैनिक दस्ते या डिवीजन हैं।

लाल सेना में ऐसे भी टैङ्क हैं जो ६०० मील तक पानी में यात्रा कर चुके हैं। रूसी जल स्थल पर टैङ्क ज्वार भाटा के पानी में चलने के लिये विख्यात हैं। रूस के पास टैंकों की सेना बहुत बड़ी है। परन्तु टैंकों का आक्रमण तभी सफल हो सकता है जब रसायनिक सेना और इंजीनियरों से संगठित सहायता मिलती रहे।

रसायनिक युद्ध

रसायनिक अस्त्रों की ओर भी रूस में ध्यान दिया गया है। जब सोवियट तोपों ने किलों को छिन्न-भिन्न कर दिया था तभी मैनरहीम लाइन का तोड़ना सम्भव हुआ था। १९४० ई० में सोवियट रूस के पास १०० भारी तोपों का और २५० हल्की तोपों का सैन्यदल (रेजीमेण्ट) था। १०० मिली-मीटर वाली स्थली तोपें १८ मील तक गोले फेंक सकती हैं। इसके सिवा ७८ मिली मीटर वाली लाल टैंक संहारिणी भयानक तोपें हैं जो तीन इंच मोटे कवच को बेध सकती हैं। रूसी विमान संहारिणी तोपें १०५ मिलीमीटर की हैं। यह योरुप की सभी विमान संहारिणी तोपों से अधिक दूरी तक गोले फेंकती हैं। यह तोपें लगभग १२ मील दूर लम्बाई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

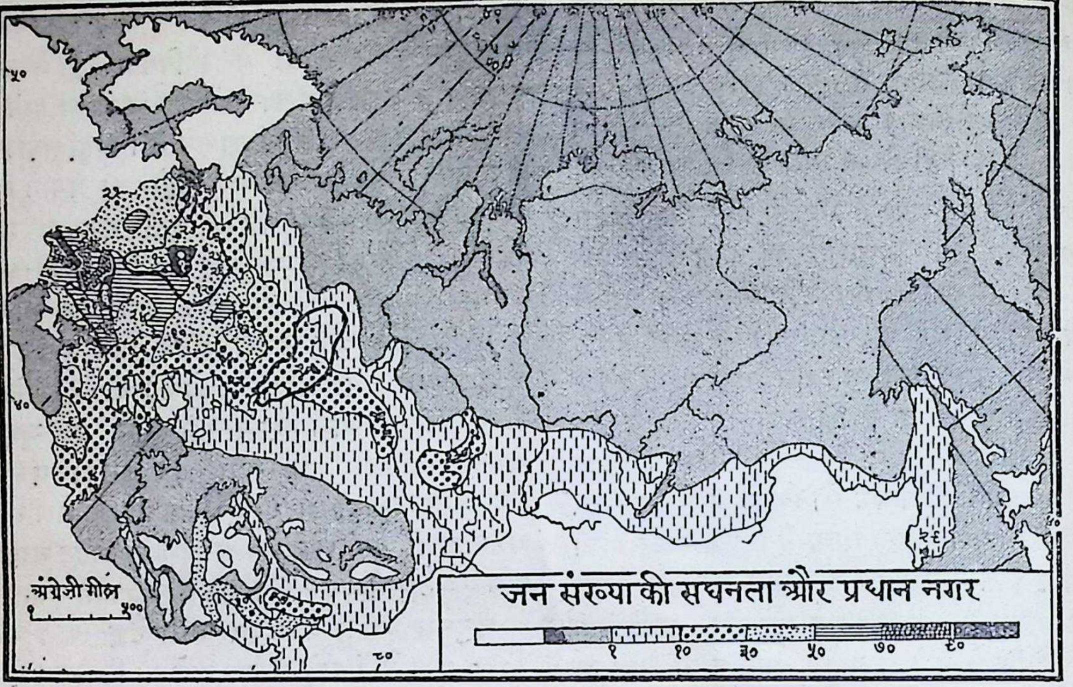

जन संख्या की सघनता और प्रधान नगर

और ९ मील ऊपर उंचाई में गोले फेंक सकती हैं। तोपों की मुहरा बड़ी तीव्रता से काम करता है।

रूसियों ने रसायनिक अस्त्रों की भी अच्छी उन्नति कर ली है सोवियट रसायनिक सैन्यदल का अलग ही जत्था चलता है। उसमें रसायनिक विद्वान रहते हैं जो सेना को गैस युक्त भूमि की चेतावनी देते रहते हैं। लाल रसायनिक सेना सभी प्रकार की गैसों तथा विषैले धुओं और अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करने में निपुण हैं। वह विमानों, तोपों टैंकों आदि से फेंकी जानी वाली। प्रत्येक भांति की गैस का भली भांति सामना कर सकते हैं।

सोवियट सेना प्रत्येक भांति से आक्रमण करने के लिये सुयोग्य है परन्तु आक्रमण भी केवल कुछ ही अवसरों स्थानों पर हो सकता है। रूसी जर्मन रण-स्थल सीमा पर लाल सेना प्रत्याक्रमण करके जर्मन सेना को पीछे हटाने में दो रण-क्षेत्रों में सफल हुई है।

नाज़ी सेना का सामना करने के लिये ९० लाख रूसी सेना रण-स्थल सीमा पर बुलाई गई है। मास्को की ओर जो नाज़ी सेना बढ़ रही थी वह भी रोक दी गई है। कीव की ओर नाज़ी सेना का रूख हो रहा है। लेनिनग्राड पर भी अधिकार जमाने में नाज़ी सेना असफल हुई है। घोर संग्राम हो रहा है। लगभग ३० लाख सैनिक दोनों ओर से हताहत हो चुके हैं। सोवियट सेना ने जिस वीरता से नाज़ी सेना का सामना किया है उसका उदाहरण शायद ही इतिहास में दूसरा मिल सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाँसी का धरातल

(श्री आर० एन० सकसेना)

झांसी संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी चरण पर स्थित है। आर्थिक दृष्टि से झांसी यहां का कोई प्रमुख स्थान नहीं परन्तु भौगोलिक दृष्टि से झांसी एक विचारपूर्ण अध्ययन का स्थान है, विशेष कर धरातल सम्बन्धी प्रश्नों की दृष्टि से भूगर्भ विद्या (Geology) के वर्गीकरण के अनुसार यहां के धरातल की चट्टानें संसार की प्राचीनतम चट्टानें हैं तथा सामान्यतः ग्रेनाइट (दानेदार बलुआ पत्थर) की बनी है परन्तु फिर भी कुछ ही मील के अन्दर अन्दर लाल पीली तथा काली मिट्टी का पाया जाना दूर से एक अचम्भे की बात है। मिट्टी ही नहीं वरन् यदि यहां पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े इकट्ठे किये जायँ तो थोड़ी दूर में ही अनेकों प्रकार के पत्थर मिलेंगे।

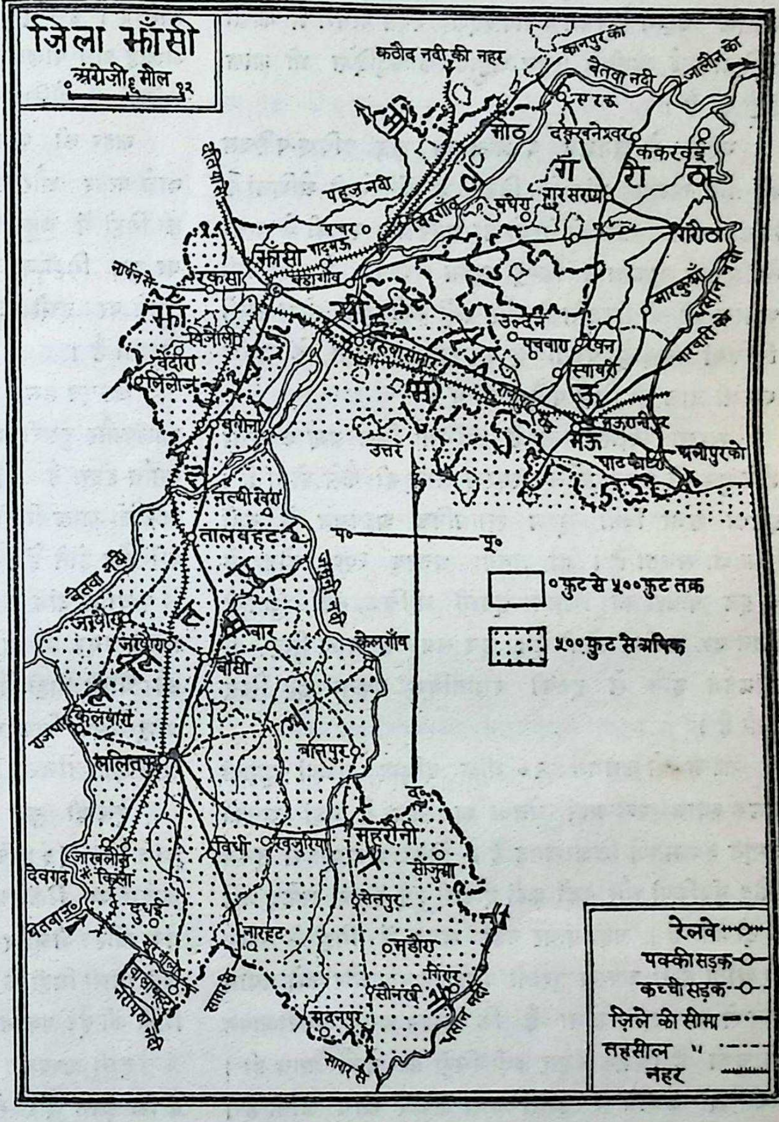

लहर की पहाड़ी पर जो झांसी स्टेशन से एक मील उत्तर दिल्ली लाइन के किनारे स्थित है, भ्रमण करते समय कई एक पत्थरों के ऐसे छोटे छोटे टुकड़े मिलते हैं जिनके किसी किसी तरफ लगभग २ सूत के बहुपार्श्विक रवे जड़े होते हैं। बहुधा यह रंग रहित, पारदर्शी होते हैं। कुछ कुछ एक रवों में हल्की बैजनी वा कुछ एक में कत्थई रंग की झलक भी मिलती है। रवे एक ही नाप के नहीं होते। अणुवीक्षणीय परिमाण से, बड़े से बड़े २॥ सूत के रवे होते हैं। कहीं कहीं पर विस्तृत शिलाखण्ड के कुछ एक पार्श्वों की सतह पर भी मिल जाते हैं परन्तु बहुत खोज से।

इसी पहाड़ी के ऊपर तमाम श्वेत अपारदर्शी पत्थर भी मिलते हैं जिन्हें यहां के निवासी दुद्धी कहते हैं। रवे जिन पत्थरों पर पाये जाते हैं उनका रवों के नीचे का प्रदेश दुद्धी का ही होता है। पहाड़ी के शिलाखण्ड अधिकांश ऐसे अपारदर्शी पत्थर के हैं। जिनका रंग मटियाला गुलाबी कहा जा सकता है। जिसमें किसी प्रकार की परतें नहीं होतीं। कहीं कहीं अबरख की तरह की झिलमिली होती है। बहुधा इधर से उधर सफेद दुद्धी की सुरियाँ (Veins) भी दौड़ी होती हैं। लहर की पहाड़ी का अधिकांश शरीर लाल मिट्टी का है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां से कुछ ही दूर पहाड़ी के स्वरूप में छितरे हुये शिला खण्ड हैं जिनके पत्थर लहर की पहाड़ी के पत्थरों से बिल्कुल भिन्न हैं। आकाशीय नीली झलक लिये हुये अपार दर्शी पत्थर जिनमें कहीं कहीं अबरख की सी झिल-मिली भी होती है पाये जाते हैं। गौर से देखने पर इन में छोटी छोटी काली चित्तियां दीखती हैं। इन शिला समुदाय पहाड़ियों के शरीर भी लाल मिट्टी के ही हैं। आगे बढ़ने पर प्रदेश के धरातल पर इधर उधर दौड़ती हुई अनेकों समतल चट्टाने हैं जिनके अपारदर्शी श्वेत पत्थरों में काली चित्तियां पाई जाती हैं। इन चट्टानों के चतुर्दिश भी लाल मिट्टी ही है।

झांसी से लगभग ६ मील दूर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर खैलार गांव के निकट अनेकों ऐसी श्रेणियां हैं जिनका पत्थर ऊपर से देखने पर लहर की पहाड़ी के पत्थर से मिलता जुलता है किन्तु सूक्ष्म अध्ययन से कहीं कहीं अबरख की सी झिलमिली और कहीं कहीं छोटी छोटी काली चित्तियां दिखाई पड़ती हैं। इन पहाड़ियों के शरीर पर भी लाल ही मिट्टी पाई जाती है।

सहसा विस्मय होता है कि भिन्न भिन्न वर्ण के पत्थर होते हुये भी इनका अंतिम स्वरूप लाल ही कैसे होता है। इसका उत्तर बिना सूक्ष्म रसायनिक अध्ययन के नहीं दिया जा सकता है। हां इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि इन पत्थरों की भिन्नता इतनी मौलिक नहीं जितनी देखने पर प्रतीत होती है। इन सब के लाल मिट्टी में परिवर्तन होने से इनकी रसायनिक एकता ही सिद्ध होती है।

झांसी से लगभग २० मील दक्षिण सुकवां ढुकवां नामक स्थान पर जहां बेतवा का बांध है वहां अनेकों विस्तृत श्यामवर्ण शिलाखण्ड हैं। निकट अध्ययन से इनमें सफेद बुंदकियां और कहीं कहीं दौड़ती हुई पतली सफेद नसें भी दीखती हैं। यही पत्थर यहां सड़क में गिट्टी के काम भी आता है। अक्सर पुरानी गिट्टी देखने और उसे प्रयोग करने से यह ज्ञात होता है कि पत्थर अपना पथरीलापन खो चुका है। एक बहुत कड़ी मिट्टी का ढेला मात्र हो। पत्थर पर चलाने से इससे लाल लकीरें खींच जाती हैं। और इसका स्वरूप कुछ कुछ गेरू से मिलता हुआ हो जाता है।

इस पत्थर को जिसे एक दशा में पत्थर से लाल मिट्टी के रूप में परिवर्तन होता हुआ देखा जाता है सुकवां ढुकवाँ के बांध के नीचे ही अगर काली चट्टान के उस विस्तार का अध्ययन करें जहां वर्षा में वेतवां में प्रलयनाद युक्त भीषण धारा गरजती और तरजती है परन्तु ग्रीष्म में जहां बिलकुल जल नहीं होता वहां भी पत्थर पथरीलेपन से रहित मिलता है और जहाँ शिला खण्ड टूटे होते हैं वहाँ पीतवर्ण लिये हुये पत्थर मिलता है और आगे बढ़कर अस्थियों के सामान बिना आकृति वाले ऐसे पीले कंकड़ मिलते हैं जैसे दोआब मे कहीं कहीं ऊसर भूमि पर पाये जाते हैं। इस एक ही पत्थर से भिन्न भिन्न परिस्थितियों में ललाई और पीलाई की ओर परिवर्तन से लाल और पीली मट्टियों की मौलिक एकता कुछ कुछ समझ में आती है।

लहर की पहाड़ी के पास आकाशीय नील की झलक वाले पत्थर और खैलार के पास वाली पहाड़ियों के पत्थरों की गिट्टी में बहुत अधिक उपयोग होता है। जिस सड़क पर इस गिट्टी का प्रयोग हुआ हो उसे एक दो वर्ष बाद देखने पर इसी गिट्टी का पीले कंकड़ों में परिवर्तन हुआ मिलता है।

अतएव हमने देखा कि काला पत्थर एक परिस्थिति में लाल और दूसरी परिस्थिति में पीली मिट्टी की ओर परि-वर्तन होता है और खैलार वाली पहाड़ी के पत्थर भी एक ओर तो लाल मिट्टी में और दूसरी ओर पीली मिट्टी में परिवर्तन होते हैं। इतना ही नहीं वरन् खैलार की पहाड़ी के पत्थर व बांध के नीचे के काले पत्थर दोनों का परिवर्तन स्वरूप एक ही होता है। इन प्रमाणों से न केवल लाल और पीली मिट्टी में एक प्रकार की एकता भासित होती है। वरन् भिन्न भिन्न पत्थरों में भी गहरी एकता समझ में आती है।

ऐसे ही कुछ अन्य प्रमाण भी इनकी एकता प्रदर्शित करते हैं। (१) चित्रकूट के निकट मानिकपूर जबलपुर लाइन पर टिकरिया नामक स्थान के बहुत पास पास लाल गेरू और पीली रामरज की खदानों का होना इन लाल और पीली मिट्टी के सहोदर होने का साक्षी है। (२) पीली मिट्टी की ईंट पकाने पर लाल हो जाती है।

इसी अध्ययन के प्रसंग में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि इतने छोटे से भूभाग में कैसे पत्थरों की बनावट में इतनी भिन्नता हो गई। जहां तक मैं समझ पाया हूँ इस विशेषता का श्री गणेश इन पत्थरों के जन्म काल में ही हुआ है। जिस समय सम्पूर्ण पृथ्वीतल द्रव था अनेकों यौगिक उस तरल में समजातीय द्रव पदार्थ के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान थे। किन्तु जैसे जैसे तापक्रम कम होता गया, द्रव स्थिर और गाढ़ा होता गया। जिस घोर मथन के कारण मिश्र पदार्थ समजातीय था उसके अंत होने पर भिन्न भिन्न यौगिक पृथक होने लगे। भारी पदार्थ नीचे बैठने और हलका पदार्थ ऊपर आने लगा। संभवतः जिस पदार्थ को दुद्धी कहा गया है वह ही सबसे हलका पदार्थ था और इस कारण शुद्ध रूप में यह केवल उन पहाड़ियों पर जाता है जो सबसे ऊँची हैं। काला पदार्थ संभवतः सब से भारी है और जहां धरातल नीचा है वहां पाया जाता है। इन दोनों के बीच में सफेद पत्थर पर यत्र तत्र काले पदार्थ होना तथा काली चट्टानों में सफेद पदार्थों का होना सरलता से समझ में आ जाता है।

सफेद पदार्थ ही कोई ऐसा यौगिक है जो बड़े रवे की आकृति में पारदर्शी अनुवीचणीय रवों के संघ हमें अपार दर्शी दुद्धी के रूप में है। आग्नेय चट्टानों में अक्सर चिकनापन मिलता है। या तो यह चिकना पदार्थ रवों की चिकनी सतहों के कारण हुआ करता है अथवा अग्नि से पक कर पदार्थ के कण अपने को इस प्रकार स्थित कर लेते हैं कि सतह चिकनी हो जाय। पत्थरों में पाई जाने वाली अबरख की सी झिलमिली इन्हीं दो में से एक कारण है। रवों में बैजनी झलक संभवतः मैंगनीज़ और खाकी झलक लोहे की वजह से हो सकती है।

सारांश यह है कि यहां का तमाम भिन्न भिन्न पत्थर एक मूल मिश्र द्रव के आकर्षण युक्त बैठने से बने हुये समझ में आते हैं यहां को पर्वत श्रेणियों को यदि ऊँचे से देखा जाये तो इन्हें बहुत दूर तक विस्तृत देखा जा सकता है। जैसा सागर की लहर पंक्तियों का आकार होता है वैसा ही इनका आकार भी। संभव है कि पृथ्वी तल के मूल द्रव की लहरें जो किसी कारण से गाढ़े द्रव में पैदा हुई हों जम कर रह गई हों। इन श्रेणियों के शिखर चपटे हैं। परन्तु इसका स्पष्ट कारण इनके सिरों का कालान्तर में हवा पानी आदि से घिस जाना ही है।

डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर (District Gazzetteer) में जिन्हें क्वार्ट्ज वेन्स (Quartz Veins) कहा गया है संभवतः वह दुद्धी वाली सुरियां ही हैं। परन्तु मेरी समझ में दुद्धी (Quartz) नहीं वरन् केल्सियम (Calcium) का कोई यौगिक है क्योंकि इनके प्रकृति परिवर्तित स्वरूप में चूना मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि चित्रकूट की पहाड़ियां (स्फटिक पत्थरादि) मदियर आदि रियासतों की अत्यन्त चुने से भरी हुई जमीन यहां तक की जबलपूर की संगमरमर की चट्टानें इसी मध्य भारतीय प्रदेश के ऊपर से बहकर आये हुये स्वेत पदार्थ से बनी हैं।

झांसी की पहाड़ियों के अन्दर बहुधा गुफायें पाई जाती हैं। जिनके साथ बहुत से ऐतिहासिक और काल्पनिक गाथायें लगी हैं। खास शहर की पहाड़ी की गुफा में कई मूर्तियां हैं। इन गुफाओं के बन जाने का कारण मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जिस समय पृथ्वी तल का द्रव पदार्थ ठंडा होने लगा ऊपर की सतह सब से पहिले ठंडी हो गई और अन्दर द्रव शेष रहा। ठंडे होने पर बहुधा पदार्थ सिकुड़ते हैं। ज्यों २ अन्दर का भाग ठंडा होता गया सिकुड़ता गया। इस प्रकार बीच का हिस्सा खोखला हो गया। पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े भी ऐसे मिलते हैं जो बीच में खोखले और रवेदार होते हैं। मैंने कुछ एक ऐसे टुकड़े गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज (Govt. Training College) को दिये भी हैं। वे सब उपर्युक्त सिद्धान्त का ही पोषण करते हैं।

अब यहां की पहाड़ियों की एक विशेषता पर थोड़ा सा प्रकाश डाल कर लेख समाप्त करता हूँ। बहुत सी पहाड़ियाँ केवल बडे बड़े गोल पत्थरों के शिलाखंडों के संग्रह मात्र हैं। ऐसा मालूम पड़ता है मानों किसी ने उन्हें एक दूसरे के ऊपर रख दिया हो। कोई निकटवर्ती पहाड़ियां ऐसी नहीं जिनसे ये लुढ़क आये हों। पूरी पहाड़ियां ही इन्हीं का समुदाय मात्र हैं।

इनको इस व्यवस्था का विवेचन करने से पहिले एक उदाहरण को सम्मुख कर लें। यदि हम किसी रवेदार पदार्थ को लें और उसे गरम करें तो प्रत्येक रवा प्रसार के सम्बन्ध में एक स्वतंत्र व्यक्ति होकर व्यवहृत होगा। अर्थात् सम्पूर्ण पदार्थ के प्रसार में एकता न होकर भिन्न भिन्न रवे फैलेंगे। ऐसा कई बार होने पर रवे ढीले पड़ कर विच्छिन्न हो जायेंगे अथवा यदि किसी रवेदार पदार्थ को हम ठोकें तो वह छोटे छोटे रवों में ही टूटता है। अब यदि हम यह कल्पना करें कि पहाड़ी का एक बृहत् शिलाखण्ड छोटे खण्डों का एक वैसा ही समुदाय है जैसा ऊपर कथित पदार्थ रवों का था तो नित्य प्रति के तापक्रम परिवर्तन, अथवा समय समय पर आये हुये भूचालों द्वारा इनका छोटे छोटे खण्डों में भग्न हो जाना सरलता से समझ में आ जाता है। परन्तु ये विभक्त खण्ड प्रारम्भ में गोल न रहे होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु हवा, वायु ताप आदि प्रकृति के ध्वंसकारी अस्त्रों से इन पत्थरों के किनारों को घिस घिस कर गोल कर दिया होगा।

प्रकृति के अनेक क्षेत्रों में कई एक नियम पाये जाते हैं जैसे (Dynamics में principle of least action, optics में principle cf least time and Distance) एक गोल सतह स्वाभावतः एक ऐसी सतह है जिस पर ध्वंस होने की क्रिया हवा, वायु और ताप इत्यादि से सब से कम होगी। अतएव इन सब के काम का परिणाम पत्थरों को गोल करके छोड़ना ही स्पष्ट समझ में आता है। (A spherical surface is naturally most uninure to denudation)।

झांसी के धरातल का अध्ययन अत्यन्त रोचक है। किस प्रकार एक साथ जन्मी हुई पहाड़ियाँ आज भिन्न भिन्न अवस्थाओं में हैं, (अपने ध्वंस की दृष्टि से) इसकी विवेचना भी रोचक है। यहां इतना कहना ही अधिक होगा कि भूगोल की पुस्तकों में कथित विध्वंसकारी अस्त्रों के अतिरिक्त हमें यह भी विचार करने की आवश्यकता है (१) कि पर्वत श्रेणियां पूर्व से पश्चिम को जाती हैं अथवा उत्तर से दक्षिण की ओर क्योंकि इनकी इस भिन्नता से सूर्य का प्रभाव भिन्न होगा। (२) कि वे रवेदार है (३) कि वे कितनी ऊँची विस्तृत तथा किस प्रकार है। कन्वेक्स धरातल से (Convex Surface) कनकेव (Concave) की अपेक्षा ध्वंस की दृष्टि से अधिक सुरक्षित है।

इस सम्पूर्ण लेख में काली मिट्टी के बारे में कुछ नहीं कहा गया। यहां थोड़ा लिखना ही पर्याप्त होगा। मेरी समझ में यह काली मिट्टी लाल और पीली मिट्टी का ही बनस्पतिक प्रक्षेप से रूपान्तर है। अक्सर देखा गया है कि काली मिट्टी के क्षेत्र को खोदने पर पहिले पीली फिर लाल मिट्टी पाई जाती है।

यहाँ पर यदा कदा एक प्रकार का गहरा कत्थई पत्थर बहुत छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है जिसको यहां के निवासी चलि बहा कहते हैं। ऐसा ही पत्थर मिर्जापुर के टाँड़ा फाल्स के निकट बहुतायत से पाया जाता है। वहाँ लाल मिट्टी भी पाई जाती है संभवतः यह यहाँ के काले ग्रेनाइट (Granite) के नीचे परत (Strata) का है।

देश-दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। कागज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।≈) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने को कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुप में भोजन सामग्री और राजनैतिक नियंत्रण

भोजन मनुष्य की मुख्य तथा आवश्यक मांग की पूर्ति करता है। इसलिये उसकी गणना नागरिक अर्थशास्त्र में है।

आजकल भोजन सामग्री का महत्व भी अधिक हो गया है। भोजन नागरिक लोगों की वृद्धि और नाश का कारण बन रहा है। बर्तमान अत्याचारी शासक का भोजन प्रधान साधन बन रहा है। भोजन सामग्री को युद्ध के कारण लोग भूमि के अन्दर गाड़ कर रखते हैं। भोजन बर्तमान समय में सैनिक भेद रहस्य बन गया है। कितनी भोजन सामग्री उत्पन्न हुई, कितनी खर्च हुई और कितनी निर्यात की गई इसका बहुत ठीक हिसाब रखना पड़ता है। बम्ब बर्षक विमानों से रक्षा करने के लिये भोजन सामग्री का बहुत उचित प्रबन्ध करना पड़ता है। इसी कारण योरुप के भोजन सामग्री का ठीक तौर पर अन्दाज लगाना भी कठिन हो रहा है।

बर्तमान सामूहिक युद्ध में पिट्रौल, लोहे, कोयले, धातु और खनिज सम्पत्ति की भांति ही अन्न भी आवश्यक वस्तु सिद्ध हो रहा है। भोजन सामग्री को लोगों ने भूमि के भीतर गाड़ रक्खा है जिससे उसकी बचत हो जावे। आजकल अन्न की उत्पत्ति, निर्यात, आयात और व्यय आदि सभी सैनिक भेद की बातें हो रही हैं और उसको रक्षा भली भांति की जा रही है। इसी कारण योरुप को भोजन सामग्री का ठीक ठीक ब्योरा तयार करना कठिन है।

बर्तमान युद्ध में तेल, कोयला, विद्युत शक्ति, रेशे, धातु और खनिज सम्पत्ति की भांति भोजन सामग्री भी युद्ध-विजय के लिये परम आवश्यक है। सभी राष्ट्र जानते हैं कि भोजन सामग्री के सम्बन्ध में कृपणता करनी आवश्यक है।

जर्मनी के अन्दर जब से नाज़ी दल ने शक्ति ग्रहण की है तब से उसने रूस की भांति भोजन सामग्री को एक राजनैतिक अस्त्र बना लिया है। उसने भोजन सामग्री के द्वारा ही कृषकों तथा मज़दूरों की सहानुभूति प्राप्त की और जर्मनी के कारखाने वाली नीति का पुनः संगठन किया जर्मन लोगों को आज्ञा दी गई कि वह भोजन सामग्री को अपने पास एकत्रित न करें नहीं तो उन्हें सजा दी जावेगी। भोजन सामग्री पर अधिकार प्राप्त करने के ही कारण नाज़ी संस्था ने प्रत्येक जर्मन व्यक्ति के मुँह पर लगाम लगा दी है।

जर्मन रांइक ने ६ वर्ष के शान्तिमय तथा २० मास के युद्ध समय में कितनी ही घोषणाएं तथा कानून जारी किये और भोजन सामग्री को राजनैतिक शस्त्र होने का महत्व दिया है।

आज यह बात निसंदेह ही सत्य है कि कुछ वस्तुओं को छोड़ कर शेष सभी भोजन सामग्री जर्मन लोगों को प्राप्त है और जब तक योरुप पर उसका अधिकार रहेगा तब तक उसे भोजन सामग्री जर्मन लोगों को प्राप्त है और जब तक योरुप पर उसका अधिकार रहेगा तब तक उसे भोजन सामग्री भली भांति प्राप्त होती रहेगी।

१९३४ ई० में नाज़ी दल ने मुसोलनी की भांति जर्मनी में भोजन सामग्री उत्पन्न करने का आन्दोलन आरम्भ किया था। विदेश से भोजन सामग्री की आयात कम की गई और खेत के उत्पन्न हुये सामान का मूल्य बढ़ाया गया। जर्मनी का प्रत्येक व्यक्ति, किसान, मज़दूर, अनाज के व्यापारी आदि सभी राइक के भोजन सामग्री वाले राज्य के सैनिक हो गये और उन पर फौजी कानून लगा दिया गया यदि उन्होंने सैनिक नियम को पालन करने से असमर्थता प्रकट की तो उन्हें अपने सिर की भेंट चढ़ानी पड़ी।

इतनी कठोर नीति का पालन केवल इस कारण किया गया कि लोग युद्ध के समय की कठिनाइयों का सामना कर सकें। जर्मनी के नेतागण जानते थे कि युद्ध के समय भोजन की कठिनाई होगी इसलिये उन्होंने पहले से ही लोगों को प्रकृतिक रूप से भोजन सामग्री को उचित ढंग से प्रयोग करने तथा अन्न के स्थान पर दूसरी वस्तु प्रयोग कर के भूक मिटाने की सलाह दी। जर्मनी में भोजन सम्बन्धी नियम बनाया गया और जब प्रथम सितम्बर १९३९ ई० को पोलैंड का युद्ध छिड़ता जर्मन प्रजा को भोजन सम्बन्धी कार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांटा गया। कपड़े आदि के सम्बन्ध में रैतनिंग (खूराक सम्बन्धी) प्रबन्ध पहले ही हो चुका था। पशुओं के खूराक के सम्बन्ध में भी यह प्रबन्ध पहले ही किया जा चुका था। जर्मनी के अन्दर खूराक आदि नियत करने की यदि नीति ग्रहण की जाती है तो उसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह उस वस्तु की कमी है बरन् यहां की वह इँजीनियरिंग अथवा राजनैतिक विज्ञान है।

१० दिसम्बर १९४० ई० को हिटलर ने मजदूरों के मध्य भाषण देते हुये कहा कि हम इस बात को नहीं करना चाहते कि एक मनुष्य को भोजन अधिक मिले और दूसरे को कम मिले हम चाहते हैं कि सभी लोगों को भोजन मिले परन्तु हम पहले लड़ने वाले सैनिकों को फिर चतुर काम करने वाले और मज़दूरों को उसके बाद बेकार लोगों और बूढ़े तथा बीमारों को और सब से अंत में कारागार वासी कनसनट्रेशन कैम्प वालों को और यहूदियों को भोजन देना चाहते हैं। भोजन वाले कार्डों पर प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को उपयोगिता का वर्णन किया रहता है।

अच्छी खूराक के कार्ड काम के अनुसार लोगों को दिये जाते हैं। यदि साधारण मज़दूर अपने कार्य में कौशलता प्राप्त कर लेता है तो उसे और अच्छी खूराक का कार्ड मिल जाता है। इसी प्रकार उन्नति होती जाती है। खूराक कार्ड का तात्पर्य यह होता है कि जो व्यक्ति जिस प्रकार का कार्य करता है उसको वैसा ही अच्छा भोजन स्वस्थ रखने के लिये दिया जाता है।

भोजन सामग्री कभी कमी और कभी अधिकता भी कर दी जाती है। कभी कभी जब स्टाक में काफी भोजन रहता है तो भी कम खूराक दी जाती है और कभी स्टाक में कमी होने पर भी अधिक अच्छा भोजन दिया जाता है। लोगों को भोग विलासता की भोजन सामिग्री नहीं दी जाती उन्हें साधारण भोजन खाने की आदत डाली जाती है जिससे संकट काल में उन्हें अधिक कष्ट न हो। फ्रांस के पतन के पश्चात् जर्मनी में मामूली आराम की वस्तुएं तथा भोजन सामग्री लोगों को बाँटी गई थी जिससे प्रजा को खुशी तथा उत्साह की बृद्धि होवे।

गेस्टापो (गुप्त पुलिस) जर्मनी का प्रचार मन्त्री मंडल है। यह मंत्री मंडल जब कभी मौका देखता है तो साधारण जनता का पूजीपतिवर्ग के विरुद्ध कोप दिखाने के लिये एक समय के भोजन का प्रचार आरम्भ कर देता है या प्रजा सम्बन्धी भोजनालय की योजना का प्रचार करता है। वहां भोजन का एकत्रित करना पाप है यदि इस सम्बन्ध में सख्ती से काम लिया गया तो प्राण दण्ड मिलता है और अगर सख्ती न की गई और छोटा मामला हुआ तो कनसनट्रेशन कैम्प या कारागार में बन्द कर दिया जाता है।

तटस्थ राष्ट्रों के अन्दर राजनैतिक विरोधियों को भोजन सामग्री के अपने अधिकार में करने के ही कारण नाज़ी जर्मनी ने नीचा दिखाया है। भोजन सामग्री पर अधिकार करने के कारण ही नाज़ीवाद ने अपने देश भक्तों का सामना किया है। अन्न, चीनी, अँडा, दूध, मांस, फल और साग आदि सभी वस्तुओं पर नाज़ी दल ने अपना अधिकार जमा रक्खा है।

नाज़ी दल कृषक देशों पर पहले अपना आर्थिक प्रभुत्व जमाता है उसके बाद उसके ऊपर सैनिक तथा राजनैतिक प्रभुत्व डालता है। नाज़ी दल का भोजन सामग्री पर अधिकार जमाने का एक मुख्य नियम यह है कि जो कुछ विदेश से ८ करोड़ जर्मन निवासियों के लिये भोजन सामग्री मंगाई जाती है वह केवल एक व्यक्ति के अधिकार में कर दी जाती है। वह अकेला मनुष्य भोजन सामग्री के लिये अच्छे मूल्य देने के लिये तयार हो जाता है और पत्रों तथा रैडियो द्वारा प्रचार कर दिया जाता है। उसके दूत कार्य करते रहते हैं। जब किसान देखते हैं कि उन्हें राजनैतिक सुविधाएँ भी प्राप्त हैं और साथ ही साथ उनके सामान का अच्छा दाम भी मिल रहा है तो वह उसे बेचने के लिये बाध्य हो जाते हैं। जहाँ एक बार कोई राष्ट्र इस प्रकार जर्मनी के अधिकार में आ गया बस फिर क्या उसका सर्व नाश हो गया।

जर्मन चतुर विशारद व्यापारी लोग जिस देश के भोजन सामग्री पर दाँत लगाते हैं। वह पहले उनके भीतरी बाहरी सभी बातों का पता लगाते हैं और फिर उनके सामान का अधिक से अधिक दाम लगाते हैं तथा उन्हें पेशगी और कम ब्याज पर रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी देते हैं। उनके साथ संधियाँ और इकरारनामे लिखते हैं और अन्त में उन पर कूटनीति और सेना का प्रभाव डालते हैं। फिर वे अपना प्रभाव जमाही लेते हैं।

१९३३ और १९३९ ई० के मध्य जर्मनी ने इसी प्रकार बल्गेरिया, यूनान, यूगोस्लाविया, रूमानिया हँगरी और टर्की का समान अपने हाथ में कर लिये। इन देशों को अधिकतर निर्यात जर्मनी के साथ होता है।

जब से युद्ध आरम्भ हुआ है तब से तटस्थ तथा जीते हुये राष्ट्रों के अन्दर जर्मनी ने अपनी भांति भांति की योजनाओं से काम लिया है। उसकी चाल यह है कि वह अपने मार्क (जर्मन सिक्का) और दूसरे देश के मुद्र में मूल्य सम्बन्धी सम्बन्ध पैदा कर के मूल्य नियत कर देता है और उसके बाद भोजन सामग्री का मूल्य लगाता है। हंगरी, बल्गेरिया आदि तटस्थ राष्ट्र जिनके यहां खर्च से अधिक भोजन सामग्री होती है उन्होंने अपने यहां भोजन सम्बन्धी नीति जारी कर दी है जिससे वह अधिक से अधिक बची हुई भोजन सामग्री जर्मनी को भेज सकें। इस प्रकार योरुप के चाहे जिस कृषक देश में हम जावें परन्तु हमें शायद ही मनमानी भोजन मिले। यदि भोजन सामग्री पर जर्मनी से रोक लग जाती है तो नगर निवासी ही नहीं वरन् देहात के किसानों को भी भोजन की कमी पड़ जाती है।

सभी बालकन राष्ट्र जर्मन प्रभुत्व में हैं वहां की बढ़ी हुई भोजन सामग्री जर्मनी को भेजी जाती है। स्वीडन और स्विटजरलैंड दोनों देशों की स्थति सैनिक दृष्टि से बड़े मार्के की है यद्यपि सैनिक दृष्टि से दोनों ही जर्मनी की दाम पर निर्भर करते हैं। दोनों देशो में भोजन की कमी है। स्विटजरलैंड यदि चाहे तो अपने यहाँ भोजन सामग्री उत्पन्न करने का प्रबन्ध कर सकता है। स्वीडन में कारखानों के सिवा कच्चा सामान बहुत है। वह जर्मनी के कारखानों का तयार सामान खरीदता है। इसी कारण से नार्वे से वहां कुछ भोजन सामग्री जाती है। स्विटजरलैंड और स्वीडन तटस्थ होने के कारण अँग्रेजों से भी सामान खरीदते हैं जर्मनी उन्हें आयात की आज्ञा प्रदान करता है।

यदि जर्मनी अपनी भोजन सामग्री नीति का अनुसरण दक्षिणी अमरीका के राष्ट्रों में कमी करे तो उसे अधिकांश बातों में सफलता प्राप्त होने की सम्भावना है। वह इस नीति को कनैडा, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध भी चला सकता है यदि हिटलर का ब्रिटिश द्वीप समूह पर अधिकार हो जावे तो उसे योरुप की साधारण खरीद (लगभग ६ अरब रुपये) पर भी अधिकार हो जावेगा। उसके बाद जर्मनी सभी राष्ट्रों पर प्रभुत्व जमा लेगा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का शत्रु बन बैठेगा। जर्मनी को यह सभी कार्य करने में कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ेगी।

विजय किये हुये देशों में भोजन युद्ध कौशल पूर्ण रूप से लागू किया जा रहा है। युद्ध के पहले मध्यवर्ती पोलैंड का खपत से बचा हुआ भोजन का सामान बाहर जाता था। वहाँ पर उपज बहुत अच्छी होती है। आज वहाँ की दशा बड़ी शोचनीय है। जर्मन लोग पोलिश लोगों के साथ जो देश भाव रखते हैं उसका बुरी तरह से प्रयोग वहाँ पर हो रहा है। वह पोलैण्ड को राष्ट्रीयता का सम्पूर्ण रूप से अंत कर देना चाहते हैं। मध्यवर्ती पोलैंड में जर्मनी में मिलाये हुये पश्चिमी पोलैण्ड से अधिक निर्दयता का व्यवहार हो रहा है। वहाँ पर भोजन समस्या बड़ी टेढ़ी हो रही है। वहां पर आलू की अधिक उपज होने तथा अमरीकन सहायता के कारण लोगों का किसी न किसी भांति निर्वाह हो रहा है।

चेकोस्लोवेकिया में भोजन सामग्री की वही दशा है जो राइक तथा आस्ट्रिया के अन्दर है। नार्वे के लिये यह बड़ा ही संकट का समय है क्योंकि ब्लाकेड (घेरे) के कारण वहाँ पर नाज साग चीनी, चर्बी, और फल आदि वस्तुएं बहुत कम पहुँच पाती हैं। साधारणता शान्ति समय में नार्वे से २ लाख टन (लगभग ५६ लाख मन) चर्बी, ८५ प्रतिशत वहाँ की मछली और ६५ प्रतिशत वहाँ का आलू निर्यात किया गया था अब भी वहाँ इतनी मछली पकड़ी जाती हैं कि रोजाना भरी गाड़ियाँ जर्मनी जाया करती हैं।

अधिकार किये हुये राष्ट्रों में डेनमार्क की दशा सब से अच्छी है। डेन लोग अब भी अपनी सीमा पर ... के साथ कर लगाये हुये हैं परन्तु सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहारिक कार्यों के लिये डेनमार्क राइक के अधिकार में है। वहाँ पर मनुष्य तथा जानवरों की खुराक का नियँत्रण है। १९४० ई० में मुर्गियों और सुवरों के बच्चों की संख्या आधी कर दी गई थी। गायों को छोड़ कर और दूसरे पशुओं की संख्या भी कम कर दी गई थी। डेनमार्क का सभी मक्खन, पनीर, सुवर का मांस अँडे और जानवर जो कुछ भी बचे रहते हैं सभी जर्मनी भेज दिये जाते हैं। जर्मनी ने डेनमार्क पर साक्षात रूप में प्रभाव नहीं डाला है वरन् उसने भोजन सामग्री का मूल्य इतना बढ़ा रक्खा है कि वहां का सभी सामान सीधे जर्मनी चला जाता है। डेनमार्क को अपने यहां के निर्यात में काफी लाभ हो रहा है।

डेन लोगों की भांति डच लोगों की दशा भी अच्छी है। यद्यपि डेन लोगों की भांति डच लोगों का व्यापार भी अँग्रेजों के साथ बन्द हो गया है। हालैंड का साग-पात, मक्खन, पनीर सभी जर्मनी चला जाता है। डेनमार्क की भांति ही हालैंड में भी जर्मन लोग वस्तुओं का मूल्य बढ़ाने की नीति का अनुसरण कर रहे हैं।

बेल्जियम देश योरुप में सब से अधिक घना बसा है। स्विटजरलैंड के सिवा यह देश योरुप में सब से अधिक रोजगारी है। अधिकार किये हुये देशों में इसकी दशा भी बड़ी शोचनीय है। फिर भी बेल्जियम निवासियों और पोल लोगों के जर्मन व्यवहार में बड़ा अन्तर है। बेल्जियम पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् शीघ्र ही जर्मन अफसरों ने बेल्जियम अफसरों के साथ उत्पत्ति खपत और सामान भेजने तथा मंगाने आदि के कार्यों में मिल कर कार्य आरम्भ कर दिया है। बेल्जियम में चर्बी, द्रवादूध, नाज और आलू की कमी है। परन्तु वहां पर चीनी कुछ दूध और साग तरकारी आवश्य है।

नार्वे डेनमार्क और हालैण्ड में रोटी के सम्बन्ध में नियंत्रण है और प्रति व्यक्ति प्रति सप्ताह साधारण रूप से ९०७८० और ८९ औंस रोटी दी जाती है। बेल्जियम में प्रति सप्ताह केवल ५६ औंस रोटी दी जाती है। कारखाने में काम करने वालों को ११२ औंस भोजन प्रति सप्ताह दिया जाता है। कुछ भोजन सामग्री बेल्जियम को ब्रिटिश ब्लाकेड होकर पहुँची परन्तु अधिकांश भाग का प्रबन्ध स्वयम् जर्मन को करना पड़ता है।

अधिकार किये हुये फ्रान्स में भोजन सामग्री के ऊपर जर्मनी का अधिकार है परन्तु वहां की दशा बेल्जियम से अच्छी है परन्तु वहाँ की रोटी प्रति सप्ताह का नियन्त्रण है। अधिकार किये फ्रान्स में गेहूँ, शीरा और दूध ब्रिटिश वायुयानों की बम वर्षा होती रहती है और यहीं पर इंगलैण्ड की बर्तमान लड़ाई हो रही है।

बेल्जियम हालैण्ड और अधिकार किये हुये फ्रान्स में बेकारी फैली हुई है। जर्मन कारखाने जोरों के साथ चल रहे हैं और जर्मन सैनिक समस्त योरुप में फैले हुये हैं। वहां पर चतुर कारखाने में काम करने वालों की आवश्यकता है इसलिये दूसरे देशों से काम करने वाले बुलाये जा रहे हैं यह काम करने वाले लोग हालैंड, बेल्जियम, फ्रांस और स्कैंडीनेविया के देशों से चतुर मजदूर जर्मनी के कारखानों में काम करने के लिये ले जाये जाते हैं। देशों के मजदूर बड़े परिश्रमी होते हैं। इन मजदूरों को भोजन की लालच दी जाती है। जर्मन एजेन्सियां डच बेल्जियम और फ्रान्स के काम करने वालों को काम देते हैं यदि मजदूर लोग काम करने से इन्कार करते हैं तो उनका नियंत्रण कार्ड रद्द कर दिया जाता है कभी कभी नियंत्रण कार्ड छीन भी लिया जाता है और उनके बाद उन्हें पता दिया जाता है कि अमुक जर्मन कारखाने में काफी भोजन प्राप्त है।

फ्राँस के जिस भाग पर जर्मन अधिकार नहीं है। वहाँ की दशा भी बहुत खराब है। वहाँ पर भागे हुये लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में जाकर शरण ली है। वहाँ भी खाने की बहुत कमी है। वहां पर भोजन नियंत्रण नीति भली भाँति चालू नहीं है फिर भी ७४ औंस प्रति सप्ताह रोटी दिये जाने का नियंत्रण कार्य हो रहा है।

विची सरकार के आधीन जो प्रान्त है वहाँ शीत काल में साग, तरकारी, फल उत्पन्न किये जाते हैं और मदिरा बनाई जाती है। वहाँ पर नाज और चर्बी की कमी है। वहां गेहूँ उत्तरी फ्राँस से आता था और देशों से ५ या ६ लाख टन सालाना चर्बी आयात की जाती थी। अब यह सामान अप्राप्त हैं। पेताँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर के मध्य शतरंज को बाजी चल रही है। जर्मन लोग अधिकार न किये हुये फ्रांस की भोजन स्थिति सुधारने के लिये तयार नहीं हैं। फ्रांसोनी लोगों को सूचना दी गई है कि जर्मनी ने उन्हें २८ लाख मन आलू जर्मनी से भेजने का बचन दिया है।

समस्त अधिकार किये प्रांतों को जर्मनी की सहायता करनी पड़ती है। जर्मनी को युद्ध कैदियों तथा बिदेशी मज़दूरों को भोजन देना पड़ता है। जर्मन सैनिकों को खूब भोजन मिलता है, मजदूरों को बहुत कम भोजन प्राप्त है। जर्मन सैनिक नियंत्रय किये हुये भोजन को खरीद कर अपने घर भेजा करते हैं जिससे भोजन की और भी अधिक कमी हो जाती है।

इटली में नियंत्रण नियम लागू नहीं है। जर्मनी को अपने यहाँ निमन्त्रण नीति चलाने में ६ साल लगे थे। वह इस नोति को समस्त अधिकार किये देशों में चलाना चाहता है। परन्तु उसमें बड़ी गड़बड़ी पड़ रही है इसी कारण व्यापार में बहुत खराबी पड़ गई है। सामान भेजने और लगाने में भी बड़ी गड़बड़ी रहा करती है इसी कारण जितनी भोजन सामग्री योरुप में प्राप्त है उसका भली भांति बँटवारा समस्त योरुप में नहीं हो रहा है।

जितने ही समय तक नाज़ी अफसर अधिकार किये हुए योरुप में शासन करें उतना ही अधिक वह शान्ति स्थापित करने में सफल होंगे। क्योंकि जर्मन अफसर योरुपीय प्रजा को कम भोजन देने और बिल्कुल भूखे मार डालने को धमकी देते हैं। अनाज के बड़े बड़े गोदामों की कुंजी जर्मन कमांडरों (सेनापतियों) के हाथ में है। यह कमांडर युद्ध कला कौशल के अनुसार भोजन सामग्री चालू अथवा बन्द करते हैं।

बलकान और डैनूब के बेसिन में अधिक उपज अबकी साल भी नहीं हुई है। हंगरी में अवश्य ही तेलहन की उपज अच्छी हुई है। जर्मनी के अन्दर आधुनिक ढंग की नई कलों से काम होने से खेती के अन्दर अच्छी ऊपज हुई है। उत्तरी, मध्यवर्ती और दक्षिणी योरुप में भोजन सामग्री की उपज अच्छी हुई है। वहाँ ईख, आलू आदि की उपज बढ़ा दी गई है।

कारखाना के बन्द हो जाने और सेना के अशस्त्र हो जाने से खेती करने के लिये काफी संख्या में मज़दूर प्राप्त हैं। सेना के घोड़ों से हल जोतने का काम लिया जाता है। जहां घोड़े नहीं हैं वहां बैल से हल जोता जाता है। खेतों में उपज के लिये जिस भांति की खाद की ज़रूरत पड़ती है वह भी जर्मनी के पास काफी मात्रा में है इसलिये योरुप में भोजन की उपज अवश्य ही बढ़ गई होगी।

नार्वे को छोड़ कर समस्त जर्मन अधिकार किये हुए देशों में खेती बढ़ाई गई है। बेल्जियम भी अपनी भोजन सामग्री की मांग स्वयं पूर्ण करने की आशा रखता है। बेल्जियम में गेहूँ की खेती की भूमि एक लाख ६० हज़ार हेक्टर से बढ़ा कर २ लाख ६० हज़ार और आलू की खेती की भूमि एक लाख ४७ हज़ार हेक्टर से बढ़ा कर २ लाख ७७ हज़ार कर दी गई है। एक हेक्टर भूमि लगभग २०० एकड़ भूमि के बराबर होती है।

योरुपीय नगरों के समीपवर्ती वाटिकाओं में काफी फल और तरकारी की उपज होती है। हालैण्ड, बेल्जियम, नार्वे और डेन्मार्क आदि देशों के पशुओं को अधिकांश संख्या में मार कर मांस भक्षण कर डाला गया है। परन्तु यह आशा की जाती है कि जैसे ही पशुओं का चारा अधिक मात्रा में तयार हो जावेगा सुअर तथा मुर्गी आदि की संख्या में शीघ्र ही बृद्धि हो जावेगी।

योरुप में आगे चल कर भोजन सामग्री की और अधिक कमी होने की सम्भावना कम है। योरुप से दूसरे महाद्वीपों से अन्न बहुत अधिक मात्रा में आयात नहीं किया जाता था। अन्न की उतनी कमी नहीं हुई है जितनी कमी चरबी की हुई है। योरुप में लगभग २ करोड़ ८० लाख मन चर्बी की कमी हो गई है। जर्मनी के पास वर्तमान समय में १८ करोड़ २० लाख मन नाज स्थायी है। यह नाज संकट के समय किसी भी देश को भूखों मरने से बचा सकता है। चर्बी की कमी रही चली आवेगी परन्तु गाय, सुअर, भेड़ आदि को यदि भोजन प्राप्त हो गया तो चर्बी की भी कमी किसी हद तक पूरी हो जावेगी। योरुप में लगभग १० करोड़ सुअर हैं। वह जिस भोजन को खाते हैं वह भोजन मनुष्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाने के काम में प्रयोग किया जा सकता है। जब योरुप के अन्दर लोगों के सामने भूकों मरने का प्रश्न आवेगा तो मरने के पहले अपने यहाँ के समस्त पशुओं को मार कर खा डालेंगे। बर्तमान स्थिति में मालूम होता है कि सबसे अधिक इङ्गलैण्ड को भोजन सामग्री की कमी उठानी पड़ेगी क्योंकि समुद्र में उसके बहुत अधिक जहाज डूब रहे।

नाजी लोग अपने को योरुप के भोजन सामग्री का मालिक समझते हैं। ३० सितम्बर १९४० ई० को जर्मनी के कृषक यंत्र वाल्टर डारे ने कहा था कि योरुप के अधिकार किये प्रान्तों में भोजन की कमी न होगी। विदेशी लोग यह गलत अन्दाज लगा रहे हैं कि योरुप में भोजन की कमी हैं। ७ जनवरी सन् १९४१ ई० को डाक्टर एबेर हार्ड वान स्टोहरर जर्मनी राजदूत ने मैड्रिड में जोर देकर कहा था कि स्पेन को संयुक्तराष्ट्र अमरीका से ३५ करोड़ रुपया कर्ज लेने की आवश्यकता है उसे जनी पूरा कर सकता है।

फरवरी में रूस ने नार्वे को वहाँ की अलमुनियम के बदले में २ करोड़ ८० लाख मन रूसी अनाज देने का बचन दिया इस पर जर्मनी ने बाधा उत्पन्न करके कहा कि यदि कोई सहायता रूप में योरुप की सहायता करना चाहता है जो जर्मनी को रुकावट डालने की जरूरत नहीं है वरन् वह सहायता साधारण होनी चाहिये राजनैतिक नहीं। जर्मनी योरुपीय मामलों को (भोजन सहित) अपना कार्य समझता है जर्मन नवयुग का यह मुख्य उद्देश्य है कि जर्मनी अपने अधिकार वाले राष्ट्रों की देख भाल तथा सहायता प्रत्येक भाँति करे।

गत महायुद्ध के विजय करने में भोजन सामग्री ने अवश्य ही एक बड़ा भाग लिया था परन्तु भोजन सामग्री का प्रश्न ही केवल न था उसके साथ साथ और दूसरे कारण भी थे। ब्रिटिश ब्लाकेड (घेरे) के कारण जर्मनी को मशीन तथा भोजन की कमी नहीं हो सकती। यह वस्तुयें उसे योरुप में काफी प्राप्त हैं। नाजी संस्था को पराजय देने के लिये उससे अधिक अच्छे अस्त्र शस्त्र; वीरता, शक्ति और उससे अच्छी कूटनीति की आवश्यकता है।

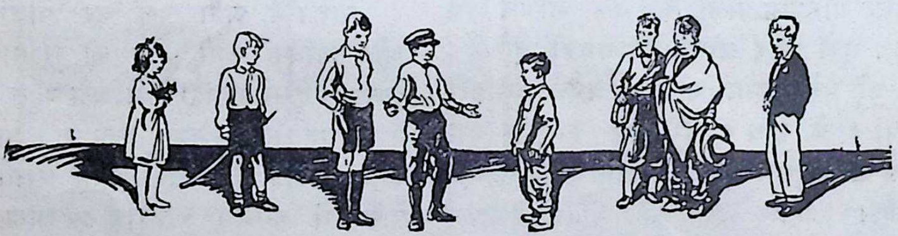

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्बेनिया

अल्बानी लोग इलीरियन और एपीरोटूस जातियों की संतान हैं। पूर्व ऐतिहासिक काल में इलीरियन और एपीरोटूस जातियाँ बालकन प्रायद्वीप के पश्चिमी और ट्रीस्टे से अर्ता तक की खाड़ी तक बसी हुई थीं। अब उन जातियों को घेग्स और तोस्त्रन्स कहते हैं।

वर्तमान अल्बेनिया में प्राचीन अल्बेनिया का बहुत कम भाग सम्मिलित है। अल्बेनिया के पड़ोसी राष्ट्रों ने उसकी भूमि १९१२-१३ और १९१४-१८ ई० के युद्ध में छीन लिया। यूनान और सर्विया में उसके अधिकांश प्रान्त मिला दिये गये।

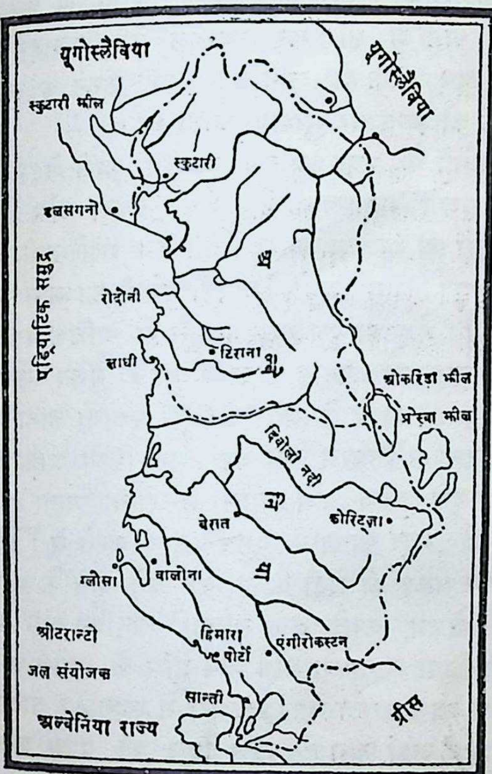

अल्बेनिया एक स्वतंत्र राज्य है। यह राज्य उत्तर की ओर स्कुतारी से दक्षिण की ओर बुटिरिंटो तक फैला हुआ है। इसके अन्दर अधिकांश पर्वतीय प्रदेश स्थित है। नदियां पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं। तटीय मैदान समतल तथा उपजाऊ हैं। कछारी भूमि नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी है। नदियां जाड़े के दिनों की बरफ के पिघलने के कारण पानी से उबल पड़ती हैं और गरमी के दिनों में सूख जाती हैं। जब अल्बेनिया तुर्की शासन में था तो नदियों के अन्दर बीच बीच में मिट्टी पड़ जाती थी जिससे जहाजों का चलना दुस्तर हो जाता था। घाट बहुत उथले हो जाते थे। इटली ने दुराजो तथा बलोना के बन्दरगाहों पर बम्ब बर्षा किया है। उन्हें बन्दरगाह के बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ा होगा। नदी के मुहाने पर कीचड़ जम जाने के कारण समीपवर्ती जलवायु खराब हो जाती है और गरमी के दिनों में मलेरिया उत्तर आता है जिससे वहां रहना कठिन हो जाता है। जाड़े के दिनों में वहां अच्छे खेत तथा घास के मैदान हो जाते हैं।

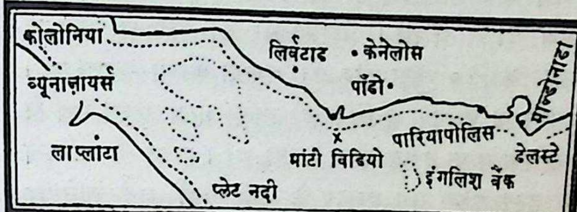

जर्मन जहाज़ (ग्राफस्पी) की जल समाधि

पहाड़ों पर रहने वाली जातियों के पास जाड़े की भूमि तथा मैदान होते हैं। पतझड़ और बसन्त ऋतु में और जार्जेज साधु के दिन हज़ारों पुरुष, स्त्रियां और बच्चे अपने पशुओं के झुण्ड लेकर पहाड़ों पर निवास करने के लिये जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक जाति के पास भूमि का एक टुकड़ा होता था जिसकी सीमा भली भांति नियत रहती थी। तुर्क लोगों के शासन काल में इन जातियों को प्रान्तीय स्वतंत्रता प्राप्त थी। प्रत्येक जाति का शासन वहाँ के बूढ़े सभासदों की सभा के हाथ में था जिसे पेलाकी कहते थे। घर का मालिक घर का बूढ़ा होता था। वही समस्त कुटुम्ब का मालिक माना जाता था। कुटुम्ब के सभी लोग एक घर में अथवा घरों के एक समूह में रहा करते थे। बूढ़ों की सभा बिना लिखे हुये कानून द्वारा शासन करती थी। चोरी के लिये चोर को चोरी के माल के दुगुने माल देने की सजा दी जाती थी। गिरजा घर की भूमि से चोरी के माल का १० गुना चोर को वापस करना पड़ता था। जाति के अन्दर से निकाले जाने वाली सज़ा सब से अधिक कड़ा दण्ड माना जाता था। हत्या के मामले में हत्या किये गये मनुष्य के समीपवर्ती मर्द नातेदार को उसका बदला चुकाने की अज्ञा थी। बूढ़ों को घास के मैदान, बन और पानी के प्रबन्ध करने का भी अधिकार प्राप्त था। यह सभी वस्तुएं प्रत्येक घर में अलग अलग बटी थीं और प्रत्येक घर को केवल अपनी वस्तु के प्रबन्ध करने तथा प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त था।

यह पहाड़ी जातियाँ पहाड़ों पर वृक्षों के तनों की बन नालियों द्वारा बड़ी चतुरता से पानी एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाती थीं। इसी प्रकार एक घाटी को पार करके दूसरी घाटी को पानी ले जाया जाता था। इन्हीं नालियों से छोटी नालियां बनाकर छोटे खेतों की सिंचाई होती थी जहां पर मक्का, प्याज तथा करमकल्ला आदि की उपज की जाती थी। वृक्षों के तनों वाली नालियों से पर्वतों के ऊपर से नीचे पानी गिराकर पनचक्कियाँ चलाई जाती थीं। निजी पनचक्की का मालिक आटा पीसने के बदले में कुछ आटा ले लिया करता था। किसी समय में यह पनचक्कियाँ लगभग समस्त योरुप में प्रचलित थीं।

लोग उस समय अपने घर स्थानीय पत्थर के बनाते थे। अल्बेनिया के उत्तरी पर्वतों का अधिकांश भाग चूने के पत्थर का है। धनी लोगों के घरों की दीवारें बड़ी मोटी बनाई जाती थीं और कभी कभी छत भी शिलाओं से पाट दी जाती थी। छत के नीचे सामान रखने का कमरा, स्तबल, हल आदि सामान रक्खा जाता था। ऊपर कुटुम्ब के लोग रहा करते थे। वह कभी कभी एक बड़े कमरे में और कभी कभी दो तीन कमरों में रहते थे। भोजन बनाने के लिये खुली भट्टी बनाई जाती थी। धुआं दीवार के एक छिद्र द्वारा बाहर जाता था। लकड़ी जलाने के बाद आग वहीं ढक दी जाती थी और थोड़ी सी सूखी पत्ती डाल कर अग्नि पुनः प्रज्वलित कर ली जाती थी। राख को कपड़ा साफ करने के लिये बड़े यत्न के साथ इकट्ठा कर लेते थे। राख के अन्दर कपड़े पानी में डाल कर उबालने तथा पछाड़ने से कपड़े खूब साफ हो जाते थे। साफ करने के बाद कपड़ों को घास पर सुखाया जाता था।

पर्वतों के ऊपर जीवन व्यतीत करने के लिये मुख्य उद्यम गल्लाबानी है। भेड़, बकरी और छोटे जानवरों को गल्लाबानी की जाती है। गल्लेबानी का काम मर्द लोग करते हैं वही खेती का काम भी करते हैं। भेड़ का दूध गाय के दूध से अधिक पसन्द किया जाता था। पहाड़ के ऊपर दूध ही मुख्य भोजन होता था। कड़ाहे में डाल कर दूध पकाया जाता था और उसी से निकाल कर वह पान किया जाता था कच्चा दूध बहुत कम प्रयोग में लाया जाता था। दही और मट्ठा को लोग बहुत पसन्द करते थे। दही के साथ मकई की रोटी मिला कर बड़े चाव के साथ लोग भोजन करते थे। त्योहारों के दिन मांस का प्रयोग किया जाता था प्रति दिन मांस के प्रयोग करने में बड़ा व्यय लगता था। स्कुतारी में साप्ताहिक बाज़ार लगता था जहां लोग दो तीन दिन की यात्रा करके अपनी भेड़ बकरी ले कर जाते थे और उन्हें बदल कर सामान ले आते थे या बेच कर नक़द रुपया लाते थे। पर्वतों पर आवश्यकतानुसार मक्का की उपज नहीं होती थी इसलिये मक्का को खरीदना पड़ता था। पहाड़ों से नगरों को लकड़ी तथा चारकोल प्राप्त होता था।

स्त्रियों का काम बहुत भारी था उन्हें गरम स्थान में गरम पत्थर के ऊपर रोटी बनानी पड़ती थी। स्त्रियां चार बजे प्रातःकाल रोटी बनाना आरम्भ करती थीं। स्त्रियों को लकड़ी और पानी बन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाना पड़ता था, पालतू पक्षियों की देख भाल करनी पड़ती थी, भेड़ बकरियों को दुहना पड़ता था, मट्ठा तथा पनीर बनाना पड़ता था और मर्द तथा स्त्रियां के लिये ऊन कातना तथा कपड़े तयार करना पड़ता था। जो स्त्री दूध दुहने या रोटी बनाने का काम नहीं करती थी उसे लगातार ऊन कातने का काम करना पड़ता था। करघा तथा ताना बाना लकड़ी के बनाये जाते थे। वह किसी स्थान पर भी लगाये जा सकते थे। बुनाई होने के बाद कपड़ा नदी में ला कर भिगोया जाता था और मुंगरी या हथौड़े से पीट कर पछारा जाता था। स्त्रियाँ मर्दों के कार्य में भी हाथ बटाती थीं।

नगर के समीप वाले मैदान बड़े उपजाऊ हैं। वहां पर भांति भांति की तरकारी उगाई जाती है। आलू, टमाटर, सेम, प्याज़, करमकल्ला आदि तरकारियां उगाई जाती हैं। यह सभी तरकारियाँ बाज़ार में बिकने जाती हैं। निचले ढालों पर कुछ फल होते हैं। अल्बेनिया में १९१२ ई० के पहले बहुत से सुन्दर जैतून की वाटिकाएं थीं परन्तु १९१२ के बलकान युद्ध में उन्हें लोगों ने नष्ट कर डाला। अल्बेनिया में अंजीर और चेरी बहुत अच्छे होते हैं। वहां अँगूर भी अच्छे होते हैं जिससे वहां की स्थानीय मदिरा तयार की जाती है।

तटीय मैदानों की समस्त भूमि बड़ी उपजाऊ है परन्तु उन मैदानों की अधिकांश भूमि धनी लोगों के पास है जो उसमें खेती करने की परवाह नहीं करते हैं। अल्बेनिया के भूमिपतियों का काम तुर्की ढङ्ग पर चलता है। भूमिपति को मजदूर के लिये खेती के सभी औजार तथा रहने के लिये घर का प्रबन्ध करना पड़ता है और मजदूर को खेती का समस्त काम करना पड़ता है। उसे किसी प्रकार का वेतन नहीं दिया जाता है। उसे उपज का केवल कुछ भाग दिया जाता है। बहुत से भूमिपति तो इतने धनी हो गये हैं कि उन्होंने अपनी समस्त भूमि में खेती करना उचित नहीं समझा। इस प्रकार अधिक अच्छी भूमि बेकार जाती थी। अल्बेनिया के किसान छोटे छोटे जमीन के टुकड़ों की मांग कर रहे थे।

पहले अल्बेनिया में बहुत रेशम होता था और इटली से लोग स्कुतारी रेशम खरीदने के लिये आते थे। उन्नीसवीं सदी में दक्षिणी योरुप में कीड़ों की बीमारी पैदा हुई जिससे रेशम के कीड़ों का सत्यानाश हो गया और उन्हीं के साथ साथ रेशम का रोज़गार भी जाता रहा। अब वहां पर घरेलू काम के लिये रेशम पैदा होता है। रेशमी कपड़ों पर सुनहरे तार के बेल बूटे बनाये जाते थे जिसे स्त्रियां बड़े चाव से प्रयोग करती थीं। चांदी का काम भी वहां बहुत अच्छा बनाया जाता था बन्दूक तथा पिस्तौल की नली चांदी की बनाई जाती थी। अब मशीन के बने हुये सस्ते सामान के आगे हाथ के बने हुये सामान को लोग कम पसन्द करते हैं। इसलिये अल्बेनिया का दस्तकारी को भारी धक्का पहुँच रहा है।

अल्बेनिया के नगरों के अधिकांश घर पत्थर के बनाये जाते थे। वह दोतल्ले से अधिक ऊँचे नहीं बनाये जाते थे। उनकी छत लाल खपड़ों की बनाई जाती थी। घर भीतर की ओर बहुत स्वच्छ रहते थे। हाथ की बनी दरियां दीवारों आदि पर लटकती दिखाई पड़ती हैं। वर्षा काल में गलियों में बड़ी कीचड़ रहती है इसलिये लोग अपने जूते द्वार पर उतार कर भीतर प्रवेश करते हैं। घरों के अन्दर सोने के लिये अलग कमरे नहीं होते हैं। जब सोने का समय आता है तो चटाइयां निकाल कर फर्श पर बिछा दी जाती हैं। दरियों के ऊपर रुई का बना कम्बल बिछाया जाता है।

नगरों के अन्दर पहले भांति भांति की भोजन-सामग्री पाई जाती थी। स्वादिष्ट भोजन तयार किया जाता था। बतख, खरगोश, बनैले मुर्गी आदि चिड़ियाँ बाज़ारों में बिकने आती थीं और किसान उन्हें बड़े प्रेम के साथ खरीदते थे। पहाड़ों पर बनों में लकड़ी बहुत पाई जाती थी। इन बनों का अधिकांश भाग अजतत्री जातियों ने नष्ट कर डाला है क्योंकि वह घास के मैदानों की लालच से बनों को काट डालते थे और वृक्षों के कट जाने से मिट्टी वृक्षों की जड़ों के साथ ही साथ पानी के बेग से बह गई और नङ्गी चट्टानें शेष रह गई हैं। जंगलों के उजड़ने का दूसरा कारण यह हुआ कि छोटे पौदों को भेड़ तथा बकरियों ने चर डाला फिर भी यदि शेष बन की रक्षा की जावे तो अवश्य उससे सदैव लाभ उठाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्षों पहले अल्बेनिया में सड़कें न थीं और छोटे घोड़े तथा खच्चर बार बरदारी का काम करते थे। छोटे छोटे बोझों को ढोने का काम स्त्रियाँ करती थीं। नदियों को लोग छोटी नावों पर बैठ कर पार किया करते थे।

अल्बेनिया में अच्छी तम्बाकू की उपज की जाती है। अधिकांश तम्बाकू इटली भेजी जाती थी। तम्बाकू के ऊपर किसी प्रकार का कर नहीं था इसलिये लोग अच्छा लाभ उठाते थे। सीमाक़ वृक्ष की जड़ चमड़ा रंगने तथा तयार करने के लिये प्रयोग किया जाता था। चमड़ा सीफक की जड़ और जैतून का तेल बाहर भेजा था। अलबेनिया में मुसलमान तथा ईसाई दोनों जातियां हैं।

उत्तर के ईसाई रोमन कैथलिक हैं अलबेनिया की कुछ जातियां मिश्रित हैं और उसमें ईसाई तथा मुसलमान दोनों जातियां पाई जाती हैं। अलबेनिया निवासी राष्ट्रीयता को प्रथम स्थान तथा चर्च को द्वितीय स्थान देते हैं। उत्तरी निवासी आरम्भ-काल में ही ईसाई हुये और वह पैट्रिआर्क के शासन में हो गये। दक्षिण की ओर के ईसाई पूर्वी सनातनी चर्च के मानने वाले हैं। भूमि के स्वतन्त्र हो जाने से वह लोग स्वतंत्र हो गये और उन्होंने यूनान के सनसनी चर्च से अलग होकर अपना अलग् सनातनी गिरजाघर बनवाया और इस प्रकार अपने को यूनानी गिरजाघर के प्रभाव से बचाया।

जब अलबेनिया को स्वतंत्रता मिली तो वहां और अधिक सुधार होने लगे परन्तु इटली के प्रभाव में आजाने के कारण अब वहां का ठीक समाचार प्राप्त नहीं होता है। इटली ने अपनी सेना के लिये बहुत सी भूमि पर अधिकार कर लिया है और किले बन्दी कर रहा है। सैनिक तथा दूसरी सड़कों के कारण अल्बेनिया की भूमि कई भागों में बंट गई है। अलबानी लोग बड़े चतुर तथा समझदार होते और जो कुछ शिक्षा उन्हें दी जाती है वह उसे शीघ्र ही प्राप्त कर लेते हैं। तुर्क शासन में उनकी उन्नति में बड़ी बाधा पड़ी क्योंकि अलबानी भाषा के सिखाने तथा छपाने पर सरकारी रोक लगी थी।

जार्ज कीरियस एक बड़ा योग्य तथा चतुर अलबानी था। वह ब्रिटिश तथा विदेशी बाइबिल सोसायटी का नौकर था। उसने अलबेनी भाषा में एक बाइबिल तयार किया और उसे छपाया। सोसायटी को तुर्क सरकार की ओर से तुर्की राज्य के अन्दर बेंचने की आज्ञा मिल गई थी। इस राष्ट्रीय अन्दोलन का मतलब अल्बेनिया को स्वतंत्र बनाना था। जार्ज कीरियस की भगनी कोरीजा में रहती थी। वह बड़ी वीर तथा चतुर स्त्री थी। वह लड़कियों के पाठशाला की प्रधान अध्यापिका थी। वह स्कूल अमरीकन प्रचार संघ के अन्तर्गत था। वह स्त्री अमरीकन पुस्तकों का प्रयोग करती थी परन्तु शिक्षा अल्बेनी भाषा में देती थी और शिक्षा के बाद सभी अल्बेनी लेख नष्ट कर दिये जाते थे। तुर्क लोगों ने गैर क़ानूनी भाषा के पता लगाने का बेकार प्रयत्न किया। ईसाई तथा मुसलमान लड़कियाँ स्कूल के अन्दर अधिक से अधिक संख्या में इकट्ठा होती थीं और शिक्षा प्राप्त करके अपने भाइयों को शिक्षा देती थीं। दक्षिण की ओर कोरीजा नगर अल्बेनी आन्दोलन का केन्द्र था। यूनानी स्कूल तथा यूनानी गिरजा के प्रतिकूल स्कूल का प्रचार होता था। तुर्क लोगों ने यूनानी चर्च तथा स्कूलों को काम करने के लिये आज्ञा प्रदान कर रक्खी थी जिससे अल्बेनी राष्ट्रीयता का ज़ोर न बढ़े। मिस कीरियस के स्कूल को लोग "बीकन लाइट" (आकाश दिया) कहते थे।

अल्बेनी भाषा में बाइबिल का जो अनुवाद किया गया था उसके प्रचार करने में प्रचारकों को बड़ा कष्ट झेलना पड़ा। जिन प्रान्तों में अल्बेनी गवर्नर थे वहाँ पर उनका स्वागत होता था परन्तु जहाँ पर तुर्क गवर्नर होते थे वहाँ पर सभी पुस्तकें छीन ली जाती थीं। स्वतंत्र होने पर अल्बेनिया का चर्च भी सर्व बलगर और रूमानी गिरजाघरों की भांति स्वतन्त्र हो गया। मुसलमान तथा ईसाई अल्बानी लोग बड़ी खुशी के साथ अल्बेनी बाइबिल खरीदने के लिये प्रचारकों के घर लेते हैं।

स्कुतारी नगर में आस्ट्रिया और इटली ने अपनी संरक्षता में स्कूल स्थापित किये थे और वहां अल्बेन लोगों को शिक्षा प्रदान करके अपने अधिकार में करना चाहते थे। स्कुतारी में बालकों, बालिकाओं और पहाड़ पर रहने वाले बच्चों के लिये स्कूल खुले हुए थे। शिक्षा के लिये लोगों में बड़ा उत्साह फैला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। जब १९१२ ई० के बाल्कन युद्ध के बाद अल्बेनिया स्वतन्त्र हुआ तो पहले पहल उसने शिक्षा के लिये स्कूल खोले। पाठशालों के खोलने में अमर का ने अल्बेनिया की बड़ी सहायता की थी।

थोड़े समय के बाद ही गत महायुद्ध आरम्भ हो गया जिससे सर्व, मोंटेनेगरिन, फ्रांसीसी, इटैलियन, आस्ट्रियन और ब्रिटिश सेनाएँ देश के अन्दर इधर उधर दौड़ती रही जिससे भूमि नष्ट हो गई। सर्व और यूनानी लोगों ने अल्बेनिया को आपस में बांटना चाहा था परन्तु योरुपीय राष्ट्रों ने रोका और अल्बेनिया को फिर स्वतन्त्र किया। फैनोली नामक अल्बेनी गिरजे घर का वीर पादरी था वह प्रचार समिति का प्रधान था। उसका नाम अल्बेनिया के सभापति के लिये दिया गया था। फैननोली चाहता कि अल्बेनिया धीरे धीरे उन्नति करे। वह अल्बेनिया की भूमि किसानों को देकर खेती का रोजगार कराना चाहता था।

कहा जाता था कि अल्बेनिया में मिट्टी का तेल बहुत है। इसलिये राष्ट्र अपने तेल निकालने तथा व्यापार की स्वीकृति चाहते थे। अहमद बेजोगू फैन नोली के विपरीत सभापति के लिये खड़ा था। वह शीघ्र ही धनी होना चाहता था इसलिये उसने स्वीकृति दे दिया। ऐंग्लो-पर्शियन आयल कम्पनी ने अपना कार्य आरम्भ किया परन्तु उसे सफलता नहीं मिली।

उस समय एलिज़बेथ कारनारवा नामक स्त्री ने अल्बेनिया के लिये बड़ा सराहनीय कार्य किये। वह अपने पुत्र कर्नल आब्रे हर्बर्ट की स्मृति में सराहनीय कार्य कर रही थी। उस स्त्री ने बनोला नगर में एक अस्पताल स्थापित किया, बालचर आन्दोलन की स्थापना किया। मलेरिया को नाश करने के लिये काम आरम्भ किया और एक लाइब्रेरी बनवाकर उसे सजा दिया।

इटली के लोगों को जिस स्थान पर स्वीकृति मिली थी वहां पर उन्हें अच्छा तेल मिला। ब्रिटिश अल्बेनिया में अपना हित न देख वहां से हट गये। इटली की धाक वहाँ जमी। पहले बालचर आन्दोलन दबाया गया और फिर ब्रिटिश अफसरों को निकाला गया इटली ने अपने पञ्जे के अन्दर अल्बेनिया को मजबूती से जकड़ लिये। युवकों को दबाया गया और सजायें दी गईं आखिर गुडफ्राईडे के दिन इटली की मशीनों की सेना आगे बढ़ी और उसने अल्बेनिया की स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया।

वर्तमान महायुद्ध में भी अलबेनिया यूनानी तथा इटैलियन सेनाओं का युद्ध क्षेत्र बना रहा। उसे युद्ध में भीषण हानि उठानी पड़ी है। आशा है कि युद्ध के समाप्त होने पर अलबेनिया का ध्यान रक्खा जावेगा और उसे स्वतंत्र राष्ट्र बना कर उसकी भूमि उसे वापस दे दी जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाजी लोगों की कारबारी शक्ति

गत महायुद्ध से संसार के राष्ट्रों के आर्थिक सम्बन्ध साधारण नहीं रहे हैं। जब से जर्मनी ने युद्ध की तयारी की है तब से यह सम्बन्ध और अधिक खराब हो गये हैं। हिटलर के कार्यक्रम का एक प्रधान अंग यह है कि जहां तक सम्भव हो वहां तक विदेशी सामान (खासकर योरुप) के बाहर का) न मंगावे बरन् उसे जर्मनी में ही तयार करके अपनी आवश्यकता की पूर्ति करे। जर्मनी ने अपने यहाँ खेती को उन्नति प्रदान करके प्रत्येक भांति की अधिक से अधिक उपज करने का कार्यक्रम बनाया है। वह अपने कारखानों में भी अधिक से अधिक सामान तयार कर रहा है। योरुपीय देशों तथा संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के व्यापारिक परिवर्तन के झगड़े से बचने के लिये जर्मनी दक्षिणी अमरीका के साथ व्यापार करने की ओर अधिक खिच गया था। वह वहीं से कच्चा सामान भी लेता था। उसी बीच जर्मनी दक्षिण योरुप से भी अपना व्यापार बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था। यद्यपि दक्षिणी योरुप जर्मनी के मांग का केवल एक छोटे भाग की पूर्ति कर सकता है।

जर्मनी विदेशी सामान पर ही अधिकतर निर्भर है। १९३६ ई० के प्रथम ६ महीनों में २,७५०,०००,००० मार्क (एक जर्मन मार्क प्रायः एक रुपये के बराबर होता है) का सामान विदेश से जर्मनी को आया था। इसमें से १,०४,६०,००,००० मार्क की केवल भोजन सामग्री थी। शेष का कारखानों के लिये कच्चा सामान अधबना सामान आदि आया था।

जर्मनी मे तीन प्रकार का सामान बाहर से आता है। १—जर्मन प्रजा की आवश्यकता का सामान जिसे नाज़ी जर्मनी अधिक महत्व नहीं देता। २—दूसरा वह सामान है जो फौजी काम के लिये बाहर से आता है। ३—तीसरे प्रकार का वह कच्चा माल है जिसे नाजी जर्मनी अपने कारखाने में तयार करके बाहर भेजता है।

जर्मनी को रुई की बड़ी आवश्यकता है। जिन देशों से जर्मनी को रुई आती थी वहां पर अब जर्मनी को घुसने का स्थान नहीं है। उन स्थानों से रुई जर्मनी को जानी बन्द हो गई है। जर्मनी ने रुई के स्थान पर कपड़ा बनाने के लिये एक प्रकार का रेशा बना लिया है। यह रेशा जर्मनी अथवा योरुपीय कच्चे सामान से तयार होता है। युद्ध के पहले जर्मनी को अपने कारखानों के लिये बहुत सा कच्चा सामान विदेशों से मंगाना पड़ता था जिसमें रुई, ऊन, सन, कपड़ा, हड्डी, रबड़, पेट्रोल (मोटर का तेल) और पेट्रोल बनाने का सामान, तांबा, तांबे के डले, कांसा, सीसा, टीन, गोंद, अभ्र, सुरमा, आदि सामान थे। इनमें से बहुत से सामान जर्मनी को दूसरे योरुपीय देशों द्वारा जाते थे।

जर्मनी ने अपनी विजय के कारण अपने सामान प्राप्त होने वाले उपायों को बढ़ाया है। योरुप के जिन देशों को जर्मनी ने विजय किया है वहाँ पर कच्चे सामान की उत्पत्ति अधिक नहीं है। उनमें से कुछ देश तो बिल्कुल कारखाने वाले देश हैं। उन्हें भी जर्मनी से सहायता मिली है। वह कारखानों के अन्दर लड़ाई का सामान तयार करते हैं और भोजन सामग्री के साथ उसका परिवर्तन करते हैं। कुछ कम उन्नतिशील योरुपीय राष्ट्र अपने यहाँ के भोजन सामग्री तथा कच्चे सामान का परिवर्तन जर्मनी के कारखानों के तयार सामान से करते हैं।

हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिये कि जर्मनी का प्रभुत्व केवल उन्हीं योरुपीय राष्ट्रों पर नहीं है जोकि उसके हैं सैनिक अधिकार में हैं वरन् उन पर भी है जिन पर वह अपना राजनैतिक अथवा आर्थिक प्रभाव डाल सकता है। ऐसे राष्ट्रों के कारखानों का सम्बन्ध जर्मनी के कारखानों से पिछले कई वर्षों से रहा है इसलिये वह राष्ट्र जर्मनी के साथ आर्थिक सम्बन्ध रखने की ओर झुके हुये हैं।

अब हम प्रत्येक योरुपीय (जर्मन प्रभुत्व वाले) राष्ट्र को अलग अलग लेकर वहां की उपज और कारखानों का अन्दाज करेंगे।

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया ने जर्मन राइक को कच्चा लोहा, लकड़ी और मैग्नीशिया देता है। एर्ज़बर्ग की खान से लगभग दो लाख टन (१ टन लगभग २८ मन का) सालाना कच्चा लोहा निकलता था। अब जर्मन लोगों का कहना है कि उन्होंने लोहे की उत्पत्ति को और बढ़ा लिया है। एर्ज़बर्ग की खान में ब्रन्सविक की खान से अच्छा लोहा निकाला जाता है। ब्रन्सविक की खान का लोहा हरमन गोरिंग के कारखाने में जाता है अब जर्मनी के हाथ में लारेन प्रान्त का लोहा आ गया है और स्वीडन के लोहे के प्राप्त होने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी निश्चय हो गया है। स्वीडन का लोहा बहुत अच्छा होता है। जब आस्ट्रिया जर्मन राइक में मिलाया गया तो वहां लोहा और फौलाद बनाने के साधन कम थे। अब गोरिंग कारखाने के कारण बहुत लोहा तथा फौलाद तयार होता है। हरमन गोरिंग का कारखाना लिञ्ज में है।

आस्ट्रिया की लकड़ी की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है क्योंकि जर्मन सूती कारखानों में लकड़ी के गूदे की मांग बढ़ गई है। अनुमान लगाया गया है कि आस्ट्रिया के लगभग ३८ प्रतिशत भाग में बन है। जर्मन राइक में प्रवेश होने के पूर्व आस्ट्रिया अपनी लकड़ी जर्मनी भेजता था। हाल ही समाचार से पता चला है कि जर्मनी आस्ट्रिया के स्वेडिस वुड पल्प (लकड़ी की लुब्दी) के तयार लकड़ी के गूदे का प्रयोग योरुप के अन्दर नहीं कर सकता इस कारण वहां कम गुदा तयार ही नहीं किया जा रहा है वरन् उसे एकत्रित किया जाता है इसलिये आस्ट्रिया की लकड़ी का गूदा अब अधिक उपयोगी नहीं रह गया है।

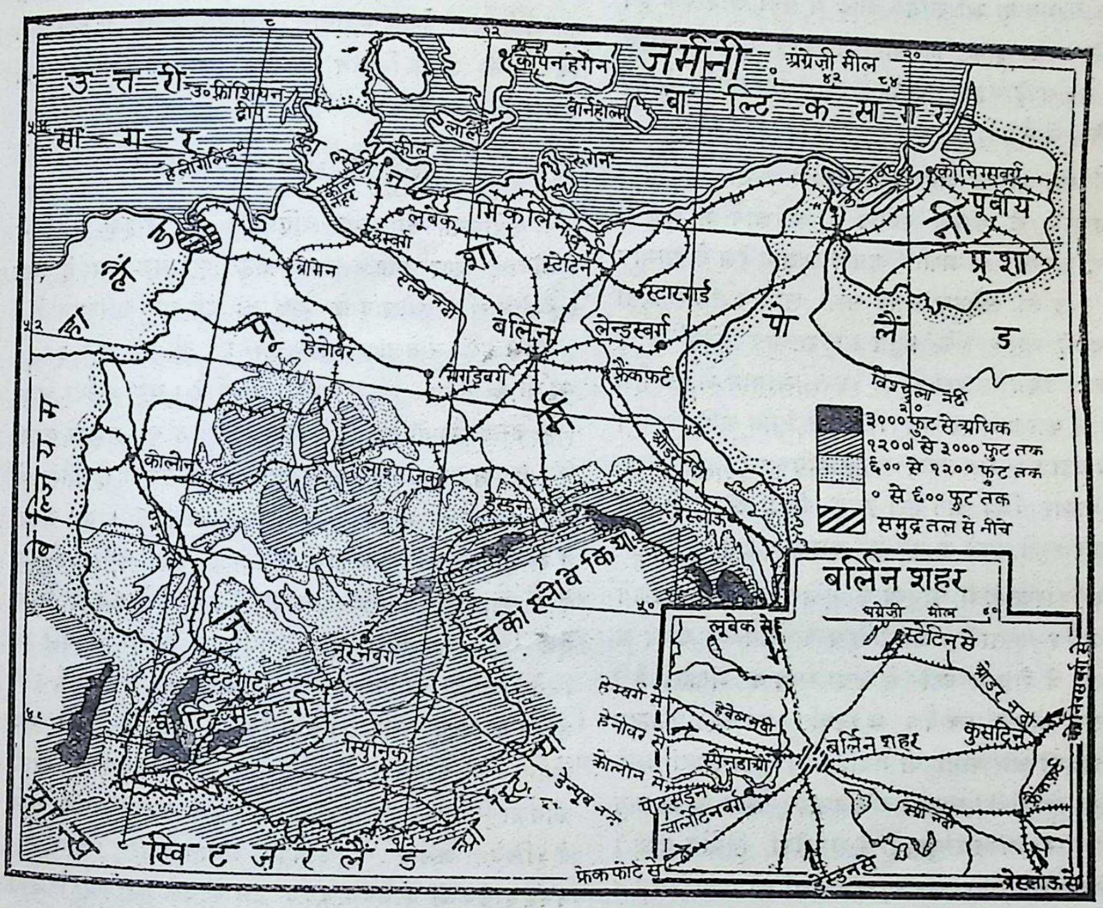

आस्ट्रिया की मैग्नीशिया समस्त संसार में विख्यात है। आस्ट्रिया की मैग्नीशिया जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका खरीदते थे। आस्ट्रिया के मिलाये जाने से संयुक्त-राष्ट्र को धक्का पहुँचा है।

आस्ट्रिया के कारखानों में दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ, फैशन के सामान छोटी छोटी धातु की वस्तुएँ तथा सूती कपड़ा और चमड़े का सामान तयार होता था। इन कारखानों के लिये कच्चा सामान विदेश से आता था और खरीदने वाले भी अधिकांश विदेशी यात्री ही हुआ करते थे। अब कच्चा सामान बाहर से आना स्थगित है और विदेशी यात्री भी यात्रा स्थगित किये हैं। लोहे और फौलाद के कारखानों में संतोषजनक कार्य नहीं होता था क्योंकि उनके तयार करने में बहुत व्यय होता था। हमें यह बात भी ध्यान में रखना चाहिये कि आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के समय बोहेमिया और मोराविया (आस्ट्रिया नहीं) कारखाने वाले केन्द्र थे गत तथा वर्तमान महायुद्ध के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आस्ट्रिया की जैसी आर्थिक स्थिति थी उस दशा में वह अपने कारखानों की उन्नति नहीं कर सका है।

जर्मनी ने जितने देशों पर अधिकार जमाया है उनमें सूडेटनलैण्ड, बोहेमिया और मोरविया के प्रान्त ही ऐसे हैं जो जर्मनी को सबसे अधिक युद्ध सामग्री दे सकते हैं। इन प्रदेश के कारखानों में लोहे और फौलाद के कारखाने अधिक प्रसिद्ध हैं इनके अलावा इनके दूसरे कारखाने विदेशी कच्चे सामानपर ही निर्भर थे। आसिज का वैज्ञानिक कारखाना भी सैनिक दृष्टि से बड़ा आवश्यक है। लोहे और फौलाद के कारखानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध स्कोडा वर्क्स है। इस कारखाने की गणना योरुप के बड़े कारखानों में है।

कोयला, चूने का पत्थर और दूसरी कच्ची धातुओं के बर्तमान होने के कारण स्कोडा के कारखाने में युद्ध के हथियार, कारखाने की मशीने, हवाई सामान रेल के सामान विशेष तरह का फौलाद आदि सभी सामान तयार करता है। स्कोडा कारखाने के बहुत सी शाखायें विदेशों में हैं जहां वह अपने कारखाने का बना सामान भेजता है। आलिज के कारखाने पर अब बिलकुल जर्मन अधिकार है। इसलिये वहां पर सभी प्रकार के रसायनिक द्रव युद्ध कार्य के लिये तयार किये जाते हैं। इनके सिवा और भी धातु शीशा और सूती कपड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं।

चेक कारखानों में मनुष्य के दैनिक जीवन के लिये सामान तयार होता है। जर्मनी इस सामान को योरुप के दूसरे देशों में भेजकर वहां से कच्चा सामान मंगाता है। १९३७ ई० में चेकोस्लोवैक के निर्यात का २३ प्रतिशत सामान जर्मनी और आस्ट्रिया गया था। सूती कपड़ा चमड़े के दस्ताने, शीशे का सामान और दूसरे फैशन का सामान समुद्र पार रतासकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका निर्यात हुआ। था। चेकोस्लोवेकिया के कुछ कारखानों को कच्चा सामान न मिलने के कारण अवश्य ही अपने सामान तयार करने की शक्ति को कम करनी पड़ी होगी परन्तु जिन कारखानों के के लिये कच्चा सामान योरुपीय देशों में प्राप्त हो सका है उनकी अच्छी उन्नति हुई है।

पोलैंड

पोलैण्ड के पश्चिमी भाग में खनिज सम्पत्ति बहुत है जिसमें प्रधान कोयला है। साइलेशिया का धातु सम्बन्धी रोजगार भी प्रसिद्ध है। बर्तमान समय में कोयला बहुत आवश्यक वस्तु है। युद्ध के पहले पोलैंड ने अपने कोयले की निर्यात इटली और स्कैण्डीनैविया देशों के साथ खूब बढ़ा भी और उसी के कारण उन देशों तथा जर्मनी के मध्य राजनैतिक सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। पोलैण्ड से लकड़ी भी बहुत मात्रा में दूसरे योरुपीय राष्ट्रों को भेजी जाती है। सुवर का माँस भी पोलैण्ड से बहुत अधिक निर्यात लिया जाता है। पहले सुवर का मास संयुक्त राष्ट्र अमरीका को बहुत जाता था परन्तु अब वह समस्त मांस जर्मनी में ही समाप्त हो जाता है। पोलैण्ड के बड़े सूती कारखाने अब केवल स्थानीय प्रधानता रखते हैं जब तक कि जर्मनी उसके निर्यात का कोई उचित प्रबन्ध नहीं करता है।

बेल्जियम और लक्सेमबर्ग

बोहेमिया की भांति बेल्जियम भी राइक के लिये अपने बड़े कारखानों के कारण बहुत सहायक हुआ है वहां पर लोहे और फौलाद के मुख्यतः बड़े बड़े कारखाने हैं। बेल्जियम की सीबेलाक नामक संस्था (जो २४ जून १९४० ई० को स्थापित हुई) बहुत प्रसिद्ध है। यह संस्था अपने सदस्य कारखानों के लिये कच्चे सामान का प्रबन्ध करती है। यह तयार सामान का मूल्य नियत करती है और उसे दूसरे स्थानों पर भेजने का भी प्रबन्ध करती ह। यह संस्था ये सभी कार्य बेल्जियम तथा जर्मनी के लोहे और फौलाद के कारखानों के सम्पत्ति से करती है। लक्सेम्बर्ग में केवल एक बड़ा कारखाना है। सीबेलाक संस्था कोयले के लिये जर्मनी पर निर्भर है। बेल्जियम के कारखाने में लारेन का कच्चा लोहा प्रयोग किया जाता है। जो अब जर्मनी के अधिकार में है। यद्यपि बेल्जियम में काफ़ी कोयला निकाला जाता है तो भी उसे अपनी खपत करने के लिये जर्मनी से कोयला मंगाना ही पड़ता है। १९३९ ई० में ३,०००,००० टन कोयले का डल निकला था और लगभग उतना ही फौलाद तयार किया गया था। लक्सेम्बर्ग में लगभग उतना ही फौलाद तयार किया गया था। लक्सेम्बर्ग में लगभग २,४००,०० टन सालाना कोयला निकाला जाता है। दोनों देशों में लगभग समस्त तयार लोहे और फौलाद का अधिकांश भाग निर्यात हो जाता है।

लक्सेम्बर्ग के लोहे और फौलाद के कारखाने भी जर्मन व्यवसायशील कारखानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल गये हैं। लक्सेम्बर्ग के समस्त लोहे और फौलाद के कारखानों के समूह का नाम आर्बेद हादिर और रोडिञ्जेन है। यह कारखाने जर्मन स्टालवर्क्स वर्बण्ड के साथ मिल काम करेंगे बेल्जियम का लोहे और फौलाद का सबसे प्रसिद्ध कारखाना आउग्रो मरीहमे है। इस कारखाने में लक्सेम्बर्ग का रोडिञ्जेन और लांगवे बेलिन (फ्रान्स) का कारखाना भी शामिल है। इस कारखाने ने अभी हाल ही में जर्मन कारखाने ओटो उलरू के साथ मिलाया है और दोनों का संयुक्त नाम श्लेनौस्फुह ओटो ओग्री रक्खा गया है इस बड़ी संस्था के केन्द्र कलोने और ब्रूसेल्स में है।

बेल्जियम में रसायनिक वस्तुओं को तयार करने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं जो संसार के दूसरे रसायन कारखानों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और जहां पर रेलवे और दूसरे कारखानों के लिये मुख्य मुख्य सामान तयार किये जाते हैं। यह कारखाने अब जर्मनी के हेतु काम कर रहे हैं। इन कारखानों का बना हुआ लोहे तथा फौलाद का सामान उन देशों को जाता है जहां से जर्मनी को कच्चा सामान और भोजन प्राप्त होता है। बेल्जियम में शीशे और सूती कपड़े के कारखाने भी हैं जो जर्मनी के लिये उपयोगी नहीं हैं। इसी कारण वह कम चालू हैं। बेल्जियम में पिछले कुछ सालों से बहुत ज्यादा सामेन्ट तयार करके बाहर भेजी जाती है। जर्मनी में सीमेन्ट की बहुत अधिक खपत है। जर्मनी में भी एक बहुत बड़ा सीमेन्ट तयार करने का कारखाना है। परन्तु मकान बनाने का कार्य कम हो जाने के कारण अब जर्मनी को बेल्जियम के सीमेंट की आवश्यकता नहीं है।

हालैंड

हालैंड जर्मनी के लिये भोजन सामग्री के लिये बड़ा ही उपयोगी है। वहां पर साग, तरकारी और डेयरी का सामान बहुत होता है हालैंड में टीन बनाने, सूती कपड़ा तयार करने के कारखाने हैं जो इस समय कम चल रहे हैं क्योंकि इन कारखानों के लिये कच्चा सामान हालैंड के उपनिवेशों से आता था और सामान तयार होने के पश्चात् उन्हीं स्थानों को भेजा जाता था। हालैंड के ए० के० यू० नामक कारखाने में जर्मन धन लगा है उस पर पूर्ण जर्मन अधिकार है। फिलिप नामक हालैंड में प्रसिद्ध रैडियो और बल्ब तथा बिजली के तयार करने का कारखाना है। उस कारखाने से समस्त संसार को सामान जाता था। हालैंड में विमान तयार करने के लिये भी बड़ी सुविधाएं हैं परन्तु इस सम्बन्ध में बहुत सी बातें गुप्त रक्खी गई हैं।

फ्रान्स

फ्रांस के कारखाने वाले प्रदेश पर अधिकार प्राप्त करने के कारण जर्मनी के हाथ में लारेन, ब्री और लाँगवेबेसिन का लोहा आ गया है। संसार में इस प्रदेश की गणना लोहे के प्रधान प्रदेशों में है। १९३७ ई० में फ्रान्स में ३८,०००,००० टन कच्चा लोहा निकाला गया था जिसका आधा निर्यात हुआ था। यद्यपि फ्रान्स में आवश्यकता से अधिक लोहा था फिर भी वह जर्मनी और बेल्जियम के बुझे हुये पत्थर के कोयले को मुहताज था जिससे लोहा और फौलाद तयार किया जाता है। इसी कारण फ्राँस जर्मनी के साथ लोहे को कोयला से बदलता था। यह उसके व्यापार का एक प्रधान अंग था। फ्रान्स के लोहे की खानों में अधिक तर इटली और पोलेंड के मजदूर काम करते थे। फ्रान्स के अधिक लोहे के कारण हरमनगेगरेंग के कारखाने में सुधार करना आवश्यक होगा क्योंकि फ्रान्स की विजय के पहले यह कारखाना ब्रांस्विक के कम अच्छे कच्चे लोहे पर ही निर्भर करता था।

जर्मन अधिकृत (अधिकार किये हुये) फ्रान्स में लोहे और फौलाद के कारखानों के सिवा वहां पर प्रसिद्ध स्चनीडेर-क्रूसोट का शास्त्र बनाने का कारखाना है। जहां पर युद्ध, रेलवे और कृषि संबन्धी सभी शस्त्र तथा औज़ार तयार किये जाते हैं। मशीन तयार करने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं। जर्मन लोगों का कथन है कि फ्रान्स के धातु सम्बन्धी रोज़गार को धक्का नहीं पहुँचा है।

आलमोनियम तयार करने के लिये भी फ्रान्स में एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसके लिये वहां पर कच्चा सामान भी पाया जाता है और बिजली की शक्ति भी बर्तमान है। यद्यपि यह रोजगार जर्मनी और अमरीका के अलमोनियम के रोज़गारों से छोटा है तो भी यह जर्मनी के लिये बड़ा जरूरी है क्योंकि युद्ध में अलमोनियम की बड़ी खपत है। यही दशा फ्रान्स के रसायनिक कारखानों की है। फ्रान्स में सब्जी बहुत पाई जाती है परन्तु जर्मनी संयुक्त राष्ट्र अमरीका, स्पेन, पैलेस्टाइन के सब्जी के सामने उसकी माँग नहीं है।

फ्रान्स में मिचिलिन रबर टायर बर्कस का बड़ा कार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना है जहां से समस्त संसार सामान जाता है। वहां पर जितना प्राकृतिक रबर एकत्रित था उसे जर्मनी ने क्षणिक संधि के समय ले लिया है। फ्रान्स के ऊनी कारखानों की भी यही दशा हुई है और जर्मनी ने वहां के समस्त ऊन तथा ऊन के सामान पर अधिकार कर लिया है।

फ्रान्स के सूती कारखाने शान्ति के समय बड़े उपयोगी थे। वहां पर अत्यन्त सुन्दर सूती वस्त्र फैसन वाले तयार किये जाते थे। अब कच्चा सामान न आने के कारण सामान कम तयार होता है और तयार सामान भी बाहर कम भेजा जाता है। जर्मनी स्वयम् लकड़ी के रेशे से बने हुये वस्त्रों का प्रयोग करता है हां जिन देशों पर जर्मनी ने अधिकार कर रक्खा है शायद वहां फ्रान्स के बने कपड़े की खपत होती है।

दक्षिणी-पूर्वी योरुप

हंग्री, रूमानिया और बल्गेरिया आदि देश पोलैंड और बेल्जियम की भाँति जीते हुये प्रदेश नहीं हैं। अब वहां पर जर्मन सैनिक अधिकार है। वह जर्मनी के प्रभुत्व में आ गये हैं इसलिये उनके आर्थिक साधन भी जर्मन प्रभुत्व में हैं। युद्ध के पहले ही जर्मनी ने दक्षिणी पूर्वी योरुप के साथ अपना व्यापार बढ़ा रक्खा था। आज कल जर्मनी का हंग्री, रुमानिया बल्गेरिया और यूगोस्लेविया के व्यापार पर पूर्ण अधिकार है। यह राष्ट्र भोजन सामग्री विशेष कर उत्पन्न करते हैं। रूमानिया में पिट्रौल, हंग्री और यूगोस्लाविया में वाक्साइट यूगोस्लाविया में तांबा रंग सम्बन्धी खनिज सम्पत्ति और दूसरी धतुएं भी पाई जाती हैं। यूगोस्लाविया के तांबे, सीसे, जस्ते के रोजगार में ब्रिटिश तथा फ्रान्सीसी धन लगा हुआ था उस पर अब जर्मन अधिकार हो गया है। १९४१ ई० में रूमानिया और जर्मनी के मध्य जो समझौता हुआ है उसके अनुसार रूमानिया ने तीस लाख टन पिट्रौल जर्मनी को देने का बचन दिया है। १९३९ ई० में यूगोस्लाविया ने २६,०००,००० रु० की धातु का सामान निर्यात किया जिससे कच्चे तांबे का दाम लगभग ३२,०००,००० रु० था शेष मूल्य कच्चे लोहे, जस्ते रंग आदि दूसरी धातुओं का था। १९३९ ई० में रूमानिया ने ४० लाख टन से अधिक पिट्रौल निर्यात किया था।

स्वीडन और स्विटज़रलैंड

यह दोनों देश जर्मन अधिकार में नहीं है परन्तु संसार से यह लगभग बिलकुल अलग कर दिये गये हैं इस कारण उन्होंने धुरी राष्ट्रों के संग ही अपने आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं। इन दोनों देशों के कारखाने अधिक उन्नतशील हैं। स्वीडन अपने यहां का लोहा जर्मनी को पिछले कई वर्षों से देता रहा है। स्वीडन की लकड़ी से बहुत अधिक लकड़ी का गदा तयार किया जाता है। स्वीडन में बहुत अच्छा फौलाद तथा लोहे की सामग्री प्रत्येक भांति की मशीने शस्त्र और धड़ाके वाले सामान तयार किये जाते हैं। बोफोर्स के कारखाने में वायुयान संहारिणी तोपें बहुत अच्छी तयार की जाती है। स्विटजरलैंड भी अपने कारखानों के लिये प्रसिद्ध है। वहां पर हर एक भांति के कल पुर्जे तयार किये जाते हैं। स्विजरलैंड में आलमोनियन भी बहुत अधिक निकाली जाती है। १९३९ ई० में ३० हजार टन अल्मोनियम निर्यात की गई थी। तारकोल का रोजगार भी वहां पर प्रसिद्ध था।

इटली

इटली स्वयम् कोयले और लोहे तथा फौलाद के भरी सामानों के लिये जर्मनी पर निर्भर रहता है। इटली में फल और साग बहुत होता है जो जर्मनी जाता है और वहां भोजन का काम देता है। इटली में पारा संसार भर में सब से अधिक होता है। जर्मनी को इटली से पारा मिलता है। इटली में अलमानियम भी पाई जाती है परन्तु निर्यात के लिये वह विशेष नहीं रहती है इटली के रसायनिक कारखाने जर्मनी के बड़े काम के हैं।

जर्मनी को युद्ध आरम्भ होने के पश्चात् से आज तक क्या व्यवसायी लाभ हुआ है। इसका संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जाता है। जर्मनी के कारखाने को जो हानि ब्रिटिश वायुयानों के आक्रमण से हुई है उसका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा है।

जर्मनी को सब से अधिक लाभ योरुपीय देशों के विजय करने से यह हुआ है कि उसके पास लोहे की अधिकांश खानें आ गई हैं। लोहे और फौलाद के बड़े बड़े कारखाने भी उसके अधिकार में आ गये हैं जिससे उसकी लोहे तथा फौलाद तयार करने की शक्ति बढ़ गई है। आस्ट्रिया, पर साइलीशिया, बोहेमिया, मोराविया लक्समबर्ग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लारेन आदि प्रदेशों पर अधिकार होने के कारण जर्मनी की लोहे की शक्ति तीन करोड़ ५० लाख टन से बढ़कर ३ करोड़ ७० लाख हो गई है। बेल्जियम और फ्रान्स के दूसरे कारखानों को मिला कर ६० लाख टन की और अधिक वृद्धि हो गई है। इस प्रकार जर्मनी लोहे की शक्ति में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का आधा हो जाता है और संसार में उसका लोहे में दूसरा स्थान हो जाता है। अभी हाल में क्रोवोइरोग नामी रूसी लोहे के केन्द्र पर भी जर्मनी का अधिकार हो गया है।

जहां तक शस्त्रों के बनाने का सम्बध है वहां तक जर्मनी का संसार में प्रथम स्थान हो गया है। वह भारी से भारी और छोटे से छोटे अस्त्र-शस्त्र तयार कर सकता है। प्रत्येक भांति की मशीनें, कलें और पूर्जे वहां तयार किये जा सकते हैं।

जर्मनी ने कोयला उत्पन्न करने वाले प्रदेशों पर जो अधिकार प्राप्त किया है उससे उसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। जर्मनी अब कोयला बिना चुंगी के ही दूसरी वस्तुओं के साथ परिवर्तन कर सकता है। कोयले के कारण ही स्वीडन स्विज़रलैंड जर्मन प्रभुतव में हैं। इटली भी जर्मनी पर ही कोयले के लिये निर्भर रहता है। पोलैंड में साल भर में ४ करोड़ टन कोयला निकाला जाता है जर्मनी योरुप के लगभग सभी राष्ट्रों का कोयले की मांग की पूर्ति कर रहा है। प्रत्येक देश से संधि की बात चीत करते समय जर्मनी कोयले की सहायता की बात चलाता है।

यद्यपि जर्मनी अपने को संसार में सब से अधिक अलमुनियम उत्पन्न करने वाला देश समझता है तो भी फ्रान्स, नार्वे और स्वीडन को अलमुनियम उसके बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। १६३६ ई० में जर्मनी के अन्दर २००,००० मीटर सम्बन्धी टन अलमुनियम की उत्पत्ति हुई थी उसी साल नार्वे और स्वीज़रलैंड में मिला कर ४६,००० (मीटर वाले) टन अलमुनियम की उत्पत्ति हुई थी। अलमुनियम का काम वायुयानों में बहुत पड़ता है और साथ ही साथ वह तांबा आदि दूसरी धातों के बदले प्रयोग की जाती है फ्रान्स की बाक्साइट भी जर्मनी के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

पोलैंड का जस्ता भी जर्मनी के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। यूगोस्लैविया का ताँता और दूसरी धातुएँ भी जर्मनी के लिये बड़े काम की हैं। रूमानिया के पेट्रौल का महत्व जर्मनी के सरकारी लोग समझते हैं परन्तु यह बात मालूम करनी कठिन है कि जर्मनी को रूमानिया से कितना पिट्रौल प्राप्त होता है।

अपनी आवश्यकता की स्वयम् पूर्ति करने के लिये जर्मनी और इटली ने रूई के स्थान पर लकड़ी के गूदे से अल्प काम लेना आरम्भ किया है। स्कैंडीनैवित्रिया देशों का लकड़ी का समस्त गूदा जर्मनी के हाथ में है। युद्ध के पहले स्कैंडीनैविया का लकड़ी का गूदा इँगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अधिकतर जाता था। चूंकि जर्मनों के हाथ में समस्त योरुप की अप्राकृतिक रेशेदार सम्पत्ति है इसलिये वह उसे उन योरुपीय राष्ट्रों को देता है जो अब दूसरे विदेशों से रूई आदि नहीं मंगा सकते हैं।

मकान बनाने और खान खोदने में जितनी लकड़ी तथा लकड़ी के तख्तों की आवश्यकता होती है वह सब जर्मनी को स्कैंडीनैविया के देशों से मिलते हैं।

योरुप के भिन्न भिन्न देशों से जो दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं उसे जर्मनी विदेशों को भेजकर वहाँ युद्ध से सम्बन्धी सामग्री मंगाता है और उन सामानों को वह जर्मन मज़दूरों को प्रयोग करने के लिये पहुँचाता है इस प्रकार जर्मन मज़दूर उन दैनिक प्रयोग वाली वस्तुओं के बनाने में अपना समय व्यर्थ न करके लड़ाई का सामान तयार करते हैं।

जर्मनी के पास इस समय ३३ लाख से ऊपर व्यक्ति लड़ाई के कैदी हैं उनसे जर्मनी खेती तथा और दूसरे रोज़गार सम्बन्धी काम लेता है। उनमें जो चतुर कारखाने में काम करने वाले हैं उन्हें वह कारखानों में काम में लगाता है और उन्हें नाम मात्र का वेतन देता है। इसके अतिरिक्त जर्मनी ने जिन देशों का अपने अधिकार में किया है वहां के बेकार लोगों को वह अपने कारखानों में काम देता है।

इस प्रकार जर्मनी के पास अब पहले से बहुत अधिक ऐसी सम्पत्ति हो गई है जो उसे युद्ध में काम दे रही है। फिर बहुत सी धातुयें ऐसी हैं जो कुछ समय में ही समाप्त हो जावेंगी और फिर जर्मनी को उन्हें समुद्र पार दूसरे देशों से मंगाना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैंक

पुराने समय के सिपाही लड़ते समय अपनी रक्षा के लिये कवच पहनते थे। लोहे के बने हुये कवच भारी होते थे। उनको सिपाही कुछ ही देर पहन सकते थे। अक्सर कवचधारी सिपाही घोड़े पर चढ़ कर लड़ते थे। आधुनिक युद्ध में विज्ञान ने कवच और घोड़ा एक साथ मिला दिया है। यही टैंक है।

टैंक अँग्रेजी का शब्द है। इसका साधारण अर्थ है तालाब या पानी की टङ्की। फिर यह नाम इन भीषण दानवों के समान गाड़ियों को क्यों दिया गया। इस की एक मनोरंजक कहानी है। पिछली १९१४ की लड़ाई में जर्मन फौजें बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रही थीं। उनका सामना करने के लिये एक अँग्रेज ने ऐसी मोटर गाड़ी बनाने की योजना की जो एक चलते हुये किले के समान थी। इसके पहिये इस प्रकार बनाये गये थे कि वे ऊँची नीची जमीन पर भी चल सकते थे। इसकी चद्दरें इतनी मोटी थीं कि उन पर साधारण गोलियों का असर नहीं हो सकता था आरम्भ में उनकी चाल बड़ी धीमी थी। एक घण्टे में वे केवल ४ मील चल सकती थीं। फिर भी इन भीषण काय दानव समान गाड़ियों ने जर्मन फौजों में हाहाकार मचा दिया। एक बार तो एक टैंक को देख कर ३०० जर्मनी सिपाहियों ने हथियार डाल दिये।

आरम्भ में इनके बनाने और प्रयोग करने का काम बड़ा रहस्यमय रक्खा गया। जब कोई इन नई तोपगाड़ियों के बारे में पूछता तो कहा जाता कि अफ्रीका के हबशियों को पानी पहुँचाने की समस्या को हल करने के लिये नये ढंग के टैंक बनाये जा रहे हैं। बाद में लोगों को मालूम हुआ कि पानी पहुँचाने के बदले ये आग और गोले उगलते हैं। फिर भी इनका नाम टैंक ही चल निकला।

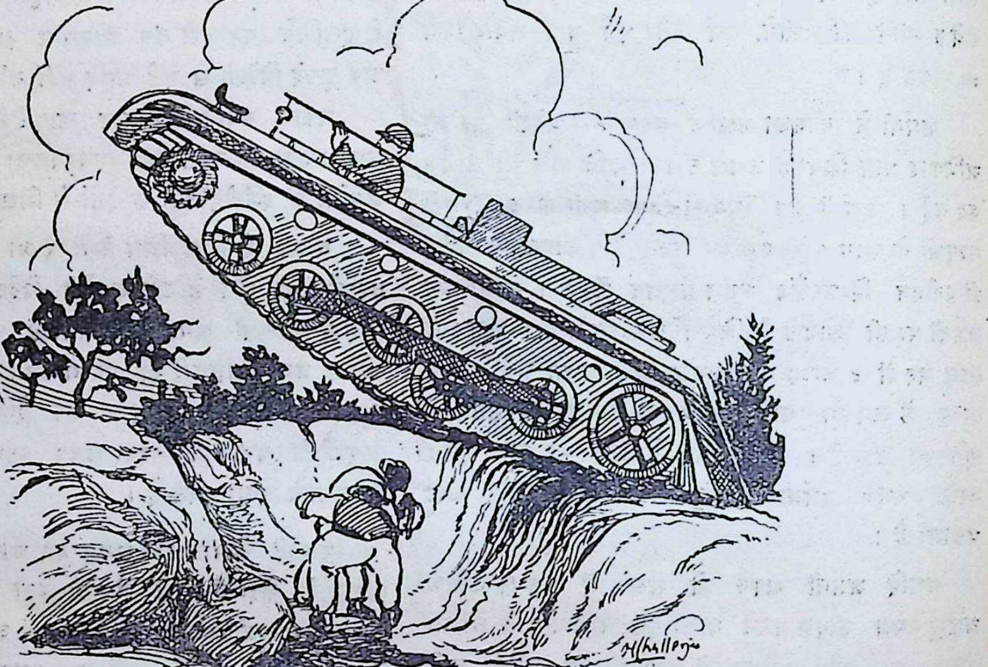

जर्मनी का आधुनिक कूदने वाला टैंक।

प्रथम ब्रिटिश टैंक १९१६ के सितम्बर मास में तयार हुआ। यह २८ टन (एक टन प्रायः २८ मन के बराबर होता है) भारी था। यह तोपें गोले की वर्षा करता हुआ रास्ते के कांटेदार तारों को कुचलता हुआ जर्मन सेना की ओर बढ़ा। इससे जर्मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाही दंग रह गये। पहले के टैंक धीमी चाल से चलते थे और मार्ग की खाइयों को पार नहीं कर सकते थे। इनको मोड़ने में भी कठिनाई पड़ती थी। इसलिये जर्मन सैनिकों ने इनसे बचने के लिये दूर दूर गहरी खाइयाँ बनाई वर्षा हो जाने से टैंकों के पहिये भी गीली ज़मीन में धँस जाते थे। फिर भी ३७८ टैंकों की सहायता से ब्रिटिश फौजों ने पिछली लड़ाई में १२ घंटे में इतनी ज़मीन छीन ली

बड़ी विलक्षण बात लिखी थी। जर्मनी को छोड़कर (क्योंकि संधि के अनुसार जर्मनी को टैंक बनाने की आज्ञा नहीं मिली है) योरुप के सभी राष्ट्र टैंक को युद्ध शस्त्र अधिकाधिक मात्रा में प्रयोग कर रहे हैं। अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान समय में जर्मनी के पंजेर डिवीजनों में ५५,००० टैंक हैं। इनमें कुछ टैंक ७० टन भारी हैं।

टैंक का बनाना सुगम नहीं है। एक साधारण

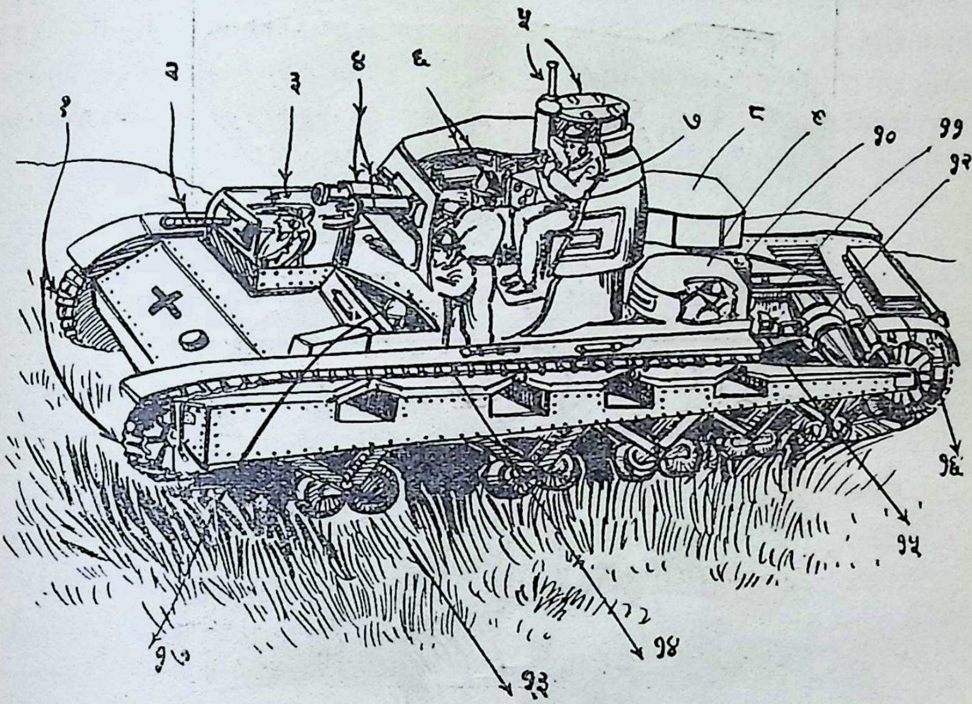

कुछ भारी मध्यम श्रेणी के टैंक का भीतरी भाग।

१—इडलेर स्प्राकेट (सुस्त पहये का घेरा) २—मशीन गन ३—फोट टरेट आगे वाली बुर्ज़ी) ४—भारी मशीन गन ५—पेरिस्कोप ६—गनर लोडर (बन्दूक भरने वाले) ७—सेना पति ८—रियर टरेट (पीछे वाली बुर्ज़ी) ९—प स्ट टरेट या बुर्ज़ी १०—मोटर ११—गन (तोप) १२—बैक एक्सेल (पिछला धुरा) १३—गाड़ी के पहिये १४—टैंक के ऊपर का मार्ग १५—क्लच और गियर बक्स १६—चलाने वाला स्प्राकेट (घेरा) १७—चलाने वाला।

थी जितनी वे तीन महीनों में न ले सके थे। फ्रांसीसियों ने अपने लिये हलके टैंक बनाये। इनसे भी बड़ी सहायता मिली।

पिछली लड़ाई के हार से जर्मनों ने बड़ी शिक्षा ली। इस बार वर्तमान युद्ध में जर्मनों ने टैंकों का अद्भुत प्रयोग किया है। वास्तव में टैंकों की सहायता से जर्मन सेनाओं को योरुप का प्रभुत्व मिला है। १९१९ की इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में एक

टैंक बनाने के लिये १७००० पुर्जे बनाये जाते हैं। कुछ पुर्जे ऐसे जटिल होते हैं कि इनको ढालने के लिये पहले २८०० खाके (ब्लूप्रिन्ट) तयार किये जाते हैं।

टैंक को चलाने का काम भी बड़ा कठिन है। उसे हर समय हाथ से क्लच गियर, और शिफ्ट दबानी पड़ती हैं। पैरों से दबाने के लिये पेडल होते हैं। टैंक को आगे चलाने के लिये पाँच स्पीड चाल होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एक स्पीड पीछे लौटने के लिये होती है। दोजाय स्टिक टेलीफोन का संदेश भेजने के लिये होती हैं। टेलीफोन द्वारा एक टैंक से दूसरे टैंक को संदेश भेजा जा सकता है। एक पैर से टेलीग्राम भेजने का बोर्ड बन्धा रहता है। इनके साथ ही वह एक ही साथ दो लगा रहता है। उसे हर समय अपने अफसर का आदेश मानना पड़ता है। उसका अफसर ऊपर वाले स्थान पर बैठता है और उसके सिर या पीठ पर लात मार मार कर संकेतों द्वारा उसे आदेश देता है।

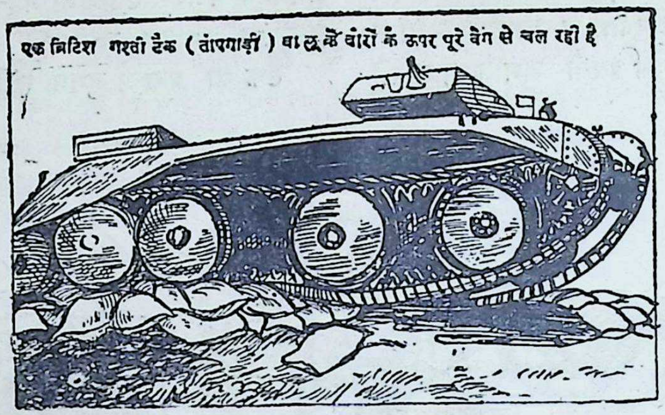

एक ब्रिटिश गश्ती टैंक (तोपगाड़ी) बालू के बोरों के ऊपर पूरे वेग से चल रही है

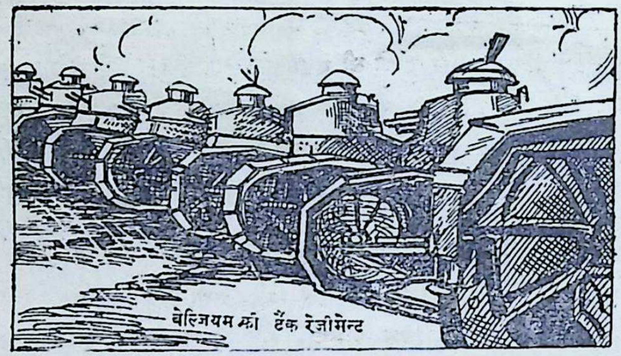

बेल्जियम की टैंक रेजीमेन्ट

मशीन गन भी चलाता रहता है इन सब बातों के साथ उसे यह भी देखना पड़ता है कि उसका टैंक दिशा में जा रहा है। देखने के लिये उसके सिरके सामने एक इंच चौड़ा और चार इंच लम्बा शीशा

आधुनिक फौजी अफसरों को इस जटिल यंत्र से भी पूरा संतोष नहीं हैं। इसी से टैंक के निर्माण और संचालन में नई नई बातों का आविष्कार हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २५० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्राय: भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

सितम्बर १९४१

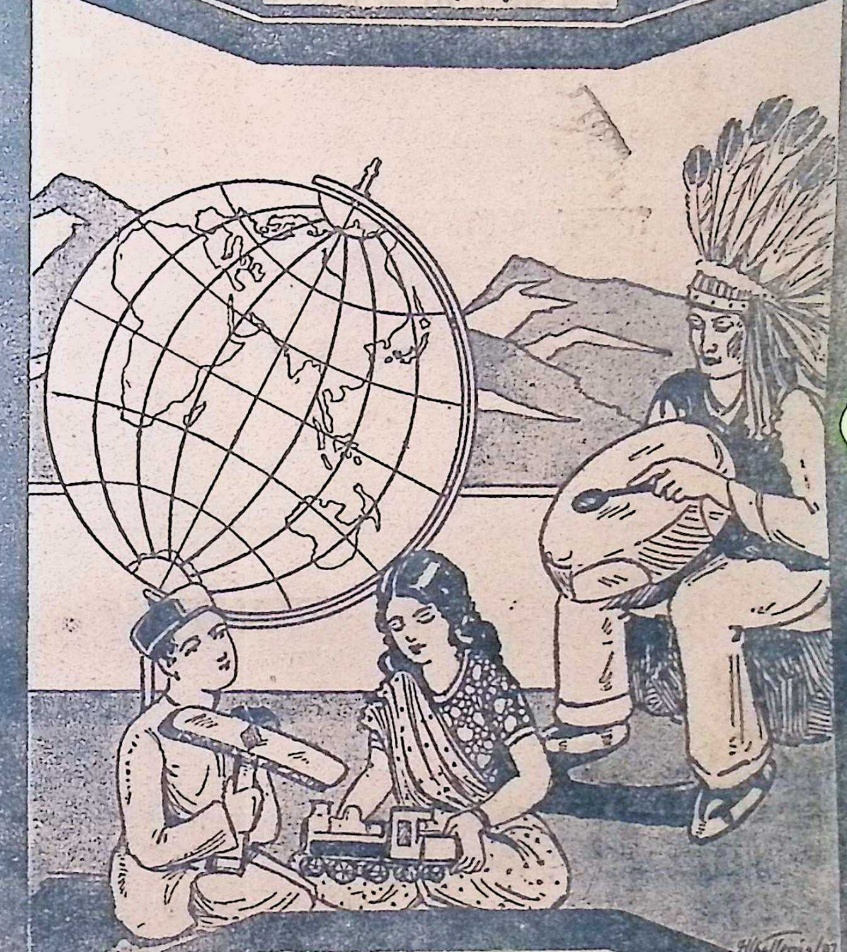

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगी तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा आसानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ||=) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित |||) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य -)||।

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १।) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अटलांटिक का युद्ध	१
२—ईजियन सागर से काला सागर का जल मार्ग	४
३—जावद की झलक	७
४—युद्ध काल में जहाजों का उपयोग	१२
५—रूसी परराष्ट्र दफ्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल	१६
६—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८]   आश्विन, सं० १९९८, सितम्बर, १९४१ ई०   [अङ्क ५

अटलांटिक का युद्ध

प्राचीन समय में युद्ध के अवसर पर शत्रु सेना प्रधान नगरों और क़िलों को घेर लेती थीं और उनके भीतर बाहर से लड़ाई का सामान और भोजन नहीं पहुँचने पाता था। घिरे हुये लोग अक्सर भाग भी नहीं सकते थे। भोजन न मिलने और हथियारों की कमी होने के कारण घिरे हुये लोग शत्रु से संधि कर लेते थे और अक्सर शत्रु बिना लड़े हुये ही विजय पा जाता था।

कुछ कुछ यही ढंग समुद्री घेरे का है। इस घेरे का विस्तार कुछ मीलों के बदले सैकड़ों मील है। अटलांटिक सागर के बड़े भाग में ब्रिटिश बेड़े ने वर्तमान युद्ध के आरम्भ में ऐसा पहरा दिया कि जर्मनी के भीतर अटलांटिक मार्ग से कोई सामान न पहुँच सके। अगर कोई जहाज समुद्री घेरे से बच कर भागने की कोशिश करता तो वह पकड़ लिया जाता था और छीन लिया जाता था। पिछली लड़ाई में कुछ बन्दरगाह नियत कर लिये गये थे जहां उदासीन राज्यों के जहाजों की तलाशी ली जाती थी। पिछली लड़ाई में पनडुब्बे जहाज (सबमेरीन) बड़े थे। वर्तमान समय की छोटी छोटी पनडुब्बी नावों का आविष्कार नहीं हुआ था। उस समय हमला करने का साधारण ढंग यह था कि पनडुब्बा जहाज समुद्रतल पर उछल कर बन्दूक छोड़ता था और उसके कर्मचारी व्यापारी जहाज पर चढ़कर मल्लाहों और दूसरे लोगों को नावों द्वारा बचा लेते थे। फिर वे जहाज के निचले भाग में बम्ब रख कर उसे डुबा देते थे। आगे चल कर जब सभी जहाज सशस्त्र कर दिये गये तो उनको डुबाने के लिये टारपीडो और माइन (बम्ब वाली सुरंगें) का प्रयोग होने लगा।

संसार के सभी भागों से लन्दन और लिवरपूल के लिये जहाज आया करते थे। जर्मन पनडुब्बे जहाज इन्हीं संकोचित भागों में छिप कर जहाज डुबाते थे। पहले जहाजों को सुरक्षित रखने के लिये समुद्री गश्त में लड़ाका जहाज अपने नियत स्थानों पर चक्कर लगाया करते थे। व्यापारी जहाज स्वतंत्र रूप से एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह को जाया करते थे। लेकिन गश्त से जहाजों का डुबाना बन्द न हुआ तब १९१७ ई० से कन्वाय (पहरे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रथा चली। इस प्रथा के अनुसार लड़ाका जहाज व्यापारी जहाजों को इस प्रकार घेर कर चलते थे कि सबमेरीन उन पर आक्रमण न कर सके। ३० जहाजों का बेड़ा काफी बड़ा समझा जाता था। लेकिन इस ढंग से चलने में जहाजों को बहुत देरी लगती है। इसी से आरम्भ में कुछ लोग इसके विरुद्ध थे। पिछली लड़ाई में अँग्रेजी जहाज आयरलैण्ड और फ्रांस के तट पर स्थित बन्दरगाहों का

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने ब्रिटेन को सैनिक सामान बढ़ती हुई मात्रा में देना आरम्भ किया वैसे वैसे हेलीफैक्स बन्दरगाह पर कनवाय के जहाजों की भीड़ बढ़ती गई। इस कनवाय में कुछ सामान वाले जहाज बहुत धीमी चाल से चलते थे। इसलिये तेज जहाजों को भी धीमी चाल से चलना पड़ता है।

शत्रु के भूले भटके जहाजों के आक्रमण से बचने के लिये ब्रिटिश बेड़े को गश्त लगाने का कार्य

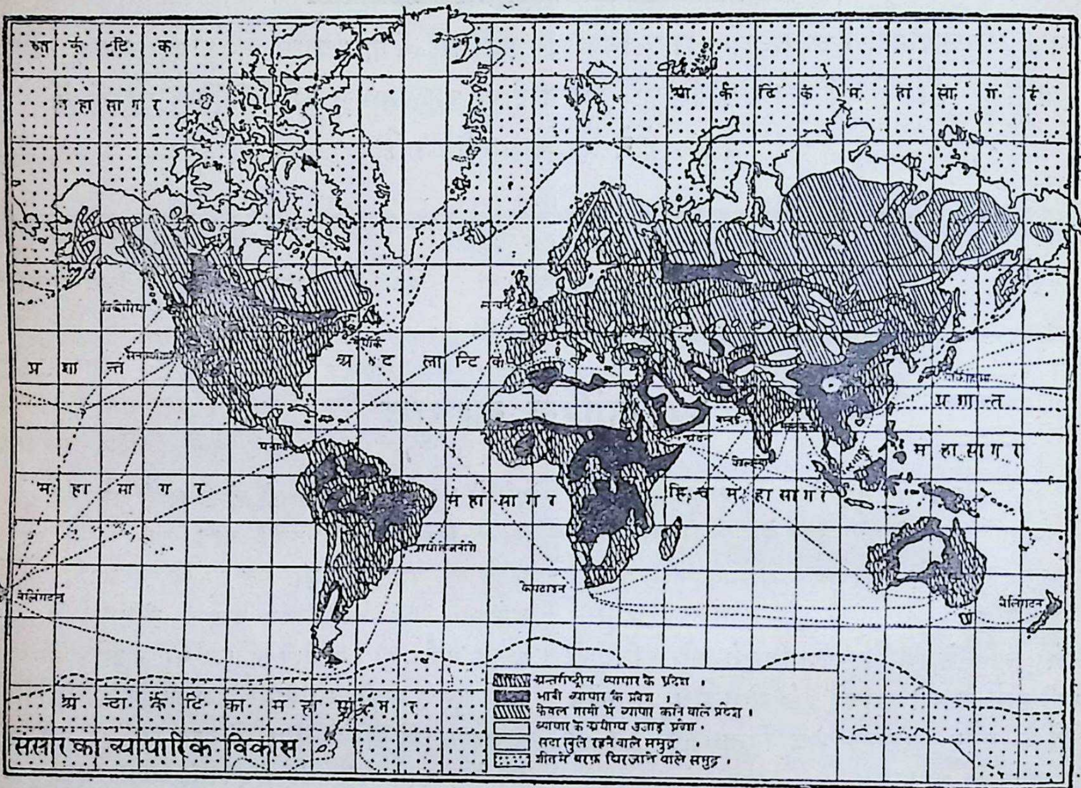

संसार का व्यापारिक विकास

प्रयोग कर सकते थे। इसलिये उस समय समुद्री रक्षा का अधिक सरल था। वर्तमान युद्ध में पनडुब्बी नावों के आक्रमण के साथ साथ हवाई जहाज भी समुद्री जहाजों पर आक्रमण करते हैं।

वर्तमान युद्ध के छिड़ते ही ब्रिटेन ने अपने जहाजों को शत्रु के आक्रमण से बचाने के लिये कनवाय प्रथा का अनुसरण किया। लेकिन संयुक्त राष्ट्र अमरीका तटस्थ है। इसलिये अमरीकन तट पर केवल नोवा स्कोशिया के बड़े बन्दरगाह हेलीफैक्स से ही ब्रिटिश कनवाय प्रस्थान कर सकता था। जैसे जैसे

फिर भी जारी रखना पड़ा। माण्टी विडियो के पास जर्मन जेबी जहाज ग्राफस्पी के नष्ट हो जाने से दूर के भागों में शत्रु के आक्रमण का भय जाता रहा।

इस बार बाल्टिक सागर में जर्मनी के जहाजी बेड़े का भय न था। इसी से बहुत से ब्रिटिश लड़ाका जहाज उधर से मुक्त होकर पहरे के काम में लग गये ब्रिटेन के पास आरम्भ में छोटे छोटे लड़ाका जहाजों की कमी थी। इसलिये जब तक फ्रान्स स्वाधीन रहा तब तक भूमध्यसागर रक्षा के लिये फ्रान्स से बड़ी सहायता मिली। वर्तमान समुद्री लड़ाई ठीक उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से आरम्भ हुई जहां पहली लड़ाई समाप्त हुई थी। जर्मन जहाज़ों ने उत्तरी (नार्थ) सागर में ब्रिटेन के पड़ोस में पनडुब्बी नावों से आक्रमण आरम्भ किये। पहली लड़ाई और वर्तमान लड़ाई के बीच में टारपीडो के वेग और निशाने पर गोली छोड़ने में बड़ी उन्नति हुई। उनके वजन में कोई विशेष अन्तर न पड़ा। दोनों ओर शब्द सुनने वाले मन्त्रों में बड़ी उन्नति हुई। पिछली लड़ाई में जर्मन पनडुब्बा जहाज प्रायः लड़ाका जहाजों पर आक्रमण करते थे। इस बार वे व्यापारी जहाज़ों पर विशेष रूप से आक्रमण करने लगे। नार्वे पर अधिकार जमाने के पहले जर्मन हवाई जहाज़ों के अड्डे बहुत दूर पड़ते थे। वहां से वे अपनी अपनी पनडुब्बी नावों को कोई बड़ी सहायता हवाई जहाज़ों द्वारा नहीं पहुँचा सकते थे। जब जर्मनी ने फ्रान्स, बेल्जियम और हालैण्ड के तट पर अधिकार कर लिया। तब से जर्मन हवाई जहाज़ अपने भीषण आक्रमणों से पनडुब्बी नावों को बड़ी सहायता पहुँचाने लगे।

ब्रिटेन डोवर प्रणाली (स्ट्रेट) के द्वार को इस बार भी जर्मन हवाई जहाज़ों के लिये बन्द कर दिया। स्काटलैण्ड और इंगलैण्ड के समस्त पूर्वी तट पर जहाज़ों ने सुरंगें बिछा दी। अपने और मित्रों के जहाज़ों को आने जाने के लिये यह द्वार छोड़ दिये। खुले हुये द्वार पर मेंग्नेटिक (चुम्बकीय) सुरंगों को छोड़ने वाले हवाई जहाज़ों को पकड़ने के लिये इंगलैण्ड वालों ने हवाई जाल फैला दिये। इँगलैण्ड ने इस प्रकार अपने तट की ऐसी रक्षा की कि जर्मनी की पनडुब्बी नावों को भारी हानि उठानी पड़ी।

फ्रांस के हार जाने से ब्रिटेन को फ्रांसीसी बेड़े की सहायता न मिल सकी। उधर इटली का जहाज़ी बेड़ा जर्मनी के हाथ में आ गया। जब से फ्रांस के समुद्री अड्डे जर्मनी के हाथ में आ गये तब से जर्मनी सीधे अटलांटिक तट से ब्रिटेन पर आक्रमण करता है। नाज़ी लोगों ने बड़े पैमाने पर (प्रति मास २५) सबमेरीन या पनडुब्बी नावों का बनाना आरम्भ कर दिया है। ब्रिटिश हवाई हमलों से इसमें कुछ बाधा अवश्य पड़ रही है। फिर भी जर्मन पनडुब्बी जहाज़ों ने हमला करने के ढंग में उन्नति कर लिया है। पहले एक एक पनडुब्बा जहाज़ अलग अलग हमला करता था। आजकल पनडुब्बे जहाज़ झुंड बना कर एक साथ हमला करते हैं। एक बड़ा जहाज़ उनका (सरदार) नेता होता है। वे रेडिओ द्वारा एक दूसरे से बातें कर लेते हैं। ऊपर हवाई जहाज़ भी रेडियो द्वारा उन्हें आदेश देता रहता है। इससे आजकल हवाई जहाज़ों को अपना पेरस्कोप (जिसके द्वारा वे पहले अपने पड़ोस में शत्रु के जहाज़ का पता लगाते थे) काम में लाना नहीं पड़ता है। वे शत्रु के कनवाय (जहाज़ों के समूह) की ताक में नीचे छिपे रहते हैं। संकेत पाते ही वे कनवाय पर हमला करते हैं। ऐसी दशा में सबमेरीन को समूल नष्ट करना कठिन हो जाता है। लड़ाका जहाज़ों की संख्या बढ़ने से ही उनका नियन्त्रण हो सकता है। आजकल ब्रिटिश जहाज़ों के लिये सब से अधिक भयानक क्षेत्र आयरलैंड के पश्चिम में २०० मील से ७०० मील तक फैला हुआ है। उत्तर में यह आयसलैंड से इंगलिश चैनल तक चला गया है। जब अमरीका की ओर से आने वाले ब्रिटिश कनवाय के जहाज़ इस युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तब उन पर हवाई जहाज़ बम्ब वर्षा करते हैं। जैसे जैसे जहाज़ ब्रिटिश तट के पास पहुँचते हैं वैसे वैसे बम्ब-वर्षा का वेग बढ़ता जाता है। फ्रांसीसी तट पर अधिकार हो जाने के कारण केपटाउन और भूमध्य सागर की ओर से आने वाले जहाज़ों पर भी नाज़ी आक्रमण होते हैं। कुछ नाज़ी पनडुब्बे दूर जाकर हमला करते हैं और फिर अपने नियत स्थान पर लौट आते हैं। कुछ जर्मन व्यापारी जहाज़ भी ऐसे लुटेरे बन गये हैं कि वे दूर के समुद्रों में पहुँच कर लूट मार करते हैं। ब्रिटेन को सदा जर्मन आक्रमण का भय लगा रहता है। इससे छोटे छोटे जहाज़ों को सदा तट के पास रखना पड़ता है। इसी से जर्मन हवाई जहाज़ों की और भी अधिक हिम्मत बढ़ गई। वे दिन रात ब्रिटिश जहाज़ों पर आक्रमण करते हैं।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका और दक्षिणी अमरीका के कुछ स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अमरीका के पास वाले समुद्र को लगभग १००० मील तक उदासीन घोषित किया है। इसके अनुसार वे युद्ध में सम्मिलित राज्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जर्मनी और इंगलैंड) को लड़ने से तो नहीं रोक सके हैं लेकिन वे इन राज्यों के जहाज़ों को इस ओर देख कर तुरन्त लड़ने वाले घोषित कर देते हैं। इससे प्रायः जर्मनी को हानि होती है क्योंकि जर्मन जहाज़ की सूचना पाते ही ब्रिटिश बेड़े के जहाज़ उसका पीछा करने को चल देते हैं। जर्मन जहाज को यह लाभ होता है कि वह अपने को बचाने के लिये सतर्क हो जाता है और स्थान बदल देता है।

ईजियन सागर से कालासागर का जलमार्ग

भूमध्य सागर डार्डेनेलस, मारमोरा और वास्फोरस जलसंयोजकों द्वारा कालासागर से मिले हुये हैं। इस समुद्री मार्ग में कुस्तुन्तुनिया (स्तम्बूल) का प्रसिद्ध हार्बर गोल्डन हार्न है। पनामा और स्वेज नहर के बाद युद्ध सम्बन्धी दृष्टि से इसी की गणना है। व्यापारिक दृष्टि से यह इतना प्रसिद्ध नहीं है तो भी यह काला सागर की कुँजी का काम करता है।

कुछ समय तक ये जलसंयोजक योरुपीय राजनीति में कांटे का कार्य करते रहे। अँग्रेज़ जाति इन सब को डार्डेनलस के नाम से पुकारता है, यद्यपि डार्डेनल इस लम्बे जलमार्ग का केवल एक भाग है। १९१४ की बड़ी लड़ाई में यहां बहुत आदमी मारे गये।

मारे जाने वाले अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें गेल्ली पोली स्थान पर बनी हुई हैं। अँग्रेज सैनिक इन जल संयोजकों को रूसी जहाज़ों के लिये खोलना चाहते थे। स्कुतारी स्तम्बूल के दूसरी ओर स्थित है। वहां पर उन अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें हैं जो रूसी जहाजों को इस जल मार्ग से निकालने में मारे गये थे।

ये जलसंयोजक टर्की का हैं। रूम सागर में बलगेरिया, रूमानिया और रूस के जहाज इसी मार्ग हो कर जा सकते हैं। १९२६ ई० में इनके मोरचा बन्दी करने के लिये इस से सम्बन्ध रखने वाले राज्यों की आपस में सभा हुई थी। काला सागर के तट उपजाऊ हैं और समीप ही संसार प्रसिद्ध मिट्टी के तेल के कुएँ हैं। वर्तमान युद्ध में जर्मनी ने इस ओर अपना प्रभुत्व बढ़ा लिया है।

मिट्टी के तेल और अनाज का व्यापार काला सागर होकर काफी मात्रा में होता है। इसके वृद्धि होने की भी बहुत सम्भावना है, किन्तु यह काला सगर के चारों ओर के राजनैतिक तथा आर्थिक नीति पर निर्भर है। टर्की स्वयं कोई बड़ा जहाज़ी देश नहीं है। १९३५ ई० में टर्की के जहाज़ों की संख्या १८२ थी, जिसमें बहुत से प्राचीन ढङ्ग के जहाज भी थे।

ईजियन सागर होकर डार्डेनलस में आते हैं। इसकी लम्बाई ४७ मील और चौड़ाई ३ से ४ मील

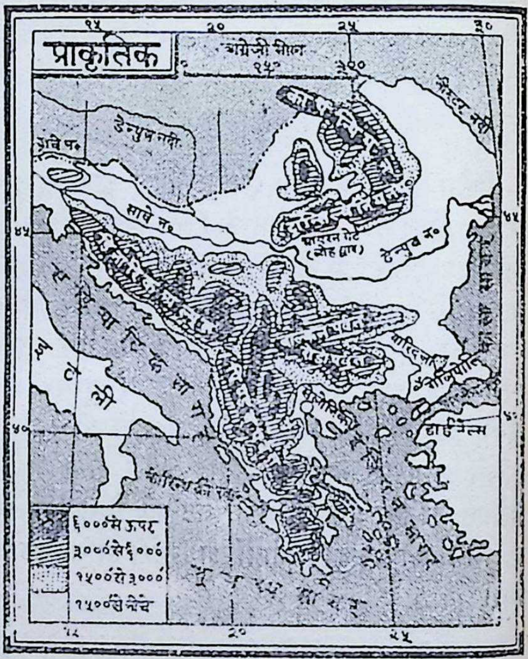

तक है। इनमें होकर मारमोरा सागर को मार्ग जाता है जिसकी लम्बाई १७५ मील और चौड़ाई लगभग ५० मील है।

उत्तर की ओर मारमोरा संकरा हो गया है और बासफोरस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके योरुपीय तट पर स्तम्बूल और गोल्ड हार्न तथा एशियाई तट पर स्कुटारी स्थित हैं। बास फोरस की लम्बाई लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ मील है। यह अधिक से अधिक तीन मील और कम से कम ½ मील चौड़ा है।

स्तम्बूल अब टर्की की राजधानी नहीं है। टर्की की बर्तमान राजधानी अंकारा या अँगोरा है। स्तम्बूल की जनसंख्या ७४०००० और अंगोरा की १२३००० है। कुछ सालों पहले स्तम्बूल की जनसंख्या १० लाख से अधिक थी। यहां का मुख्य व्यापार यूनानी, यहूदी और आर्मिनियन लोगों के हाथों में है।

लन्दन से स्तम्बूल समुद्री मार्ग से ३१०७ मील की दूरी पर है। बासफोरस तट के निवासी स्तम्बूल नावों पर आया जाया करते हैं। गोल्डन हार्न बासफोरस की एक भुजा है और चार या पांच मील लम्बा है। इसमें एक मीठे पानी की नदी आकर गिरती है।

स्तम्बूल गोल्डन हार्न के दक्षिण की ओर स्थित है। यह नगर तुर्की है। हाबर के उत्तर की ओर गलाटा और पेरा की बस्तियां हैं। गलाटा में में व्यापारी लोग और पेरा में विदेशी लोग रहते हैं। हार्बर में दो नावों के पुल बने हुये हैं। यह हार्बर तीन भागों में बँटा है (१) बाहरी पोर्ट (२) गलाटा पोर्ट और तीसरा भीतरी पोर्ट है। बाहरी बन्दरगाह सेरागलियो के आगे स्थित है।

गलाटा बन्दरगाह के घाटों की लम्बाई २४८० फुट है। इस बांध के दूसरी ओर स्तम्बूल का बांध है जिसकी लम्बाई १२४० फुट है। बास फोरस के एशियाई तट पर हैदर पाशा स्टेशन है। यहां पर समुद्री घाट है। इन घाटों पर सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं प्राप्त हैं। इन घाटों पर तैरती हुई क्रेन भी हैं जो ५० टन (१४० मन) तक सामान उठा सकते हैं।

यहां पर तीन जहाज बनाने वाले घाट हैं जिनमें सबसे बड़े घाट की लम्बाई ५१० फुट है। जहाज उतारने वाले घाट चार हैं और सब से बड़ा घाट १७६ फुट लम्बा है। योरुप और एशिया के बीच सारा व्यापार बासफॉरस होकर होता है। स्तम्बूल और कान्सटान्टा के बीच सवारी वाले स्टीमर आया जाया करते हैं। कान्सटान्टा काला सागर पर रोमानिया का एक बन्दरगाह है।

यद्यपि स्तम्बूल में बड़े बड़े जहाज कभी कभी आते हैं तो भी यहां पर हैम्बर्ग, गोथेनबर्ग, राटर्डम, मालमोरोएन और ऐन्टवर्प आदि बन्दरगाहों से जहाज आया जाया करते हैं। कभी कभी स्वेज नहर होकर चीन जापान से भी जहाज आते हैं।

भूमध्य सागर और काला सागर के जहाजों की मात्रा अधिक रहती है। ये जहाज जनेवा, वेनिस, ट्रीस्टे, सिकन्दरिया, साइप्रेस, व्रेला, कान्सटैन्टा, गलाटी, वनी, ओडेसा और बातूम बन्दरगाहों से आते जाते हैं। इनके सिवा छोटे छोटे बोट तथा सवारी जहाज भी चला करते हैं।

काला सागर का क्षेत्रफल १६४,००० वर्गमील है। काला सागर में ४८० फुट की गहराई से कम वाले भाग में जहाज नहीं रुकते क्योंकि वहां पानी में गन्धक की मात्रा अधिक है। काला सागर का पानी खारा और रूमसागर का पोनी नमकीन है, इसका मुख्य कारण यह है कि काला सागर में डैयून्ब, नीपर, डनीस्टर, बग और कूबान आदि नदियां आकर गिरा करती हैं।

काला सागर में ज्वार-भाटा नहीं आता, किन्तु यहाँ तेज धाराएं बहा करती हैं। इस सागर की अधिक से अधिक गहराई ७२०० फुट है। जाड़े की ऋतु में कालासागर में भयानक सर्दी पड़ती है और पानी की ऊपरी तह जम जाती है। क्रीमिया का प्रायद्वीप गर्मी की ऋतु में बड़ा सुहावना रहता है किन्तु जाड़े की ऋतु में यहां कड़ी सरदी पड़ती है। क्रीमिया के उत्तर-पूर्व में ऐजब सागर है, जिसमें केर्च का बन्दरगाह है।

बलगेरिया के मुख्य बन्दरगाह वरगस और वरना, रूमानियो के कान्सटेन्टा, सूफिना, गलाटी और व्रेला, रूस के ओडेस्सा, पोती और बातम टर्की के टेबी जोन्द और बासफोरस के तटीय छोटे छोटे बन्दरगाह हैं।

टर्की के बन्दरगाहों में किसी प्रकार की वृद्धि होने की सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती, किन्तु ओडेस्सा और बातूम के बन्दरगाह किसी समय पिट्रौल और अनाज के बड़े केन्द्र बन जावेंगे।

बासफोरस का जल डमरू मध्य काफी गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कालासागर से यहां को आने वाली समुद्री धारा बड़ी तीव्र होती हैं। इसीलिये प्राचीन काल में यहां पर बहुत से जहाज डूबा करते थे।

बासफोरस का द्वार प्राचीन काल में तटीय तीव्र वायु के कारण इतना खतरनाक था कि लोग कहा कहते थे कि दोनों तटों की चटानें लड़ती हुई जहाज तोड़ने के लिये आया करती हैं। इसके द्वार के रशियाई तट पर अनाटोली कावक और योरुपीय तट पर रोवमेली कात्रक के किले स्थित हैं। यही दोनों किले बासफोरस के प्राचीन द्वार हैं।

थेरापिया बासफोरस के योरुपीय तट पर स्थित है और राजनीतिज्ञों के हवा खाने का प्रमुख स्थान है। गर्मी के दिनों में उत्तर से शीत हवाएँ आकर सर्द बना देती हैं। बासफोरस की खाड़ियों की रक्षा अनाटोली हिसार और रोवमेली हिसार के किलों द्वारा होती है। बासफोरस के दोनों गहरे तटों पर मकानात इतने समीप के हैं कि बहुधा कुहरे को ऋतु में धुंधलेपन के कारण जहाज मकानों में टक्कर खा गये हैं।

बासफोरस की खाड़ी घुमावदार होने और प्रचंड वायु के चलने के कारण जहाजों को खेने में अधिक कठिनाई हो जाती है।

बास फोरस की भाँति डारडेनल्स जल संयोजक भी प्रसिद्ध हैं। गालिपोली का प्रायद्वीप योरुपीय तट पर है यह ५२ मील लम्बा है। प्राचीन समय में इसके दोनों (योरुपीय तथा एशियाई) तटों पर किले थे और उसी के कारण इसका नाम डारडेनल्स पड़ा।

१९१५ ई० में गालिपोली प्रायद्वीप में अधिक युद्ध हुआ। प्राचीन समय में एशियाई तट पर ट्राम इन जल संयोजकों की कुन्जी माना जाता था। जब युनानी लोगों ने ट्राम जीता तो उन्होंने कालासागर पर व्यापार करना तथा नई बस्तियाँ बसाना आरम्भ किया। डारडेनल्स के खाड़ी की चौड़ाई १३०० गज है। यहां पर धार बड़ी तेज है। चारडक के आगे चलने पर कारा की अंतरीप है और उसके आगे मारमारा का टापू और सागर है।

प्राचीन समय में ६६० वर्ष ईसा के पूर्व बैजन टाइन नगर कुस्तुनतुनिया के स्थान पर बसा था। रोमन बादशाह कान्सटैन्टाइन ने इस नगर के स्थान को देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने फिर से नगर बनाने और रोमन राज्य की उसे राजधानी बनाने का संकल्प किया। कुस्तुन्तुनिया नगर ३०३ ई० में बना। और पूर्वी रोमन राज्य की राजधानी बनाया गया। यह पूर्वी क्रिस्चियंडम और प्राचीन यूनानी चर्च का भी केन्द्र बन गया। यूनानी प्रभाव से प्रभावित होकर यह नगर दुनिया के बड़े नगरों में हो गया और यह एक बड़ा व्यापार, शिक्षा तथा सभ्यता का केन्द्र बन गया।

युद्ध काल में समुद्री मार्ग सब बन्द कर दिया जाता था। गोल्डन हार्न बन्दरगाह के आरपार एक बड़ी लोहे की जंजीर डाल दी जाती थी नगर के चारों ओर बड़ी पुख्ता दीवार बना दी गई थी।

डैन्यूब नदी द्वारा योरुप का सामान रूमसागर द्वारा मिश्र का साम कुस्तुन्तुनिया आता था। धीरे धीरे यह दुनिया में सबसे बड़ा व्यापारिक नगर हो गया। १२०२ ई० में बाल्डविन की अध्यक्षता में क्रूसेडर्स ने नगर पर धावा मारा और अपने अधिकार में कर लिया। इसके बाद ५७ साल तक कुस्तुन्तुनिया में इटली का राज्य रहा।

इटली के पश्चात् तुर्क लोगों ने ३०० जहाजों के साथ नगर पर धावा मारा। तुर्क लोगों ने १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार जमाया। तुर्क लोगों के आक्रमण का प्रभाव दो विस्तृत रूप में दुनिया पर पड़ा। पहला यह कि विद्वान लोग कुस्तुन्तुनिया छोड़ कर इटली चले गये और वहां उन्होंने रिनायसा (नवीन शिक्षा) पर जोर दिया, जिसके कारण लोगों के मस्तिष्क प्रकाशित हो गये। दूसरे इस्लाम ने पूर्व जाने का प्राचीन मार्ग रोक दिया, जिससे स्पेन और पूर्तगाल निवासियों ने भारत जाने का नया मार्ग अफ्रीका के दक्षिण होकर निकाला और अमरीका का पता लगाया।

उस काल में रूमसागर एक मुसलमानी सागर हो गया था। मुसलमान समुद्री डाकू बन गये थे। उनमें कुछ बहुत प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध समुद्री डाकुओं में बारबरोसा (लाल दाढ़ी वाले) प्रधान थे। खैर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्दीन बारबरोसा ने अलजीयर्स को स्पेन वालों से छीन लिया था।

यद्यपि अलजीयर्स और टर्की के बीच बहुत कम सम्बन्ध था, तो भी उन्नीसवीं शताब्दी तक अलजीरिया के समुद्री डाकुओं ने जहाज़ी व्यापार नहीं होने दिया। मिश्र देश भी टर्की के आधीन हो गया था और लगभग सारा रूमसागर का तट तुर्कों के अधिकार में था।

अर्थोडाक्स ईसाइयों का सेन्ट सोफिया का बड़ा चर्च मसजिद बना दिया गया और कुस्तुन्तुनिया के केन्द्रीय भाग तुर्की स्तम्बूल बनाया गया। गलास और पेरा में दूसरे धर्म के व्यापारियों ने भाग कर अपने अड्डे बनाए। यूनानी, आर्मेनियन और यहूदी लोग जो ईसाइयों द्वारा स्पेन से भगा दिये गये थे, उन्होंने गोल्डन हार्न के उत्तरी किनारे पर आकर अपने निवास स्थान बनाए। मुसलमानों ने ईसाइयों को अपना गुलाम बनाया और ईसाई बच्चों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

यदि तुर्क लोग अच्छे मल्लाह होते तो अवश्य ही वे कुस्तुन्तुनिया के मालिक होते हुए संसार में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करते, किन्तु वे न तो अच्छे मल्लाह ही थे और न व्यापारी ही थे, वे केवल सैनिक थे। बहुत समय तक कुस्तुन्तुनिया तो उनके अधिकार में केवल योरुपीय राज्यों में आपस की फूट के कारण रहा।

रूसी व्यापार की उन्नति के कारण १९१४ की लड़ाई के पहले यह एजियन से काला सागर तक का समुद्री मार्ग बहुत उन्नति कर गया था, किन्तु लड़ाई काल में और उसके पश्चात् व्यापार बहुत कम हो गया था। अब फिर से व्यापारिक उन्नति होने लगी है और आशा है कि शीघ्र ही यह जलमार्ग अपने प्राचीन प्रधानता को प्राप्त कर लेगा।

जावद की झलक

(ले०—गोविंदराव शङ्करराव नाड़कर्णी 'विशारद')

प्रत्येक स्थान में एक न एक ऐतिहासिक घटना छिपी रहती है। कोई विशेष महत्व की होती है और कोई कम। बहुत से ऐतिहासिक स्थानों को महत्ता भूगर्भ स्थित हो जाने से वह संसार में विशेष गण्यमान्य नहीं हो सकती। परन्तु शोध करने पर प्रतीत हो जाता है कि प्रत्येक स्थान में एक न एक महत्वपूर्ण घटना छिपी हुई है। यही हालत 'जावद' की है।

जावद की गणना बड़े शहरों में तो नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ न तो विशाल भवन हैं और न प्रेक्षणीय कलात्मक बाज़ार हैं। परन्तु यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि 'जावद' किसी समय में मेवाड़ के इतिहास में अग्रगण्य शहर बना हुआ था। कारण यह कि इसके चारों ओर सुन्दर कँगूरेदार परकोटा बना हुआ है। इसी परकोटे के अन्दर की तरफ एक चबूतरा सा चारों ओर बना हुआ है और जगह-जगह चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस परकोटे में स्थान स्थान पर सूराख भी हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह गाँव किसी समय किलेबन्दी का काम करता था।

मेवाड़ का इतिहास विशेष कर वीर राजपूतों के शौर्यमय रक्त से रंगा हुआ है। इसके अनुसार हम कह सकते हैं कि मेवाड़ के सब स्थान ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। प्राचीन राजाओं को यवन सेनाओं से घोर युद्ध एक बार नहीं बल्कि हजारों बार करने पड़े थे। अनेक बार वीर राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के हित केसरिया बाना पहिन कर प्राण झोंक दिये थे। उन वीर सैनिकों की वीर माताओं ने अपने हाथ से अपने पुत्रों तथा पतियों को केसरिया बाना पहिना कर रणाग्नि में प्रवेश करने को उद्यत किया था तथा अपनी मान-रक्षा के लिये स्वतः अग्निकुण्ड में कूद कर जौहर कर बैठी (जल गई) थीं। इसका परिणाम ही यही कि आज संसार का प्रत्येक व्यक्ति मेवाड़ के इतिहास का एक एक पृष्ठ सगौरव पढ़ता है। इन राजपूतों को एक क्षण के लिये भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के बादशाहों ने आराम से नहीं बैठने दिया था। तभी तो उन्हें नगर अथवा गाँवों की रचना सुरक्षित ढंग से करनी पड़ी थी। आज मेवाड़ में हम घूमें तो छोटे से छोटा गाँव भी परकोटे से घिरा हुआ है। इस चिन्ह को लेकर यदि जावद के क्षेत्र-फल पर विचार किया जाय तो कहना होगा कि 'जावद' उस काल में एक उन्नतिशील नगर था।

'जावद' नगर की स्थिति बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे की केसरपुरा स्टेशन से ठीक पूर्व की ओर ७ मील दूर है। उक्त स्टेशन से एक पक्की सड़क जावद तक गई है। तथा उसी कम्पनी के विख्यात नीमच स्टेशन से यह शहर १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से भी एक पक्की सड़क जावद तक गई है। इस शहर के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में चार दरवाजे तो हैं ही परन्तु दक्षिण-पूर्व में भी एक दरवाजा और है जिसे रामपुरा दरवाजा कहते हैं। अन्य दरवाजों को क्रमानुसार नावल, खोर, अठाना और नीमच दरवाजा कहते हैं। ये नाम उसी दिशा में बसे हुये मुख्य नगरों द्वारा पड़े हुये हैं।

बावल एक टांका है जो पहाड़ की तरेटी में बसा हुआ है। यहां के महाराज रियासत ग्वालियर में आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। तथा यहाँ के प्रमुख कार्य-कर्ताओं में से हैं। यहां के महाराज राजपूत जाति के हैं जो चितौड़ के राणाओं से सम्बन्ध रखने वालों में से हैं। यहां एक विशाल राजभवन बना हुआ है तथा इसके पूर्व में एक पहाड़ी तंग घाटियों को लिये हुये खड़ी है। यह जावद से तीन मील दूर है। यहां तक कोई सड़क नहीं गई है। अब एक नई योजना के अनुसार जावद से मोरवन तक सड़क निकाली जा रही है जो घाटे पर (मेवाड़ के मध्य में) जाने वाली सड़क से सम्बन्ध रक्खेगी। बावल इसी सड़क के किनारे पर रहेगा।

इधर के करीब करीब सब गांवों की रचना नदी या नालों के किनारे ही पर हुई है। अर्थात् चाणक्य नीति का पालन हुआ है। इसी के अनुसार बावल भी एक नदी के किनारे बसा हुआ है जिसे 'गम्भीरी नदी' कहते हैं। इसी नदी के किनारे 'अठाना' नामक राजपूत सरदार का टांका बसा हुआ है। यह भी चित्तौड़ के राणाओं के सम्बन्धियों में से हैं। यहां के महल व बाग बगीचे विशेष प्रेक्षणीय हैं और नदी तट पर होने के कारण इनकी शोभा में विशेष सौंदर्य मिल गया है। यहां के भवन की बनावट में सुन्दरता व कला का प्रदर्शन कारीगर ने बड़ी चतुराई से किया है प्रमाणतः एक कहावत बन गई है 'अठाना' के महल, विनोता की बावड़ी यहां के निवासी जब जब किसी सुन्दर महल का वर्णन करते हैं तो उसकी सुन्दरता को इन्हीं महलों की सुन्दरता से तोलते हैं।

वह टांका (जागीर) जावद से तीन मील उत्तर में स्थित है। अभी दो तीन साल हुये अठाने के महाराज ने करीब दो मील तक एक जावद की ओर सड़क बना दी है। शेष हिस्से में, जो स्टेट ग्वालियर में है कच्चा मार्ग बना हुआ है परन्तु इस हिस्से में भी सड़क बनाई जाने की योजना हो रही है। इस जागीर के उत्तर में उन्हीं पहाड़ों के सिलसिले आ गये हैं जो कि बावल में हैं। ये अरवली पर्वत की प्रशाखाएँ हैं। इन पर्वतों में प्रकृति-सौंदर्य युक्त स्थानों पर शिवालय बने हुये हैं। ये तीर्थ स्थान से बन गये हैं। यहां साल भर में एक बार बैशाखी पूर्णिमा पर मेले लगा करते हैं। इनके नाम 'सुखानन्द' 'सांडेश्वर' 'बहावाडेश्वर' आदि हैं। यहाँ हर साल दूर दूर के लोग आते हैं। इनके नाम पर एक दंत कथा भी बन गई है। यहाँ के हरे जंगलों तथा अनेक स्थानों में प्रकृति अठखेलिया करके सबै प्राणियों को आकर्षित किया करती है। इन स्थानों पर पहुँचने के बाद मानव के हृदय में संसार से अरुचि उत्पन्न हो ईश्वर से लगन लग जाती है तथा उसकी अनुपम रचना पर सब के नेत्र तथा हृदय जिधर जाते हैं वे वहीं ठिठक जाते हैं।

यदि हम अठाने दरवाजे या बावल दरवाजे जाकर खड़े हो जांय तो प्रातःकाल से शाम तक भील तथा अन्य पहाड़ी जातियां अपने सिरों, गधों, पाड़ों अथवा ऊँटों की पीठ पर लकड़ा के गट्ठर या घास लादे जावद की ओर आते हुये दीख पड़ते हैं। साथ ही साथ शहद, गोंद, कोयला, टीबरू के पत्ते, करौंदे आदि भी इन पहाड़ों से यहां लाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि यहां के निवासियों का जीवन इन्हीं पर्वतीय मैदानों पर निर्भर है। अब ऐसे ही हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य तीन दरवाजों पर जाकर देखेंगे तो गेहूँ, जौ, ज्वार आदि नाज को बैलगाड़ी में लादे कृषक इधर की ओर आते हुये दीख पड़ेंगे अर्थात् जावद के उत्तर-पूर्व में पर्वत हैं तथा अन्य दिशाओं में कृषि योग्य मैदान हैं।

जावद के आसपास उपजाऊ जमीन होने से चारों ओर खेत ही खेत दिखाई देते हैं। परिणामतः यहाँ विशेष चरागाहें नहीं हैं। इसलिये जावद के मानानुसार यहाँ चौपाये (गाय-भैंस) कम ही पाले जाते हैं। तभी तो शाम सुबह इन दरवाजों की ओर से बड़े बड़े दूध के मटके लिये पहाड़ निवासी यहाँ बेचने आते हैं। दिन को चमड़ा भी यहां बिकने को आता है और इसके बदले में अन्न, कपड़ा, तेल, दवाइयाँ, काँच, गुड़, शक्कर, नमक, गरम मसाला, करलरी सामान आदि खरीद कर ले जाते हैं।

गंभीरी नदी के किनारे बसे हुये उम्मेदपुरा (तारापुरा) में जो जावद के उत्तर-पूर्व में बसा हुआ है रंगाई तथा धुलाई का काम बहुतायत से होता है। इसलिये रंगे हुये थान के थान भी अठाने से जावद में आते हैं। यह काम हिन्दू छिप (जाति) करते हैं। इसलिये ये लोग उम्मेदपुर में बहुत रहते हैं। यहाँ का रंगा हुआ कपड़ा इंदौर, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, अजमेर, उदयपुर आदि शहरों के बाजारों में बिकता है। ये लोग इस कार्य में पूर्ण दक्ष हो गये हैं। उम्मेदपुर में जगह जगह नदी किनारे रंग के कुण्ड बने हुये हैं। तथा अठाने में चरखा सिस्टम द्वारा मज़बूत कपड़ा बुना जाता है। जो जावद में तो बहुत ही बिकता है। तिस पर भी आजकल लड़ाई की वजह से इस कपड़े की कदर इतनी बढ़ गई है कि घर घर में 'अठाने की पछेवड़ी' बिराजी हुई है।

जावद के दक्षिण में खोर दरवाजा है। इधर से एक पक्की सड़क गई है जो 'खोर' होती हुई केसरपुरा स्टेशन को गई है तथा 'बाम्बे-आगरा रोड' की एक शाखा 'महू-नसीराबाद रोड' को जोड़ती है। इस दरवाजे पर हमें दस-बारह तांगे राह देखते हुये मिलेंगे जो यात्रियों को खोर-और कसरपुरा ले जाते हैं।

खोर का महत्व अभी तक घटा हुआ था परन्तु अब से आर्केऑलॉजीकल डिपार्टमेन्ट ने यहां खुदवाई की है तब से यह स्थान उल्लेखनीय बन गया है। यहाँ के खँडहरों को देखते हुये चित्तौड़ की प्राचीन इमारतों का स्मरण हो आता है। यहां से एक मार्ग भूगर्भ से होकर २६ मील के फासले पर चित्तौड़ के क़िले में जा निकला है। इस मार्ग का दरवाजा एक विशाल चबूतरे पर बना हुआ है। इस चबूतरे की बनावट तथा आस पास के पत्थरों की कारीगरी देखते हुये हमें महल का ज्ञान हो आता है। जगह जगह दरवाजों के स्तंभ स्मारक-स्वरूप खड़े हुये हैं। आज कल यह 'खोर-चित्तौड़' मार्ग चोरों एवं ठगों को विशेष सहायक बन जाने के कारण, बन्द कर दिया गया है परन्तु अन्दर उतर कर देखने से पता चलता है कि यह मार्ग पक्का पत्थर का बना हुआ है। बीचोबीच पत्थर के सुन्दर खम्बे भी लगे हुये हैं। इस गांव के आस पास और भी मन्दिर बने हुये हैं जिन्हें 'नौतोरण' कहते हैं। मेवाड़ में 'तोरण' शादी के वक्त लकड़ी के अर्धचंद्राकार वस्तु को कहते हैं जिसे दूल्हा अपनी तलवार से खंडित कर 'भांवर' में बैठता है। वास्तव में इन तोरणों के दरवाजों की बनावट भी 'तोरण' जैसी ही है। इसी कारण से यहां के लोगों ने यह मत कायम कर लिया है कि ये श्री रामचन्द्र जी की शादी के समय बने थे। यद्यपि यह मत अक्षरशः असत्य हो सकता है परन्तु इतना जरूर कह सकते हैं कि ये १३वीं या १४वीं सदी के बने हुये होंगे। इनकी दशा दिन प्रति दिन बिगड़ती जा रही थी परन्तु दो साल से सरकार की इधर दृष्टि गई। इससे इनका उचित सुधार हो गया है। इनमें से एक 'तोरण' में जो बिलकुल सड़क के किनारे है सूकरावतार-स्मारक विशाल सूकर मूर्ति पत्थर की बनी हुई है। क्षत्रियों के शिव उपासक होने से यहां शिव मूर्ति भी है। वैसे तो हर एक गांव में जगह २ शिवलिंग तथा नंदी की मूर्तियां स्थापित हैं। आशा है इनकी खोज पुरातत्ववेत्ता पूर्ण रूप से करके इनकी महत्ता पुनः इतिहास में चमका देंगे।

इसके आगे नयागांव जाते हैं जिसे एक दूसरे छोटे से गाँव केसरपुरा के नाम से केसरपुरा स्टेशन भी कहते हैं। 'यहां 'बारह पत्थर' नाम से गांव और रेलवे लाइन के बीच में एक चौरस मैदान है। इस स्थान का उल्लेख 'मेवाड़ गौरव' नामक पुस्तक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह से हो चुका है। यह चौरस मैदान फ़ौजों के ठहरने का काम देता था। केसरपुर स्टेशन का महत्व 'जावद' नगर पर ही है। यहां का माल गोदाम जावद की पैदावार तथा जावद को मांग की बदौलत ही चमक रहा है अन्यथा यहां कुछ भी नहीं मिल सकता।

जावद के वे व्यापारी जो मेवाड़ से व्यापार करते हैं। यहीं होकर आते जाते हैं और मालवे से व्यापार करने वाले व्यापारी 'नीमच-स्टेशन' द्वारा आते जाते हैं। इससे हम कह सकते हैं कि नीमच दरवाजे पर भी तांगे राह देखते हुये मिलेंगे। नीमच के माल गोदाम पर मालवे का वह माल जो जावद, बघाना, नीमच खास व नीमच केंट, मनासा, सिंगोली आदि को जाने वाला है और उक्त स्थानों से आने वाला माल पाया जाता है। जैसे जौ, ज्वार, मक्का, उरद, गेहूँ, दालें, तिलहन, लकड़ी, पत्थर, गोंद, गन्ना, कपास आदि यहाँ की पैदावार हैं। बाहर से आने वाला तम्बाकू, शक्कर, कपड़ा, गरम मसाले, नमक की बोरियाँ, लोहे, काँच का सामान, रबर का सामान, दवाइयाँ आदि हैं।

नीमच केन्ट में अँग्रेजों की छावनी होने से बड़ी बड़ी इमारतें फौज के लिये बनी हुई है। ये दो साल पूर्व जन-शून्य थीं परन्तु आजकल लड़ाई के कारण यहां पंजाबी सैनिकों की भीड़ सी लगी हुइ है। इस कारण से नीमच कैंट का बाजार भी उन्नति पर है। सड़कों का प्रबन्ध भी ठीक है। इन सैनिकों की वजह से पाश्चात्य खेल जैसे हाकी, फुटबाल आदि के टूर्नामेन्ट्स हुआ ही करते हैं। जावद का दूध, घो, भी रोज साइकिल द्वारा यहां पहुँचाया जाता है। जिससे जावद में दूध घी आदि वस्तुएँ महँगी हैं।

अब रामपुरा दरवाजा और रह गया है। इस दरवाजे से भी सड़क गई है जो थोड़ी दूर जाकर नीमच रोड से मिल जाती है। इस सड़क के किनारे दो कपास के जोन तथा एक तेल का कारखाना बने हुये हैं जो आज कल तो बन्द हैं परन्तु सरदी तथा बसंत ऋतु में कार्य करने लग जाते हैं तथा प्रति दिन पांच बजे रात को प्रातःकाल इनका भोंपा जावद वासियों को जगा दिया करता है। इन दिनों में आस पास के देहातों को तिलहन, कपास आदि वस्तुएँ गाड़ी में खिंचे चले जाते हैं। म्युनिसिपल्टी के कर्मचारी जगह जगह एक एक पेटी लेकर घूमते हुये दिखाई देते हैं और आमदनी बढ़ाते हैं। जीनों का काम आरम्भ होते ही ऊँटों के झुंड के झुन्ड लकड़ी लदे हुये जीनों की ओर चले आते हैं।

हां! तो रामपुरा दरवाजे से निकलने वाली सड़क आगे मनासा होकर रामपुरा को जाती है जो इन्दौर स्टेट का बड़ा शहर है। रामपुरा यहां से सीधे मार्ग द्वारा ४० मील से भी अधिक दूर है परन्तु यह सिद्ध होता है कि जब यह दरवाजा बना था तब उन्नतिशील नगर इस दिशा में रामपुरा ही था।। तथा यहां के लोग इन (रामपुरा) शहर तक आया जाया करते थे। यही कारण है कि इस दरवाजे का नाम रामपुरा दरवाजा रक्खा गया परन्तु आज कल इस दरवाजे से जो० एन० आई० टी० कम्पनी की मोटर रोज प्रातः काल नीमच जाकर दोपहर को आती है तथा एक घंटे के बाद पुनः नीमच जाकर रात को आठ बजे वहां आकर विश्राम करती है। इस मोटर के चालू होने से मालवे से जावद आने वाले व्यापारियों को बड़ी सुविधा हो गई है।

आस पास का वर्णन करने के पश्चात् अब मुझे जावद खास का वर्णन भी शुरू कर देना चाहिये। हां ? तो जावद एक व्यापारिक मंडी है। आस पास के देहातों में होने वाला माल जैसे ज्वार, मक्का, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, उड़द, चावल, अरहर, तिल्ली अलसी, कपास, सनादि यहां के बाजार में मौसमानुसार बिकने को आते हैं। यहां हाल ही में एक गुड़ का कारखाना खोला गया है। इसलिये सर्दी के मौसम में असंख्य गाड़ियाँ आस पास के गाँवों से गन्ना ले लेकर आती हैं। शेष गन्ना केसरपुरा स्टेशन कुछ से कुछ मेवाड़ में करेड़ा स्टेशन पर तथा कुछ मालवे में 'जावरा' बिकने को जाता है। कारण कि यहां शक्कर के कारखाने बन गये हैं। नाज सारा "धान मंडी" बाजार में जो गांव के पूर्व दिशा में तथा लक्ष्मी नाथ के चौक के सामने जाने से मिल सकता है। इकट्ठा होता है। सर्दी के मौसम में तथा बसंत ऋतु में यहां की धान मन्डी गरम रहती है। फसलें रबी और खरीफ की होने से साल में उक्त वर्णित दो ही बार खास कर बिकने को आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि हर फसल के वक्त राज्य निर्मित भूमि कर वसूली का अड्डा रहने से तथा साहूकारों का लेनदेन होने से दीन कृषक अपना अपना माल घर में आते ही यहां बेचने को चले आते हैं। इनके चेहरों पर इन दिनों चमक तथा प्रसन्नता छाई रहती है। परन्तु यहां के व्यापारियों की वाक्चातुरी के जाल में फँस कर जब सस्ते दामों पर माल बेच चुकते हैं और सब कर चुका कर कंगाल बन जाते हैं तब फिर मुर्दाई छा जाती है। इन दिनों व्यापारी लोग अपना गल्ला भर लेते हैं। फिर महँगे दामों विदेशों को भेजकर माला-माल हो जाते हैं। इस प्रकार इसे केन्द्रस्थ-मंडी कहा जाय तो कोई अत्योक्ति नहीं होगी। दीन कृषक इसके बदले में बिनोले, तेल, कपड़ा, लोहा, चूड़ियां लकड़ी के पाट तथा नमक खरीद कर ले जाते हैं। इस गाँव के चारों ओर कच्चे मार्ग इन देहातों तक गये हुये हैं।

यह गाँव एक टेकरी (पहाड़ी) पर बसा हुआ है। और इसके दो ओर एक नाला, जो रामपुरा दरवाजा तथा खोर दरवाजों की सड़क पर बनी हुई पुलियाओं के नीचे होकर बहता है और आगे जाकर गम्भीरी नदी में मिल जाता है। यहां की बस्ती अधिकतर कृषि-प्रधान है। शिक्षित लोग अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं. परन्तु धाकड़, वैश्य, ब्राह्मण, सिलावट, सुनार, मोची, छिपे, बोहरे, गाड़री (ग्वाले), तेली आदि अधिक हैं। किसानी बस्ती होने से यहां की दूकानों में सादा माल ही बिकता है। जैसे मोटा कपड़ा, किसानी जूते, साधारण रंग, कटलरी का सामान तथा लोहे का सामान, तम्बाकू, नमक आदि। परन्तु दिन ब दिन शहर वासियों का रहन-सहन फैशन की ओर झुकने से हर बात में नवीनता आती जा रही है। फिर भी धर्मावलंबी विशेष होने से तथा पुराने विचार होने से मकानों की बनावट वायु रहित है तथा मोरियों के बनिस्बत पालों तथा कुंडों में सड़ा जल, पेशाब आदि इकट्ठा करके सड़कों पर फेंकने का आम रिवाज सा बन गया है। इसी कारण यहां की गलियां खरंजेदार होने पर भी पेशाब तथा टट्टी से गन्दी ही रहती हैं। परन्तु कहीं कहीं वैज्ञानिक ढंग के वायुदार मकानात बन रहे हैं। वह भी इसलिये कि यहां तहसीलदार, न्यायाधीश आदि जैसे शिक्षित पुरुष रहने लगे हैं। यहाँ पर सर्वोत्तम एवं पुरानी इमारत, 'आबाजी की हवेली' तथा "सिपाणी की हवेली" है। ये कला की दृष्टि से तो इस शहर भर में अपना मस्तक सब से ऊँचा रखती है। पहिली इमारत तो भग्नावस्था में है परन्तु दूसरी इमारत अब भी तल घर लिये ज्यों की त्यों खडी है। तीसरी 'श्रीराम बलदेव जी की हवेली' भी प्रेक्षणीय है।

यहां पर दो मन्दिर मुख्य हैं। पहिला गांव के दक्षिण की ओर लक्ष्मीनाथ मन्दिर के नाम से विख्यात है तथा दूसरा खोर दरवाजे से उत्तर पश्चिम की ओर है जिसे 'भूतेश्वर महादेव का मन्दिर' कहते हैं। पहिले मन्दिर के नाम से लक्ष्मीनाथ का चौक भी यहां विख्यात है। नीमच दरवाजे से अठाने दरवाजे तक एक लंबा बाजार दक्षिण से उत्तर को लगा हुआ है।

यहां सरकारी अस्पताल, पाठशाला पुलिस स्टेशन, तहसील, पोस्टआफिस, डाक बँगला आदि का प्रबन्ध है। एक बात और है वह है यहाँ की छपाई जो चारों ओर प्रख्यात है। चूड़ियों का काम भी यहाँ विशेष होता है। परन्तु यह काम मुसलमानों के हाथ में है। ये लोग अठाने दरवाजे की ओर रहते हैं। इसलिये चूड़ियों तथा छपाई का काम भी उधर ही होता है।

यहाँ के लोगों की भाषा 'मेवाड़ी-मालवी' मिश्रित है। उदाहरणार्थ नीचे कुछ वाक्य लिखे जाते हैं:—

वह न मालूम कहाँ 'गया' इसके बदले में वूनी मालम कठेग्यो। इसी को मेवाड़ी में 'वू मालम जी खाणा खड़े ही ग्यो, इन तीन वाक्यों में एक दूसरे का एक न एक शब्द अपभ्रंश रूप में आ गया है।

इस प्रकार 'जावद' का भूगोल है। परन्तु इतिहास में इसके कितने पृष्ठ रंगे जावेंगे यह कार्य तो पुरातत्व वेत्ताओं के हाथ में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध काल में जहाज़ों का उपयोग

अपने मार्ग में शान्ति के समय में जहाज़ों को कोई बिशेष बाधा नहीं पड़ती है। युद्ध काल में शत्रु के हवाई जहाज और पनडुब्बे जहाज़ लगातार व्यापारी जहाज़ों को डुबाते रहते हैं। आज कल अटलाँटिक महासागर में जहाज़ों के डूबने का यह फल होता है कि बटेविया जैसे दूरस्थित बन्दरगाह की गोदामों में भी सामान की निकासी न होने से भीड़ लग जाती है।

जर्मन लोगों का कथन है कि अप्रैल १९४१ तक उन्होंने ब्रिटेन के एक करोड़ टन से ऊपर जहाज़ डुबा दिया है। अँग्रेज़ों का कथन है कि अप्रैल सन् १९४१ तक उनके केवल ६ लाख टन के जहाज डुबाये गये हैं। युद्ध आरम्भ होने के प्रथम ६ मासों में एक लाख नब्बे हजार टन के जहाज़ प्रति मास डुबाये गये थे। स्कैण्डीनैविया के युद्ध काल में जहाज़ों का डुबाया जाना कुछ कम हुआ था परन्तु मई मास में फिर एकाएक बृद्धि हो गई थी। जुलाई से १९४० ई० के अंत तक जर्मन सबमरीन योरुप के पश्चिमी तट के जहाजी अड्डों से आक्रमण करते रहे। और अप्रैल से प्रतिमास तीन लाख ९० हजार टन के जहाज डूबते रहे। जहाजों के डूबने के कारण संसार के जहाजों में कमी हो गई है।

१९३९ ई० में जब युद्ध आरम्भ हुआ तो संसार में १०० टन से ऊपर वाले व्यापारिक जहाजों की मात्रा ६ करोड़ ६९ लाख टन (अमरीका की बड़ी झीलों के जहाजों को छोड़ कर) थी। २० मास के पश्चात् धुरी राष्ट्रों के प्रभुत्व वाले देशों को छोड़ कर संसार में व्यापार के लिये केवल ५ करोड़ २० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे। युद्ध तथा ब्लाकेड (घेरे) के कारण व्यापारिक कार्य कुछ रुक गये थे। परन्तु ग्रेट ब्रिटेन के युद्ध की तयारी के कारण फिर भी जहाजों की बड़ी आवश्यकता थी। इसलिये जहाजों की कमी प्रतीत हुई।

जब से युद्ध आरम्भ हुआ है तब से ब्रिटिश अधिकार वाले स्थानों में जहाजों की संख्या अधिक हो गई है। जून १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड में २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगभग २ करोड़ २८ लाख टन के जहाज ठहरे थे। अँग्रेजों ने जर्मनी तथा इटली के ४ लाख टन के जहाज पकड़े हैं। योरुप के देशों को अधिकार में करने से जर्मनी को ७० लाख टन के जहाज मिले हैं। ८ लाख टन से अधिक जहाज संयुक्त राष्ट्र अमरीका से योरुप आये। युद्ध के प्रथम २० मासों में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर लगभग १६ लाख टन के जहाज तयार किये गये। कुछ तटस्थ राष्ट्रों के जहाज भी ब्रिटिश की सहायता के लिये काम कर रहे थे। यदि डूबे हुये जहाजों की संख्या कम कर दी जावे तो गत अप्रैल मास में ब्रिटेन के पास २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे जो युद्ध आरम्भ होने के पहिले की मात्रा से अधिक हैं।

इस संख्या के सभी जहाज व्यापार में काम नहीं कर रहे हैं। इनमें से कुछ तो टूटे फूटे हैं और कुछ इतने छोटे हैं। जो समुद्र पार नहीं जा सकते हैं। कुछ सवारी ले जाने वाले जहाज भी हैं। डाकों पर मरम्मत के लिये इंगलैण्ड के १५ लाख टन के जहाज पड़े हैं।

रायल नैवी ने काफी व्यापारिक जहाज युद्ध में प्रयोग करने के लिये ले लिये हैं। १९४० ई० तक इँगलैण्ड में ४५ लाख टन के व्यापारिक जहाज सेना ने अपने हाथ में ले लिये थे। अफ्रीका तथा पूर्व की ओर लड़ाई बढ़ने के कारण और अधिक व्यापारिक जहाज सेना में लिये गये और इस प्रकार सेना में लिये जाने वाले जहाजों की मात्रा ७० लाख टन हो गई है।

इँगलैण्ड के पास व्यापार के लिये एक करोड़ ६० लाख या एक करोड़ ८० लाख पौंड के जहाज हैं। संयुक्त राष्ट्र के सिवा संसार के दूसरे भागों में इँगलैण्ड के २० टन के व्यापारिक जहाज व्यापार में लगे हैं। अब यह संख्या घट कर बहुत कम हो गई है। क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने अपने व्यापारिक जहाज़ वापस बुला लिये हैं। फिर भी चीन, पूर्वी द्वीप समूह और अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका में अँगरेज़ी जहाज़ हैं। बृटेन का सामान पहुँचाने में लगभग एक करोड़ ५० लाख टन के जहाज़ लगे हैं। आज युद्ध काल में सामान का पहुँचना बड़ा कठिन हो रहा है। पथरथाक सेना के कारण जहाज़ों को अपनी चाल कम करनी पड़ती है। वह ६ नाट प्रति घन्टे की चाल से ही चल सकते हैं। फिर जब वे इँगलैण्ड के बन्दरगाहों पर पहुँचते हैं तो बम वर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वह अपने सामान भी नहीं उतार सकते हैं। उन्हें ऐसे बन्दरगाहों पर शरण लेनी पड़ती है जहां बम्ब गिराये जाने की सम्भावना न हो। सामान उतारने में भी काफी समय लग जाता है क्योंकि केवल दिन में ही सामान उतारा जाता है।

जिस मात्रा में इस समय जहाज़ डुबाए जा रहे हैं उस मात्रा में अँग्रेज़ लोग ज़हाज नहीं तयार कर सकते हैं। २७ मई १९४१ ई० को प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्ट ने घोषणा करते हुये कहा था कि वर्तमान समय में नाज़ी लोग जितने जहाज डुबा रहे हैं। उसका ½ भाग भी बृटेन के अन्दर तयार नहीं हो सकता। इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका मिल कर डुबाये जाने वाले जहाज़ों की मात्रा के आधे से भी कम जहाज़ तयार कर सकते हैं। इँगलैंड में प्रति साल लगभग दस लाख टन के जहाज़ तयार किये जाते हैं। बम्ब वर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के कारण जहाज़ बनाने का काम पूर्ण रूप से नहीं हो सकता है अब की साल १५ लाख टन के जहाज़ इंगलेंड में तयार करके समुद्र में उतारे गये हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में बहुत कम जहाज़ तयार किये जाते हैं। १९३८ ई० में ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे देशों में २८,००० टन के जहाज बने और समुद्र में उतारे गये। कनाडा हांग कांग में जहाज बनाने के लिये इंगलैण्ड ने मांग पेश की है। आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड और दक्षिणी अफ्रीका में जहाज़ बनाने के लिये डाक बनाये जा रहे हैं फिर भी ब्रिटिश साम्राज्य में अधिक से अधिक इस वर्ष एक लाख टन के जहाज़ तयार हो सकेंगे। इंगलैंड के अन्दर अधिक से अधिक डुबाये जाने वाले जहाज़ों का केवल १ भाग तयार किया जा सकता है। पूर्व की ओर जर्मन पराजय होने पर शायद कुछ जहाज़ खाली हो सकें। परन्तु अफ्रीका और हिन्दमहासागर की रक्षा करने के लिये वहां जहाजों का रखना बृटेन के लिये आवश्यक होगा।

जर्मनी, इटली और उनके अधिकार में हो गये देशों के जो जहाज पश्चिमी गोलार्द्ध के तट पर हैं उनका प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वह सब मिलकर लगभग १० लाख टन के ही होगें।

जापानी जहाजी बेड़े का ७५ प्रतिशत भाग जो विदेशी व्यापार में लगा था वह अब एशिया के समुद्र में काम कर रहा है बहुत थोड़े जापानी जहाज विदेशों में शेष रह गये हैं और जो हैं भी वह जापान के लिये आयात का सामान ले जाने में लगे हैं। जापान के व्यापार में नार्वे और हालैंड के जहाज़ लगे हैं। यदि उन्हें वापस बुलाया जाता है तो जापान के रुष्ट हो जाने की सम्भावना है। राजनैतिक कारणों के कारण इंगलैंड और अमरीका जापान को अधिक रुष्ट करना नहीं चाहते हैं।

जब १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने तटस्थता का नियम बनाया तो उसने ५ लाख टन के जहाज़ चलने से रोक दिये थे अब वह दूसरे मार्गों में लगे हैं।

१९३९ में अमरीका के जहाज़ी कमीशन ने ८ लाख टन के जहाज़ कनाडा और इङ्गलैंड के हाथ बेचने की आज्ञा निकाली थी। उनसे इङ्गलैंड को कुछ सहायता मिली थी साथ ही अमरीका के साढ़े चार लाख टन के जहाज़ जो दक्षिणी अमरीका तथा योरुप में थे उनसे भी सहायता प्रथम डेढ़ साल के युद्ध में मिली थी।

फरवरी सन् १९४१ ई० में अमरीका के जहाजी कमीशन के अफसरों ने कहा, "अमरीका के जहाज दूसरे देशों को अब भेजना सम्भव नहीं है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में जहाजों की बहुत कमी हो रही है।"

१९३६ ई० से संयुक्त राष्ट्र ने जहाज बनाने वाली योजना के अनुसार नये जहाज बनाने आरम्भ किये हैं। बृटेन ने ६० सामान ले जाने वाले जहाजों (प्रत्येक जहाज एक हजार टन का) के बनाने की मांग अमरीका के सामने रक्खी है। इस प्रकार अधिक शीघ्रता करने पर १९४१ में १० लाख टन से अधिक के जहाज और १९४० में २३ लाख टन के जहाज़ संयुक्त राष्ट्र में तयार हो सकेंगे।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट ने अप्रैल मास में घोषणा की है कि वह ५९ नये प्रकार के जहाज़ और २१२ और दूसरे जहाज़ इंगलैंड के लिये तयार कर रहे हैं परन्तु यह जहाज़ १९४२ ई० के पहले नहीं तयार किये जा सकते। इनमें से अधिकांश जहाज़ १९४३ ई० में तयार हो सकेंगे। अमरीका को जहाज़ों के तयार करने में बड़ा परिश्रम उठाना पड़ेगा।

नाज़ी सबमेरीन (पनडुब्बे जहाज) इतने अधिक जहाज़ डुबा रहे हैं कि उनका सामना करने के लिये अमरीका और इङ्गलैंड को या तो और अधिक संख्या में जहाज़ तयार करने पड़ेंगे या डुबाये जाने वाले जहाज़ों की संख्या किसी प्रकार कम करनी होगी।

डूबते हुये जहाजों की समस्या की शीघ्रता शीघ्र तय करने की आवश्यकता है नहीं तो फिर और अधिक कठिनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा संकट पड़ने की सम्भावना है। जहाज़ों की कमी हो जाने के कारण संयुक्त राष्ट्र को दक्षिण अफ्रीका से सन, पाट, चमड़ा, शाक के तेल और दूसरे कच्चे सामानों के मँगाने में बड़ी रुकावट पड़ रही है। युद्ध के लिये जो सामग्री इकट्ठी करनी आवश्यक है उसमें भी बाधा पड़ रही है। यदि यही दशा चलती रही तो भविष्य में युद्ध-सामग्री को बहुत कमी हो जावेगी। जहाज़ों के किराये बढ़ जाने से घरेलू प्रयोग की वस्तुओं का मूल्य संयुक्त राष्ट्र में बढ़ गया है जिससे संयुक्त राष्ट्र की रक्षक नीति के भंडाफोड़ हो जाने की संभावना प्रतीत हो रही है।

इस बात को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति महोदय भली भांति समझ रहे हैं इसी कारण उन्होंने १० फरवरी १९४१ ई० को संयुक्त राष्ट्र के व्यापारिक विभाग के सभापति ऐडमिरललैंड को पत्र लिख कर बतलाया था कि संयुक्त राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की कितनी अधिक आवश्यकता है और उनसे सलाह मांगी थी कि अधिक से अधिक कितने व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग रक्षक नीति से किया जा सकता है व्यापारिक कमीशन के सभापति ने शीघ्र ही कुछ जहाज़ रवाना किये थे परन्तु फिर भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाई थी। इसी कारण पूर्वी द्वीप समूह तथा फिलीपाइन द्वीप को सेना ले जाने वाले जहाज़ों के लिये लौटते समय युद्ध सामग्री संयुक्त राष्ट्र अमरीका को लानी पड़ी थी। मई १९४१ ई० तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ४ लाख टन के सवारी ढोने वाले जहाज़ और कुछ व्यापारिक जहाज़ (जिनकी संख्या अप्राप्त है) सेना द्वारा ले लिये गये हैं। जिस भाव से व्यापारिक जहाज़ संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना विभाग द्वारा जल सेना में मिलाये जा रहे हैं उससे व्यापारिक जहाज़ों के मध्य जटिल समस्या के उत्पन्न हो जाने की पूर्ण सम्भावना प्रतीत हो रही है।

३० अप्रैल १९४१ ई० को प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मैरीटाइम कमीशन को लिखा कि २० लाख टन के जो व्यापारिक जहाज़ मौजूद हैं उनसे प्रजातंत्रिक राष्ट्रों की सहायता सम्भवतः अधिक से अधिक पहुंचाई जावे। शीघ्र ही २५ टैंकर और भेजे गये। यह टैंकर दक्षिणी अमरीका से तेल संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी तट को बन्दरगाहों पर ले आते हैं और वहां से वह तेल इङ्गलैंड को ब्रिटिश जहाज़ों द्वारा भेजा जाता है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने यहां के धुरी राष्ट्रों के जहाज़ों के प्रयोग करने की बात भी सोच रहा है। वह दक्षिणी अमरीका के बन्दरगाहों पर बेकार पड़े जहाज़ों को खरीदने की योजना भी कर रहा है। युद्ध आरम्भ होने से १९४० ई० तक में संयुक्त राष्ट्र ने अपने तटीय व्यापारिक जहाज़ों में से ४ लाख टन के जहाज़ बाहर किये और उन्हें इङ्गलैण्ड को सामान पहुँचाने के कार्य में लगाया। जहाज़ों की कमी होने के कारण ही संयुक्त राष्ट्र के सभापति ने कांग्रेस से अपील की थी कि वह टेक्स तेल की खानों से मध्यवर्ती अटलांटिक के तेल साफ करने वाले कारखानों तक लोहे की नालियाँ लगवाने का बिल स्वीकार कर ले जिससे कुछ और जहाज खाली हो जावें।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के तटीय व्यापारिक जहाज़ों तथा बड़ी झीलों के जहाज़ों और भीतर की ओर चलने वाले व्यापारिक जहाज़ों में कमी करने से संयुक्त राष्ट्र को और अधिक रेलवे लाइनें तथा सड़कें बनवानी पड़ेंगी। इसलिये संयुक्त राष्ट्र को और अधिक फौलाद तयार करना होगा। किराये में भी अधिकता हो जावेगी साथ ही घरेलू सामान का मूल्य भी बढ़ जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र के अन्दर अब और अधिक व्यापारिक जहाज़ खाली नहीं किये जा सकते जिनसे इङ्गलैन्ड आदि देशों की सहायता की जाय यदि और जहाज़ विदेशी मार्गों से हटाये जाते हैं तो दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसलिये संयुक्त राष्ट्र ने तय किया है कि जो सामान उसे खरीदना है वह निकटतम स्थानों से मंगावेगा। इसी कारण (किराया बढ़ जाने के कारण भी) से फिलीपाइन से संयुक्त राष्ट्र को चीनी जानी बन्द हो गई है। संयुक्त राष्ट्र ने यह बात भी सोची है कि एशिया से सामान खरीद कर वह अपने पश्चिमी तट पर उतारेगा और वहाँ से फिर रेलों द्वारा वह सामान पूर्व की ओर पहुँचाया जावेगा। इस प्रकार व्यापारिक जहाज़ों का काम घट जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र को रबर, सन, पाट, मैंगनीज़, केला, काफी, चाय और मसाला आदि सामान विदेश से मंगाना पड़ता है। इन सामानों के लाने वाले जहाज़ों को छोड़ कर शेष बचे हुये व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग जिस प्रकार सोचा जाय किया जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्र की जहाज़ी नीति उसकी रक्षक नीति पर ही नहीं निर्भर है। यद्यपि रक्षक नीति, जहाजी नीति का एक भारी अंग है। जहाज़ी नीति के आदर्श को पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये संयुक्त राष्ट्र को राजनैतिक समस्याओं की ओर भी ध्यान देना होगा उसे समीपवर्ती राष्ट्रों के साथ मैत्री रखनी होगी, चीन की सहायता करनी होगी, संसार के दूसरे देशों को भोजन सामग्री पहुंचानी होगी और जहाज़ों पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त करना होगा जिससे व्यापारिक तथा आर्थिक युद्ध में सहायता मिल सके।

यदि संयुक्त राष्ट्र इङ्गलैण्ड की सहायता करना चाहता है और युद्ध में भी नहीं आता तो भी तटस्थता नियम के अनुसार अपने जहाज ब्रिटिश अथवा अन्य दूसरे देशों में लिखा पढ़ी करके भेज सकता है। वह इङ्गलैण्ड को ही चार्टर द्वारा जहाज़ दे सकता है जिससे कि वह युद्धक्षेत्र के बाहर इङ्गलैण्ड का काम कर सकें।

कुछ समय व्यतीत हुए सर आर्थर सल्टेर ने कहा था कि "मुझे पूर्ण आशा है कि अभी अमरीका में इतने जहाज़ बाक़ी हैं कि उनसे अमरीका तथा इङ्गलैण्ड के मध्य जहाज़ों का पुल बनाया जा सकता है और जब तक इनमें और अधिक कमी होगी तब तक इङ्गलैण्ड तथा अमरीका मिलकर जहाज़ बनाने लगेंगे।" हम नहीं कह सकते कि यह बात कहाँ तक सम्भव तथा सत्य है फिर भी जहाँ तक इंगलैण्ड तथा अमरीका के मिल कर जहाज बनाने की योजना है वहाँ तक तो यह बात अवश्य ही कथन योग्य है कि यदि इस कार्य में अमरीका के पूँजीपतियों की सहायता ली जाती है तो वह अवश्य ही अपनी सहायता के लिये कुछ न कुछ विशेषाधिकार मांगेंगे जिसकी स्वीकृति स्वतंत्र नीति में असम्भव है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मर्चेण्ट मरीन एक्ट की ९०२ धारा के अनुसार मैरीटाइम कमीशन अथवा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति को अधिकार दिया गया है कि वह आवश्यक समय पर राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की मांग कर सकते हैं। यदि अमरीका के सभी व्यापारिक जहाज़ों की मांग की जावे तो फिर उसके मार्गों, सामान और चलने का निश्चय सरकार को करना होगा। जहाज़ों के मालिकों को केवल हर्जाने की रकम दी जावेगी जिसका निश्चय पहले ही कर लिया जावेगा। जहाज़ों के किराया का निश्चय भी सरकार ही करेगी।

अमरीका के जहाज़ों की मांग पर बहुत से प्रश्न उठ खड़े होते हैं। १—जहाज़ों के मालिकों का किस भाव से चुकता किया जावेगा? भिन्न भिन्न सरकारी विभागों की जहाज़ी मांग किस प्रकार पूरी की जावेगी? रक्षक आवश्यकता के समय कूटनीति का क्या प्रभाव होगा? क्या जहाज़ों के मालिकों को जहाज़ों में नौकरी दी जा सकेगी? जहाज़ी मज़दूरों को जहाज़ में कितना स्थान दिया जावेगा? यह सभी प्रश्न बड़े कठिन हैं परन्तु फिर भी जहाज़ों की मांग वाली नीति बड़ी कुशल है क्योंकि इसके अनुसार सभी जहाज़ सरकार के अधिकार में होंगे और फिर अमरीका की सरकार अपने आयात निर्यात और राजनैतिक परिस्थिति के अनुसार जहाज़ों को नियत संख्या में कार्य में लगा सकेगी।

अमरीका और इङ्गलैण्ड के व्यापारिक जहाज़ी विभागों के मध्य सहयोग होना बड़ा आवश्यक है। वर्तमान समय में अमरीका अपने जहाज़ों को अपने काम से छुट्टी देकर ब्रिटेन के कार्य में लगा रहा है। परन्तु इससे अच्छी नीति समस्त अमरीकन जहाज़ों की संगठित मांग की है। ब्रिटिश अमरीकन जहाज़ी सहयोग की नीति से अन्तर्राष्ट्रीय जहाज़ी सहयोग के बीज पड़ जावेंगे और फिर संसार के सभी जहाज़ों को एक नीति पर सम्भव हो सकेगा क्योंकि युद्ध के पश्चात भी बहुत सी कठिन समस्यायें उत्पन्न होंगी।

आधुनिक युग में जहाजों की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। संसार का काम बिना जहाजों के प्रयोग के चलना असम्भव है। इसी कारण जर्मनी इङ्गलैण्ड के अधिक से अधिक जहाजों को डुबाने का प्रयत्न कर रहा है। सामुद्रिक जहाज कई प्रकार के होते हैं। सामान ले जाने वाले जहाज़ लड़ाका जहाज़ों से भिन्न होते हैं। साधारण रूप के सामुद्रिक जहाज़ों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वह जहाज़ है जो सामान और सवारी ढोने वाले हैं दूसरे लड़ाका जहाज़ हैं। लड़ाका जहाज़ भी कई प्रकार के होते हैं। यह जहाज़ युद्ध-अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण रहते हैं। इनमें तोपें आदि लगी रहती हैं। स्थली युद्ध की भांति सामुद्रिक युद्ध भी होता है। सामुद्रिक युद्ध में स्थली युद्ध से अधिक हानि होती है। युद्ध काल में व्यापारिक तथा सवारी जहाज़ सभी खतरे में रहते हैं। सभी जहाज़ों को यात्रा करने में अचानक संकट पड़ने की सम्भावना रहती है इसीलिये युद्ध काल में अधिक उपयोगी लादने वाले जहाज़ के साथ पथ-रक्षक सेना चलती है जो आक्रमण के समय सहायक होती है। आज यदि इङ्गलैण्ड के पास जहाज़ी शक्ति न होती तो शायद उसे जर्मन सत्ता के सामने अपना सिर झुका देना पड़ता परन्तु जहाज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति होने के कारण ही वह जर्मनी का शिकार नहीं हो सका और उसके छक्के छुड़ाया है। सामुद्रिक जहाज़ों द्वारा ही युद्ध काल में संसार के एक भाग से दूसरे भाग को युद्ध के लिये सामग्री तथा रसद पहुँचाना सम्भव हो रहा है। गत महायुद्ध में इङ्गलैण्ड को सामुद्रिक शक्ति होने के कारण विजय प्राप्त हुई थी। आज भी उसे उसी शक्ति के कारण विजय प्राप्त होने की आशा है। यदि इङ्गलैंड के पास सामुद्रिक शक्ति न होती तो वह भूखों मर जाता लड़ाई का कहना ही क्या है।

जब तक किसी दूसरी ओर विशेष उन्नति नहीं होती तब तक संसार में उसी जाति का पताका फहराता रहेगा जिसके पास अधिक से अधिक समुद्री जहाज़ होंगे।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल

रूस के विदेशी दफ़्तर को नार्कोमिण्डेल और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल को कमिंटर्न कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र सोवियट रूस के साम्यवादी दल का ध्येय क्रान्ति द्वारा संसार का सोवियट सामाजिक प्रजातांत्रिक संघ शासन की स्थापना करना है। ऐतिहासिक रूप से उनके कार्य हम तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम काल १९०३ से १९१७ के मार्च क्रान्ति तक का है जिससे उसने जार शाही का अंत किया। दूसरा समय मार्च से नवम्बर १९१७ तक का है इस काल में साम्यवादी दल ने रूस से साम्राज्यवादी दल का अंत किया और साम्राज्यवादी युद्ध से रूस को अलग किया। नवम्बर १९१७ ई० की क्रान्ति के बाद से उसका तीसरा काल आरम्भ होता है जब कि उसने रूस में एकाधिपत की स्थापना की और उसे संसार के दूसरे देशों से साम्राज्यवाद को निकालने में प्रयोग किया। दूसरे देशों के साम्राज्य के अंत करने में रूस के साम्यवादी दल ने परराष्ट्र के किसानों तथा कारखानों के मजदूरों की शरण ली। उसे साम्राज्यवाद के अधिकार देशों और कालोनियों (बस्तियों) से भी सहायता मिली।

रूस के साम्यवादी दल पर व्यवहारिक राजनीति का प्रभुत्व है। वह अपनी संसार क्रान्ति वाली नीति को समय समय पर बदलना भली भांति जानता है जिससे उसकी नीति रूस की भीतरी स्थिति तथा दूसरे शक्ति शाली राज्यों की बदलती दशा के साथ समान रूप से चलती रहे। पर राष्ट्र सम्बन्धी कार्य चलाने के लिये रूसी साम्यवादी दल के दो खास अंग हैं। १—नार्कोमिण्डेल (पर राष्ट्र दफ्तर) यह संसार के दूसरे देशों से साधारण सबन्ध रखता है और इसने रूस में समाजवाद की स्थापना के समय क्रान्ति का प्रचार किया। २—कमिंटर्न (अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था) इस ने रूस के बाहर सब कहीं वर्ग-युद्ध फैलाया, साम्राज्यशाही युद्ध को गृह-युद्ध में बदला और संसार क्रान्ति के अभिप्राय को उन्नतिशील बनाया।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल के झगड़े को समझने के लिये हमें उनकी साधारण योजना को कूटनीति और कलाओं की घटनाओं के उपायों का अध्ययन करना पड़ेगा। यद्यपि उनके उपायों में भिन्नता है फिर भी उनका ध्येय एक ही है। बोल्शेविक दल ने अपने विदेशी दफ़्तर की सहायता से दूसरे देशों की सरकारों को संतुष्ट रखा और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था द्वारा उन्हीं सरकारों के उलट देने का प्रयत्न किया। इस प्रकार बोल्शेविकों ने संसार-राजनीति में अपने लिये विशेष अधिकार के स्थान बना लिये। बोल्शेविकों को संसार के सभी क्रान्तिकारी तथा उदार आदर्शवादी दलों की सहायता मिल गई।

रूस ने परराष्ट्रों में अपनी नीति का प्रचार चार उपायों से किया।

१९१७-१९२१ ई० तक की सांसारिक क्रान्ति की कला

जब ८ नवम्बर १९२१ ई० को बोल्शेविक दल ने अपनी शान्ति-घोषणा किया तो उन्हों ने रूस में किसी दूसरे राष्ट्र को नहीं मिलाया और न किसी से किसी प्रकार का हर्जाना लिया। वह स्वयम अपना निर्माण करने में लगे रहे। उनको आशा थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यवादी युद्ध गृह-युद्ध में परिवर्तित हो जावेगा जिससे संसार-क्रान्ति स्वयम् उत्पन्न हो जावेगी। इसी लिये ३ मार्च १९१८ ई० को जब रूस ने ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की सन्धि जर्मनी के साथ किया तो लेनिन ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य साधन रूसी वैदेशिक दफ़्तर था। जुलाई १९१८ ई० को रूसी वैदेशी कमिश्नर ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य कार्य निर्धन तथा मजदूर वर्ग की सहायता करना है। उसी नीति के अनुसार यूक्रेन के जर्मन सैनिकों के मध्य लाखों की संख्या में नोटिसें बांटी गईं।

मार्च १९१९ ई० में लेनिन ने कमिंटर्न नामक संस्था स्थापित किया और उसने रूसी 'वैदेशिक दफ़्तर के प्रचार कार्य को अपने हाथ लेलिया। कमिंटर्न संस्था में व्यवसायी क्रान्तिकारी लोग हैं। उसमें एक शासक कार्यकारिणी समिति है जो कमिंटर्न कांग्रेस के प्रस्ताव तथा लेख बनाती है। यह समिति रूस की साम्यवादी दल के अधिकार में है। रूसी साम्यवादी दल कार्यक्रम तयार करता है। वह कार्यकारिणी समिति के सामने आता है और फिर वहां से संसार के सभी साम्यवादी दलों को भेजा जाता है। समाजवादी दल की आशाओं तथा व्यवसायी क्रान्तिकारी लोगों की हिंसात्मक युद्धकारी भावों की सहायता लेकर क्रान्ति को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देना था। इसका कार्यक्रम का एक अंग यह भी था कि समस्त समाजवादी संसार का नैतृत्व रूस के हाथ में आ जाय। इसी कारण संयुक्त मोर्चे की ओर ध्यान दिया गया और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय सभा करने की व्यवस्था की गई।

१९१७-२१ ई० तक क्रान्ति की लहर बराबर चलती रही। उस समय रूसी वैदेशिक दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल में किसी प्रकार का मतभेद न था। रूसी वैदेशिक नीति के अनुसार बाल्टिक राज्यों और पोलैंड के साथ १९२० ई० में संधि की गई परन्तु रूमानिया की बेसाबिया प्रान्त की मांग को रूस ने ठुकरा दिया। सुदूर पूर्व की ओर जापान और रूस के मध्य एक छोटा राज्य बनाया गया जिसकी राजधानी चीता बनाई गई। १९२१ ई० के अंतिम काल तक रूस की क्रान्तिकारी लहर में क्षीणता आ गई। रूस में विदेशी मध्यवर्तन का अंत हो गया। रूस खास में गृह-युद्ध छिड़ गया साथ साथ वहां काल पड़ गया और महामारी आदि की बीमारियाँ फैल गईं। युद्ध समय के साम्यवादी मत ने रूस के आर्थिक जीवन को एकाएक रोक दिया इस प्रकार रूस की नीति में परिवर्तन हो गया।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ थोड़े दिनों की संधि १९२१-२७

संसार में साम्यवाद के प्रचार तथा प्रसार के लिये आवश्यक था कि रूस को शक्तिशाली बनाया जावे। क्रान्ति की सफलता के पश्चात् ही रूस के साम्यवादियों को सोवियट रूस की नई व्यवस्था की रक्षा की चिंता उत्पन्न हो गई इसलिये उन्होंने अपने देश की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिये योजनाएँ बनाईं। सब से पहले रूस में साम्यवाद को व्यवहारिक स्वरूप देने की व्यवस्था की गई। औद्योगिक तथा आर्थिक विकास के लिये उसे दूसरे देशों की सहायता तथा सहयोग की आवश्यकता पड़ी। इस प्रकार पूंजीवादी देशों के साथ उसे अपना सम्बन्ध स्थापित करना पड़ा।

लेनिन ने अपनी नवीन आर्थिक नीति के कार्यक्रम को १९२१ ई० में आरम्भ किया। वह निजी उद्योग तथा वैदेशिक धन से अपने देश का आर्थिक सुधार करना चाहता था। रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद देशों के साथ मित्रता का व्यवहार रखे और कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का भी पालन करें। १९२३ में सोवियट संघ का निर्माण हुआ। उसी साल संयुक्त राष्ट्र अमरीका को छोड़ कर शेष संसार के सभी शक्तिशाली देशों ने सोवियट रूस के राज्य को स्वीकार कर लिया।

सोवियट रूस के सम्बन्ध वाइमर जर्मनी के साथ बड़े अच्छे रहे। १९२२ ई० में रपालो की संधि हुई जिससे दोनों राष्ट्र एक मार्ग पर चलने लगे। ११२५ ई० में जर्मन रूसी व्यापारिक सन्धि हुई। इस सन्धि से पूंजी वादियों और समाज वादियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो गये। १९२६ ई० में जर्मनी ने रूस के साथ सन्धि किया और रूस को विश्वास दिलाया कि राष्ट्र-संघ की सेना जर्मनी होकर रूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रवेश नहीं करेगी। सेवरेस तथा लासेने की संधि में रूस ने टर्की का समर्थन किया। उसके बाद रूस ने अपने पड़ोसी राज्यों के साथ आक्रमणिक सन्धियाँ किया। जर्मनी ने रूस का खूब साथ दिया और उसे फ्रान्स तथा इंगलैंड का सामना करने का अस्त्र बनाया।

जब कि रूसी वैदेशिक नीति इस प्रकार परिवर्तित हो रही थी तो साम्यवादी क्रान्तिकारी दल पहले की भांति ही अपनी नीति पर चल रहा था। १९२२ ई० में लेनिन बहुत बीमार हो गया। वह बीमारी की दशा में भी साम्यवादी क्रान्तिकारी दल और रूसी वैदेशिक विभाग के मध्य मध्यस्त का काम करता रहा।

२१ जनवरी १९२४ ई० को लेनिन की मृत्यु हो जाने पर ट्राटस्की और स्टैलिन में रूस के नेतृत्व के लिये झगड़ा छिड़ा। १ अक्तूबर १९२४ ई० को स्टैलिन ने सर्वप्रथम घोषणा किया कि "मजदूर क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं और शान्तिप्रिय तथा प्रजातन्त्रवादी दोनों साधारण जनता को धोका दे रहे हैं। समाजवादी प्रजातंत्रवाद फैसिज्म का नर्म पक्ष है। फैसिस्ट लोग सो नहीं रहे हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम पहले ही उनपर अक्षेप करें जिससे समस्त मजदूर दल साम्यवाद की ओर मिल जावें। हमें जहां तक समाचार मिला है हम कह सकते हैं कि जर्मनी में फैसिस्ट मत निर्बल अवस्था में है। मेरा अपना मत है कि हमें जर्मनी की ओर से शान्त रहना चाहिये और उसे जगाना न चाहिये।"

साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने १९२३ ई० में पहले जर्मनी में क्रान्ति करने की आज्ञा दी थी और फिर उसे रोक दिया था। साम्यवादी क्रान्तिकारी दल तथा स्टैलिन जर्मनी में समाजवादी प्रजातन्त्रवाद का नाश करना चाहते थे और नाजी लोगों को शक्तिशाली बनाना चाहते थे क्योंकि उन्हें आशा थी कि वह साम्यवाद को शीघ्र ही जर्मनी में सफलता प्राप्त हो जावेगी। उस समय ग्रेटब्रिटेन रूस का मुख्य वैरी माना जाता था।

१९२५ ई० में स्टैलिन ने कहा कि पूंजीवाद की प्रगति शिथिल हो गई है और क्रान्तिकारी लहर उठ रही है। इस पर साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने चीन में बड़े वेग के साथ अपना कार्य आरम्भ किया। १९२४-२७ ई० तक कैण्टन-मास्को सन्धि रही। उसके अनुसार बोल्शेविक सलाहकार निकाल दिये गये और बहुत बड़ी संख्या में चीनी साम्यवादी क्रान्तिकारी फांसी पर लटका दिये गये। उसी पर रूस के साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने रूसी वैदेशिक नीति के कार्य में दखल दिया जिससे १९२७ ई० में रूस ने इंगलैंड और चीन से अपने सम्बन्ध तोड़ दिये।

नवम्बर १९२७ ई० तक ट्राटस्की और स्टैलिन का झगड़ा बहुत बढ़ गया था। उस पर ट्राटस्की रूस से निकाल दिया गया। बोल्शेविकों ने अनुभव किया कि क्रान्तिकारी लहर के कम होने और पूंजीवाद के जड़ के पकड़ने से रूस की आर्थिक दशा सुधर गई है इसलिये सोवियट नीति को समाजवादी नीति की ओर बढ़ाना आवश्यक है। कुछ वर्षों से तेजी के साथ कारखानों के बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा था। इस लिये रूस को अपनी नीति में भारी परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ रूस के समान सम्बन्ध १९२८-३४

१९२८ ई० में रूस ने अपनी नीति को बदल दिया। रूस की देशी नीति समाजवादी हो गई। रूस अपने देश में समाजवादी नीति का अनुसरण करना चाहता था और विदेशों में साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति चलना चाहता था। समाजवाद को संगठन करने तथा रूस ऐसे बड़े राज्य के कारखानों को उन्नति प्रदान करने के लिये आवश्यक था कि देश में शान्ति रखी जावे। इस लिये रूसी वैदेशिक नीति को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद राज्यों के साथ मित्रता का व्योहार रखे। रूस ने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना आरम्भ किया और विदेशी धन तथा कलाकारों को अपने देश में स्थान दिया। इस प्रकार प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के समाप्त होने पर रूस के कारखानों ने काफी उन्नति कर ली। रूस ने अपने सैनिक अड्डे बना लिये और वह विदेशी व्यापार स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

समाजवादी व्यवस्था के सफल होने पर रूस के विदेशी सचिव लिटविनाव ने फिर कई राष्ट्रों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आक्रमणिक सन्धि किया और जेनेवा की राष्ट्रसंघ की बैठक में उसने पूर्ण-निःशस्त्रीकरण की मांग की। १९३३ ई० में लन्दन की आर्थिक सभा में रूस ने भाग लिया। उसके बाद संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने भी सोवियट राज्य का स्वीकार कर लिया।

इस काल में साम्यवादी क्रान्तिकारी दल बिल्कुल चुप रहा। सब कहीं मजदूर वर्ग ने समाजवादी मातृभूमि की रक्षा का आवाज उठाई। जर्मनी में साम्यवादी लोग नाजी लोगों की भांति ही कार्य करते रहे।

जर्मनी के साथ काम करने में रूसी विदेशी विभाग तथा रूसी साम्यवादी दल में संघर्ष चलता रहा। विदेशी विभाग जर्मनी के समाजवादी राष्ट्र के साथ रहकर काम कर रहा था।

बोल्शेविक लोगों को नाज़ी लोगों को युद्ध की तयारी की सूचना भली भांति प्रकट थी। जब जनवरी १९३४ में साम्यवादी दल की १७वीं कांग्रेस हुई तब उसके समक्ष दल की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये स्टेलिन ने कहा था "युद्ध अवश्य ही क्रान्ति की पट्टी खोल देगा और कुछ राज्यों के पूँजीवाद की जड़ को उखाड़ने की चुनौती देगा"। स्टैलिन ने यह भी कहा था "हम विदेशी भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं चाहते हैं परन्तु साथ ही हम अपनी भूमि का एक इंच भाग भी दूसरों को नहीं लेने देंगे।"

जब हिटलर शक्तिशाली हुआ तो उसने साम्यवादियों और यहूदियों के साथ अत्याचार किया और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। वह दिन प्रति दिन यूराल तथा यूक्रेन पर धावा मारने के लिये अपना मत प्रकट करने लगा तो बोल्शेविकों को अपनी नीति बदलने की फिर आवश्यकता प्रतीत हुई। कारखानों तथा रक्षक अड्डों के बना लेने के कारण उस समय रूस की गणना पश्चिम के बड़े राष्ट्रों में होने लगी थी।

फैसिज़्म के विरुद्ध संगठित निश्चितता १९३४-३९

संगठित निर्भयता की नीति के अनुसार रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह राष्ट्र संघ में रूस के सम्मिलित होने की बातचीत करे। १९३५ ई० में रूस ने फ्रांस और चेकोस्लोवेकिया के साथ मित्रता की संधियां किया। लिटविनाव ने इटली के विरुद्ध रोक लगाने की नीति का ज़ोरों से समर्थन किया और टर्की जलसंयोजक को सैनिक बनाने वाली नीति का भी उसने समर्थन किया। उसने लोग की सभा में बड़े प्रभावशाली भाषण दिये परन्तु म्यूनिक की संधि के समय उसकी नीति के असफल होने का प्रमाण मिला और म्यूनिक सम्मेलन तथा परामर्श में रूस को सम्मिलित नहीं किया गया।

१९३५ ई० की कॉंग्रेस में साम्यवादी दल ने सभी स्थानों के राष्ट्रीय साम्यवादियों को आज्ञा दिया कि वह फैसिज़्म और युद्ध का विरोध करें। इसी नीति के कारण फ्रांस में ब्लम सरकार स्थापित हुई और स्पेन में गृह युद्ध छिड़ा। फ्रांस में पूँजीवाद और मज़दूर वर्ग के झगड़े के कारण फ्रान्सीसी प्रजातंत्र राज्य का अंत हो गया। प्रत्येक स्थान के साम्यवादी क्रान्तिकारी लोग "समाजवादी मातृभूमि की नीति का प्रचार करने लगे और फैसिस्ट नीति का विरोध करने लगे। साम्यवादी दल की रिपोर्ट में उस समय निकला कि ५ सालों के बीच में साम्यवादियों की संख्या ८ लाख ६० हज़ार से बढ़ कर १२ लाख हो गई है और साम्यवादी दल से मिली हुई संस्थाओं के सदस्यों की संख्या एक लाख दस हज़ार से बढ़ कर सात लाख छियालिस हज़ार हो गई है। स्टैलिन जैसे जैसे शक्तिशाली होता गया वैसे वैसे पुराने साम्यवादी दल के नेताओं का बलिदान चढ़ता गया और आख़िरकार स्टैलिन रूस का एकाधिपत बन गया परन्तु रूस की संगठित निर्भयता वाली नीति असफल हो गई। उसके शत्रु राष्ट्रों (जर्मनी तथा जापान) ने चारों ओर से उसका घेरा डाल दिया। इसलिये रूस को फिर अपनी नीति बदलने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

घेरा तोड़ने के लिये तटस्थता की नीति १९३९-४१

म्यूनिक सम्मेलन और उसके कुछ समय बाद तक रूस ने किसी प्रकार की भी आवाज नहीं उठाई। म्यूनिक सम्मेलन के बाद राजनीतिज्ञों का ख्याल था कि जर्मनी रूस पर आक्रमण करेगा। स्वयम् रूस को भय था कि उस पर पूर्व की ओर से जापान और पश्चिम की ओर से जर्मनी आक्रमण करेगा।

जनवरी १९३९ ई० में म्यूनिक सम्मेलन के बाद सर्व प्रथम स्टेलिन ने आवाज उठाई और जर्मन द्वारा सुडेटन प्रान्त छीन जाने की स्वीकृति की। १५ मार्च

CC0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३९ ई० को जर्मनी ने प्रयाग छीना। इससे समस्त योरुप की शक्तियों में खलबली पड़ गई। इतना होने पर भी मित्र-राष्ट्रों ने पोलैंड की रक्षा का भार उठाया और लिटविनोव (रूस का भूतपूर्व वैदेशिक मन्त्री) के त्याग पत्र पर भी उन्होंने रूस से सुलह की बात चीत चलाई। पोलैण्ड ने पोलैंड की रक्षा के लिये रूसी सेना को पोलैंड में होकर जाने से इन्कार कर दिया। रूस चाहता था कि मित्र-राष्ट्र बाल्टिक राज्यों को रक्षा का भी भार उठावें परन्तु मित्रराष्ट्रों ने इस जिम्मेदारी को नहीं उठाया इस पर रूस के साथ मित्रता नहीं हो सकी।

तटस्थ रहने के कारण जर्मनी ने पोलैण्ड में रूस को भाग देना स्वीकार किया और २३ अगस्त १९३९ ई० को रूस तथा जर्मनी के बीच संधि हुई। लिटविनाव के स्थान पर मोल्टाव रूस का वैदेशिक मन्त्री बनाया गया वह साम्यवादी दल के राजनैतिक विभाग का सदस्य था इस कारण साम्यवादी दल तथा रूसी वैदेशिक विभाग की नीति फिर समान हो गई।

साम्यवादी दल के नेता मैनविल्स्की ने घोषणा किया कि इंगलैंड क्रान्ति का मुख्य बैरी है वह छोटे राज्यों का बलिदान करके जर्मनी से रूस पर आक्रमण कराना चाहता है और चीन का बंटवारा करना चाहता है इस प्रकार वह सुदूर पूर्व में दूसरा म्यूनिक सम्मेलन कराने का इच्छुक है। अतः रूस ने पुनः अपनी साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति का अनुसरण किया और समीपवर्ती राज्यों से बातचीत आरम्भ की। फिनलैण्ड ने रूस की शर्तें नहीं स्वीकार कीं इसी कारण फिनलैंड और रूस में युद्ध हुआ। जुलाई १९४० ई० तक एस्टोनिया लैटविया, लिथुवानिया, बेसार्बिया और उत्तरी बुकोवीना आदि राज्य रूस में मिला लिये गये। इस प्रकार साम्यवादी नीति ने रूसी समाजवादी-मात्र भूमि की शक्ति को बढ़ाया।

जब से रूस ने पोलैंड के बँटवारे में भाग लिया तब से संसार के सभी साम्यवादी तथा क्रान्तिकारी संस्थाएँ तथा पत्र फैसिज्म के विरुद्ध आवाजें उठानी बन्द कर दीं और तटस्थता के मार्ग पर चलने लगे। फ्रांस के साम्यवादी लोग डालडियर और रेनाड की सरकार को नष्ट करने में लगे थे जब कि वह युद्ध में फंसा था।

पश्चिम की भांति रूस पूर्व की ओर भी संधि करके अपना लाभ उठाने का इच्छुक था इस लिये ३ अप्रैल १९४१ ई० को उसने जापान के साथ तटस्थता की संधि किया। जर्मनी ने इस संधि कराने में अच्छा भाग लिया वह चाहता था कि जापान को पश्चिमी खतरे से छुटकारा मिल जाय जिससे प्रशांत महासागर में वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका का ध्यान बंटा दे ताकि संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड की भली भांति सहायता न कर सके।

रूसो-जापानी संधि से रूस अथवा जापान को कोई खास लाभ नहीं हुआ। रूस जानता था कि यदि युद्ध अधिक समय तक चलता रहा तो जर्मनी को तेल चर्बी आदि की आवश्यकता बहुत होगी और उसे वह रूस की मर्जी से या अप्रसन्नता से भी लेने की कोशिश करेगा। इसलिये उसका यूक्रेन, लोवर वाल्गा और बाकू तथा ग्रोज्नी के तेल के कुवों पर अधिकार होना अनिवार्य है। साथ ही साथ रूस को यह भी आशा थी कि अधिक समय तक युद्ध चलने से इंगलैण्ड तथा जर्मनी दोनों शक्ति हीन हो जावेंगे और तब फिर संसार-क्रान्ति की सम्भावना सरल हो जावेगी।

रूसो-जापानी संधि का अर्थ सभी लोग भिन्न-भिन्न लगाते हैं। साराँश रूप में यह बात सभी मानते हैं कि इस संधि से इटली, जर्मनी, रूस और जापान एक नीति के मानने वाले हो गये। उन्होंने नवयुग की स्थापना करने का मार्ग निकाल लिया। इस संधि से ब्रिटिश साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने के लिये उत्तरी सागर से पैस्फिक सागर तक एक यूरेशियन ब्लाक बन गया था। इसी बीच चीन में चयोमिंटग और साम्यवादियों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े से चीन की स्थिति और अधिक जटिल हो गई यदि यह झगड़ा और अधिक बढ़ जाता है तो फिर चीन जापान का सामना न कर सकेगा वरन् स्वयम् उसके तीन भाग हो जाने की सम्भावना है। (१) उत्तरी चीन से दक्षिण की ओर याँग्जे तक जिसमें समुद्री बन्दरगाह भी शामिल है जापान के अधिकार में हो जायगा। (२) उत्तरी-पश्चिमी चीन जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस का प्रभुत्व होगा। (३) पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी चीन जिस पर क्योमिंटग का अधिकार होगा और उसे ब्रिटेन और अमरीका की सहायता प्राप्त रहेगी।

युद्ध की भीषणता होने से जापान को अवसर मिला और उसने इण्डोचीन पर अधिकार कर लिया है। वह पूर्वी द्वीप समूह में अपना प्रभुत्व भली भांति जमा लेना चाहता है। आज योरुप और एशिया में क्रांति के बादल घुमड़ रहे हैं और इस क्रान्ति को रोकने के लिये किसी बड़ी असाधारण घटना की आवश्यकता है।

हम जानते हैं कि रूस के साम्यवादी दल का कभी भी खात्मा नहीं हुआ है। रूसी साम्यवादी दल के ध्येय संसार-क्रान्ति तथा संसार सोवियट समाजवादी प्रजातंत्र संघ है। सोवियट को वैदेशिक नीति में जो परिवर्तन हुये हैं वह केवल उसकी भीतरी देशी संगठन के कारण हुये हैं।

६ मई १९४१ ई० को स्टेलिन रूस की पीपुल्स कमीशर की सभा का सभापति बना है। इसी स्थान पर पहले लेनिन था। उस समय रूस के समाजवादी दल तथा विदेशी विभाग की नीति एक थी और संसार क्रान्ति का प्रचार हो रहा था। आज भी वही स्थिति है। एक बार रूस का वैदेशिक विभाग तथा साम्यवादी दल मिल कर काम कर रहा है और क्रांति की लहरें चल रही हैं। रूस की वैदेशिक नीति संसार-क्रान्ति की है।

जब रूस ने फिनलैण्ड पर आक्रमण किया था तो उसकी नीति का विरोध समस्त संसार में हुआ था। भारत के विश्वविख्यात समाजवादी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने फिन रूस के फिनिश आक्रमण की बड़े तीव्र शब्दों में निन्दा की थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत को रूस के समाजवाद से सहानिभूति है परन्तु फिनलैंड के युद्ध में हमारी सहानुभूति फिनलैंड के साथ है। रूस के इस आक्रमण ने उसके गौरव को बड़ा धक्का पहुँचाया है। यदि वह इसी मार्ग पर रहा तो इसका परिणाम उसके और संसार के लिये बड़ा खतरनाक होगा।

बाल्कन प्रान्तों पर जर्मन आक्रमण के समय रूस ने जिस नीति पर अनुसरण किया था वह भी बड़ी सोचनीय थी। ईश्वर जाने क्यों रूस जर्मनी के आक्रमणों की तरफदारी करता रहा और चुपचाप बैठा तमाशा देखता रहा।

पूर्व की ओर युद्ध बढ़ने पर यह भली भांति प्रकट हो चुका था कि यदि जर्मनी ने एशिया को रण-क्षेत्र बनाया तो अवश्य ही रूस, जर्मनी और जापान में संहर्ष होगा। आखिर वही बात हुई भी जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और ऐसा भीषण धावा मारा जिसका संसार में कोई भी उपमा नहीं है। यह आक्रमण १५ सौ मील लम्बी सीमा पर हुआ है। तटस्थ रहने और सरकारी होने पर भी रूस को आखिर जर्मनी का शिकार बनना पड़ा। आक्रमण होने के कारण रूस को अपनी नीति पुनः बदलनी पड़ी है। उसने इंगलैंड और अमरीका आदि देशों की सहायता लेनी स्वीकार की है। मास्को में इंगलैण्ड, अमरीका और रूस के राजनैतिक दूतों का सम्मेलन भी हो चुका है। इंगलैंड और रूस ने मिल कर ईरान पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार भी जमा लिया है।

ब्रिटिश तथा अमरीकन सहायता मिलने पर भी जर्मनी रूस के अन्दर बढ़ता जा रहा है। यद्यपि जर्मनी को रूसी आक्रमण में बड़ी हानि उठानी पड़ी है तो भी वह अब तक सफल रहा है। यदि रूस पहले से अपनी नीति को बदले रहता तो शायद आज उसे यह दिन न देखने पड़ते। फिर भी सोवियट नीति इतनी रहस्यमय है। इसमें शक नहीं कि वह नाजीवाद, साम्राज्य वाद और फैसिज्म तीनों के विरुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ मई सन् १९४१—इटैलियन सेना ने कैपहाज़ो-निया, जन्ते और स्यूकस द्वीपों पर अधिकार कर लिया और यूनानी द्वीप समूह में अपने हवाई अड्डे बनाने आरम्भ किये।

इटली की सेना ने तोब्रक पर धावा मारा और नगर की बाहरी रक्षक रेखा को तोड़ दिया। बसरा में ब्रिटिश सेना उतरी।

२ मई—माल्टा पर हवाई आक्रमण हुआ। लन्दन में मर्सी साइड पर शत्रु वायुयानों ने आक्रमण किया।

एम्डेन, हैम्बर्ग, कील और बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और बम्ब वर्षा किया।

३ मई—इराक में ब्रिटिश सेनाएँ आगे बढ़ी। यूगोस्लाविया के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर इटली ने अधिकार जमा लिया। तोब्रक में इटली के सेना तथा ब्रिटिश सेना के मध्य युद्ध हुआ। हैम्बर्ग पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया। यूनान से ब्रिटिश सेना हटाई गई।

४ मई—इराक की सेना ने मोसल के तेल के मैदान में पानी भर दिया। किर्कुक, हनीकिम और गौरा के तेल के कुओं पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया।

ब्रिटिश हवाई स्थली और जल सेना ने बसरा से इराकी सेना को भगा दिया और इराक की हवाई शक्ति का लगभग आधा भाग नष्ट कर दिया। इराकी सेना ने हब्बानियाह हवाई अड्डे पर गोलेबारी किया। माल्टा तथा लन्दन पर शत्रु के हवाई आक्रमण हुये।

५ मई—इराकी सेना बसरा से बाहर भगा दी गई और ब्रिटिश सेना ने बसरा पर अधिकार कर लिया। २५ इराकी विमान नष्ट किये गये।

६ मई—टर्की ने इराक में मध्यस्थ बनने के लिये कहा। इराक की हवाई शक्ति का सत्यानाश हो गया। ब्रिटिश सरकार ने संधि करने से इनकार किया।

बेलफास्ट पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

७ मई—इराक के अधिकांश पम्प लाइनों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। हब्बानियाह की स्थिति में कुछ सुधार हुआ। कुछ इराकी सेना ने अपने हथियार डाल दिये। लन्दन पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

८ मई—कामन्स सभा में प्रधान मन्त्री चर्चिल ने तोब्रक और क्रीट की रक्षा भली भाँति करने का विश्वास दिलाया। इराक में रुतबाह पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। इंगलैंड के कई स्थानों पर जर्मन विमानों का हवाई आक्रमण हुआ मोरक्को और सीरिया में जर्मन हवाई अड्डे स्थापित हुये।

९ मई—रशीद अली बगदाद छोड़ कर भाग गया। ब्रिटिश सेना ने ४०० इराकी सैनिकों को गिरफ्तार किया। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। इंगलैंड के उत्तरी और पश्चिमी भाग पर शत्रु वायुयानों ने हवाई आक्रमण किया जिससे बहुत हानि हुई और बहुत से लोग मारे गये। २४ शत्रु विमान गिराये और १४ विमान नष्ट किये गये।

१० मई—पश्चिमी रूम सागर में ब्रिटिश सेना ने आक्रमण किया। हब्बानियाह से इराकी सेना को हटने पर बाध्य होना पड़ा।

११ मई—स्वेज़ प्रान्त और इंगलैण्ड पर शत्रु बम्ब वर्षक विमानों ने हवाई आक्रमण किया जिसके फल स्वरूप ५ अस्पताल एक सिनेमा घर, कुछ गिरजा घर और बहुत से मकान नष्ट हुये। शत्रु बम्ब वर्षक विमान गिराये गये।

१२ मई—शत्रु हवाई आक्रमण के कारण पार्लियामेन्ट के भवन नष्ट हो गये। वेस्टमिनिस्टर अबे में आग लगा दी गई। ब्रिटिश म्यूज़ियम पर आग वाले बमों की झड़ी की गई। ७ आक्रमणकारी विमान गिराये गये। तोब्रक और सोलम प्रान्त में शत्रु की सेना बहुत बड़ी संख्या में मारी गई। त्रिपौली और देना पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया।

१३ मई—रूडोल्फ हेस, जर्मनी के डिप्टी फ्यूहरर का विमान ग्लासगो के समीप फट गया। वह घायल दशा से ग्लासगो के अस्पताल में रक्खा गया है। जर्मनी से वह अचानक भाग निकला और अपने पीछे एक पत्र छोड़ गया। बङ्गाज़ी पर गोलेबारी हुई और जर्मन विमानों में आग लगा दी गई। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१४ मई—चीनी और जापानी सेना में भीषण युद्ध हुआ। जापानियों ने तंगफेंग किले पर अधिकार कर लिया बेंगाज़ी पर बम्ब वर्षा की गई। मेन्दीप, आस्टेण्ड और डंकर्क पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ मई—रुडोल्फ हेस लन्दन के समीप एक अस्पताल में रक्खा गया। उसने होमल्टन के ड्यूक से भेंट किया। वान पेपन जर्मन राजदूत ने टर्की के प्रेसीडेन्ट से भेंट की विची सरकार ने हिटलर की शर्तें स्वीकार कर लीं। सोलम प्रान्त से शत्रु सेना हटाई गई। हेलीगोलैंड पर ब्रिटिश विमानों ने बम वर्षा किया। इँगलैण्ड पर जर्मन वायुयानों ने धावा मारा।

१६ मई—शत्रु विमानों के आक्रमण से लन्दन के लैम्बेथ महल (कंटरबरी के आर्क बिशप का घर) क्वींस हाल सेंट जेम्स महल, ओल्डवैली (न्यायालय) और साल्वेशन आर्मी हेड क्वार्टर्स आदि ऐतिहासिक भवन नष्ट हो गये।

सीरिया और इराक में जर्मन विमान पहुँचे। फिरोशियन द्वीप में शत्रु पथरक्षक सेना पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। माल्टा पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

१७ मई—ब्रिटिश विमानों ने सीरिया के जर्मन हवाई अड्डों पर धावा मारा इराक में और अधिक ब्रिटिश सेना पहुँची। सोलम को ब्रिटिश सेना ने फिर ले लिया। हनोवर पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ चंगफिंग पर जापानियों ने बम वर्षा किया।

१८ मई—अबीसीनिया के युद्ध में १५००० सेना के अवोस्ता के ड्यूक ने हथियार डाल देने की शर्तें मांगीं। सोलम प्रान्त में शत्रु सेना को कुछ विजय प्राप्त हुई। इराक में हवाई युद्ध हुआ। मसूल में जर्मन विमानों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। बेंगाजो पर हवाई आक्रमण हुआ।

१९ मई—ब्रिटेन में हवाई युद्ध हुआ। कील और एम्डेन पर ब्रिटिश विमानों ने हमला किया। अम्बा अलागी ने ब्रिटिश सेना को आत्मसमर्पण किया और ब्रिटिश शर्तें स्वीकार की।

२० मई—सोलम प्रान्त में जर्मन सेना को परास्त हुई। शत्रु टैंकों को ब्रिटिश विमानों ने पीछे हटा दिया। इराक को जर्मनी ने युद्ध सामग्री रवाना किया। क्रीट द्वीप पर जर्मन विमानों ने हमला किया और १५० सैनिक पैराशूट से उतार दिये। फौलजाद नगर पर ब्रिटिश अधिकार हुआ।

२१ मई—७००० जर्मन सेना क्रीट में उतर गई। क्रीट पर हवाई तथा समुद्री आक्रमण जर्मन सेना ने किया। वहां पर भीषण हवाई तथा समुद्री युद्ध हुआ।

अवोस्ता के इटैलियन ड्यूक ने हथियार डाल दिये। स्वतंत्र फ्रांसीसी सेना ने सीरिया में प्रवेश किया।

२२ मई—क्रीट से ब्रिटिश विमानो की सेना हटा ले गई। हलीमी हवाई अड्डे पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया। क्रीट के युद्ध में दो शत्रु विध्वंसकारी जहाज डुबाये गये। छोटी नावों तथा विमानों द्वारा जर्मन सेना ने क्रीट पर धावा किया।

ब्रिटेन ने विची सरकार को चेतावनी की। अटलांटिक सागर में फ्रांसीसी टैंकर जहाज को रोका।

२३ मई—ब्रिटिश सेना ने क्रीट में शत्रु के प्रतिकूल आक्रमण किया। और समुद्र द्वारा जर्मन सेना का उतारना रोक दिया। क्रीट के रेटीमो और हेराक लिओन स्थान पर जर्मन अधिकार हो गया।

२४ मई—मलीमी में भीषण स्थित हो गई। क्रीट में और अधिक जर्मन सेना पहुँची और ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में भीषण युद्ध हुआ। एच० एम० एस० नामक ब्रिटिश जहाज ग्रीनलैण्ड के समीप डुबा दिया गया जिसमें १३०० आदमी थे। वह सबसे बड़ा क्रूशियर जहाज था जिसमें १५ इंच वाली आठ तोपें लगी थीं। सोलम प्रान्त के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने ८ जर्मन टैंक नष्ट किये।

२५ मई—स्वेज नहर पर हवाई आक्रमण हुआ। अटलांटिक सागर में नाजी जहाजों का पीछा किया गया और एक जहाज डुबाया गया और कोलम्बस पकड़ा गया।

२६ मई—क्रीट के मलीमी प्रान्त में सैनिकों में हाथों हाथ युद्ध हुआ। नाजी विमानों ने बम वर्षा करके क्रीट के नगरों को सत्यानाश किया। इराक की सरकार मसूल नगर को भाग गई।

२७ मई—डेनमार्क के तट के समीप ब्रिटिश तथा जर्मन समुद्री जहाजों में भीषण युद्ध हुआ। विस्मार्क नामक नाजी जहाज का पीछा किया गया और टारपीडो बम्बो ने उस पर हमला भी किया। क्रीट के युद्ध में जर्मन विमानों की हानि हुई परन्तु जर्मन सेना को सफलता हुई। ब्रिटिश स्थानों पर जर्मन सेना घुस गई।

३० मई—इँगलैंड के दक्षिणी तट पर जर्मन विमानों ने बम गिराये क्रीट में भीषण युद्ध हुआ। अबीसीनिया में गोंदर स्थान पर युद्ध हुआ। इटली की सेना पीछे हटी। रूमसागर में कोरे रोसो नामक इटली का जहाज टारपीडो द्वारा डुबाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ मई—रशीद अली इराक भाग गया। ब्रिटिश सेना बगदाद के समीप पहुँची। अमीर अब्दुल्ला ने इराक की सरकार बनाई।

क्रीट की भीषण स्थिति हो गई। वहां भीषण युद्ध हुआ। क्रीट में इटैलियन सेना भी पहुँच गई।

१ जून—ईराक में क्षणिक संधि हुई। डबलिन पर हवाई आक्रमण हुआ जिसमें २३ आदमी मरे। क्रीट की शोचनीय स्थिति हो गई। मित्र सेना समस्त शक्ति के साथ लड़ी।

२ जून—क्रीट से १५ हज़ार ब्रिटिश सेना हटा कर मिश्र पहुँचाई गई। इराक के युद्ध का अंत हुआ।

३ जून—सीरा में २०० जर्मन विमान पहुँचे। केरो से सीरिया का मार्ग काट दिया गया। मानचिस्टर नगर पर जर्मन विमानों ने बम वर्षा करके बड़ी हानि की। ब्रेनर घाट (दर्रे) पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ और नये साम्राज्य के स्थापना की बातचीत हुई।

४ जून—डाकर, अल्जियर्स और बीरट के विची बन्दरगाह जर्मनी को दिये गये। बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। एक नाज़ी जहाज डुबाया गया। सीरिया की जटिल समस्या उत्पन्न हो गई। पैलेस्टाइन सीमा पर ब्रिटिश सेना एकत्रित की गई।

५ जून—विची सरकार ने सीरिया की रक्षा की तयारी किया और जनरल वेगांड को सेनापति बनाया गया। मसूल पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। जर्मनी के भूतपूर्व साम्राट की मृत्यु हुई।

६ जून—अमरीका ने विची सरकार को जर्मनी को सैनिक सहायता प्रदान करने के लिये चेतावनी दी। सिकन्दरिया पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ जिससे एक सौ से अधिक आदमी मरे। ब्रिटिश विमानों ने बेङ्गाजी पर आक्रमण किया। दो शत्रु जहाज डुबाये गये।

७ जून—दमिश्क के हवाई बन्दरगाह पर जर्मन अधिकार हो गया और समस्त सीरिया पर जर्मन प्रभुत्व हो गया। फ्रान्स के तटीय बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। डोवर तट पर दोनों ओर से गोलाबारी हुई। विदेशी जहाज़ों को छीनने के लिये प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने आज्ञा दिया। स्वतंत्र फ्रान्सीसी सेना ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सेना ने सहायता किया। जनरल कैट्राक्स ने सीरिया और लेबानोन को स्वतंत्रता का वचन दिया। हालैंड तट के समीप समुद्र युद्ध हुआ। दो शत्रु जहाज ब्रिटिश विमानों द्वारा जला दिये गये।

८ जून—सीरिया पर तीन ओर से आक्रमण किया गया। मित्र सेना बेरूत, अलप्पो और दमिश्क की ओर बढ़ने लगी। ब्रिटिश लड़ाका जहाजों ने बेरूत के समीप सेना उतारी। सिकन्दरिया पर समस्त रात नाजी विमानों का हमला हुआ। ५४७ आदमी मरे और बहुत से घायल हुये।

९ जून—मित्र सेना सीरिया में ४० मील भीतर घुसी। टाएर और डेरा नामक स्थानों पर मित्र सेना ने अधिकार किया। विची सरकार ने ब्रिटिश तथा अमरीकन सरकार को सीरिया पर आक्रमण होने के लिये विरोधी पत्र लिखा।

१० जून—जर्मन पनडुब्बे जहाज ने अमरीकन जहाज डुबाया। क्रीट से सेना हटाते हुये तीन ब्रिटिश जहाज डूबे। ब्रिटिश सेना दमिश्क से १० मील दूरी पर पहुँच गई। अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ रही है। समस्त यूनान पर इटली का अधिकार हुआ।

११ जून—ब्रेस्ट पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ। डोवर में नाजी टैंकर जहाज में ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब द्वारा आग लगा दी।

१२ जून—सीरिया में मित्र सेना ५० मील भीतर की ओर बढ़ी। फ्रांसीसी जल सेना ने पूर्वी रूमसागर की ओर प्रस्थान किया।

१३ जून—उत्तरी सागर में अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ने लगी। ब्रिटिश विमानों ने आक्रमणकारी जर्मन तटीय नगरों पर हवाई हमला किया।

१४ जून—सीरिया में सभी स्थानों पर मित्र सेना की विजय हुई। पामीरा की ओर मित्र सेना बढ़ी। नार्वे के तट के समीप ब्रिटिश विमानों ने एक पाकेट बैटिल शिप (जहाज) पर हवाई आक्रमण किया। रुह प्रान्त पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ। जर्मन विमानों ने जिब्राल्टर बन्दरगाह पर हवाई आक्रमण किया।

१५ जून—रूस पर हिटलर ज़ोर डाला कि वह युद्ध में उतरे। सोवियट सीमा पर १२० जर्मन सैनिक डिवीजन लगाये गये। रूमसागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने इटली के दस जहाज़ डुबा दिये। मित्र सेना सीदन के पार पहुँच गई।

१६ जून—अमरीका के जर्मन कौंसलेट बन्द किये गये। ब्रिटिश विमानों ने जर्मन बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ११ जर्मन विमान गिराये गये। कपूज़ो पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। मित्र सेना सीदन के आगे बढ़ी।

१८ जून—ब्रिटिश सेना ने लीबिया में प्रवेश किया। सीरिया में फ्रान्सीसी और मित्र सेना में भी युद्ध हुआ।

अँकारा में जर्मनी और टर्की के बीच आर्थिक संधि हुई। फिनलैंड में नाज़ी सेना पहुँची।

१९ जून—सोलम प्रान्त से ब्रिटिश सेना हटी। कुछ इटली के जहाज़ डुबाये गये। दमिश्क़ पर ब्रिटिश सेना ने हमला किया।

२० जून—दमिश्क के बाहरी भाग पर मित्र सेना ने अधिकार कर लिया। सोलम प्रान्त जर्मन हाथों में है। ५३ जापानी जहाज़ों ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। अमरीका कौंसलेट जर्मनी और इटली में बन्द किये गये।

२१ जून—रूज़वेल्ट ने राबिन मूर जहाज के डुबाने पर जर्मनी का घोर विरोध किया। पूर्वी योरुप में जर्मन सेना का जमघट हुआ। रूमानिया में जर्मन सेना बढ़ी।

२२ जून—जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया। हिटलर ने आक्रमण की घोषणा किया। १५०० मील लम्बी सीमा पर आक्रमण हुआ। फिनिश और रूमानियन लोग जर्मनी के सहायक हैं। दमिश्क में ब्रिटिश सेना का अधिकार हुआ।

२३ जून—रूसी पोलैण्ड में जर्मन सेना बढ़ी। तीन गाँवों पर अधिकार किया। चर्चिल ने रूस को सहायता देने के लिये वचन दिया।

२४ जून—रूसी पोलैंड के गांवों पर जर्मन सेना ने अधिकार किया। १२७ जर्मन विमान गिराये गये। लिथवानिया रूस से अलग हो गया।

२५ जून—सोवियट हवाई सेना ने कान्स्टेञ्जा, वार्सा, लबलिन और डंज़िग नगर पर आक्रमण किया। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। जर्मन पैराच्यूट सेना युद्ध लाइन पर उतारी गई। बृटेन ने नाज़ी लोगों को परास्त करने के हेतु रूस के साथ होकर लड़ना स्वीकार किया और ब्रिटिश सैनिक तथा आर्थिक राजदूत मास्को गये। फिनलैंड भी युद्ध क्षेत्र में उतरा। हेलिंसकी पर बम्ब वर्षा की गई।

२६ जून—आठ स्थानों में जर्मन सेना ने रूसी सेना की लाइन को तोड़ दिया। विलना प्रान्त में जर्मन सेना रूसी लाइन तोड़ कर घुस गई। लेनिनग्राड पर बम्ब वर्षा करके आग लगा दी गई। जर्मनी तथा फ्रान्स के नगरों पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया। रूस में टैंकों का भीषण युद्ध हुआ। नाज़ी सेना ने लवाव और रीगा पर अधिकार कर लिया।

२७ जून—उत्तरी सीमा से रूसी सेना हटाई गई। मिन्स्क की ओर नाज़ी टैंक सेना का आक्रमण हुआ। प्रथ नदी को नाज़ी सेना नहीं पार कर सकी। हँग्री ने रूस के साथ युद्ध छेड़ दिया।

सीरिया से पामीरा नगर की ओर ब्रिटिश सेना बढ़ी। इटली के दक्षिण की ओर शत्रु जहाज़ों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण करके २० हज़ार टन के व्यापारिक जहाज़ डुबा दिये।

दमिश्क पर नाज़ी हवाई आक्रमण से ७० मरे। २९ घायल हुये और १०० से ऊपर घर नष्ट हुये।

२८ जून—मित्र सेना दमिश्क के उत्तर की ओर बढ़ी नेबरेक पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। अबीसीनिया में जिम्मा के उत्तर पश्चिम ब्रिटिश सेना बढ़ी।

२९ जून—मिन्स्क प्रान्त में टैंकों का भीषण संग्राम हुआ जिसमें जर्मन टैंक पीछे हटा दिये गये। लवाव से ८५ मील उत्तर पश्चिम लक स्थान पर और मिन्स्क से २५० मील दक्षिण की ओर घोर संग्राम हुआ। बियालस्टोक में भीषण युद्ध हुआ।

३० जून—पामीरा को ब्रिटिश सेना ने घेरा डाल दिया। बीरट पर ब्रिटिश विमानों ने भीषण हवाई हमला किया। हैम्बर्ग और ब्रेमेन के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा करके आग लगा दी। विची सरकार ने रूस से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

१ जुलाई—उत्तरी रूस में जर्मन सेना की विजय हुई। रूसी मैदान में घोर युद्ध हुआ। रूसी लोगों ने प्रतिकूलता आरम्भ किया।

२ जुलाई—रूस के तीन प्रान्तों में युद्ध हुआ। मास्को पर हवाई आक्रमण किया गया। अबीसीनिया में दो शत्रु जनरलों ने हथियार रख दिये।

३ जुलाई—जर्मन सेना ने मुर मिन्स्क पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना मास्को से २५० मील की दूरी पर पहुँची। जर्मन सेना ने बियालिस्टाक के पूर्व एक लाख रूसी सेना को पकड़ा और बहुत सी युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी। चीन ने धुरी राष्ट्रों से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

४ जुलाई—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। द्वीना नदी को पार करके जर्मन सेना कीव की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी। रूसी लोग मज़बूती के साथ सामना कर रहे थे। पामीरा नगर पर मित्र सेना को १३ दिन घेरे के बाद अधिकार हुआ। उत्तरी जर्मनी में ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और ११ शत्रु विमान नष्ट किये।

अलान्द द्वीप पर फिनिश सेना ने अधिकार कर लिया।

५ जुलाई—उत्तरी रूसी सेना में युद्ध हुआ। शत्रु सेना लैटविया की सीमा पर पहुँची। लेपेल प्रान्त में रूसी सेना पीछे हटी। नाज़ी सेना यूक्रेन की ओर बढ़ी।

उाला सिदामो में इटली की अबीसीनियन सेना ने हथियार रख दिये। एक आस्ट्रेलियन डिस्टाएर डुबाया गया।

६ जुलाई—लैटविया की सीमा पर नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। स्टोनिया की राजधानी तल्लिन पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर जर्मन सेना पहुंच गई। हंग्री की सेना ने कोज़ोमी, स्टानिस्लाक नगरों पर अधिकार किया।

७ जुलाई—लेनिनग्राड पर आक्रमणकारी जर्मन सेना पीछे हटा दी गई। रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा। ब्रिटिश विमानों ने जर्मन कारखानों पर धावा मारा और भीषण हानि पहुँचाई।

८ जुलाई—स्टैलिन लाइन पर नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। समस्त नाज़ी सेना की हार हुई। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। रीगा की खाड़ी में रूसियों ने दो नाज़ी विध्वंस कारी जहाज़ों और एक यूबोट को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश विमानों ने शत्रु पथ रक्षक सेना पर धावा मार कर हानि पहुँचाई।

९ जुलाई—बेसारविया में नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। ज़िले और बिलियम्स हेविन पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ।

१० जुलाई—लेपेल पर सोवियट सेना ने प्रतिकूल धावा मार कर जर्मन सेना को पीछे हटा दिया। फिन तथा हंगेरियन सेना आगे बढ़ी।

११ जुलाई—नाज़ी सेना का आक्रमण रोक दिया गया। बियालिस्टाक और मिन्स्क प्रान्त में जर्मन सेना ने ३,२३,००० रूसी सैनिक पकड़े और बहुत ज्यादा युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी।

१२ जुलाई—अस्सी लाख रूसी सेना ने प्रस्थान किया। रूसी लोगों के अनुसार १० लाख नाज़ी सेना मारी गई। जर्मन बास फोरस पर अधिकार करने की तयारी में था। विची सरकार ने क्षणिक संधि शर्तें नाज़ी प्रभुत्व के कारण अस्वीकार कर दीं।

१३ जुलाई—जर्मन पंजेर सेना पीपस झील के पूर्व लेनिनग्राड की ओर बढ़ने लगी।

प्रीपेट दलदल के समीप जर्मन सेना ने रूसी सैनिक लाइन तोड़ दिया। नीस्टर के पूर्व जर्मन सेना कीव नगर के सामने पहुँच गई। दक्षिणी पूर्वी जर्मन तथा रूमानी सेना ने नीस्टर नदी के समीप रूसी सेना को हराया। रूस और इँगलैंड के बीच सहायता देने का समझौता हुआ।

१४—जुलाई—दो नगरों पर रूसी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। १३१ नाज़ी विमान नष्ट किये गये। सीरिया में क्षणिक संधि हो गई। रूसी लोगों ने १०० नाज़ी टैंक नष्ट किये। दो जर्मन विध्वंस कारी जहाज़ डुबाये गये। फिन सेना आगे बढ़ी। शत्रु डाकों पर ब्रिटिश विमानों का हमला हुआ। शत्रु विमानों ने सिकन्दरिया पर हमला किया।

१५ जुलाई—कामन्स सभा में चर्चिल ने बतलाया। कि रूसी ब्रिटिश लोगों के साथी हैं।

१६ जुलाई—मध्यवर्ती रूस में भीषण युद्ध हुआ दोनों ओर बड़ी हानि हुई। बुखारेस्ट पर रूसी विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

१७ जुलाई—नाज़ी टैंक सेना पीछे हटाई गई। लाल बम्ब वर्षक विमानों ने नाज़ी सेना पर आक्रमण किया। जापानी मन्त्री मण्डल ने त्याग पत्र दिया।

१८ जुलाई—जर्मन सेना स्मोलिन्स्क पर पुनः अधिकार कर लिया। मास्को की ओर जर्मन सेना बढ़ी। लेनिनग्राड को नाज़ी सेना ने खतरे में डाल दिया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने शत्रु पथ-रक्षक सेना के जहाजों को डुबा दिया।

१९ जुलाई—जर्मन नगरों पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ।

२० जुलाई—बाल्टिक सागर में युद्ध हुआ जिसमें ११ नाज़ी जहाज डूब गये। नोवोगाड और ओलीन्स्क नगरों पर जर्मन अधिकार हुआ।

२१ जुलाई—जर्मन सेना के हाथों से रक्षा करने के लिये रूसी लोगों ने अपने नगरों को जला देने की नीति आरम्भ किया। लेनिन गाड तथा रूसी जलसेना खतरे में थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ जुलाई—स्मोलेंस्क प्रान्त में रूसियों तथा जर्मनों के मध्य भीषण युद्ध हुआ। लैनिनग्राड और लाल जहाज़ी बेड़ा खतरे में था। नीस्टर नदी के पूर्व घोर संग्राम हुआ।

आर० ए० एफ० के ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मनी के हवाई अड्डों पर धावा मारा।

२३ जुलाई—मास्को पर हवाई आक्रमण हुआ। कीव के ८० मील पश्चिम युद्ध हो रहा था। उत्तर की ओर से लेनिनग्राड पर चढ़ाई हो रही थी। नाज़ी लाइन के पीछे रूसी पैराचयूट सेना उतारी गई।

२५ जुलाई—जापानी जल सेना ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। विची सरकार ने जापानी शर्तों को स्वीकार कर लिया। इन्डोचीन में जापानी हवाई अड्डे बनेंगे। नाज़ी सेना यूक्रेन प्रान्त में बढ़ी। स्मोलेंस्क प्रदेश की ओर बढ़ने से जर्मन सेना रोकी गई। बाल्टिक सागर में रूसी सेना ने जर्मन पथ रक्षक जल सेना पर बम्ब गिराये और १० जहाज़ डुबा दिये। मास्को पर तीसरा जर्मन हवाई आक्रमण हुआ नागरिकों के घरों में आग लगी और बहुत से नागरिक स्त्री-पुरुष मरे तथा घायल हुये।

२८ जुलाई—जापान ने थाई देश के सामने अपनी शर्तें पेश कीं। कम्बोडिया में जापानी सेना उतरी। कोरिया और मंचूरिया में जापानी सेना एकत्रित हुई।

युद्ध में रूस सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। १०४ जर्मन विमान गिराये गये।

२९ जुलाई—इँडोचीन में जापानी सेना ने ८ हवाई अड्डों पर अधिकार किया। जापान इण्डोचीन की नवीन संधि हुई। रूसी युद्ध में रूसी सेना ने डट कर जर्मन सेना का सामना किया। स्मोलिन्स्क का युद्ध अन्त होने का था। लन्दन पर शत्रु विमानों ने एक मास के पश्चात् पुनः रात को आक्रमण किया।

३० जुलाई—स्मोलिन्स्क के समीप नाज़ी तथा रूसी सेना में घोर संग्राम हुआ। ७४ जर्मन विमान गिराये गये। नाज़ी सेना कीव पर एकत्रित होने लगी।

कमरान्द की खाड़ी पर जापान ने अधिकार कर लिया दक्षिणी इन्डोचीन में जापानी सेना उतारी।

३१ जुलाई—मास्को से नाज़ी आक्रमण कारी विमान भगाये गये। नार्वे के एक बन्दरगाह पर ब्रिटिश तथा रूसी विमानों ने आक्रमण किया। बाल्टिक सागर में नाज़ी समुद्री सेना तितर बितर हो गई उस पर रूसी टारपीडो बोट ने धावा मारा था।

३ अगस्त—दो जर्मन डिवीज़नों को रूसी सेना ने नष्ट किया और ३०० नाज़ी टैंक बर्बाद किये। बाल्टिक सागर में जर्मन जहाज़ों पर रूसी विमानों ने धावा मारा।

५ अगस्त—कीव की ओर नाज़ी सेना का बढ़ना रोक दिया गया। स्मोलिन्स्क के दक्षिण पूर्व जर्मन सेना बढ़ी। खोल्म पर जर्मन अधिकार हुआ।

सारडीनिया के हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। स्वेज़ नहर प्रान्त पर नाज़ी हवाई हमला हुआ जिससे ९० व्यक्ति मर गये।

६ अगस्त—ब्रिटिश वायुयानों ने पश्चिमी जर्मन नगरों पर तथा सोवियट बिमानों ने बर्लिन पर हवाई आक्रमण किये। यूक्रेन में जर्मन सेना को सफलता प्राप्त हुई। कीव और ओडेसा के मध्य रेलवे लाइन काट दी गई। जर्मन सेना ओडेसा की ओर बढ़ने लगी। जर्मन समाचार के अनुसार यूक्रेन में एक लाख ३० हज़ार रूसी सैनिक पकड़े गये, २ लाख मारे गये और ३१७ रूसी टैंक जर्मन सेना के हाथ लगे।

थाई लैंड ने आक्रमण होने पर युद्ध करने का निश्चय किया। मंचूको सीमा पर जापानी सेना एकत्रित की गई।

१० अगस्त—मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ और ८ नाज़ी विमान गिराये गये। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। कोरोस्टेन नगर पर जर्मन अधिकार हो गया और सोवियट वायुयानों ने जर्मन हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा किया।

११ अगस्त—जर्मन सेना कालासागर के ओडेसा तथा निकोलीन बन्दरगाहों पर पहुँचने का भरसक प्रयत्न किया। उत्तर की ओर फिनलैंड की सेना ने कई स्थानों पर रूसी सैनिक लाइन को तोड़ दिया। रूसी सेना ने जर्मन टैंक सेना को नष्ट किया। मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ जिससे ५ जर्मन वायुयान नष्ट हुये।

१४ अगस्त—उत्तर की ओर से रूसी सेना हटाई गई। सोलत्सी के दक्षिण पूर्व युद्ध हो रहा है। ओडेसा की ओर जर्मन सेना बढ़ रही थी।

१५ अगस्त—रूसी सेना ने यूक्रेन के किरोवोग्राड, पेरवोमेस्क आदि नगरों को खाली कर दिया। बुडनी रूसी प्रधान सेनापति ने कारखाने वाले प्रदेश की रक्षा के लिये नई रक्षक लाइन बनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर चर्चिल और प्रेसीडेंट रुज़वेल्ट ने प्रस्ताव किया कि मास्को में स्टैलिन से संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन के उच्च पदाधिकारी दूत बात चीत करें।

१६ अगस्त—स्टैलिन ने मास्को में तृतीय शक्ति सभा का होना स्वीकार किया। इंडोचीन में एक लाख के समीप जापानी सेना पहुंची। रूम सागर में दो जर्मन जहाज डुबाये गये।

१७ अगस्त—यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। रूसी सेना ने नये स्थानों पर अड्डा जमाया। नाज़ी सेना ने कारखाने वाले प्रदेशों पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। समस्त सीमा पर घोर युद्ध हुआ। ऐंग्लो सोवियट संधि हुई।

१८ अगस्त—निकोलीव और क्रोओइरोग नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। सोवियट तथा ब्रिटिश सरकार ने ईरान को चेतावनी दिया। जर्मन मन्त्री ने भी ईरान को चेतावनी दिया कि यदि जर्मन नागरिक ईरान से निकाले जावेंगे तो जर्मनी ईरान के साथ अपने सम्बंध तोड़ देगा। सिसली पर हवाई आक्रमण हुआ।

जर्मन सेना ने लैनिनग्राड से ७० मील पश्चिम की ओर किङ्गीसेप नगर पर अधिकार जमा लिया। रूसी सेना नीपर नदी पर थी और वह प्रतिकूल आक्रमण कर रही थी।

१६ अगस्त—यूक्रेन के दक्षिणी पश्चिमी भाग पर जर्मन अधिकार हो गया। बुडनी की सेना ने नीपर नदी पार किया। यूक्रेन में ६० हज़ार जर्मन सेना, ८४ टैंक, ३५ हज़ार टन का बैटिल शिप जहाज़, १० हज़ार टन का क्रूशियर जहाज़, ४ विध्वंसकारी जहाज़ और २ सबमरीन जर्मन सेना के हाथ लगे।

ब्रिटिश विमानों ने फ्रान्स और जर्मनी के नगरों पर हवाई आक्रमण किया और रूस सागर में कई जर्मन जहाज़ डुबाये।

२० अगस्त—नीपर नदी पर घोर संग्राम हो रहा था। नीपर नदी के कारण जर्मन सेना को आगे की ओर बढ़ने में कठिनाई हो रही थी। गौमल स्थान पर जर्मन लोगों को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। मार्शल और शिलोव उत्तरी जर्मन सेना के प्रधान सेनापति ने लैनिनग्राड प्रान्त के नागरिकों से लेनिनग्राड की रक्षा की अपील की।

२१ अगस्त—नीपर नदी पर जर्मन सेना रोक दी गई गोमेल में नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। लेनिनग्राड पर तीन ओर से आक्रमण हुआ। १० लाख सेना नगर की रक्षा के लिये लगाई गई। रूसी विमानों ने बर्लिन पर धावा किया।

२२ अगस्त—हैलीफाक्स इँगलैंड लौटे। ईरान ने संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। ब्रिटिश चैनल पर दो जहाज़ गिराये गये।

२३ अगस्त—लेनिनग्राड पर आक्रमण करने वाले बम्ब वर्षक विमान भगा दिये गये। ओडेसा के समीप घोर संग्राम हुआ। सोवियट सेना ने नाज़ी समुद्री बेड़े पर धावा मारा, दो जहाज़ों को डुबा दिया, एक को जला दिया। नौ गांवों पर रूसी सेना ने पुनः अधिकार कर लिया।

ईरान ने आक्रमण का सामना करने की तयारीकिया।

२४ अगस्त—नीपर नदी का संग्राम आरम्भ हुआ मध्यवर्ती भाग में प्रतिकूल आक्रमण नाज़ी सेना पर हुये। ईरान में रूस और ब्रिटिश सेना ने मिल कर कार्य आरम्भ किया।

२५ अगस्त—रूसी लोगों ने नोवोग्राड खाली कर दिया। नाज़ी लोग नदी नहीं पार कर सके। स्पैनिश तट पर ७ ब्रिटिश जहाज़ डुबाये गये। वर्षा के कारण जर्मन सेना को आगे बढ़ने में रुकावट हो रही है। सोवियट और ब्रिटिश सेना आगे बढ़ रही हैं।

२६ अगस्त—ईरान पर दो ओर से आक्रमण हुआ। एक ओर से ब्रिटिश सेना और दूसरी ओर से रूसी सेना बढ़ी। ईरान की सेना ने बढ़ कर सामना किया।

२७ अगस्त—ईरान के बादशाह ने संधि करने के लिये और जर्मन लोगों को निकालने के लिये कहा। ब्रिटिश तथा रूसी दूतों से प्रस्ताव किया गया।

लेनिन ग्राड के समीप नाज़ी सेना रोक दी गई। मुख्य रेलवे जंकशनों पर नाज़ी अधिकार हो गया। रूसी लोगों ने अपने सबसे बड़े बांध को जला दिया।

२८ अगस्त—ईरान के युद्ध का अन्त हुआ और नई सरकार बनाई गई। मित्र सेना शान्ति पूर्वक आगे बढ़ी। तेहरान में जर्मन लोगों ने अपने कागज़ात जला दिये।

२६ अगस्त—नीपर ओपेटरास्क से रूसी सेना हटा ली गई। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। ईरान के युद्ध सम्बन्धी अड्डों पर मित्र सेना का अधिकार हो गया। तेहरान स्वतंत्र रक्खा गया। लेनिनग्राड मास्को के मार्ग काट दिये गये। कई स्थानों पर रेलवे को जर्मन सेना ने पार किया। टैलिन बाल्टिस्की और वाइ बार्ग पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी सीमा पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ।

३० अगस्त—सोवियट सेना ने ईरान में शेद, पहले वी मेहराबेद पर अधिकार कर लिया।

१ सितम्बर—ब्रिटिश विमानों ने ब्रेमेन (जर्मन) पर बम्ब वर्षा किया धुरीराष्ट्रों की सेना टर्की सीमा पर काला सागर में प्रवेश करने के लिये एकत्रित हुई। ईरान में ब्रिटिश तथा रूसी सेना एक दूसरे से मिलीं। रूसी सेना ने ईरान के नगरों पर अधिकार किया दक्षिणी ईरान में क्षणिक संधि के पश्चात् अहवाज़ में भारतीय सेनाओं ने प्रवेश किया।

यूक्रेन के युद्ध में नाज़ी सेना नीपर नदी नहीं पार कर सकी। जर्मनी पर सोवियट हवाई आक्रमण हुये।

२ सितम्बर—तुर्की सीमा पर धुरी राष्ट्रों की २० डिवीज़न सेना एकत्रित हो गई। टोकियो सेनापति के प्रधान ने घोषणा किया कि जापान को अमरीका, ब्रिटेन, चीन और हालैंड के पूर्वी द्वीप समूहों के घेरे को तोड़ देना चाहिये। जर्मन सरकार ने तुर्की सरकार से प्रार्थना किया कि वह तेहरान के जर्मन लोगों को अपने यहां स्थान दे दे।

लेनिनग्राड को बाहरी रक्षक लाइन को जर्मन सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना ने लेनिनग्राड का घेरा डाला रूसी सेना ने टैलिन नगर को खाली कर दिया।

३ सितम्बर—जापान में नाज़ी-प्रतिकूल प्रचार के कारण जापानी मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होने की सम्भावना हुई। जर्मनी ने फ्रान्स को संधि के प्रस्ताव दिये। डंकिर्क के समीप ब्रिटिश विमानों ने जर्मन सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर बम्ब वर्षा की।

जापान के प्रधान मन्त्री ने घोषणा की कि मलय द्वीप में अधिक भारतीय सेना पहुँचने के कारण झगड़ा उत्पन्न होने की सम्भावना है। थाई-देश के प्रधान मन्त्री वहां की सेना का प्रधान अफसर बना। सर्विया में जर्मनी ने नई सरकार का निर्माण किया।

४ सितम्बर—मास्को, कीव, स्मोलिंस्क और लेनिनग्राड में रूसी सेना के अधिक एकत्रित हो जाने से जर्मन सेना का आगे बढ़ना रुक गया। लेनिनग्राड अपनी तयारी के कारण लम्बे युद्ध का सामना करने के लिये तयार हुआ।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अपने प्रचारक मास्को के लिये तयार किये। हरीमन उनका नेता बनाया गया। ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने बर्लिन पर बम्ब वर्षा किया।

५ सि०—लेनिनग्राड के १२ मील पश्चिम जर्मन सेना पहुँच गई। मध्यवर्ती भाग में रूसी सेना ने जर्मन सेना के प्रतिकूल धावा किया। नीपर लाइन की रक्षा रूसी सेना ने बहादुरी से किया।

आइसलैण्ड के मार्ग में संयुक्तराष्ट्र के विध्वंसकारक जहाज़ पर नाज़ी पनडुब्बे जहाज ने आक्रमण किया परन्तु टारपीडो जहाज पर नहीं लगा। लेनिनग्राड में रूसी सेना की स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई परन्तु लेनिनग्राड और ओडेसा में नाज़ी सेना आगे बढ़ने से रोक दी गई। मध्यवर्ती भाग से रूसी सेना प्रतिकूल आक्रमण करती आगे बढ़ी। इटली के तट के समीप ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज ने इटली के लाइनर जहाज को डुबा दिया।

६ सि०—ब्रिटेन ने सभी प्रकार रूस को सहायता पहुँचाने की घोषणा की। फिनलैण्ड ने घोषणा की कि वह अपनी सीमा के आगे युद्ध करने के लिये न बढ़ेगा। त्रिपोली के समीप ब्रिटिश सबमरीन ने एक दूसरा इटैलियन जहाज डुबा दिया। यह जहाज ११६६८ टन का था।

७ सि०—जर्मन सेना नीपर नदी को पार करने में असफल रही। लेनिनग्राड नगर की रक्षा में ब्रिटिश विमानों ने भाग लिया। रूसी सेना ने कुछ नगरों पर दोबारा अधिकार कर लिया। जर्मनी ने अमरीका के ग्रियर नामक जहाज पर आक्रमण होने का उत्तर दिया और कहा कि ग्रियर ने जर्मन सबमरीन पर आक्रमण किया इसलिये जर्मन सबमरीन ने अपनी रक्षा हेतु उस पर आक्रमण किया।

८ सि०—लेनिनग्राड क्षेत्र से जर्मन पीछे हटा दिये गये। गोमेल प्रान्त में भी जर्मन सेना को पीछे हटना पड़ा। डच तट पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण करके जर्मन जहाज डुबा दिया। जर्मन के राइन प्रान्त के रबड़ के कारखानों पर ब्रिटिश बम्बवर्षकों ने बम्ब गिराये।

९ सि०—स्पिटबर्जेन पर ब्रिटिश जलसेना ने अचानक अधिकार कर लिया। स्मोलिंस्क के समीप नाज़ी सेना तितर बितर कर दी गई। लेनिनग्राड के लिये घोर युद्ध हुआ। नार्वे तट पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब गिराये।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने चर्चिल रुज़वेल्ट सम्मेलन के सम्बन्ध में भाषण दिया और बतलाया कि अटलांटिक सागर का चार्टर भारत पर लागू नहीं हो सकता।

१० सितम्बर—आइसलैण्ड जाते समय दूसरा अमरीकन भोजन ले जाने वाला जहाज़ डुबोया गया। स्मोलिंस्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समीप रूसी तथा जर्मन टैंक सेना में भीषण युद्ध हुआ। एलमा नगर पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया। कोरिंथ नहर पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

११ सि०—सोवियट सेना ने तीन ओर से आक्रमण किया। पांच दिन तक लगातार टैंक युद्ध हुआ। नीपर नदी पार करने में ४ हज़ार जर्मन सेना डूब गई। लेनिनग्राड में बम्ब वर्षा के कारण समस्त नगर में आग लग गई। तिमोशेनको की सेना आगे बढ़ी।

तटस्थता नियम को भङ्ग करने के लिये रूज़वेल्ट ने प्रधान अफसरों से बात चीत किया। जर्मनो ने अमरीका को उत्तर दिया कि ब्रिटेन सामान ले जाने वाले अमरीका जहाज़ों का मार्ग खतरे से खाली नहीं है।

१२ सि०—प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्ट ने चेतावनी दिया कि धुरी राष्ट्र के जहाज़ अमरीका के रक्षक कटिबंध में प्रवेश नहीं कर सकते। रूस में धुर उत्तर की ओर नाज़ी सेना आगे बढ़ी। लेनिनग्राड का युद्ध पहले की भांति जारी रहा। रूसी सेना ने लोवर नीपर नदी को पुनः पार किया। और जर्मन सेना को पीछे हटाया, मध्यवर्ती भाग में तिमो-शेनको की सेना आगे बढ़ी!

१३ सि०—आइसलैण्ड को सामान ले जाने वाला एक और अमरीकन जहाज डुबोया गया। दक्षिणी यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ जिससे कीव नगर के लिये नया खतरा उत्पन्न हो गया है।

ब्रिटिश वायुयानों ने रूम सागर में शत्रु पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया और सामान से लदे हुये तीन जहाज़ डुबो दिये।

१४ सि०—रूसी तथा जर्मन सेनाओं का मुठभेड़ हुआ। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया और गुप्त टैंकों का प्रयोग किया। ओडेसा के समीप रुमानी सेना की बड़ी हानि हुई। सोफिया के समाचार से विदित हुआ कि बलगेरिया के मन्त्रियों ने अपनी सेना को देश की रक्षा के लिये हथियार उठाने की आज्ञा दे दी।

१५ सि०—कीव की भीषण परिस्थिति हुई नाज़ी सेना आगे बढ़ी। रूसी लोगों ने क्रेमेनचग खाली किया। मास्को में हवाई युद्ध हुआ। ओडेसा और लेनिनग्राड में पहले की भांति युद्ध जारी है।

१६ सि०—संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जल सेना को आज्ञा दी गई कि धुरी राष्ट्र का जो भी सबमरीन जहाज़ दिखाई पड़े उसे पकड़ ले या डुबा दे। पनामा नहर में धुरी राष्ट्र का आक्रमणकारी जहाज़ दिखाई पड़ा जिसका पता लगाया जा रहा है।

ईरान के राजा ने गद्दी छोड़ी। नाज़ी सेना लोअर नीपर नदी पार किया। कीव प्रान्त में नाज़ी सेना बढ़ी। बाल्टिक सागर के द्वीपों के लिये युद्ध हुआ।

१७ सि०—जर्मन गोला वर्षाने वाली तोपों ने इंगलिश तट पर गोला वर्षाया। ईरान के नये राजा ने शपत उठाई रूसी और ब्रिटिश अफ़सर तेहरान नगर में पहुँचे। मध्य वर्ती रूस के युद्ध में रूसी सेना को विजय हुई। १०००० नाज़ी सैनिक मारे गये।

१८ सि०—ओसेल द्वीप के युद्ध में नाज़ी सेना की हार हुई। स्मोलिंस्क नगर के पश्चिम की ओर रूसी सेना ने डेरा डाला। अमरीका की जल सेना ने इङ्गलैण्ड जाने वाले सामान की रक्षा का भली भाँति प्रबन्ध किया।

१९ सि०—क्रीमिया यूक्रेन का मार्ग काट दिया गया जर्मन सेना रूस में दक्षिण की ओर बढ़ी। लेनिनग्राड के चारों ओर युद्ध हुआ। दो धुरी राष्ट्र के सुरंग उठाने वाले जहाज़ नार्वे के तट के समीप डुबा दिये गये।

२० सि०—रीगा खाड़ी के समीप नाज़ी सेना ने वर्म्स और मून दो द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव में भीषण युद्ध हुआ।

२१ सि०—जापान ने रूस को चेतावनी दिया। ब्रिटिश चैनेल में हवाई युद्ध हुआ। आर० ए० एफ० के विमानों ने डच तट के समीप दो पथ रक्षक शत्रु जहाज़ों पर आक्रमण किया। कीव नगर को रूसियों ने खाली कर दया।

२२ सि०—बलगेरिया का राजा बोरिस हिटलर से मिलने गया जिससे सम्भावना है कि रूस तथा बलगेरिया के मध्य युद्ध छिड़ जाय। मिस्र सीमा पर तीन दिन तक युद्ध होने के बाद धुरी राष्ट्रों की सेना को पराजय हुई। रूस की समस्त युद्ध सीमा पर युद्ध हुआ।

२३ सि०—रूसी सेना नीपर नदी के पूर्व की ओर हट गई। जर्मन लड़ाका विमानों ने रूसी जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण किया। आइसलैंड के पास एक और दूसरा अमरीकन जहाज़ डुबाया गया।

जापान ने मंचूको प्रान्त में १० लाख सेना भेजा। रूस में दक्षिण की ओर जर्मन सेना रोस्टोव और कार्कोव की ओर बढ़ी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर संग्राम हुआ। जर्मन सेना ७ मील पीछे हटा दी गई। फिनलैंड की सेना ने लडोगा झील के द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव के युद्ध में रूस को बड़ी हानि हुई और पच्चम लाल रूसी सेना का प्रधान सेनापति पकड़ लिया गया। साइबेरिया की ओर रूसी सेना बढ़ी।

२५ सि०—जर्मन समाचार के अनुसार पता चला कि जर्मन सेना लेनिन ग्राड नगर के बाहरी भाग में प्रवेश कर गई। पश्चिमी डवीना नदी पर घोर संग्राम हुआ। नाज़ी सेना को प्रतिकूल रूसी आक्रमण के कारण पीछे हटना पड़ा। २,५०० जर्मन सैनिक मारे गये।

२६ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर लगातार युद्ध हुआ। नगर की प्रथम रक्षक लाइन तोड़ दी गई। मध्यवर्ती रूसी प्रान्त में नाज़ी सेना के विरुद्ध आक्रमण हुआ। नाज़ी सेना खरकोव नगर से ३५ मील की दूरी पर पहुँची।

२८ सि०—हूनान में चीनी-जापानी सेना में युद्ध हुआ जिससे जापानी सेना का आगे बढ़ना रुक गया।

२६ सि०—रूसी सेना ने १० गांवों पर अधिकार कर लिया। लेनिनग्राड पर रक्षक लाइन सुदृढ़ हुई। कई नाज़ी जहाज़ डुबाये गये। उत्तरी फ्रांस के रेलवे लाइनों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। जर्मन सेना ने क्रीमिया पर विद्रुत युद्ध आरम्भ करने की तयारी किया।

देश-दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। कागज़, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

अक्टूबर १९४१

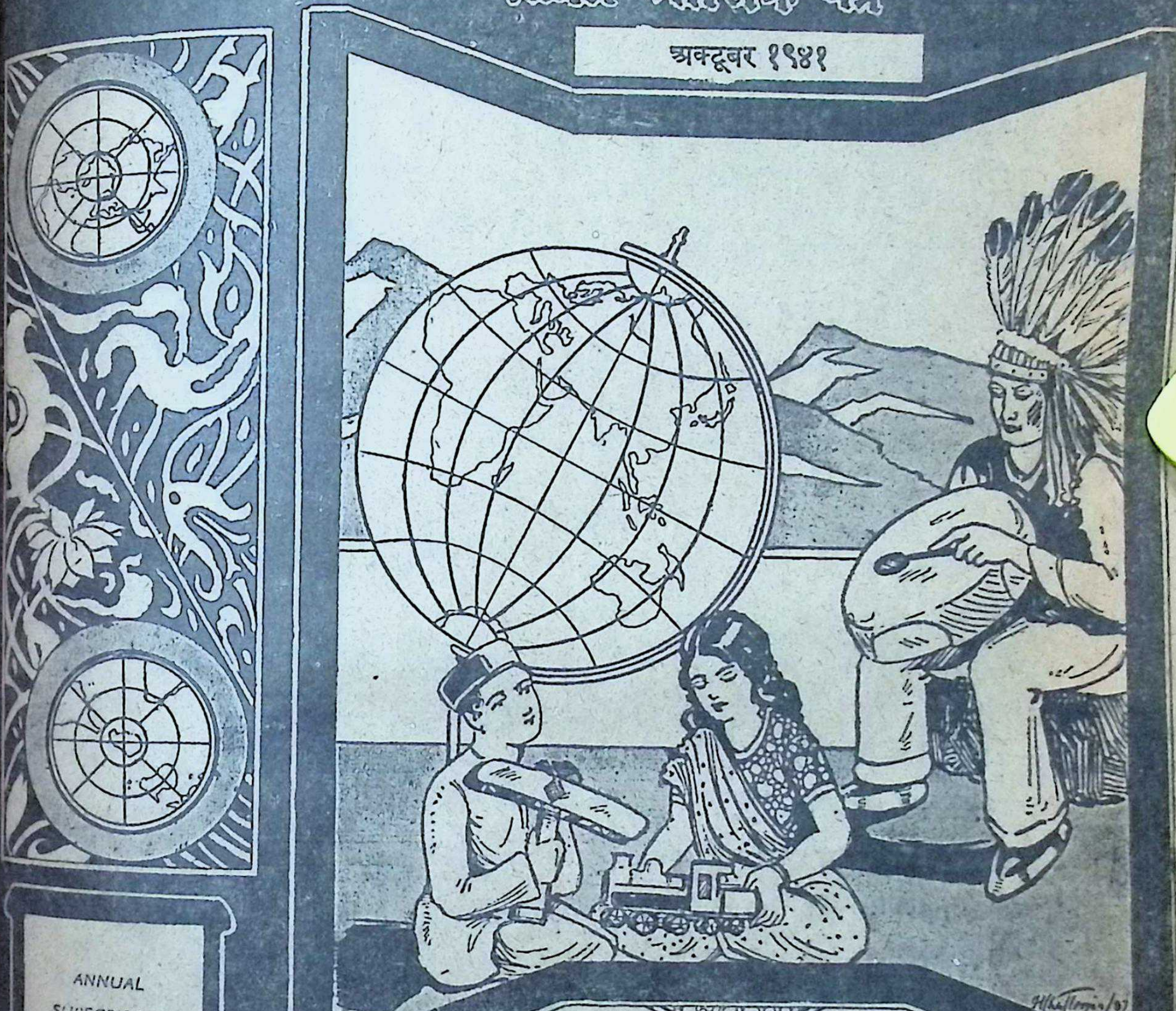

सम्पादक — रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
In. : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

हमें अत्यन्त खेद है कि कई कारणों से 'भूगोल' के प्रकाशन में देरी हो गई। आशा है पाठक गण क्षमा करेंगे।

कागज़ और छपाई का सामान इतना महँगा हो गया है कि 'भूगोल' को उसी मूल्य में प्रकाशित करना असम्भव हो गया है। साथ ही मूल्य बढ़ाने में पाठकों को जो असुविधा होगी वह भी हमें भली भांति विदित है। अतः हमने यह निश्चय किया है कि लड़ाई की अवधि तक 'भूगोल' के केवल २४ पृष्ठ रहें। आशा है पाठक और 'भूगोल' के सहायक हमारी इस योजना से सहमत होंगे और 'भूगोल' के संचालन में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अलास्का के मार्ग	१
२—योरुपीय दुर्भिक्ष	५
३—नवयुग में स्कैण्डिनेविया	६
४—उदबिलाव (बीवर)	१३
५—दक्षिण अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह	१५
६—संसार की जनसंख्या	१९
७—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] कार्त्तिक, सं० १९९८, अक्टूबर, १९४१ ई० [अङ्क ६

अलास्का के मार्ग

पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा में अलास्का एक बहुत बड़ा भाग लेगा। आधुनिक योजना के अनुसार उसे सैनिक रूप से दृढ़ बनाने में १७,५०,००,००० रुपये की आवश्यकता है। इस धन से वहां की स्थल सेना, जलसेना, वायुयान तथा सबमरीन आदि का निर्माण होगा। इस धन में से १२०१३७०० रु० लगाया जा चुका है जिसमें से ६,०२,००,००० रु० सेना में और ५,९९,३७,१०० रु० जल सेना में लगाया गया है। परन्तु जब तक अलास्का संयुक्त राष्ट्र से मार्गों द्वारा नहीं मिला दिया जाता है तब तक यह सभी तयारियां निरर्थक हैं। अलास्का के निवासियों के प्रयोग की प्रायः सभी वस्तुओं का सम्बन्ध है वहां तक अलास्का को अत्र शस्त्र बाहर से ही मंगाने पड़ेंगे। अभी अलास्का को सामान समुद्री मार्ग तथा पैन-अमरीकन हवाई मार्ग से ही जा सकता है।

अलास्का का उत्तरी तट जुलाई, अगस्त और सितम्बर तीन महीनों तक खुला रहता है। बरों से दक्षिण प्वाइन्ट पोप तक का तट जुलाई से कुछ पहले खुलता है और सितम्बर से कुछ बाद को बन्द होता है।

पश्चिमी तट के नोमे बन्दरगाह पर मई मास में स्टीमर जाने आरम्भ होते हैं और अंतिम स्टीमर नोमे बन्दरगाह को २५ अक्तूबर और ५ नवम्बर के बीच छोड़ देता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह बहुत बड़ा है वहां पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का समस्त जहाजी बेड़ा ठहर सकता है परन्तु इस बन्दरगाह पर बहुधा तूफान आया करते हैं। यह बन्दरगाह नोमे के बाद खुलता है और उस से पहले बन्द हो जाता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह के सिरे पर टेल्लेर नामक छोटा परन्तु बहुत सुन्दर बन्दरगाह स्थित है। इस बन्दरगाह पर छोटे जहाज ठहर सकते हैं परन्तु इसका प्रयोग बहुत कम समय तक किया जा सकता है सेंटमिकेल का बन्दरगाह और अधिक दक्षिण की ओर है और वह उसी समय तक खुला रहता है जब कि नोमे का बन्दरगाह खुला रहता है। सेंटमिकेल का बन्दरगाह यूकोन नदी के मुहाने के समीप है। यूकोन का डेल्टा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में जम जाता है।

उपरोक्त बातों से सिद्ध है कि अलास्का का उत्तरी और पश्चिमी तट साल के केवल कुछ ही महीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक खुला रहता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये विशेष उपायों का प्रयोग करना आवश्यक है।

सोवियट सरकार ने अपने तट पर कुछ स्थान ऐसे बना रक्खे हैं जहां बरफ की चट्टानों की चाल की देख भाल की जाती है। वायुयान इस कार्य में बड़े सहायक होते हैं। रूसी लोगों ने बरफ तोड़ने वाले विशेष जहाज निर्माण किये हैं। इन्हीं उपायों का प्रयोग अलास्का में भी किया जा सकता है। इन उपायों से शायद यूकोन के दक्षिण के बन्दरगाह प्रायः साल भर खुले रह सकेंगे।

दक्षिणी अलास्का के मुख्य बन्दरगाह स्कागवे जुनीव, कोर्डोव और सीवर्ड हैं। पनहांडले के बन्दरगाहों में किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। अलास्का का मुख्य बन्दरगाह ऐंकारेज है। यह बन्दरगाह बरफ के कारण शोतकाल में कई महीने तक बरफ से ढका रहता है। ऐंकारेज का बन्दरगाह कुक की खाड़ी पर स्थित है जहां से संसार में सब से ऊँची लहरें उठती रहती हैं। तीव्र लहरों के कारण बरफ के टुकड़े इधर उधर फैल जाते हैं जिससे बन्दरगाह ६ महीनों तक बन्द रहता है। कुछ लोगों का कथन है कि आधुनिक साधनों के प्रयोग करने से एन्कारेज का बन्दरगाह वर्ष भर खुला रह सकेगा।

अलास्का की खाड़ी में सेवर्ड का बन्द गाह है। यह एन्कारेज से ८० मील दक्षिण की ओर है और अलास्का रेलवे के बनने के कारण यह शोतकाल का मुख्य बन्दरगाह बन गया है।

केनाई प्रायद्वीप के पूर्व पोर्टेज की खाड़ी को बन्दरगाह बनाया जा रहा है। अभी तो अलास्का का सब से आवश्यक बन्दरगाह एन्कारेज ही है। इसके ठीक पीछे रिचार्डसन का किला है। यह अलास्का का सब से बड़ा सैनिक स्थान है। एन्कारेज से सरकारी रेलवे लाइन उत्तर की ओर जाती है और फेअर वैङ्क में खतम हो जाती है। फेअरबैङ्क से मतनुस्का घाटी तक एक रेल की सड़क जाती है।

अलास्का के बन्दरगाहों को उसके भीतरी भाग से मिलाने के लिये सेवर्ड-फेअरबैङ्कस रेलवे लाइन है। यह ४७० मील लम्बी है। इसकी कई छोटी शाखाएँ हैं। कार्डोवा से जो रेलवे लाइन केपेर नदी के किनारे किनारे जाती थी वह १९३८ ई० में बन्द कर दी गई है परन्तु वह पुनः खोली जा सकती है। यूकोन प्रान्त की रेलवे लाइन सब से बड़ी है यह स्कागवे से ह्वाइट दर्रे से होकर ह्वाइट हार्स को जाती है। ह्वाइट हार्स से सामान तथा सवारियां नाव द्वारा यूकोन नदी हो कर डावसन और अलास्का के बेसिन को जाती हैं। अलास्का रेलवे लाइन की भांति ह्वाइट दर्रे की लाइन साल भर खुली रहती है।

अलास्का के भीतरी भाग की सब से प्रसिद्ध लाइन रिचर्डसन है। यह वल्डेज़ से फेअर बैंक्स को जाती है और ३७१ मील लम्बी है। दर्रों पर यह सड़क शीतकाल में बरफ से बन्द हो जाती है परन्तु आधुनिक उपायों के प्रयोग करने से यह साल भर चालू रह सकती है। फेअर बैंक्स से एक सड़क सर्किल को जाती है।जिसे स्टोसे मार्ग कहते हैं। बहुत सी सड़कें जंगलों में होकर जाती हैं और शीत काल में खुली रहती हैं परन्तु ग्रीष्म काल में कीचड़ होने के कारण बन्द हो जाती हैं। इसलिये अलास्का को आने जाने तथा सामान ढोने के लिये वायुयानों को ही मुख्य साधन बनाना पड़ेगा।

अलास्का में सामान तथा सवारी ढोने के लिये विमान का ही अधिक प्रयोग करना पड़ता है। १९३८ ई० में अलास्का में उतना ही सामान विमानों द्वारा ढोया गया जितना समस्त संयुक्तराष्ट्र के विमानों में ढोया गया था। अलास्का में तीन मुख्य हवाई मार्ग हैं। (१) पैन अमरीकन हवाई मार्ग यह मार्ग सीट्रेले से वानकूवर को जाता है। दूसरा मार्ग वानकूवर से और तीसरा एडमोनटन से आरम्भ होता है। इन मार्गों को संगठित रूप से प्रयोग में लाने से न्यूयार्क से फेअर बैंक की यात्रा २० घंटे में समाप्त की जा सकती है दूसरे तीन घंटे की हवाई यात्रा के बाद संयुक्त राष्ट्र और रूस की सीमा तक की यात्रा।

१९३९ ई० में अलास्का में १७५ विमान हवाई लाइनों में काम कर रहे थे। अब उनकी संख्या और अधिक बढ़ गई है। यूकोन और कुस्कोक्विम अलास्का की दो बड़ी नदियाँ हैं। यूकोन नदी उत्तरी अमरीका में तीसरी बड़ी नदी है। इस नदी में इसके मुहाने से डावसन नगर तक स्टीमर चल सकते हैं। मुहाने से डावसन की दूरी ११०० मील है। डावसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से व्हाइट हार्स तक छोटे तथा छिपले स्टीमर चलते हैं जिसकी दूरी ३०० मील है। कुस्कोक्विम नदी में ३३० मील तक जहाज चलते हैं। यह दोनों नदियां मई से अक्तूबर तक खुली रहती हैं। यह प्रस्ताव किया गया है कि यदि बेरिंग सागर के समीप कूकोन और कुस्कोक्विम को नहर द्वारा मिला देने से व्यापारिक मार्ग में बड़ी वृद्धि हो जावेगी। नहर का बनाना सरल है और व्यय भी अधिक न पड़ेगा साथ ही साथ अलास्का के भीतरी आने जाने के मार्ग में एक बड़ी वृद्धि हो जावेगी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से अलास्का को समुद्री मार्ग होना परमावश्यक है। यूगेट साउण्ड से पन्हण्डेल के बन्दरगाहों को जाने वाले जहाज प्राकृतिक रूप से भीतरी मार्ग का ही अनुसरण करते हैं। इस मार्ग में छोटे छोटे द्वीप ब्रिटिश कोलम्बिया और अलास्का का पर्वतीय तट पड़ता है। यह बहुत ही आवश्यक यात्रा मार्ग माना जाता है। अलास्का को जाने वाले दूसरे जहाज खुले समुद्री मार्ग में होकर जाते हैं इस लिये युद्ध काल में उन पर आक्रमण होना अनिवार्य है। तटीय मार्ग होकर जाने वाले जहाज भी खतरे से खाली नहीं रह सकते क्योंकि द्वीपीय तथा पहाड़ी तट पर पनडुब्बे जहाजों के ठहरने को विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं।

अलास्का की जन संख्या ७० हज़ार है। शान्ति के समय में यहां के जल तथा स्थल मार्ग वहां के निवासियों के लिये काफी हैं परन्तु युद्ध काल के लिये यह मार्ग काफी नहीं हैं। यदि अमरीका को प्रशांत महासागर में पराजय होता है तो फिर अलास्का के निवासी अलास्का में क़ैद हो जावेंगे और फिर वह भूखों मर जावेंगे क्योंकि उन्हें भोजन सामग्री भी प्राप्त नहीं हो सकेगी। इन कारणों से पश्चिमी कनैडा होकर अलास्का के लिये एक नये मार्ग की बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रस्ताविक मार्ग के लिये कई मार्गों का प्रस्ताव हुआ है जिनमें से चार ऐसे हैं जिन पर काफी वाद-विवाद हुआ है वह अ, ब, स, द मार्गों के नाम से सूचित किये गये हैं। अ मार्ग के सम्बन्ध में काफी लिखा पढ़ी हुई है। यह मार्ग सीट्टले, वानकूवर, प्रिंसजार्ज, हेजेल्टोन व्हाइट हार्स और फेअर बैंक्स होकर जावेगा। सीट्टले से हेजेल्टोन तक इस मार्ग में सड़क बनी है परन्तु इस मार्ग का बहुत थोड़ा भाग सैनिक प्रयोग के योग्य है। यह मार्ग बड़ा ही सुन्दर है परन्तु पहाड़ी तथा टेढ़ा होने के कारण इस मार्ग होकर रेलवे बनाने में खर्च अधिक पड़ेगा। यह मार्ग तट के समीप पड़ेगा जिससे मार्ग के बन जाने पर यह खूब चालू रहेगा। इस मार्ग में कई एक प्रसिद्ध स्थान भी पड़ेंगे साथ ही साथ यह मार्ग समस्त साल खुला रहेगा शीत काल में भी यह बरफ से नहीं ढकेगा।

इस मार्ग का प्रधान पक्षपाती मिस्टर डोनल्ड मैक्डोनल्ड और अलास्का के अनथनीजे डाइमँड (संयुक्तराष्ट्र के कांग्रेस का सदस्य) के कथन के अनुसार इस मार्ग को तयार करने में लगभग १०८ करोड़ रुपये खर्च होंगे। यह व्यय एक लड़ाका जहाज बनाने के व्यय का केवल तिहाई है। लड़ाका जहाज को चट्टान में टक्कर खाकर टूट जाने की सम्भावना है और उसकी एक नियमित आयु भी है परन्तु मार्ग तो बहुत समय तक चलेगा इस मार्ग के विरोधियों का कहना है कि तट के समीप होने के कारण इस पर शत्रु का हवाई आक्रमण हो सकेगा और विजयी होने की दशा में वह इसे बन्द कर देगा या काट देगा।

ब मार्ग प्रिंस जार्ज तक उसी मार्ग होकर है जिससे होकर अ है परन्तु उसके बाद वह अधिक भीतरी भाग होकर जावेगा। इस सड़क को बनाने में अधिक समय लगेगा और खर्च भी अधिक पड़ेगा। अ और ब दोनों मार्गों के दक्षिणी सिरे प्रशांत महासागर पर हैं इस लिये बहुत से लोगों का कहना है कि यह मार्ग ठीक नहीं है क्योंकि कनैडा के कारखाने दक्षिण पूर्व की ओर और संयुक्तराष्ट्र के कारखाने मिसीसिपी नदी के पूर्व स्थित हैं। इस लिये सामान लादने वाली लारियों को इन मार्गों पर आने के लिये त्रिभुजाकार मार्ग की यात्रा करनी पड़ेगी। लोगों का मत है कि सड़क का आरम्भ शिकागो से होना चाहिये जिसमें विनीपेग आदि स्थान पड़ें।

स मार्ग अधिक सीधा है और अ, ब की अपेक्षा इसमें खर्च कम पड़ेगा। यह मार्ग उपजाऊ प्रदेश में होकर गुजरता है। यह मार्ग शीत काल के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा ही सुगम होगा जब कि और दूसरे मार्ग बरफ से ढक जाते हैं। इस मार्ग का नोटीकोविन से बड़ी झीलों के पश्चिमी किनारे तक का भाग २ वर्ष पहले बना है।

द मार्ग मैकेन्जी नदी के समानान्तर कीले नदी के मुहाने तक जाता है। मैकेन्जी नदी उत्तरी अमरीका की दूसरी बड़ी नदी है। यह सड़क कई भागों में बाँट कर बनाई जा सकती है। यह सड़क लगभग प्रत्येक स्थान पर रेलवे लाइन के समानान्तर रहेगी इसलिये सड़क बनाने के लिये सामान सरलता पूर्वक पहुँच सकेगा। अलबर्टा प्रान्त के कोष मंत्री का कहना है कि द सड़क के तयार करने में ४ या ५ करोड़ रुपया खर्च होगा। स मार्ग की भांति द मार्ग में दक्षिणी अलबर्ट और एमसी मूरे के तेल के सोते पड़ते हैं। इसी सड़क पर कनैडा की इम्पीरियल आएल कम्पनी का कारखाना है। नार्मन के तेल सोतों से बहुत ज्यादा तेल निकाला जा सकता है। १९२८ ई० में इम्पीरियल कम्पनी ने ३७,६६७ बैरेल तेल निकाला था। नार्मन क्षेत्र के तेल से यूकान और अलास्का के भीतरी भाग के तेल की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

डी मार्ग बनाने में नार्मन क्षेत्र को तेल केवल सहायक ही न होगा वरन् उ के कारण सड़क सदैव चालू रहेगी। क्रेअर बैंक्स से नार्मन के समाप तक सब ऋतुओं में काम आने वाली सड़क के तयार करने से अलास्का की रक्षा करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

द मार्ग पर शत्रु के हवाई आक्रमण की सम्भावना बहुत कम रहेगी। शीत काल में द मार्ग में शिकागो से पीसे नदी तक (१००० मील) तक बरफ पड़ने से अवश्य ही कष्ट पहुँचने की सम्भावना है।

पैन अमरीकन हवाई कम्पनी संयुक्तराष्ट्र अमरीका और अलास्का के बीच हवाई मार्ग बनाना चाहती है। व्हाइटहार्स पैन अमरीकन मार्ग यूकोन को दक्षिणी लाइन से मिलाता है। यह वानकूवर और एडमोन टन को जाती है।

अलास्का की स्थल तथा जल सेना अपने अपने हवाई अड्डे बना रही है। जल सेना सिट्का, कोडियक

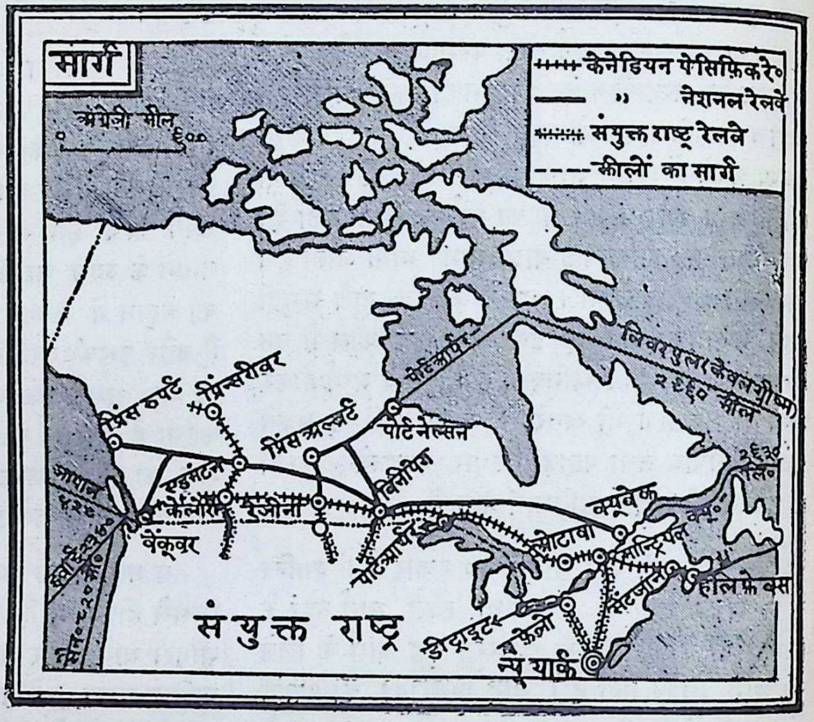

द्वीप समूह और डच हार्बर वाले मार्ग में पिट्रोल द्वारा विमानों को चलाने का प्रबंध किया जा रहा है। सबसे बड़ा हवाई अड्डा ऐङ्करेज में है। संयुक्त राष्ट्र से अलास्का तक पहुँचने के लिये विमानी मार्ग बन रहे हैं। बड़े विमान अब भी संयुक्त राष्ट्र से उड़कर अलास्का पहुँचते हैं परन्तु छोटे वायुयान नहीं पहुँचते हैं इसी कारण मार्ग में स्थान पर हवाई स्टेशन बन रहे हैं जिससे मार्ग में ठहरते हुये वह अलास्का जा सकें। जब ये मार्ग पूर्ण रूप से तयार हो जावेंगे तो फिर कनैडा और संयुक्तराष्ट्र से लड़ने वाले विमान सभी ऋतुओं में अलास्का जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुपीय दुर्भिक्ष

पत्रों के शीर्षक पंक्तियों द्वारा पता चलता है कि योरुप में अकाल पड़ रहा है अथवा निकट भविष्य में भोजन सामग्री के अति कमी होने की सम्भावना है।

पहले योरुप में बहुधा अकाल पड़ता था परन्तु उसके पश्चात् बर्तमान युग में योरुपीय राष्ट्रों ने ऐसा प्रबंध किया कि वहां अकाल की सम्भावना जाती रही अब वहां पर युद्ध के समय ही दुर्भिक्ष पड़ने की सम्भावना है जैसा कि गत महायुद्ध के समय हो चुका है।

भारतवर्ष, रूस और चीन आदि देशों में अब भी सदैव दुर्भिक्ष पड़ा करते हैं परन्तु योरुप में नहीं पड़ते इसका मुख्य कारण यह है कि वहां पर लोग तथा देशों की सरकारें काफी भोजन सामग्री एकत्रित रखती हैं जो समय पड़ने पर शीघ्र ही प्रजा की सेवा में उपस्थित कर दी जाती हैं। आधुनिक कृषि कला तथा नवीन कलाओं के कारण वहां की उपज बहुत बढ़ गई है फिर वहां पर ऐसे पशु पाले जाते हैं जो नाज के कमी के समय भोजन का काम देते हैं। योरुप में बचपन से ही लोगों को शिक्षा दी जाती है कि भोजन सामग्री ख़राब न की जावे नहीं तो फिर उसकी कमी हो जाने की सम्भावना है। वहां प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ भोजन सामग्री का भण्डार रखने का अभ्यस्त हो गया है। योरुप की जनसंख्या ३३ करोड़ और किसानों की संख्या १२ करोड़ है। १२ करोड़ किसान भोजन सामग्री तयार करने में ही लगे रहते हैं। सभी भोजन बचा कर रखते हैं।

योरुप के देशों में इस समय भोजन नियंत्रण की नीति चल रही है। इस नीति का अर्थ यह कदापि नहीं है कि वहां भोजन की कमी है अथवा दुर्भिक्ष पड़ गया है वरन् इसका मतलब यह है कि वह देश दुर्भिक्ष से बचने और प्रजा तथा सेना को सदैव समान रूप से भोजन पहुँचाने का प्रबंध कर रहा है।

आज योरुप के सभी राष्ट्रों ने भोजन नियंत्रण करने की नीति का अनुसरण किया है इंगलैंड को छोड़ कर योरुप के सभी देश ६ प्रति शत भोजन सामग्री (नाज, आलू और चीनी) विदेश से मंगाते हैं। वे २० प्रतिशत चर्बी और तेल बाहर से खरीदते हैं। बर्तमान युद्ध के आरम्भ होने पर बाहर से आने वाले सामानों में कमी हो गई इसी लिये पोलैंड पर अधिकार जमाने के साथ ही जर्मनी ने भोजन नियंत्रण नीति का अनुसरण किया था। उसके बाद दूसरे राष्ट्रों ने भी वही नीति अपने देशों में चलाई। स्वीडन, फिनलैंड, स्विटजरलैंड, स्पेन और पुर्तगाल को छोड़ कर लगभग सभी योरुपीय राष्ट्रों में युद्ध काल के आरम्भ होते ही भोजन नियंत्रण नीति चल पड़ी थी। जर्मनी में प्रत्येक भांति की भोजन सामग्री नियंत्रित है। स्विटजरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में रोटी पर नियंत्रण नहीं है। डेनमार्क और नार्वे में मांस तथा मछली पर नियंत्रण नहीं है। जर्मनी बेल्जियम और हालैंड को छोड़ कर सभी योरुपीय राष्ट्रों में आलू का नियंत्रण है।

इस वर्ष अप्रैल मास में स्पेन के साधारण भोजन करने वाले को ४३ औंस रोटी दी जाती है बेल्जियम में ५६ और फ्रान्स में प्रति सप्ताह ५९ औंस रोटी दी जाती है। डेनमार्क में ८० औंस और जर्मनी में ८५ औंस रोटी दी जाती है। पेशे वालों के लिये कुछ मुख्य नियंत्रण लगाये गये हैं। मक्खन और चर्बी हालैंड में ३ औंस, अधिकार में किये हुये फ्रान्स में ३ औंस, बोहेमिया और मोराविया में ५ औंस, इटली में ७ औंस हालैंड में ९ औंस, जर्मनी में ९ औंस नार्वे में ११ औंस और डेनमार्क में १२ औंस प्रति-सप्ताह प्रति व्यक्ति को मिलने का नियंत्रण है। इसी प्रकार चीनी का नियंत्रण सवा दो औंस से १३ औंस तक है।

पोलैंड की मुख्य भोजन सामग्री आलू तथा राई की रोटी है। फ्रान्स में मुख्य भोजन गेहूँ की रोटी है। कुछ देशों में भोजन नियंत्रण नीति जल्दी जल्दी बदलती रहती है और जर्मनी आदि में यह नीति लगभग स्थाई सी है। जहां कहीं आलू की अधिक उपज है वहां यदि रोटी का नियंत्रण कठिन है तो इस का अर्थ यह नहीं है कि वहां के लोग पेट भर भोजन नहीं खाते हैं। वह आलू से ही अपना पेट भरते हैं। पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, नार्वे, डेनमार्क और हालैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आलू अधिक होता है। मांस की कमी की पूर्ति मछली, मक्खन, मटर, सेम और मसूर से होती है।

गत बसन्त ऋतु तक योरुप के सभी राष्ट्रों ने अपने यहां की भोजन सामग्री के भण्डार पर अधिकार पा लिया है। इसी लिये जिन वस्तुओं के कमी की शङ्का थी उन पर आवश्यकतानुसार नियंत्रण नीति लागू कर दी गई है। इस कार्य में योरुप के भोजन प्रबन्ध कर्ता शासकों ने अपनी विशेष योग्यता का परिचय दिया है। जर्मनी के बाद भोजन प्रबन्ध के शासन में स्विटजरलैंड, हालैंड, डेन्मार्क, स्वीडन और फिनलैंड का नम्बर है।

योरुप के कुछ देशों ने युद्ध के बादल घुमड़ते देखकर १९३८-३९ से ही भोजन सामग्री एकत्रित कर लिया था। नार्वे, हालैंड, बेल्जियम और फ्रांस में जर्मन सेना ने अधिकांश भोजन सामग्री के भण्डारों पर अधिकार कर लिया था परन्तु राजनैतिक, सैनिक या कारखानों के सहयोग उनमें से कुछ वापस कर दिये गये हैं।

योरुप के सभी देशों के सुयोग्य भोजनशासकों ने अपने अपने यहां भोजन बचाने के नियम लागू कर दिये हैं। पहले गेहूँ अथवा राई आदि से १०० पौंड में ७० पौंड आटा तयार होता था परन्तु अब मिल के मालिकों को सरकारी नियम के अनुसार ८० या ९० पौंड आटा तयार करना पड़ता है। इस प्रकार जहां ३० या ४० पौंड प्रतिशत चोकर निकलना था वहां अब १० या १५ पौंड चोकर निकलता है। इसी प्रकार रोटी की भी बचत की गई है। जो रोटी पहले चरनी में जाती थी और पशु खाते थे वह अब मनुष्यों के सामने मेज पर आती है। गेहूँ और राई के आटे में जौ, ज्वार, नाज और आलू की माड़ी आदि मिलाए जाते हैं।

जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नार्वे, स्पेन, हँग्री, यूगोस्लाविया और रूमानिया में गेहूँ के आटे में दूसरे प्रकार के आटे मिलाये जाते हैं। स्पेन में गेहूँ के आटे में आधा दूसरी वस्तुओं का आटा रहता है।

इसी प्रकार और दूसरे प्रकार के भोजनों की बचत की गई है। योरुपीय देशों में जितना दूध होता है वह समस्त पहले बच्चों के लिये इकट्ठा होता है। बच्चों से जो बचता है उसका मक्खन, मलाई तथा पनीर बनाया जाता है। मक्खन तथा मलाई का बचा दूध भोजन के लिये प्रयोग होता है। जर्मनी में युद्ध सम्बन्धी "मिगेटी" भोजन बांटा जाता है जिसमें छांछ, आलू की माड़ी और दूसरी वस्तुएं मिली रहती हैं। सोयाबीन से तेल निकाला जाता था और उसकी खली जानवर खाते थे परन्तु अब वह जर्मन सैनिकों को भोजन के लिये दिया जाता है।

योरुपीय देशों में ३५ प्रतिशत नाज खाया जाता था और ६५ प्रतिशत पशुओं को खिलाया जाता था। अब लोगों ने मांस की अपेक्षा रोटी खाना अधिक अच्छा समझा है इसलिये उन्हों ने नाज खाने वाले पशुओं का पालना कम कर दिया है। नाज मुर्गियों और सुअरों को अधिक दिया जाता था। अंडे की खपत अधिकतर इंगलैंड में होती थी। डेनमार्क में पहले १५० लाख मुर्गियां थीं अब वहां ७ लाख रह गई हैं। हालैंड में २८० लाख के स्थान पर अब २०० लाख मुर्गियां रह गई हैं। सुअर पालने वाले देश सुअरों के लिये नाज विदेश से मंगाते थे। इसी कारण डेनमार्क ने अपने सुअर जर्मनी के हाथ बेंच दिये हैं और अब वहाँ पर ३१ लाख के स्थान पर केवल १५ लाख सुअर रह गये हैं।

डेनमार्क ने अपनी १६ लाख गायों में २ लाख गाएँ डेअरी फार्म ठीक रखने के लिये चुन ली हैं। हालैंड ने अपने यहां के पशुओं में १८ प्रतिशत की कमी कर दी है। फ्रांस में ८ प्रतिशत पशुओं की हानि हुई है।

पशुओं को जहाँ खली, दाना आदि भोजन को दिया जाता था वहाँ अब भूसा, खली, दाना दिया जाना कम कर दिया गया है और उसके स्थान पर समुद्र से प्राप्त वस्तुएँ (घास, काई आदि) दिया जाता है। वृक्षों की पत्तियां तोड़ कर सुखाई जाती हैं और मशीन द्वारा तयार कर जानवरों को दिया जाता है।

विज्ञान शास्त्र द्वारा जंगल से प्राप्त वस्तुओं से पशुओं के हेतु भोजन तयार किया जाने लगा है। सेल्यूलोस कारखानों में तयार किया जाता है। इसके कारखाने दिन प्रति दिन बढ़ रहे हैं। कार्ड लकड़ी की लुब्दी तयार करके जानवरों को खाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी जाती है। इन वस्तुओं का मूल्य कम रक्खा गया है जिससे सभी लोग खरीद सकें।

शीतकाल में योरुप में चारे की अधिक कमी हो जाती है इसलिये गर्मी के दिनों का चारा जो पहले नष्ट हो जाता था अब सुखा कर रक्खा जाता है। जर्मनी, दक्षिणी फ्रान्स, हालैंड, स्विटज़रलैंड और बेल्जियम आदि देशों में चारा रखने के लिये जल्दी जमाने वाले और शीतल स्थान बनाए जा रहे हैं। नमक मिला कर सामग्री रक्खी जाती है जिससे उसका प्रयोग हो सके।

योरुप में बहुत सी ऐसी वस्तुएँ पैदा होती हैं जो अब तक भोजन सामग्री का काम नहीं देती थीं। अब उन्हें भोजन सामग्री बनाने की योजना बनाई जा रही है परन्तु इस कार्य में अभी एक साल तक कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता।

पश्चिमी योरुप में युद्ध के कारण कृषि को बहुत हानि नहीं पहुँची है जो हानि भी हुई था उसको पुनः ठीक कर लिया गया है। हालैंड ने अपने यहां पुष्पों की खेती मना कर दी है और उसके स्थान पर छोटे बाग बना कर उसमें छोटे छोटे फल पैदा करने के लिये कहा है। बेल्जियम ने ६० प्रतिशत और अधिक गेहूँ तथा २० प्रतिशत और अधिक आलू पैदा करने का निश्चय किया है। फ्रान्स तथा विची सरकार ने ५ लाख एकड़ भूमि में आलू पैदा करने का ठीका दिया है। ठीकेदारों के कार्य पूरा न करने पर तावान देना पड़ेगा।

आलू तथा गुड़ की उपज पर अधिक जोर दिया जा रहा है क्योंकि इनमें नाज से कई गुना शक्ति होती है। योरुप के सभी राष्ट्र इन्हीं वस्तुओं की उपज की कोशिश कर रहे हैं।

जर्मनी अपने देश की उपज अधिक करने के लिये जोर दे रहा है। वह गुड़ तथा आलू की उपज के हेतु चरागाहों तथा परती की भूमि को भी खेत बना रहा है १९४० ई० में अच्छी वर्षा होने के कारण वहाँ एक अरब अड़तालीस करोड़ चालीस लाख मन आलू अधिक हुआ है। ईख पैदा करने की भूमि जर्मनी में १९३२ ई० की अपेक्षा दूनी कर दी गई है। वहां प्रत्येक एकड़ में चीनी तो और अधिक तयार की ही जाती है साथ ही साथ उसमें पशुओं के लिये चारा भी बहुत होता है। नाज की अपेक्षा ईख के खेतों में आठ गुना चारा अधिक होता है।

योरुप में चर्बी की बहुत कमी है। चर्बी की कमी को पूरा करने के लिये सुअरों को अधिक मोटा बनाने के लिये रस निकाली ईख दी जाती है। तेलहन की उपज पर भी बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है। सूर्यमुखी, सरसों, अलसी, जूट, पाट, तिल, पोस्ता आदि की खेती बढ़ाई जा रही है। सोयाबीन और कपास की उपज दक्षिणी योरुप में बढ़ाई जा रही है।

जिन देशों में खेती कम होती थी वहां खेती की भूमि बढ़ाई जा रही है। हालैंड, नार्वे, स्विटज़रलैंड आदि देशों में खेती के लिये नई भूमि खाली की गई है। ज्वेडरजी के पोल्डर्स को पानी से खाली करके खेती के योग्य बनाया जा रहा है। नार्वे में भी इसी प्रकार काम हो रहा है। स्विटज़रलैंड ने अपने यहाँ एक लाख एकड़ भूमि खेती के लिये तोड़ी है। फिनलैंड ने ७ लाख ४० हज़ार एकड़ जङ्गली भूमि खेती के लिये खाली की है। वहाँ पर जौ, जई और आलू की खेती की जावेगी। इन देशों में भेड़ों का गल्ला बढ़ाया जा रहा है। भेड़ तथा बकरियां पहाड़ी स्थानों की घास सुगमता से चर सकती हैं।

सभी देशों में नगरों के अन्दर मुर्गी के बच्चे अधिक पाले जा रहे हैं।

समुद्री तट की भूमि जो खाली पड़ी रहती थी वहां पर भी अब खेती का काम आरम्भ हो गया है। डेनमार्क, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम आदि देशों में अब तक मछली मारने वाले जहाज बन्दरगाहों पर पड़े थे वह ब्रिटिश बम्बाजी अथवा जर्मन सरकार की मनाही के कारण समुद्र नहीं जाते थे परन्तु अब वह समुद्रों में जाने लगे हैं। वह अब मछली का शिकार करते हैं जिससे काफी तेल मिलता है।

गत ग्रीष्म काल से नार्वे तथा डेनमार्क में जितनी मछली मारी जाती है वह नार्वे भेज दी जाती है १९४० ई० में नार्वे के निवासियों ने १० लाख ७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार टन (१ टन=लगभग २८ मन) मछली का शिकार किया। १९११ के बाद से १९३९ तक इतनी अधिक मछली नहीं मारी गई थी। शिकार की हुई मछली का कुछ भाग स्थानीय कार्य में लग जाता है कुछ बाहर जाती है और शेष का तेल निकाला जाता है। तेल निकालने के पश्चात् जो कुछ बाकी रह जाता है उसकी खाद तयार की जाती है और मछलियों को चारा बनाया जाता है।

जर्मनी ने अपने अधिकार में किये हुये देशों के मध्य व्यापार चलाने में बड़ी चतुरता दिखलाई है। योरुपीय देशों के बीच उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम को जहाजों द्वारा सामान आता जाता रहता है। तटीय व्यापार में ब्रिटिश बम्ब वर्षा के कारण कठिनाई पड़ती है फिर भी व्यापार बिलकुल बन्द नहीं है।

बलगेरिया को जर्मनी से पास बिना चुङ्गी के मिलता है और वह पास के बदले में नाज, गेहूँ, सोयाबीन सूर्यमुखी आदि सामान भेजता है। हंग्री और रूमानिया दोनों जर्मनी के हाथ व्यापार करते हैं। डेनमार्क और इटली के मध्य सामान परिवर्तन होता है। चावल, फल, शराब और तम्बाकू इटली डेनमार्क भेजता है। डेनमार्क से मांस अंडा, डेअरी की कलें और दूसरी कलें इटली आती हैं।

फिनलैंड, स्वीडन, स्विटजरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस में विदेशों से भोजन सामग्री जाती है। इन देशों को भोजन सामग्री ले जाने वाले जहाज ब्रिटिश सरकार द्वारा नहीं रोके जाते हैं। लिस्बन और जेनोआ के बीच जहाज आते जाते हैं। फिनलैंड को रूस, अर्जनटाइन और संयुक्तराष्ट्र अमरीका से भोजन सामग्री आती है (परन्तु रूस से युद्ध छिड़ने के कारण अब बन्द है) स्पेन को नाज अर्जनटाइन से मिलता है। फ्रान्स को मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनिस और अर्जनटाइन से काफी मात्रा में नाज आता है। योरुप के भीतरी व्यापार में बड़ी कठिनता हो रही है। सड़कें, रेलें, नदियां और नहरें सामान ढोने वाले जहाजों तथा गाड़ियों से भरी रहती हैं। तटीय व्यापार को ब्रिटिश बम्ब बाजी तथा ब्लाकेड (घेरा) के कारण हानि हो रही है।

बर्तमान साल की उपज का हाल अभी ठीक ठीक ज्ञात नहीं है। बर्षा अच्छी हुई है इसलिये उपज के अच्छे होने की पूर्ण सम्भावना है।

यद्यपि बेल्जियम, मध्यवर्ती पोलैंड और स्पेन में भोजन सामग्री की कुछ कमी है फिर भी मालूम होता है कि बर्तमान युद्ध में अभी योरुप को भोजन सामग्री की इतनी कमी न होगी कि वहां दुर्भिक्ष पड़ जावे। यदि युद्ध अभी दो तीन वर्ष तक चलता है और संयुक्तराष्ट्र अमरीका तीव्रता के साथ युद्ध में भाग लेता है तो अवश्य ही कुछ न कुछ परिवर्तन योरुप की स्थिति में होगा नहीं तो जब तक हिटलर का निरंकुश शासन योरुप में है तब तक योरुप में भोजन सामग्री के कारण किसी प्रकार की गड़बड़ी होने की सम्भावना नहीं है। हां यदि वहां पर विशेष बम्ब बर्षा की गई तो फिर सामान के आने जाने के साधनों में गड़बड़ी पड़ जावेगी तब फिर वहां आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक गड़बड़ी फैलने की सम्भावना हो जावेगी।

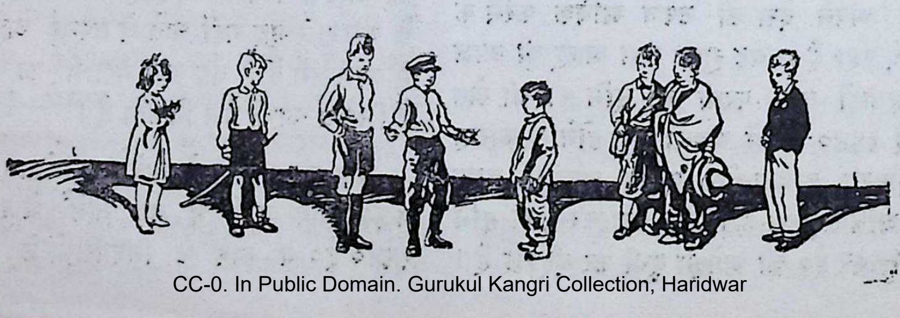

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग में स्कैण्डीनेविया

युद्ध के पहले स्कैण्डीनेविया के देश भौगोलिक, ऐतिहासिक, भाषा, शासन तथा जातीय रूप से एक साथ संगठित थे आज वे जर्मन सत्ता में एक साथ संगठित हैं। जर्मनी ने उनकी रक्षा करने का भार उठाया है।

साल भर युद्ध चलने के पश्चात् स्कैण्डीनेविया के देशों को शान्ति प्राप्त हुई है। हिटलर का विजय रथ उत्तरी देशों को छोड़ दक्षिण को ओर गया और पूर्व की ओर जा रहा है। उत्तर में फ्लेन्सबर्ग की खाड़ी से उत्तरी अंतरीप तक और उसके आगे स्पिटबर्जेन तक हिटलर की सत्ता स्थापित है वहां से ब्रिटिश सत्ता उठ गई है। स्कैण्डीनेविया प्रान्त में जो ब्रिटिश आक्रमण हुये हैं उन्हें बड़ा महत्व दिया गया है परन्तु उन आक्रमणों से बर्तमान सैनिक कार्य में किसी प्रकार की हानि नहीं हुई है।

नार्वे

नार्वे ने जर्मन आक्रमण का सामना करने के लिये साहस किया इसी कारण उसे उसका शिकार होना पड़ा। आज उसकी स्थिति राजनैतिक दृष्टि से अच्छी नहीं। वहां पर राएच के कमिश्नर जोजेफ तेबोंवेन का शासन चल रहा है।

जब नार्वे के राजा हैकेन इंगलैंड चले गये तो उनके सभी मन्त्री उनके साथ नहीं गये। उन प्रतिनिधियों और जर्मन सत्ता के बीच सुलह की बातचीत चल रही थी। २५ सितम्बर १९४० ई० में उस सुलह का अंत हो गया। उसके बाद से नार्वे में (तेबोंवेन और उसके साथी विडको क्विशलिंग के नियम के सिवा) किसी प्रकार का नियम नहीं है। सभी प्रकार के वैधानिक नियमों तथा कामों का अंत हो गया है। सभी कानून के अनुसार बनाये गये जज हटा दिये गये हैं। सब से बड़े न्यायालय को राएच के कमिश्नर के अधिकार कर दिया गया है। नाजी जर्मनी अथवा रूस के मजदूरों की भांति वहां के मजदूरों को भी चारों ओर आने जाने की आज्ञा नहीं है उन्हें जर्मन सत्ता के अनुसार काम करना तथा मजदूरी ग्रहण करनी पड़ती है। वह गुलामों की भांति बना दिये गये हैं। नार्वे में जितने राजनैतिक दल थे क्विस्लिंग के दल को छोड़ कर सभी दल छिन्न भिन्न कर दिये गये हैं। हैकन राजसिंहासन जब्त कर लिया गया है और पार्लियामेंट की बैठक रद्द कर दी गई है। जिस सरकार ने नार्वे के शासन की बागडोर ९ अप्रैल से २५ सितम्बर १९४० ई० तक अपने हाथ में रक्खी थी उसे रद्द कर के राएच की ओर से एक कमिश्नर नियुक्त किया है। कमिश्नर ने १३ सचिव बनाए हैं जो नार्वे के एक एक भाग के एकाधिपत बने हैं और मनमाना शासन कर रहे हैं। हिटलर की सहायता से क्विस्लिंग ने नार्वे की सरकार का संगठन किया है। युद्ध के पहले नार्वे में सभी दल आपस में लड़ा करते थे परन्तु आज सभी दलों का नाश हो गया है।

विडकुनक्विस्लिंग नार्वे का एकाधिपत बनना चाहता है उसने फ्युहरर अथवा ड्यूस की भांति फोरेरेन की उपाधि ग्रहण की है। क्विस्लिंग मंत्री-मंडल का नियंत्रण करता है। नार्वे की प्रजा क्विस्लिंग से प्रसन्न नहीं है। सभी लोग उसके विरुद्ध हैं फिर भी हिटलर का पात्र होने के कारण वह नार्वे का सब से बड़ा अफसर बन रहा है। ओस्लो-बर्लिन लिखा-पढ़ी क्विस्लिंग के सम्बन्ध में हो रही है क्योंकि नार्वे के पदाधिकारी मानते हैं कि नार्वे की प्रजा क्विस्लिंग से बहुत घृणा करती है। नार्वे में केवल ५ प्रतिशत प्रजा उसके साथ है।

नाजी सत्ता में नाजी सेना और उसके सहायक सैनिक नाजी सत्ता के विरोधियों को दबाने में सफल हुये हैं। शासक कौंसिल के रद्द होने के पश्चात् नार्वे में बड़ा अत्याचार तथा दमन हुआ। राजनैतिक नेता जेलों में ठोंसे गये, कनसनट्रेशन कैम्प में डाले गये तथा उन्हें प्राणदण्ड की सजायें दी गई। बहुत से लोगों को गोलियों से उड़ा दिया गया। ओसलों में अब राजनैतिक क़ैदियों के लिये तीन जेलें हैं जिन की रखवाली जर्मन सैनिक तथा किराये वाले सैनिक करते हैं। मोलेग्रेन नामक जेल सब से कठिन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहां राजनैतिक कैदियों पर भांति भांति के अत्याचार किये जाते हैं।

यह सब व्यवस्थाएं होते हुये भी नार्वे निवासी अपनी कठिनाइयों का सामना बहादुरी के साथ कर रहे हैं। अब भी नार्वे के निवासी ब्रिटेन के सच्चे मित्र बने हैं। नार्वे के जहाजी बेड़े में ९०० जहाज हैं जो ३६ लाख टन के हैं और जिसमें २५ हजार मल्लाह काम करते हैं। वे जर्मन अधिकार में नहीं हैं वरन् ब्रिटिश सहायता से स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। उसका व्यापार नार्वे के लिये हो रहा है। उन जहाजों पर नार्वे का झण्डा लगा हुआ है। उसी जहाजी बेड़े की आय से नार्वे का युद्ध सम्बन्धी बजट चल रहा है। अटलांटिक सागर पार कनैडा में टोरोण्टो नामक द्वीप (छोटा नार्वे) है। वहां पर नार्वे की आकाश सेना तयार हो रही है और ब्रिटिश देख रेख में शत्रु सेना देखने के लिये हवाई बेड़ा तयार हो रहा है।

डेन्मार्क

दो वर्ष पहले नार्वे और डेनमार्क के राज्यों में बहुत कुछ समानता थी। दोनों राज्यों के राजे भाई भाई थे इसी कारण उनके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक बातें भी एक सी थीं। भाषा भी उनकी बहुत कुछ मिलती जुलती थी। आज उनमें बहुत कुछ अन्तर है। डेनमार्क ने जर्मनी का सामना नहीं किया इसलिये डेनमार्क अब भी अपने राजा के आधीन है वहां पर पार्लियामेंट, प्रधान मन्त्री और दूसरे मन्त्री गण हैं। डाक्टर गोबेल्स ने स्टाकहालम में एक भाषण देते हुये कहा था कि "डेनमार्क अधिकार में किया हुआ देश नहीं है। हमसे डेनमार्क से युद्ध नहीं हुआ। हमसे डेनमार्क से सैनिक अड्डे देने के बारे में संधि हुई है। इसलिये डेनमार्क की स्वतंत्रता पहले की भांति अब भी कायम है।"

यह बात कहनी शायद ठीक नहीं है कि डेनमार्क पर जर्मन अधिकार नहीं है। हाँ वहां पर जर्मन शासक नार्वे की भांति नहीं हैं फिर भी वह जर्मन प्रभुत्व में है। चूँकि उसने जर्मनी का सामना नहीं किया इसी कारण और दूसरे देशों की भांति वहाँ पर जर्मन शासन नहीं है। वहाँ पर खुले तौर पर बहुत कम परिवर्तन हुये हैं। वहां का राजा अब भी अपने मन्त्रीगणों की सलाह से राज्य कर रहा है परन्तु डेनमार्क का भविष्य नार्वे, फ्रान्स और पोलैंड आदि देशों की भांति ही अंधकारमय है। वह स्वतंत्र कदापि नहीं कहा जा सकता क्योंकि जब एक दिन डेनमार्क के व्यापारिक मन्त्री क्रिस्मरन पूलर ने कहा कि डेनमार्क का जो रुपया जर्मनी के जिम्मे है उसमें से एक पैसा भी न मिलेगा तो नार्वे के जर्मन कमिश्नर ने उसे त्याग पत्र देने पर वाध्य किया और उसे त्याग पत्र देना ही पड़ा। आज वह गेस्टापो पुलीस के हाथों में एक कैदी की भांति अपना जीवन बिता रहा है।

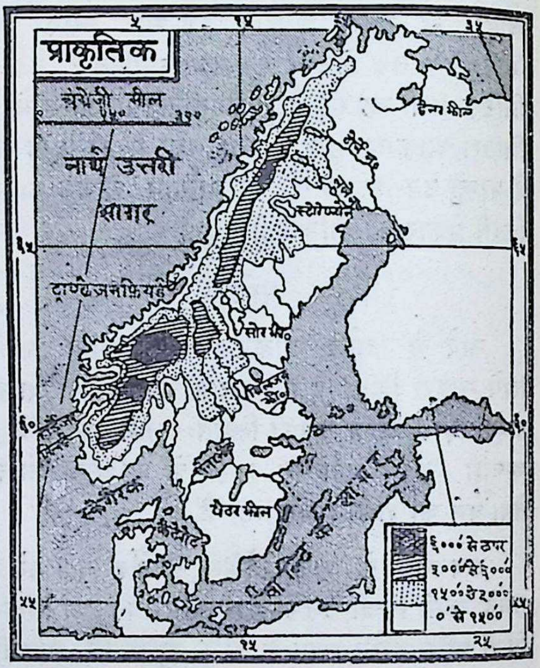

दूसरी बात यह है कि डेनमार्क के संयुक्तराष्ट्र अमरीका के सचिव ने जब ग्रीनलैण्ड के सम्बन्ध में अमरीका और डेनमार्क की संधि का जिक्र किया और अपनी प्रसन्नता प्रकट की तो वह कोपेनहेगेन सरकार द्वारा वापस बुला लिया गया। उसके पश्चात् इसी सम्बन्ध में न्यूयार्क, शिकागो और सैनफ्रन्सिस्को में जो डैनिश प्रतिनिधि थे उन्हें भी वापस बुलाया गया परन्तु जब उन्होंने आने से इन्कार किया तो वह अपने स्थानों से निकाल बाहर किये गये।

जर्मनी ने डेनमार्क को मिलाकर उसे लूटा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां का मांस, मक्खन, पनीर, अंडा सब कुछ जर्मनी जाता है। जर्मनी उसका मूल्य नहीं चुकाता वरन् डेनमार्क के रिज़र्व बैंक को उसका दाम चुकाना पड़ता है। डेनमार्क में मक्खन आदि की कमी हो गई है और उसे उसका नियन्त्रण करना पड़ा है। डेनमार्क के बैंकों का जर्मनी लगभग १५ करोड़ क्रोनर का ऋणी है। डेनमार्क के किसान को जो रुपया मिलता है उसका वह कच्चा सामान किसी प्रकार का भी नहीं खरीद सकता है उसे जर्मनी की बनी वस्तुओं को ही खरीदना पड़ता है। बनावटी खाद तथा जानवरों का बनावटी भोजन उसे जर्मनी का ही लेना पड़ता है। ब्रिटिश ब्लाकेड (घेरे) के कारण डेनमार्क चारों ओर से घिरा है। वहाँ किसी प्रकार का विदेशी सामान समुद्र होकर नहीं पहुँच सकता है इसी कारण डेनमार्क में पशुओं की कमी हो गई है। वहां सुअरों की ५० फी सदी, पशुओं की १८ फीसदी, और मुर्गियों की ६० फीसदी कमी हो गई है। इस युद्ध में चाहे जर्मनी की विजय हो या पराजय डेनमार्क को हानि ही पहुँचेगी। उसने जर्मनी को जो ऋण दिया है या दे रहा है उसे वह कदापि वापस नहीं कर सकता।

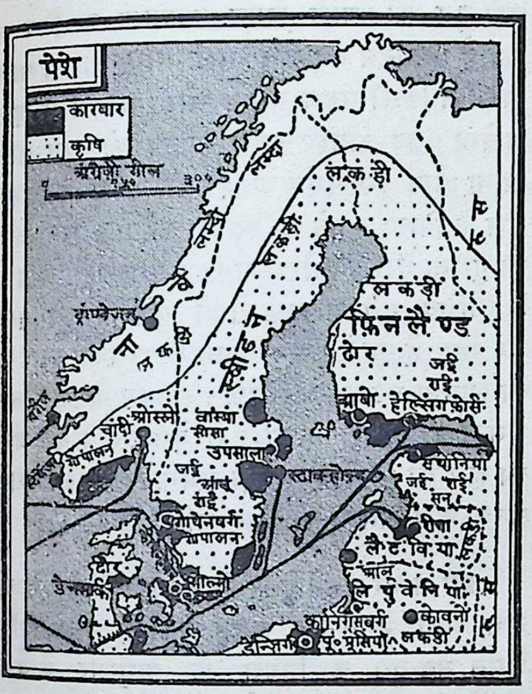

स्वीडन

जर्मन नव-युग में स्वीडन की क्या स्थिति है यह निर्णय करना बहुत कठिन है। स्वीडन के सरकारी अफसरों का कहना है कि उनका देश पूर्ण स्वतंत्र है परन्तु उसे योरुप की स्थिति देखते हुये अपनी नीति बदलनी पड़ी है वह अब भी पहले की भांति तटस्थ है।

जर्मनी के अल्फर्ड रोजेन वर्ग नामक अफसर ने कहा था कि समस्त स्कैण्डीनैविया प्रान्त हमारी रक्षा के अन्तर्गत है। यह बात उस समय की है जब कि ५ जुलाई सन् १९४० ई० को स्वीडन और जर्मनी के मध्य संधि हुई थी कि जर्मनी स्वीडन होकर अपनी सेना तथा सामान ले आ जा सकता है।

वाशिंगटन से प्राप्त हुये समाचारों से पता चलता है कि अमरीका स्वीडन को कदापि स्वतंत्र मानने के लिये तयार नहीं है। गत अक्तूबर १९४० ई० में अमरीका ने उसे ११० वायुयान देने से इंकार कर दिया जिसका आर्डर स्वीडन की सरकार ने एक वर्ष से अधिक पहले दिया था। एक बार प्रेसीडेण्ट रुज़वेल्ट ने कहा था कि स्वीडन को सामान देना तटस्थता के विरुद्ध है क्योंकि उसका सामान जर्मन प्रयोग में आता है। उसके बाद संयुक्त राष्ट्र से सरकारी अफसरों ने प्रस्ताव किया था कि जो स्वेडिस धन अमरीका में है वह जब्त कर लिया जाय क्योंकि वह धुरी राष्ट्रों के काम में आवेगा।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने धुरी-राष्ट्रों तथा उनके अधिकार में किये देशों पर जो व्यापारिक रोक लगाई है वह स्वीडन पर भी लागू है। न्यूयार्क में स्वीडन के राजदूत मिस्टर ओलमार एफ० बोस्ट्रोम ने कहा था कि अमरीका ने स्वीडन पर बड़ी कड़ी रोक लगाई है। स्वीडन को कच्चा सामान तथा आधा तयार किया हुआ सामान अमरीका से मिलता था वह अब बन्द कर दिया गया है।

आर्थिक तौर पर इस समय स्वीडन जर्मनी का एक भाग बना हुआ है। गत वर्ष उत्तरी योरुप में जो घटनायें घटीं उनके कारण स्वीडन को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है कि वह क्यों जर्मनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी बना है। उसे मजबूर होकर नवयुग में मिलना पड़ा है।

आज स्वीडन की राजनैतिक तथा सैनिक रूप से क्या स्थिति है इसका निर्णय करना कठिन है। कुछ लोगों का कथन है कि वह मित्र राष्ट्रों का साथी है और कुछ का कहना है कि वह जर्मनी का साथी है।

आज स्वीडन की स्थिति बड़ी शोचनीय है। एक ओर प्राचीन प्रजातांत्रिक विधान के नियमों का पालन करना चाहता है दूसरी ओर उसे जर्मनी की चेष्टा भी पूर्ण करनी पड़ती है। स्वीडन की ८० फीसदी प्रजा जर्मनी की पराजय चाहती है। स्वीडन के प्रधान मन्त्री हैनसन तथा परराष्ट्र मन्त्री गुनथेर जर्मनी से मेल रखना चाहते हैं और वह उसके मित्र बने हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या शीघ्र भविष्य में जर्मनी स्वीडन पर अधिकार जमावेगा या नहीं और कहां तक स्वीडन उसका सामना कर सकेगा। डाक्टर गोबेल ने कहा था "हमें स्वीडन पर अधिकार करने का कोई कारण नहीं है और न हमें वहाँ सैनिक अड्डों की ही आवश्यकता है और यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि स्वीडन जर्मन सेना का कितना सामना कर सकेगा"।

जर्मनी ने स्वीडन पर आक्रमण क्यों नहीं किया? इसके कई कारण हैं—(१) स्वीडन ब्रिटिश युद्ध क्षेत्र से बाहर है इसलिये उस पर जर्मन आक्रमण की आवश्यकता नहीं है। (२) सोवियट रूस ने स्वीडन की स्थिति जैसी की तैसी रखने पर ज़ोर दिया था। (३) स्वीडन सरकार ने संधि के अनुसार जो सुविधाएँ जर्मनी को दीं वह बर्लिन में संतोषजनक समझी गईं। (४) स्वीडन की सेना सुदृढ़ तथा सुसंगठित है इसलिये उसको पराजय करना कठिन है। स्वीडन ने अब तक युद्ध की तयारी में तनिक भी शिथिलता नहीं की है। उसने अपने युद्ध व्यय को १४ करोड़ ८० लाख क्रोनर से बढ़ाकर २ अरब ५० करोड़ क्रोनर कर दिया है। इसके सिवा कर आदि से भी युद्ध के लिये बहुत रुपया एकत्रित किया गया है। वहाँ की प्रजा ने एक अरब ५० करोड़ क्रोनर की सहायता की है।

यह समझना एक बड़ी भूल है कि स्वीडन इतनी बड़ी युद्ध की तयारी जर्मन आक्रमण के लिये कर रहा है। स्वीडन यह बात भली भाँति जानता था कि किसी न किसी समय जर्मनी और रूस में झगड़ा हो जावेगा। तब समस्त उत्तरी योरुप को युद्ध क्षेत्र में आना होगा उस समय अवश्य ही जर्मनी स्वीडन को रूस के विरुद्ध लड़ने का आदेश करेगा। रूस स्वीडन का पुराना बैरी है और जर्मनी उसका सदैव मित्र रहा है इसलिये स्वीडन पहले से ही युद्ध की खूब तयारी कर रहा है ताकि समय आने पर उसकी सेना शत्रु का सामना डट कर कर सके। स्वीडन के लोग नाज़ी जर्मनी को आदर्श की दृष्टि से देखते हैं। वह जर्मनी को रूस की अपेक्षा अच्छा समझते हैं इसी कारण उनका रुख जर्मनी की ओर अधिक है।

इस प्रकार हमने देखा कि स्कैण्डीनैविया में जर्मन सत्ता भली भाँति जड़ पकड़ चुकी है और वहाँ पर जर्मन नव-युग के नियम के अनुसार कार्य हो रहे हैं।

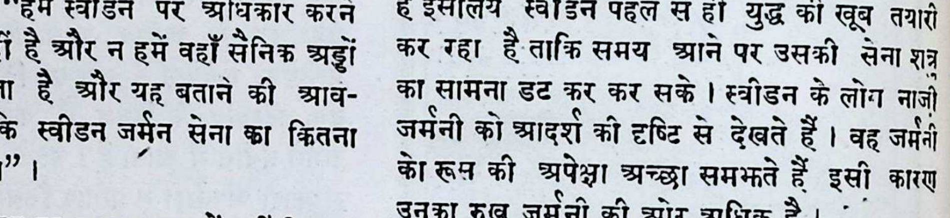

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

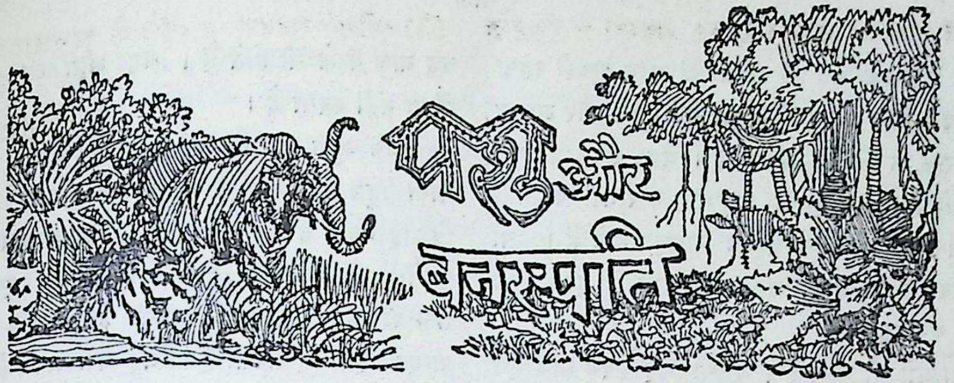

उदबिलाव (बीवर)

उदबिलाव (बीवर) अमरीका का एक पशु है। वहां यह बहुत होता है। इसके रूप का ठीक वर्णन करना कठिन है। इसका आकार एक बोरे की भांति होता है जिसके एक सिरे पर मुख तथा दूसरे सिरे पर रबड़ की काली पतवार सी रहती है।

यह अपने चार छोटे पैरों पर चलता है। इसे चलते समय अपनी पीठ की कूबड़ को उठाना पड़ता है जिससे इसका पेट धरती पर रगड़ न खा जाय परन्तु जब यह पानी पर चलता है तो इसकी दशा धरती की अपेक्षा बहुत भिन्न हो जाती है। यह अपने को पानी के ऊपर तेल की भांति फैला देता है और बड़ी सरलता के साथ तैरता रहता है। बीवर बड़ा तैराक होता है। यह पानी में गोते भी बड़ी कुशलता के साथ लगाता है। इसकी पिछली टांगें कुछ लम्बी होती हैं और पैर के पञ्जे में झिल्ली होती है जिससे शीघ्रता के साथ पानी काट सकता है।

तैरते समय उदबिलाव की पूंछ पानी में पतवार की भांति पानी के धरातल में तैरती है इसके सहारे से यह बड़ी शीघ्रता के साथ घूम सकता है। यह अपनी पूंछ को मिट्टी अथवा पत्थर पर बहुत कम रखता है। हां जब इसकी इच्छा होती है तो यह उसे पानी के ऊपर धम से पटक देता है उसके पटकने का शब्द पिस्तौल के शब्द की भांति होता है।

उदबिलाव अपनी पूँछ क्यों पटकता है इसका मुख्य कारण नहीं बतलाया जा सकता है परन्तु शायद वह अपने दूसरे भाइयों को खतरे की सूचना देता है। जिस प्रकार अजनबी को देख कर कुत्ते दाँत निकालते तथा गुर्राते हैं उसी प्रकार मनुष्य को देख कर बीवर भी अपनी पूंछ पटकता है। जब देखता है कि मनुष्य ने उसे देख लिया है तो यह पानी पर अपनी पूंछ पटकता है परन्तु जब यह देखता है कि मनुष्य ने उसे नहीं देखा है तो यह चुपके से शीघ्रता पूर्वक डुबकी लगा जाता है।

उदबिलाव एक शान्त प्रिय जानवर है। यह कभी किसी प्रकार का उपद्रव नहीं करता है परन्तु यदि उसके सामने कोई मुश्किल आ जाती है तो फिर यह उसका डट कर सामना करता है। यह अपनी जान व माल तथा अधिकार की रक्षा के लिये मरते दम तक लड़ाई करता है।

कुछ लोगों का कथन है कि उदबिलाव बोल नहीं सकता है परन्तु यह अपने हृदय की बात भली भांति प्रकट कर सकता है। जब यह क्रुद्ध होता है तो मनुष्य की भांति जोरों से सांस लेता है। उसके सांस का शब्द भली भांति सुनाई पड़ता है। उससे भली भांति प्रकट हो जाता है कि वह क्रुद्ध है। भूक की दशा में भी यह एक अद्भुत आवाज़ से अपनी भूक बतलाता है। उसके भूक की आवाज बिल्ली के बच्चे की स्याऊँ स्याऊँ की भांति होती है।

उदबिलाव बड़ा हास्य प्रद पशु है। यह जीवन को एक गम्भीर वस्तु समझता है। उदबिलाव अपने अगले दोनों पैरों से उसी प्रकार काम लेता है जिस प्रकार हम अपने हाथों से लेते हैं। यह उनसे लकड़ी की छड़ी पकड़ कर उसकी छाल बड़ी खूबी से खाता है। इसके बड़े बड़े नाखून होते हैं। जब यह अपने पिछले पैरों पर बैठ कर मनुष्य की ओर देखता है तो एक वृद्ध नागरिक की भांति प्रतीत होता है उदबिलाव लकड़ी को बहुत कुतरते हैं। लकड़ी कुतरना उनकी आदत है।

यह पशु जब बन में रहता है तो अपने लिये छोटे तालाब बना लेता है। यह अपने रहने के स्थान को बाड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से घेर लेता है इसके बाड़े की लकड़ियां साफ सुथरी रहती हैं। यह अपने लिये बड़े (१०० फुट तक लम्बे और मनुष्य की ऊँचाई तक के) बांध बनाते हैं। यह अपने घर बड़े सुन्दर बनाते हैं जिनसे इनकी अद्भुत कारीगरी का पता चलता है। इनके बनाये बांध बड़े मजबूत होते हैं। वर्षा काल में जब कि मनुष्य के बांध बह जाते हैं इनके बांध उसी तरह बने रहते हैं।

यह गलती भी करते हैं। बहुधा यह अपने बांध ऐसे स्थानों में बनाते हैं जहां पर बहुत कम पानी रहता है या इनके लिये भोजन की कमी रहती है। जब इसे अपनी त्रुटि मालूम हो जाती है तो यह उसे छोड़ दूसरे स्थान पर चले जाते हैं।

इसके कुछ मिट्टी और लकड़ी के गोले घर बड़े सुन्दर होते हैं। ऐसे घरों की ऊँचाई ७ या ८ फुट होती है और घेरा १२ फुट या अधिक होता है।

एक बार एक अंग्रेज को कुछ काले मनुष्यों ने खदेड़ा वह भाग कर उदबिलाव के घर में घुस गया भीतर जाकर उसने देखा कि वह एक साफ सुथरा उदबिलाव का घर था।

उदबिलाव भीटों या बांधों में सूराख करके अपने घर बनाते हैं। इनके प्रवेश का द्वार बहुधा पानी के अन्दर से होता है। यह बांध के ऊपर अपने घर के द्वार पर लकड़ी तथा कीचड़ इकट्ठा करते रहते हैं। इस प्रकार यह अपने घर की दीवार को एक एक फुट मोटा बना लेते हैं। जब बरफ पड़ती है तो उनकी एक मजबूत ठोस दीवार बन जाती है। शीतकाल में रीछ या भेड़िये उसे खोद कर अपना शिकार बनाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु उनका परिश्रम बेकार होता है।

उदबिलाव का घर जैसे जैसे बड़ा होता जाता है यह अपने द्वार भी बढ़ाते जाते हैं। कभी कभी उनके घरों में ६ द्वार होते हैं। यह द्वार पानी के अन्दर ही बने रहते हैं। कोई कोई द्वार तो पानीदार लम्बी सुरंग होकर रहता है। यह भली भांति जानता है कि इसे किस प्रकार सुख मिल सकता है वह अपने लिये सोने का स्थान भी बहुत अच्छा तयार करता है। मुलायम लकड़ी के तख्ते फाड़ कर चटाई की भांति एक फुट मोटा बिछा लेता है। इसके बाल बड़े तथा मुलायम होते हैं जो कम्बल का काम देते हैं। इसका बाल बड़ा गरम होता है। ऊपर रखवाली करने वाले लम्बे बाल होते हैं जिनका रंग सोनहरा भूरा होता है। इनके नीचे रेशमदार छोटे बाल होते हैं। यह बाल काले भी होते हैं। (यह शीतकाल की बिल्कुल चिंता नहीं करता है।

जब बहुत अधिक शीत होती है और तालाब का पानी बहुत ठंडा रहता है तो वह बड़े आनन्द के साथ तैरता दिखाई पड़ता है और इसे जरा भी कपकपी नहीं मालूम पड़ती। यह कभी नहीं भीगता क्योंकि इसके शरीर में तेल की भांति चिकनाहट रहती है जिससे पानी उसके अन्दर नहीं भिद सकता है। वह घंटों अपने तेल को अपने बालों से रगड़ रगड़ कर मलता रहता है। उसके तेल से बहुत सुन्दर बूट (जूते) की पालिश बनती है।

उदबिलाव मनुष्य तथा अन्य जङ्गली पशुओं का बड़ा मित्र होता है। उसके बांधों में मछलियां अपने बच्चों का पालन पोषण करती हैं। दूसरे बिल में रहने वाले जानवर उसके बांध में बिल खोद कर वहां इसी के साथ रहते हैं।

बन में बनैले पशु तथा मनुष्य अपना प्राण इन के घर में भाग कर बचाते हैं। जो नदियां गरमियों में सूख जाती हैं वह उदबिलाव के बांधों के पानी से ही भरी रहती हैं।

कभी कभी उदबिलाव कष्टदायक भी होता है। उसे ऊँचा बांध बनाने से कोई मना नहीं कर सकता परन्तु इन्हीं बांधों के कारण नदी के पानी में वर्षा ऋतु में बाढ़ आ जाती है और सड़कों तथा चरागाहों में पानी भर जाता है। जब कभी ऐसा होता है तो लोग जा कर उनके बांधों को तोड़ देते हैं। उदबिलाव चुनौती स्वीकार कर के अपना बांध फिर बना लेता है। उसके बाद केवल एक ही मार्ग बचता है कि उसे फुसला कर किसी दूसरे स्थान पर हटा दिया जावे।

बसंत ऋतु में वह अपने स्थान छोड़ कर किसी ओर चले जाते हैं। इसके चले जाने पर उसके बच्चे रोते रहते हैं और फिर उसकी मादा उसे घर में प्रवेश नहीं करने देती है। वसन्त काल में जब कि सभी जङ्गली पशु बेचैन रहते हैं तो वह भ्रमण करने के लिये निकलता है। वह नदी के बढ़ाव तथा उतार में लम्बी चौड़ी यात्रायें करता है। मार्ग में वह अपनी याद के लिये छोटे बांध बनाता जाता है।

कभी कभी गरमी की ऋतु में भी वह यात्रा करता है। सितम्बर में वह शीत काल की प्रतीक्षा करने लगता है तब वह या तो अपने घर को वापस चला आता है या कोई नया घर बना लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबिलाव अपना घर बनाते समय सब से पहले बांध बांधता है। कुछ लोगों का कहना है कि वह नदी के तटीय वृक्ष को काट कर नदी के आरपार गिरा देता है फिर उसी पर मिट्टी तथा लकड़ी डालता जाता है। वह ऐसे स्थान को चुनता है जहां पहले से ही नदी का धरातल ऊँचा रहता है उसके बाद उस पर वह भी मिट्टी और लकड़ी इकट्ठा करता जाता है। जब तक घर उसके योग्य नहीं होता तब तक वह अपना घर बनाता रहता है।

वह अपना काम बहुधा प्रातःकाल करता है। वह झुण्ड के झुण्ड रहते तथा घर बनाते हैं। कुछ लोग घर बनाते कुछ घर में मिट्टी लगाते और सामान रखने वाले कमरे के लिये हरी छड़ियाँ ले आते हैं। उदबिलाव शीत काल के लिये अपने घर में सामान रख लेता है। प्रत्येक बांध में पानी के नीचे एक स्थान रहता है जहाँ वह पानी के नीचे लकड़ी का एक बड़ा ढेर इकट्ठा कर देता है।

उसका भण्डार घर उसके रहने के स्थान के समीप रहता है। जब बरफ की मोटी तहें जम जाती हैं तो वह तैर कर लकड़ी के ढेर के पास जाता है और फिर वहाँ से जिस सामान की जरूरत होती है उसे ले जाता है और फिर घर जाकर शान्ति पूर्वक जाड़े भर बैठा रहता है।

वह लकड़ी की छड़ियों को इस प्रकार पानी के नीचे ले जाता है कि जिन छड़ियों को वह पानी के नीचे लेजाता है वह हरी होती हैं और रस से भरी रहती हैं। वह आप से आप डूब जाती हैं। वह छड़ियों के एक किनारे को पकड़ कर पानी के अन्दर ले जा कर कीचड़ में गाड़ देता है जहां वह छोटे खम्भे की भांति गड़ जाती हैं।

बीवर का जीवन बड़ा सुखमय होता है मनुष्य अभी उनके बारे में बहुत कम जानता है परन्तु धीरे धीरे मनुष्य को उनके सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

दक्षिणी अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह

डर्बन का बन्दरगाह अफ्रीका के पूर्वी तट पर स्थित है। १०० वर्ष से कुछ पहले इसके स्थान पर बन के सिवा कुछ भी न था। मानव जाति ने आज उसी स्थान पर एक बड़ा नगर तथा बन्दरगाह बना दिया है। दक्षिणी अफ्रीका यूनियन के बन्दरगाहों में डर्बन सबसे बड़ा व्यापार करने वाला बन्दरगाह है।

इस बन्दरगाह पर २५००० टन (लगभग ७ लाख मन) से अधिक भार वाले जहाज आते जाते हैं। किसी समय में इस बन्दरगाह के मुहाने पर मिट्टी का एक बड़ा खतरनाक ढेर था, प्रत्येक तूफान के पश्चात् यह ढेर कम या अधिक होता रहता था। विज्ञान कला द्वारा उस स्थान पर एक झील बना दी गई है, जिससे सारा भय जाता रहा है। ३१ मार्च सन् १९३५ ई० में डर्बन बन्दरगाह में ४,३३३,२७५ टन (लगभग १२ करोड़ १३ लाख मन) का व्यापार हुआ। इस संख्या में कोयला गल्ला आदि सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं।

डर्बन नगर की जन-संख्या २२५,००० है। इस नगर और इस नगर के आस पास कुल ६०,००० योरोपियन रहते हैं। शेष सभी यहां के निवासी रेडइन्डियन आदि हैं। यह बन्दरगाह नैटाल के प्रान्त में स्थित है। जब १४९८ ई० में वास्कोडिगामा भारत का मार्ग ढूँढता हुआ यहां आया था, तभी उसने इस प्रान्त का नाम नैटाल रक्खा था।

पुर्तगाली लोग यहां नहीं गये। डर्बन नगर की उत्पत्ति अँग्रेजों तथा अँग्रेज व्यापारियों के कारण हुई है। अंग्रेज जाति डर्बन हार्बर को नैटाल पोर्ट के नाम से पुकारती है। क्योंकि यही एक स्थान यहां के लम्बे चौड़े तट में है जहां जहाज खड़े हो सकते हैं।

१८३५ ई० में जब सर बेनजामिन डी अर्बन केप का गवर्नर था तो नैटाल के बन्दरगाह के रहने वालों ने एक नगर बसाने का विचार किया। उसी गवर्नर के नाम पर इसका नाम डर्बन पड़ा। १९३५ ई० में डर्बन का बरा डर्बन नगर बन गया। डर्बन खाड़ी पर स्थित व्हार्ज्स (घाट) के लिये अब भी नैटाल बन्दरगाह का नाम प्रयोग किया जाता है।

डर्बन नगर पर केपटाउन से समुद्री मार्ग से ८०० पोर्ट एलिज़बेथ से ४०० मील और ईस्ट लन्दन से २५२ मील की दूरी पर है। इसके उत्तर की ओर समीपवर्ती बन्दरगाह डेलेगोवाबे है जो ३०० मील की दूरी पर है। डर्बन की दूरी साउथहैम्पटन से केप होकर ६७६० मील और ... होकर ...८० मील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डर्बन का बड़ा बन्दरगाह ७२ वर्ग मील में है। इसकी लम्बाई ३॥ मील और चौड़ाई २ मील है। यह नाशपाती की शकल का है। खाड़ी का पूर्वी दक्षिणी भाग में ब्लफ है। यह हिन्द महासागर में घुसा हुआ है। ब्लफ की ऊँचाई १९५ फुट है। इसकी चोटी पर एक प्रकाश घर है जहां पर ३० लाख बत्तियों की रोशनी होती है।

ब्लफ से लम्बाकार रेखा में प्वाइन्ट नामक भूमि की पट्टी है जो यहां की खाड़ी को समुद्र से अलग करती है। प्वइान्ट के भीतरी भाग में घाट हैं जहां पर जहाज ठहरा करते हैं। भीतर की ओर जाने का मार्ग ब्लफ और प्वाइन्ट के मध्य में है। इसकी रक्षा उत्तरी घाट तथा दक्षिणी ब्रेकवाटर द्वारा होती है। दक्षिणी ब्रेकवाटर बढ़ा कर २३०० फुट लम्बा कर दिया गया है। उत्तरी घाट प्वाइन्ट से मिला कर बनाया गया है। इन दोनों के बीच की कम से कम चौड़ाई ६०० फुट है।

चैनल को खोद कर साफ कर दिया गया है। इसकी गहराई २ फुट से ६ फुट तक थी और यहां पर मल्लाह लोग अपने जहाज़ टूट जाने के भय से नहीं लाते थे।

ब्लफ तथा प्वाइन्ट प्रायद्वीप प्राकृतिक बन्दरगाह का काम देते हैं। यहां पर ३ मील तक बांध तथा घाट बने हुये हैं। इन घाटों के पानी की गहराई २३ से ३८ फुट तक है। इन घाटों में संसार के प्रत्येक भाग से जहाज आकर ठहरते हैं।

ब्लूफनेल लाइन, हाल लाइन, यूनियन कैसिल लाइन (इन्गलिश) हालैंड-अफ्रीका लाइन, नैवीगाजिओने लिबेरा ट्रस्टीना, निपन यूसेन केशा, जर्मन इटैलियन और जापानी आदि लाइनों के जहाज डर्बन बन्दरगाह पर आते हैं। थेसेन्स स्टीम शिप कम्पनी की ओर से केपटाउन तथा दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका तट के बीच जहाज चलते हैं।

बड़े जहाज जो डर्बन के बन्दरगाह पर आते हैं, उनमें अथलोनेकैसिल का वज़न २५,५६४ टन, क्लान अर्कुहार्ट ९५६४ टन, हालैंड अफ्रीका लाइन के जागर्स फान्टीन का वज़न १०,०७७ टन है। इनके सिवा और भी दूसरे बड़े जहाज डर्बन बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं।

इस बन्दरगाह का अधिकांश काम प्वाइन्ट स्थान पर होता है। कम्पनियों तथा लाइनों के जहाज यहीं पर ठहरते हैं। यहां पर एक मील से अधिक दूरी में घाट बने हैं। यहां पर सामान रखने उतारने के लिये उत्तम प्रबन्ध है। क्रेनों का काम बिजली द्वारा होता है। सबसे बड़ी क्रेन ८० टन (२२४० मन) बोझ उठा सकती है।

फलों के रखने के लिये ठंडे कमरे बनाये गये हैं, जहां पर योरुप भेजे जाने के पहले फल रक्खा जाता है। इन कमरों में ३३,२८० फल वाले संदूक रक्खे जा सकते हैं। जहाजों की मरम्मत के लिये घाट बने हैं। प्वाइन्ट के दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर तैरता हुआ घाट है। इस घाट की लम्बाई ४७५ फुट और भीतरी चौड़ाई ७० फुट है। यह घाट ५००० टन (१४०,००० मन) का बोझ सँभाल सकता है।

इस घाट के बाद विक्टोरिया के बाँध हैं। यह नगर का खाड़ी की ओर का किनारा है और अलबर्ट पार्क तक फैला हुआ है। इसके पश्चिम की ओर मेडन का घाट है। यह घाट कंगेला के व्यवसाई जिले का बन्दरगाह है। यहां पर पहुँचने का मार्ग मेडन खाड़ी होकर है। यह खाड़ी साफ करके गहरी बना दी गई है। घाटों पर खाड़ी की गहराई २५ फुट से ३८१ फुट तक है।

इस भाग में गल्ला रखने के लिये एलिवेटर (बखार) बने हैं। इन बखारों में ४२,००० टन (१,१७६,००० मन) अनाज भरा जा सकता है। इनमें एक हजार टन (२८००० मन) प्रति घंटे के हिसाब से अनाज भरा जा सकता है। यहां से मक्का दूसरे देशों को भेजी जाती है।

मेडन घाट के अन्त में प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविंग डाक है। यह घाट १९२५ ई० में खोला गया था। उस समय विश्वत रेखा के दक्षिण यह घाट सबसे बड़ा था। यह घाट नीचे ११५० फुट लम्बा और द्वार पर ११० फुट चौड़ा है। इस घाट में ३८,११८,००० गैलन पानी आता है। यह घाट ४७ मिनट में भर दिया जाता है और ४ घंटे या इससे कम समय में खाली कर दिया जाता है।

जो बड़े जहाज तैरते हुये डाक पर नहीं खड़े हो सकते वे प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविन्ग डाक में आ कर खड़े होते हैं। यह डाक दो भागों में बँटा है और प्रत्येक भाग का प्रयोग स्वतंत्रता पूर्वक किया जा सकता है।

डाकों की गहराई मामूली ज्वार आने पर ४१ फुट रहती है। इस घाट को आठवें एडवर्ड ने (जब वे वेल्स के राजकुमार थे) खोला था। इस ओर अब बहुत से कारखाने बन गये हैं।

तेल लाने वाले टैंकर्स जहाज ब्लफ में ठहरते हैं और वहीं तेल वाले हौजों में अपना तेल भरते हैं। यहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ पिट्रौल रखने वाले हौज़ हैं जहां पर कुल १८०,००,००० टन (४०,४०,००,००० मन) तेल भरा जाता है। तेल वाले घाटों की लम्बाई १००० फुट है।

टंडे कमरे खाड़ी के मुहाने पर ब्लफ में स्थित हैं। डर्बन से बहुत से कोयला बाहर भेजा जाता है और उसके कारण डर्बन की माली स्थिति अच्छी हो गई है। यूनियन सरकार की ओर से यह कोयला पूर्वी अफ्रीका, लाल सागर और दूसरे देशों को भेजा जाता है। दक्षिणी अफ्रीका में कोयला भेजने के लिये ड न मुख्य बन्दरगाह है। वहां पर ५ जहाज एक साथ कोयला भर सकते हैं। कोयला १००० टन (२८००० मन) प्रति घण्टे के हिसाब से भरा जा सकता है। कोयला भरने वाले घाट की लम्बाई २३६५ फुट है।

कोयले के सिवा यहां से चीनी, ऊन, चमड़ा, मक्का, फल आदि भी बाहर भेजे जाते हैं।

खाद, लकड़ी, लोहा, फौलाद, कलें और दूसरी तयार वस्तुएं बाहर से डर्बन बन्दरगाह होकर आती हैं। यहां पर मछली मारने का रोजगार भी काफी होता है। डर्बन नगर दक्षिणी अफ्रीका का हेल मछली के तेल निकालने का भी केन्द्र है। १९३९ ई० में यहां से ४,०००,००० गैलन (४६२५०० मन) व्हेल का तेल बाहर भेजा गया था। व्हेल मछली का मांस खाद बनाने तथा कारखानों में काम आता है।

सन् १९२० ई० में दक्षिणी अफ्रीका के यूनियन की स्थापना हुई तब से डर्बन तथा दक्षिणी अफ्रीका के दूसरे बन्दरगाह दक्षिणी अफ्रीकन रेलवे तथा हार्बर ऐडमिनिस्ट्रेशन के अधिकार में हैं।

डर्बन के बन्दरगाह में टग आग बुझाने वाले जहाज और दूसरे भांति भांति के छोटे जहाज भी हैं। रील बोक नामक हायर डजर (जालवाला जहाज) दुनिया के बड़े जहाज़ों में से है। यह १९३० ई० में रेनफ़्रयु में बना था। इसका तौल ४५३८ टन है। इस की लम्बाई ३७४ फुट, चौड़ाई ५७ फुट ८ इञ्च है।

डर्बन बन्दरगाह में हरसाल हज़ारों की संख्या में यात्री आते हैं। यहां की जलवायु बड़ी अच्छी है। न तो यहां अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक शीत ही पड़ती है। जाड़े के दिनों में यहाँ का सब से नीचा तापक्रम ३३ फा० हा० और गर्मी में सब से ऊँचा तापक्रम ८१ डिगरी फा० हा० रहता है।

ब्लफ का ऊँचा हरा प्रदेश दक्षिण पश्चिम से आने वाली तेज हवाओं को रोकता है, जिस से छोटे छोटे जहाज आनन्दपूर्वक हार्बर के अन्दर चल सकते हैं। आधुनिक उन्नति के कारण डर्बन का समुद्री तट बड़ा सुहावना बन गया है। यहां की जलवायु भी स्वास्थ्य के लिये अच्छी है यहां पर हर साल हज़ारों जवान बूढ़े तथा बच्चे अपने स्वास्थ्य सुधारने के लिये आते हैं।

डर्बन के टाउन हाल तथा म्यूनिसिपैलिटी के मकान नगर के केन्द्रीय भाग में वेस्ट स्ट्रीट पर स्थित हैं। यह सड़क विक्टोरिया बांध के समानान्तर है। नगर के पीछे बेरिया की पर्वतीय श्रेणियां हैं जिनके ऊपर नगर के मुख्य बाहरी भाग स्थित हैं। गर्मी के दिनों में यहां की वाटिकाओं और पार्कों में हरे भरे पेड़ दिखाई पड़ते हैं। नगर के भीतर चौड़ी सायादार सड़कें हैं, जिन का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। जो लोग डर्बन पोर्ट को एक बार घूम आये हैं वे उसे वाटिका-नगर के नाम से याद करते हैं।

डर्बन में समुद्र के किनारे पर सामान लादने वाले तथा सवारी वाले जहाज अपने कार्यों में व्यस्त दिखाई पड़ते हैं। व्हेल मछली लादने वाले जहाज़ भी रहते हैं। यह जहाज छोटे बड़े कई प्रकार के होते हैं। दक्षिणी अफ्रीका के निवासी जो सैकड़ों मील तटों से दूर रहते हैं वे भी समुद्री जीवन के प्रेमी होते हैं। तैराक, मल्लाह तथा सैर सपाटे वाले यात्री सभी जहाज़ों पर बैठ कर मछलियों का शिकार करते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के किनारों पर खनिज पदार्थ तो बहुत है किन्तु प्राकृतिक गहरे हार्बर नहीं हैं। हार्बर बनाने वाली योजना के अनुसार डर्बन एक सुन्दर हार्बर बन गया है।

पहले भारतवर्ष, ईस्ट इन्डीज़ (पूर्वी द्वीप समूह) चीन आदि देशों से आने वाले जहाज और उनके मल्लाह यहां के जङ्गली किनारों पर आकर बहुत परेशान होते थे। बहुधा उनके जहाज टूट जाते थे और यदि किसी न किसी भांति वे बच भी गये तो भूखों मर जाते थे। जो लोग लोवरेनको मारक्वीस (पुर्तगाली बस्ती) को पहुँचना चाहते थे, उनको अफ्रीका के असभ्य निवासी मार्ग ही में मार डालते थे।

डर्बन हार्बर के तट के आदि निवासी और दूसरे निवासियों से कम जङ्गली थे। यह लोग औरों की अपेक्षा क्रोधी भी कम थे। सत्रहवीं शताब्दी में गुडहोप, बोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेन्चुरा, स्टावनीसे नामक तीन जहाज़ यहां आकर किनारे पर टूट गये। उन के कुछ आदमी डूब गये और कुछ बच गये। जो लोग बच गये थे उन लोगों ने मिलकर एक जहाज़ ४० फुट लम्बा और १४ फुट चौड़ा बनाया। लगभग २० आदमी इस जहाज को केप ले गये और वहां डच गवर्नर के हाथ जहाज बेच दिया। डच गवर्नर ने इस जहाज को और दूसरे टूटे हुये जहाजों की सहायता के लिये अफ्रीका के किनारे पर भ्रमण करने के लिये भेजा। इस प्रकार यहां पर आने वाले योरुप निवासियों ने बड़ी बड़ी कठिनाइयां सह कर डर्बन हार्बर बनाने का कष्ट उठाया था।

सैलिसबरी नामक नौका से डर्बन बन्दरगाह का इतिहास आरम्भ होता है। यह नौका तूफान चलने के कारण डर्बन खाड़ी में आ कर टूट गई। इसी की याद में खाड़ी के अन्दर एक द्वीप का नाम सैलिसबरी द्वीप रक्खा गया है। यह नौका जेम्स साउन्डर्स किङ्ग की अध्यक्षता में थी। फ्रान्सिस जार्ज फेअरवेल उसका एक साथी था। यह दोनों युवक बड़े साहसी थे, इन लोगों ने नैपोलियानिक युद्ध के पश्चात् केप टाउन गये और वहां पर छोटी छोटी नावें बना कर अफ्रीकन तट की पड़ताल करनी आरम्भ कर दी। यह लोग यहां के आदि निवासियों के साथ वस्तुओं की अदला बदली करने का व्यापार आरम्भ किया। डर्बन खाड़ी का कार्य समाप्त कर किंग लन्दन वापस लौट गया। फेअरवेल दूसरी बार फिर नैटाल के बन्दरगाह पर आया। इसके साथ में दो जहाज थे।

पहला जहाज हेनरी फ्रान्सिस फीन की अध्यक्षता में था। हेनरी आयरलैंड का निवासी था और बड़ा कूटनीतिज्ञ था। जब यह जहाज डर्बन खाड़ी में पहुँचा तो उस समय खाड़ी और उसके चारों ओर का इलाका चाका के आधीन था। चाका जुलू जाति का नेता था। इसने अपने साथियों को लड़ाकू सैनिक बना रक्खा था। चाका अफ्रीका के नैपोलियन के नाम से प्रसिद्ध था। चाका से फीन से दोस्ती हो गई। फीन ने चाका को एक चोट से अच्छा किया था। यह चोट चाका की प्राण घातक थी।

चाका के ऊपर इस (चोट के अच्छा करने की) दवा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने पोर्ट नैटाल और उसके आस पास की हजारों वर्गमील भूमि अँग्रेजों को सौंप दिया। उसने एक इकरारनामा भी इसी भूमि के देने का लिख दिया।

जब किंग ने अपने मित्र की सफलता का हाल सुना तो नैटाल बन्दरगाह के लिये रवाना हुआ किन्तु बन्दरगाह के उत्तरी सिरे पर आकर उसकी नौका टूट गई। चाका ने किंग को भी भूमि प्रदान की। १८२८ ई० में किंग की मृत्यु हो गई।

चाका को अँग्रेज लोग मरहम तेल और दवा की गोलियाँ देते थे, वह इसी की बदौलत स्वेत चमड़े वालों के कहने के अनुसार बड़ा अत्याचार करने लगा। हज़ारों की संख्या में उसने अपने आदमियों को मरवा डाला। चाका को भी अन्त में मार डाला गया और उसका भाई डिङ्गान गद्दी पर बैठा। फेअरवेल भी मार डाला गया। अलेन फ्रान्सिस गर्डनर जूलू जाति वालों को ईसाई बनाना चाहता था, इसलिये उसने १८३५ ई० में वहां नये बसने वालों की एक सभा बुलाई। सभा में डर्बन नामक टाउन स्थापित करने की राय पास हुई।

जब इस नगर की स्थापना की गई तो इस पर बड़ी बड़ी कठिनाइयां आईं। एक बार जूलू लोगों ने इस पर आक्रमण किया और सारे स्वेत लोगों को मार डाला केवल १२ आदमी बच रहे।

कुछ सालों के बाद बोर लोगों ने डिङ्गान को निकाल कर डर्बन पर अधिकार जमा लिया। अँग्रेजों ने एक सेना बाद में डर्बन लेने को भेजी। कांगोला नामक स्थान पर बोर लोगों ने अँग्रेजों का सामना किया और अँग्रेजों को बुरी तरह घेर लिया। डिक राजा एक आदि निवासी के साथ बोट पर भाग कर ब्लफ आया और वहां से घोड़े पर यात्रा करके ६०० मील की दूरी पर ग्राहम्स टाउन पहुँचा। वहां जा कर सारा हाल कह सुनाया। बाद में नैटाल प्रान्त भी अंग्रेजी सेना द्वारा ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया।

डर्बन हार्बर बनाने की बड़ी बड़ी योजनायें की गईं किन्तु आपस में ही मतभेद होने के कारण कार्य आरम्भ नहीं हुआ। जब ईस्टइन्डिया कम्पनी के सामने यह प्रश्न उठा तो उसने (यह कह कर कि डर्बन बन्दरगाह के मुहाने पर बालू का एक बड़ा ढेर है जिसमें बिना ठोकर खाये कोई जहाज अन्दर नहीं जा सकता) इंकार कर दिया।

बीसवीं शताब्दी में डर्बन बन्दरगाह के बनाने के बारे में बड़ी लिखा पढ़ी हुई। आज लगभग सौ साल के बाद वही डर्बन दक्षिणी अफ्रीका का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

जब नैटाल का व्यापार उन्नत्ति करने लगा तो डर्बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दरगाह बनाने की बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई। सबसे पहले प्वाइन्ट नामक स्थान पर घाट बनाया गया। इसके बनाने में सफलता प्राप्त हुई और तेज़ी से काम आरम्भ हुआ किन्तु जब इस बात की खबर हुई कि मुहाने की रेती में एक बड़ी चट्टान है और वहां १८ फुट से अधिक गहराई नहीं हो सकती तो काम बन्द कर दिया गया।

जब अफ्रीका की सोने तथा हीरे की खानों का पता चला तो फिर मुहाने की चट्टान को साफ करने का प्रयत्न किया गया। इस बार पड़ताल होने पर पता चला कि वहां की चट्टान बड़ी लगातार चट्टान न थी वरन् छोटी छोटी चट्टानें तथा रोड़े थे। अंत में वे चट्टानें साफ कर दी गईं।

१८९६ ई० में प्रथम बार डर्बन हार्बर में जहाज बनाये गये। दूसरे साल डर्बन नगर से प्वाइंट तक रेल बनाई गई। दक्षिणी अफरीका में यह पहली रेल बनाई गई थी। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में खाड़ी की गहराई २० फुट हो गई थी। तबसे बराबर गहराई बढ़ती जा रही है और आज तक गहराई लगभग ४० फुट हो गई है। सबसे बड़ा जहाज पेलागोस (१२०६७ टन) १९३० ई० में डर्बन बन्दरगाह पर गया। यह ३६ फुट ८ इञ्च गहरा पानी खींच रहा था।

कनजेला एक रोज़गारी जिला है। नैटाल के अधिकांश कारखाने डर्बन नगर या उसके इधर उधर स्थित हैं।

डर्बन में आज रेलों का जाल सा बिछा है और सभी डाक्स साउथ अफ्रीकन रेलवे से रेल द्वारा मिले हुये हैं। इस प्रकार देश के अन्दर का सारा माल सीधे डर्बन में आकर उतरता है। यह सामान सीधे घाटों पर उतार दिया जाता है।

रोडेशिया, ट्रान्सवाल आदि देशों से डर्बन बन्दरगाह और दूसरे बन्दरगाहों की अपेक्षा समीप पड़ता है। डर्बन से रोडेशिया १,१७० मील है इसको यात्रा लगभग ७ घंटे में हो जाती है।

संसार की जन-संख्या

आवागमन के साधनों के उन्नति करने और भांति भांति के परिवर्तनों के होने तथा नवीन युग के लोगों के जनमत बढ़ने के कारण अब दिन प्रति दिन समस्त संसार को एकादृष्टि से देखने का मत बढ़ रहा है। ऐसी दशा में अध्यापकों और खास कर भूगोल के अध्यापकों को अपनी शिक्षा के प्रचार का अच्छा समय है। स्कूल में प्रान्तीय शिक्षा तथा संसार की मानव सम्बंधी शिक्षा भली भांति दी जा सकती है। इस योजना का कुछ भाग एक समय में पढ़ाया जा सकता है। सबसे पहला भाग जनसंख्या और उसका प्रत्येक स्थान पर बराबर न होने का हो सकता है। संसार की जनसंख्या लगभग २ अरब २० करोड़ है। संसार की जनसंख्या लगभग २ करोड़ सालाना के हिसाब से बढ़ रही है। यह बढ़ती भिन्न भिन्न भागों की भिन्न भिन्न है और इसी भिन्नता के कारण संसार में जातीयता, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

संसार की जनसंख्या २ अरब ६० करोड़ है। यह अंक कल्पित है क्योंकि कुछ देशों में बहुत वर्षों से जन गणना नहीं हुई है। संसार की जनसंख्या का ⅕ भाग कभी भी गणना में नहीं आया। दक्षिणी अमरीका के कुछ भीतरी भाग ऐसे हैं जो अब भी उतने ही अपरिचित हैं जितने कि पुर्तगालियों अथवा स्पेन वालों के जाने के पहले थे। अफ्रीका के उष्ण भागों को जनसंख्या केवल अनुमान पर लगाई गई है। दक्षिणी पश्चिमी एशिया की जनसंख्या का भी ठीक ठीक कोई हिसाब नहीं है। सब से बड़ी कठिनाई चीन में पड़ती है जहां कि कभी भी ठीक ठीक जन गणना नहीं हो सकती। चीन की जनसंख्या संसार की जनसंख्या का पाँचवां भाग है।

संसार के तीन चौथाई लोग कर्क रेखा के उत्तर में और केवल तीन प्रतिशत लोग मकर रेखा के दक्षिण निवास करते हैं। एशिया में संसार की समस्त जनसंख्या का आधा भाग और योरुप में चौथाई भाग निवास करता है। दक्षिणी अमरीका और आस्ट्रेलिया की जनसंख्या बहुत कम है। एशिया के मानसूनी प्रदेश में जनसंख्या को सघनता २५० प्रति वर्ग मील है। योरुप में प्रति वर्ग मील में १२५ मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अमरीका में प्रति वर्ग मील में केवल ४२ मनुष्य रहते हैं। प्रत्येक महाद्वीप में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ आबादी बहुत घनी है कुछ ऐसे हैं जहां औसत दर्जे की आबादी है और कुछ स्थान ऐसे भी हैं जो बिल्कुल निर्जन हैं।

संसार में बहुत कम ऐसे भाग हैं जहाँ लोग नहीं बसे हैं और उससे भी कम ऐसे भाग हैं जहां मनुष्य नहीं रह सकता है। आज कल संसार में जो पांच प्रदेश हैं उनमें टुंड्रा और उष्ण मरुप्रदेशों में रहने में बड़ी कठिनाई होती है। अमरीका में कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य तथा बाहर वाले प्रदेशों में काफी अन्तर है परन्तु यूरेशिया में भी उसी प्रकार अन्तर है। स्विटजरलैंड और अफग़ानिस्तान में बहुत बड़ा अन्तर है। बर्तमान समय में टुंड्रा के रहन-सहन तथा निवासियों में बहुत कुछ अन्तर आ गया है। जिन स्थानों में एक भी मनुष्य नहीं रहते हैं अब वहां लोग आते जाते और रहते हैं। रूस ने उत्तर की ओर ४० हज़ार आदमी आर्कटिक बृत्त में रहने के लिये भेजे हैं। उष्ण मरुस्थलों में लोग सूर्य के प्रकाश को बुरा समझते हैं और उन्हें पानी की कमी रहती है। यह सम्भव है कि पञ्जाब की पाँच नदियां किसी समय भारत के उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश को हरा भरा बना दें। सहारा का रेगिस्तान खेती में बदला जा सकता है परन्तु उसके लिये काफी पानी मिलना दुर्लभ है। एक विदेशी इंजीनियर ने अपनी राय दी है कि रूम सागर को दोनों किनारों पर बांध द्वारा बांध दिया जावे उसके बाद वहाँ का पानी भाप बन कर स्वयम् सहारा में वर्षा कर के उसे हरा भरा कर देगा।

रेगिस्तानों के अलावा जंगल और दूर वाले भीतरी मैदान हैं जो निर्जन हैं। जब से भाप का सहारा मनुष्य को मिला है और रेलवे लाइनें खुली हैं तब से प्रेरीज़ तथा उत्तर और दक्षिण के बनों में जाकर उन्हें बनस्पति उगाने के योग्य बनाया गया है।

साधारण आबादी वाले स्थानों की शिक्षा में अधिक कठिनाई पड़ती है क्योंकि उनकी दशा मध्यम है। इस लिये वहां की शिक्षा देने के लिये वहाँ के ताप, वर्षा और कृषि का मानचित्र तयार कर लेना चाहिये। पहले शीतोष्ण और उष्ण कटिबंध को अलग कर लेना चाहिये। शीतोष्ण कटिबंध में भूमि की भिन्नता के अनुसार विभाजन किया जा सकता है। पहाड़ी स्थान मैदानों तथा चरागाहों से सुगमता पूर्वक अलग किये जा सकते हैं। जिन देशों में एक प्रकार की खेती होती है वह देश उन देशों से भिन्न हैं जहां कई प्रकार की खेती होती है फिर साधारण खेती वाले भाग और व्यापारिक खेती वाले भागों में भी भिन्नता है। उनकी सघनता में भी महान अन्तर है। अफ्रीका के उष्ण प्रदेश में भी प्राचीन निवासियों तथा स्वेत खेती करने वालों के काम और सघनता में भारी अन्तर है। प्रत्येक स्थान में खेतों में मजदूरों की आवश्यकता है साथ ही साथ उन्हें अपने जीवन के निर्वाह करने वाली वस्तुओं की भी आवश्यकता है। एशिया के मानसूनी प्रदेश के निवासी संसार के सब से सघन भागों के रहने वाले हैं।

यदि हम संसार को जनसंख्या के मानचित्र पर दृष्टि डालें तो हमें जनसंख्या की सघनता के तोन भाग भली भांति दृष्टिगोचर होंगे। यह तीनों भाग एशिया के मानसूनी प्रदेश, योरुप और उत्तरी अमरीका के पूर्वी भाग हैं। एशिया का मानसूनी प्रदेश सबसे बड़ा है और उसमें संसार की जनसंख्या का आधा भाग निवास करता है। इस प्रदेश के अधिकांश निवासी छोटे खेतों में कार्य करते हैं। इस भाग में कारखानों का काम अभी हाल में ही आरम्भ हुआ है इस लिये बड़े बड़े कारखाने नहीं हैं। जापान में भी अभी बहुत कम कारीगर तथा कारखाने में काम करने वाले लोग हैं। जापान के कारखाने अभी इंगलैण्ड जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कारखानों से बहुत पीछे हैं। इस बड़े प्रदेश के कई भाग हैं। प्रत्येक भाग के निचले मैदानों में सघनता अधिक है और वहां वर्षा तथा गर्मी भी अधिक होती है। भारतवर्ष में जनसंख्या की सघनता में बड़ी भिन्नता है। राजपूताने में प्रति वर्गमील में १३० और बंगाल में प्रति वर्गमील में ६०० मनुष्य निवास करते हैं। उत्तरी तंजौर के मैदान में सघनता और भी अधिक हो जाती है। चीन में सघनता के जो ६ प्रान्त हैं उनमें से ५ प्रान्त नदियों के बेसिन में स्थित हैं। उत्तरी, मध्यवर्ती और दक्षिणी भाग क्षेत्रफल में बराबर हैं परन्तु उत्तरी भाग की जनसंख्या केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ करोड़ है और मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग की जनसंख्या १८ करोड़ है। जापान के अधिकांश निवासी ३७° अंश उत्तरी अक्षाँश के दक्षिण में रहते हैं। उस भाग में सबसे धनी तथा सघन प्रदेश डेल्टों में हैं। जापान के बड़े राष्ट्रीय नगर दक्षिण की ओर ही स्थित हैं।

योरुप और पूर्वी उत्तरी अमरीका में खेती मशीनों द्वारा होती है। वहां खेती व्यापार तथा रोजगार के ध्यान से की जाती है। योरुप में कोयले की खानों के साथ ही साथ उपजाऊ भूमि भी है। यह दोनों पट्टियां मध्यवर्ती ऊँचे प्रदेश, राइन प्रान्त, स्विटज़रलैंड, बेल्जियम और इंगलैंड में फैली हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जन-संख्या की सघनता शिकागो से न्यूयार्क तक है। इस प्रदेश में तीन बड़ी कोयले की खानें हैं। इस भाग में संयुक्तराष्ट्र के कारखानों का तीन चौथाई माल तयार होता है। इस भाग में बहुत अधिक रेलवे लाइनें हैं जो अटलांटिक सागरी बन्दरगाहों की ओर जाती हैं। अमरीका में योरुप की अपेक्षा आबादी की सघनता कम है। इस भाग में ५० नगर ऐसे हैं जिनकी जन-संख्या १ लाख से अधिक है। इस प्रकार की जन-संख्या इंगलैंड और जर्मनी में है। इसलिये प्राकृतिक रूप से इन तीनों देशों में किसी न किसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध होना आवश्यक है।

केवल आबादी की कमी के कारण ही कठिनाई नहीं है वरन् आबादी अधिक होने के कारण भी कठिनाई पड़ जाती है। यह कठिनाई जातीयता, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की होती है।

समस्त संसार की जन संख्या में एक प्रतिशत की बढ़ती होती है। यदि इसी प्रकार बढ़ती होती रही तो १०० वर्षों में वर्तमान की दुगुनी आबादी हो जावेगी। क्या संसार इस बढ़ती के भार को संभाल सकेगा। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में माल्थून ने अपनी जन-संख्या के नियम संबन्धी विज्ञान में कहा था कि जब जन-संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है और धरती की मात्रा अचल है तो फिर मनुष्य को भोजन कहां से प्राप्त होगा? इसमें शक नहीं कि विज्ञान शास्त्र के द्वारा अद्भुत नई खोजें की जा सकती हैं फिर भी कोई न कोई समय ऐसा आवेगा जब कि जन-संख्या की अधिक बढ़ती को रोकना पड़ेगा।

गत दो सौ वर्षों में श्वेत लोगों की जन-संख्या में अधिक वृद्धि हुई है। १७७० ई० में श्वेत वर्ग वालों की जन-संख्या एक करोड़ ५५ लाख थी। १९४० ई० में उनकी संख्या बढ़ कर ७ करोड़ ३० लाख हो गई। पश्चिमी राष्ट्रों में १९११ ई० तक जन संख्या में वृद्धि पैदा होने के कारण थी। भांति भांति की उन्नति होने के कारण इंगलैंड की आबादी १८०१--१८५१ ई० के बीच में दोगुनी हो गई। १९११ के बाद से पैदा होने वाले बच्चों की कमी हो गई। है फिर भी पैदा होने वालों की संख्या मरने वालों से अधिक है, यही दशा और दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों की भी है।

पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी योरुप में पैदा होने वालों की वृद्धि है और मरने वालों में कमी है। रूस की जन-संख्या १७ करोड़ है। इसमें ३० लाख प्रति वर्ष वृद्धि हो रही है। यदि यही दशा २०वीं सदी के अन्त तक जारी रही तो रूस की जन-संख्या ५० करोड़ हो जावेगी और पश्चिमी योरुप की जन संख्या में १५ करोड़ की कमी हो जावेगी परन्तु अब बढ़ने वालों की संख्या आधी हो गई है। प्रोफेसर कार सौंडर्स के अनुमान से भविष्य में इंगलैंड की जन-संख्या में घटती होती रहेगी।

सभी पश्चिमी राष्ट्रों की जनसंख्या परिवर्तनशील नहीं है। फ्रान्स की जनसंख्या लगभग समान थी। १९२१ ई० तक सीमा में परिवर्तन होते हुये जर्मनी की जनसंख्या में ६ करोड़ ४० लाख की वृद्धि हुई है जिसमें तीस लाख विदेशी भी शामिल हैं। फ्रांस ने अपनी कमी को पूरी करने के लिये विदेशियों को अपने यहां स्थान देना आरम्भ कर दिया। प्राकृतिक रूप से भी उन्होंने जन-संख्या बढ़ानी चाही परन्तु १९३२—३६ ई० के बीच केवल ६ हजार की वृद्धि हुई है। यदि हम इस वृद्धि की समानता कनैडा के फ्रान्सीसियों से करें तो हमें बड़ा विस्मय होगा। १७६७ ई० में क्यूबेक प्रान्त में ५० हजार फ्रान्सीसी थे आज उनकी संख्या ३० लाख है।

१७०० ई० में आयरलैंड की जनसंख्या २ लाख थी १८४५ ई० में उसकी जन संख्या ८० लाख हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई थी। उसके बाद वहां दुर्भिक्ष पड़ा और नाज की उत्पत्ति न होने के कारण ६ वर्ष में १० लाख गरीब किसान भूकों मर गये। भूक के भय से लोग आयरलैंड छोड़ कर भाग गये। १० वर्ष के भीतर २० लाख आदमी संयुक्त राष्ट्र अमरीका चले गये। उसके बाद फसल के खराब होने से और लोग भी वहां गये। उन्नीसवीं सदी के अन्त में वहां की जन संख्या में ४० लाख की कमी हो गई थी। जब कि इँगलैंड की जन संख्या बढ़ रही थी। उसके बाद ब्रिटिश तथा आयरिश सरकार ने वहां की दशा में सुधार करने का प्रयत्न किया और अब वहां जन संख्या में वृद्धि हो रही है।

योरुप वालों ने जो बस्तियां बसाई उनमें भी युद्ध, बीमारी और दूसरे कारणों से जन संख्या में कमी हुई है। तस्मानिया के निवासियों का अंत हो गया। एस्किमो, अमरीकन, इंडियन और आस्ट्रेलियन आदि में वृद्धि हुई है। मओरिस लोगों की संख्या ५० वर्षों में ६० हजार से घट कर ४५ हजार हो गई है। मर्क्वेसस की जन संख्या १०० वर्षों के भीतर १६ हजार से घट कर ६०० हो गई है। गुलामों के व्यापार के कारण अफ्रीका की जन-संख्या में १० करोड़ की कमी हो गई है। अब अमरीकन इंडियन और अफ्रीका के निवासियों के बीच भी वृद्धि हो रही है।

जन संख्या की तुलना करने में कठिनाई का उत्पन्न होना कोई आवश्यक बात नहीं है जैसा कि अमरीका और कनैडा के आपसी व्यवहार से साबित हो चुका है परन्तु फिर भी जब उसमें दूसरी बातें मिला दी जाती हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े बढ़ जाते हैं। फ्रांस जर्मनी से भय खाता रहा है। जर्मनी को रूस से भय बना रहा है। आयरलैंड के प्रश्न तथा आयरलैंड की जन संख्या की वृद्धि और उन्नति के कारण अँग्रेज़ों को चिन्ता बनी रही है।

प्रत्येक देश को अपनी बढ़ती हुई जन संख्या के कारण सालाना अपने राष्ट्रीय कार्यों का ब्योरा लगाना पड़ता है। सोवियट यूनियन को अपनी बढ़ती प्रजा के रखने के लिये स्वयम् अपने देश में काफी स्थान है। जापान और इटली में पर्वतों के कारण रहने योग्य स्थान प्राकृतिक रूप से कम हैं वहां अधिक उपज करने तथा सामान तयार करने की कोशिश की गई। विदेशी व्यापार बढ़ाया गया फिर भी उन्हें अपने लिये विदेशों में स्थान ढूंढ़ने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

इटली में गेहूँ की अधिक उपज होने के कारण आन्दोलन किया गया जिससे वहां की आवश्यकता की पूर्ति के लिये गेहूँ की उपज होने लगी है। दूसरी वस्तुओं की उपज बढ़ाने के लिये भी प्रयत्न किया गया है। वहाँ कारखानों की वृद्धि की गई जिससे इटली की गणना आज संसार के बड़े कारखाने वाले देशों में हो गई। फिर इटली ने विदेशों में अपना अधिकार जमाया और वहां अपने यहाँ के लाखों मनुष्यों को रहने का स्थान दिया।

२० वर्ष पहले इटली के लोग अमरीका में जाकर बस जाते थे परन्तु अमरीका की सरकार ने एक कानून बना कर विदेशी लोगों का अपने देश में घुसना बन्द कर दिया है। इटली की सरकार ने भी एक नियम बना कर अपने यहां के निवासियों का विदेशों में जाकर बसना रोक दिया है। अब इटली के निवासी केवल अफ्रीका के इटैलियन प्रान्तों में जा सकते हैं। इस नियम का आशय यह है कि इटली की जनसंख्या में वृद्धि हो। इटली में ब्रह्मचारी मनुष्य पर कर लगा दिया गया है। जिन वंशों में कम बच्चे पैदा होते हैं उन्हें जुर्माना किया जाता है। अधिक बच्चे उत्पन्न करने वाले घरों को सरकार की ओर से सहायता मिलती है। १९३६ ई० में मुसोलनी ने घोषणा की थी कि यदि इटली को संसार में अपनी गणना करानी है तो उसकी जनसंख्या १९५० ई० तक ६ करोड़ अवश्य हो जानी चाहिये।

मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई कारणों से जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दफ्तर के विभाजन के अनुसार दो मुख्य कारण है। पहला तो यह कि मनुष्य मजदूरी अथवा खेती का काम करने के लिये अपने महाद्वीप के भीतर ही एक देश से दूसरे देश को चला जाता है और ऋतु के समाप्त होने पर फिर वापस चला आता है दूसरा कारण यह है कि जब मनुष्य को अपने देश में भोजन प्राप्त नहीं होता तो वह अपने देश को छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपने रहने के लिये घर बना लेता है। लोग सोना, धन और मुफ्त धरती तथा दूसरी लालचों के कारण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपना निवास स्थान बना लेते है। ब्रिटिश द्वीप समूह से जो लोग दूसरे देशों में जाकर बसे हैं उसके कई कारण हैं।

वर्तमान काल में योरुप और एशिया के मानसूनी प्रदेश के लोगों ने अपने देश छोड़ कर दूसरे देशों में अपने घर बनाए हैं। यह लोग प्रशांत महासागर के देशों में ही जाकर बसे हैं। यद्यपि वर्तमान समय में यह प्रयत्न किया जा रहा है कि कोई भी देश अपने यहां के निवासियों को दूसरे देश में न बसावे फिर भी यह काम पूर्ण रूप से रोका नहीं जा सकता। मानव जाति अपनी प्रकृति के अनुसार सदैव घूम-फिर लगाए ही रहेगी।

दूसरे देशों में जाकर बसने के साथ ही साथ नई बस्तियों का भी घनिष्ट सम्बंध हो जाता है। ब्रिटिश, डच, फ्रांसीसी आदि जातियों ने किस प्रकार अपनी बस्तियां बसाईं यह इतिहास से भली प्रकार विदित है। नव बस्तियों की नीति समय समय पर बदलती रही है। सब से उन्नति शील नीति आज कल वेस्ट-मिनिस्टर के इन्स्टीट्यूट की है। इस नियम के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत रह कर स्वतंत्र रूप से अपना काम करते हैं। उन्हें डोमीनियन राष्ट्र नाम दिया गया है।

नई वस्तुयों के बसाने में जिन उपायों का प्रयोग किया जाता है उनका अध्ययन करना भी प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। नई बस्ती बसाने के लिये अच्छे शासन धन और मजदूरों की आवश्यकता है। सरकार को नई बस्ती में आने जाने के साधनों को वृद्धि करनी पड़ती है उसे सस्ता और सरल बनाना पड़ता है, खेती के लिये सिंचाई का प्रबंध करना पड़ता है, सिंचाई भी सस्ती करनी पड़ती है। सरकार को शिक्षा विज्ञान आदि का भी भली प्रकार प्रचार करना पड़ता है।

इस प्रकार भूगोल की शिक्षा प्रदान करने के लिये अध्यापकों को आवश्यक है कि वह भारत के मान-चित्र के साथ ही साथ संसार का मानचित्र भी अपने साथ रक्खें और फिर संसार के मान चित्र में भारत का स्थान समझाते हुये विद्यार्थियों को भूगोल की शिक्षा प्रदान करें। सब से पहले भूगोल के विद्यार्थी को स्थान का ज्ञान होना आवश्यक है उसके बाद वहां की भूमि तथा जनसंख्या का बनाना जरूरी है क्योंकि इन्हीं बातों पर संसार के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रश्न निर्भर रहते हैं।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ अक्टूबर—१९४१ रूम सागर में जर्मन बम्बवर्षक विमानों ने ब्रिटिश पथरचक सेना पर आक्रमण किया। मास्को पर जर्मन विमानों ने आक्रमण किया जिसमें उसकी बड़ी हानि हुई।

२ अक्टूबर—नाज़ी सेना क्रीमिया की ओर बढ़ी। फिन सेना ने पेट्रोज़ावाडस्क पर अधिकार प्राप्त कर लिया। ईरान के भूतपूर्व राजा ने इरान छोड़ दिया। उसके सामान की तलाशी बन्दरअब्बास पर हुई। खरकोव रूसी नगर जर्मन आक्रमण द्वारा खतरे में हो गया। पोल्टावा के मध्य भीषण युद्ध हुआ।

३ अक्टूबर—नाज़ी विमानों ने उजाली रात में ब्रिटिश तट पर आक्रमण किया। हिटलर ने रूसी युद्ध सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया और बतलाया कि २५ लाख रूसी सेना गिरफ़्तार हो चुकी है। हिटलर ने अपने सहायक राष्ट्रों से शीतकाल के आक्रमण में सहायता के लिये अनुरोध किया।

४ अक्टूबर—लेनिनग्राड के सामने रूसी सेना जर्मन सेना का डटकर सामना किया। उत्तरी-पश्चिमी मोर्चे की ओर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। इंगलिश चैनल ने नाज़ी पथरचक सेना तथा ग्रास्टेण्ड बन्दरगाह पर ब्रिटिश बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया और एक जहाज़ को जला दिया। इंगलैंड के पूर्वी जिलों पर जर्मन बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया।

५ अक्टूबर—दक्षिणी यूक्रेन में रूसी सेना ने आक्रमण किया। नीप्रोपेट्रोव्स्क स्थान पर भीषण टैंक युद्ध हुआ। करेलियन स्थमस पर नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। मास्को और लेनिनगाड पर भीषण बम्बवर्षा की गई।

६ अक्टूबर—उत्तर और दक्षिण रूसी सेना में धावा मारा। लेनिनग्राड से नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। दक्षिणी यूकेन ने रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया।

७ अक्टूबर—मास्को और खारकोव रूसी नगरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर भीषण नाज़ी सेनायें बढ़ीं। उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर से जर्मन सेनायें मास्को की ओर बढ़ीं। हिटलर ने शीत काल के पहले ही वालगा तक पहुँचाने का निश्चय किया। रूम सागर में तेरह शत्रु जहाज डुबाये गये।

८ अक्टूबर—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। मास्को की ओर नाज़ी सेनायें बढ़ीं। मध्यवर्ती क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। रूज़वेल्ट ने कांग्रेस के नेताओं को सलाह दिया कि तटस्थता के नियम को बदल कर अमरीकन व्यापार के जहाज़ों को हथियार बन्द करना चाहिये।

जर्मन सेना का भीषण आक्रमण हुआ। व्याज़मा और ब्रीयन्स्क नगरों में लड़ाइयां हुईं। कई रूसी सेनायें घेर ली गईं। रूसी लोगों ने ओरेल को खाली कर दिया। टिमोशिन-को रूसी जनरल ने प्रत्याक्रमण करने की तयारी किया।

९ अक्टूबर—इंगलैंड, अमरीका और डच पूर्वी द्वीप समूह ने मिल कर जापान को तेल भेजना बन्द कर दिया। मध्यवर्ती रूसी सीमा पर भीषण संग्राम हुआ। जर्मन समाचार के अनुसार टिमोसिनको रूसी जनरल की सेना घेर ली गई। रूसी पूर्वी सीमा की स्थिति जटिल हो गई। नाज़ी समाचार के अनुसार ७० डिवीजन रूसी सेना घेर ली गई।

टर्की और जर्मनी के मध्य सामान परिवर्तन करने वाली संधि हुई।

१० अक्टूबर—अजब सागर के बन्दरगाहों पर नाज़ी अधिकार हो गया। जर्मन सेना मास्को की सड़क पर मास्को की ओर बढ़ी। व्याज़मा रण-क्षेत्र में नाज़ी सेना को सफलता प्राप्त हुई। लेनिनग्राड क्षेत्र में रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया। रूस को सहायता देने के लिये अमरीका में बिल तयार करके सेनेट के सामने रखा गया।

११ अक्टूबर—तूला नगर (जो मास्को और ओरेल के मध्य में है) पर नाज़ी सेना का अधिकार हो गया।

२०० ब्रिटिश बम्ब वर्षक वायुयानों ने रुह प्रान्त पर धावा मारा। राटर्डम आरटेण्ड और डंकिर्क के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। तोबरक प्रान्त में नाज़ी टैंकों ने भ्रमण किया।

१२ अक्टूबर—मास्को नगर पर अधिकार करने के लिये रात दिन लगातार युद्ध होता रहा। ओरेल व्याज़मा और ब्रीयन्स्क के चारों ओर युद्ध हुआ। नवीं तथा अठार-हवीं रूसी सेना नष्ट कर दी गई। रूस की स्थाई सेना का अधिकांश भाग मध्यवर्ती क्षेत्र की ओर भेजा गया।

१३ अक्टूबर—जर्मन सेना ने रूस के रण स्थान में १४ हजार टैंकों का प्रयोग किया। जर्मन सेना सफलता पूर्वक मास्को नगर की ओर बढ़ती गई। २ लाख रूसी सेना पकड़ी गई। यूक्रेन में रोस्टोव नगर की ओर नाज़ी सेना बढ़ी। ब्रीयन्स्क नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। लेनिन-ग्राड रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने पुनः आक्रमण किया परन्तु आक्रमण रोक दिया गया। रूस की परिस्थिति जटिल हो गई।

१४ अक्टूबर—व्याज़मा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मास्को रण स्थल से रूसी सेना पीछे हट गई। नाज़ी लोगों का कहना है कि उन्होंने ३ लाख ५० हज़ार रूसी सैनिकों को गिरफ्तार किया। लेनिनग्राड रणक्षेत्र में जर्मन आक्रमण तथा रूसी प्रत्याक्रमण हुआ।

बवेरिया, राइनलैंड तथा और दूसरे प्रान्तों पर ३०० ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। अटलांटिक सागर में एक पुर्तगाली जहाज़ डुबाया गया।

ब्राएंस्क प्रान्त में कुछ जर्मन टैंक नष्ट कर दिये गये। मास्को से ६३ मील की दूरी पर नाज़ी सेना रोक दी गई। जर्मन तोपें मास्को रक्षक सेना की तोपों की पहुँच में आ गईं। रूम सागर में शत्रु के सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर ब्रिटिश सबमेरिनों ने धावा मारा और तीन जहाज़ डुबा दिये।

१५ अक्टूबर—नार्वे तट के समीप शत्रु जहाजों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। डच तट के लेहेवरे शत्रु डाक पर ब्रिटिश विमानों का आक्रमण हुआ। जापान के प्रधान मन्त्री ने एक सभा किया जिसमें जटिल राजनैतिक प्रश्नों पर विचार किया गया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश जहाजों पर शत्रु हवाई टारपीडो ने धावा मारा परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

१६ अक्टूबर—मास्को की दशा शोचनीय हो गई। बहुत सी मशीनें आदि फौजी सामान नाजी सेना के हाथ लगा। जर्मन सेना मास्को से ६५ मील पश्चिम १०० पश्चिम और २०० मील दक्षिण की ओर तक पहुँच गई। कलोनिन, व्याज़मा, ब्रीयन्स्क, ओरेल और यूक्रेन आदि रण-क्षेत्रों में घोर संग्राम हुआ।

१७ अक्टूबर—सोवियट सरकार ने मास्को छोड़ दिया नगर के बाहरी रक्षक क्षेत्र में आग लगा दी गई। जर्मन तथा रूस दोनों की बड़ी हानि हुई। रूमानिया की सेना ने ओडेसा बन्दरगाह में प्रवेश किया। ओडेसा की गलियों में युद्ध हुआ। काज़न रूस की नई राजधानी बनाई गई। लेनिनग्राड में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की सरकार में परिवर्तन हुआ। जापान की नई सरकार बनाई गई और कोनोये की सरकार ने स्तीफा दिया। नई सरकार के बनने से अमरीका पर आक्रमण की सम्भावना है। आइसलैंड के दक्षिण पश्चिम अमरीकन विध्वंशकारी जहाज़ डुबाया गया।

१८ अक्टूबर—जनरल तोजो ने जापान की नई सरकार बनाई। साइबेरिया अथवा दक्षिण की ओर जापानी आक्रमण की सम्भावना है। मन्चूरिया में दस लाख जापानी सेना एकत्रित की गई। ओडेसा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मध्यवर्ती रणक्षेत्र की सीमा को तोड़ दिया। कलीनिन क्षेत्र में नाज़ी सेना का आगे बढ़ना रोक दिया।

१६ अक्टूबर—मास्को के चारों ओर दृढ़ किलेबन्दी की गई। रूसी सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ शत्रु का सामना किया जिससे नाज़ी सेना की बड़ी हानि हुई। जर्मन सेना ने भीषण आक्रमण किया। रूस जवांमर्द बहादुरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा अपना बलिदान चढ़ाकर किया। ओडेसा नगर बम्ब वर्षा के कारण अंगारों का ढेर बना दिया गया।

२१ अक्टूबर—मास्को नगर के सामने नाज़ी सेना रोक दी गई। रूसी सरकार कुइबीशेव चली गई। रूसियों ने प्रत्याक्रमण करके कई नगरों पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना काकेशस की ओर बढ़ने लगी। उसका लक्ष्य रोस्टोव नगर पर है। मेसेंसाइड प्रान्त में नाज़ी बम्ब वर्षा को ने आक्रमण किया। आइसलैण्ड के समीप उत्तरी अटलांटिक सागर में और दक्षिणी अटलांटिक में अफ्रीका के तट के समीप जर्मन सबमेरीन द्वारा अमरीकन जहाज डुबाये गये।

२२ अक्टूबर—मध्यवर्ती रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने मैजिस्क स्थान पर रूसी लाइन तोड़ दिया। स्टालिनो नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। मास्को का युद्ध पहले की भांति होता रहा। कलीनिन पर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। जर्मन सेना का कहना है कि बाल्टिक सागर के डगोये द्वीप पर उन्होंने अधिकार कर लिया।

२३ अक्टूबर—तगनेराग नगर को रूसियों ने खाली किया। मास्को सीमा पर जर्मन सेना रोक दी गई। रूसियों का प्रतिकूल आक्रमण हुआ। डोनेज़ बेसिन की ओर जर्मन सेना बढ़ी।

जापानी सेना ने थाई सीमा के किलेबन्दी वाले स्थानों पर अधिकार कर लिया।

२४ अक्टूबर—मास्को की रक्षक सीमा को नाज़ी सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना मास्को से ३८ मील की दूरी पर रह गई। कलीनिन नगर की गलियों में युद्ध हुआ। क्रीमिया में नया आक्रमण आरम्भ हुआ।

जापान ने संयुक्त राष्ट्र से लड़ने की तयारी किया। जापान अपना घेरा डलवाने के लिये तयार नहीं है वह उसका विरोध अपनी पूरी शक्ति के साथ करेगा।

२५ अक्टूबर—संयुक्त राष्ट्र के पर राष्ट्र मन्त्री कर्नल वाक्स ने भाषण दिया कि जापान के दूसरे देशों में फैलाव की नीति के कारण सुदूर पूर्व में युद्ध की पूर्ण सम्भावना है। जर्मन सेना रोस्तोव नगर की ओर बढ़ी। मास्को नगर के लिये घोर संग्राम हुआ। क्रीमिया में नाज़ी सेना का प्रवेश रोक दिया गया। डोनेज प्रान्त जर्मन अधिकार में चला गया।

२६ अक्टूबर—नाज़ी सेना के समाचार के अनुसार खारकोव नगर पर नाज़ी अधिकार हो गया। डोनेज़ बेसिन में घोर संग्राम हुआ। मास्को सीमा पर नवीन नाज़ी सेना पहुँची। मोजेस्क प्रान्त में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। क्रीमिया में रक्षक लाइन तोड़ने के लिये नाज़ी सेना ने भरसक प्रयत्न किया।

आर० ए० एफ० (ब्रिटिश) विमानों ने नैपुल्स के ऊपर आक्रमण किया और हज़ारों पौण्ड के बम्ब गिराये।

२७ अक्टूबर—डोनेज़ बेसिन के लिये रूसी सेना तथा जर्मन सेना में घोर संग्राम हुआ। मालो-यारोस्लावेज़ के समीप रोक दिये गये। रोस्टोव और खारकोव नगर से रूसी सेना हटाई गई।

२८ अक्टूबर—खारकोव के समीप से सेना हटाई गई। मास्को से ४० मील की दूरी पर घोर संग्राम हुआ।

लेनिनग्राड रणक्षेत्र सीमा में स्थानीय विजय रूसियों को प्राप्त हुई।

ईरान होकर युद्ध-सामग्री ब्रिटिश सरकार द्वारा रूस भेजी गई। फिनलैंड की खाड़ी में दो सोवियट विध्वंसकारी जहाज़ डुबाये गये।

प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जल सेना दिवस (नैवी डे) के दिन भाषण में कहा कि हिटलर का अमरीका सम्बन्धी गुप्त मानचित्र उसे मिल गया है जिससे हिटलर की अमरीका सम्बन्धी भावना का साफ़ तौर पर पता चलता है। रूज़वेल्ट ने अमरीकन तटस्थता नियम के रद्द करने की घोषणा की और कहा कि व्यापारिक जहाज़ों की रक्षा के लिये आवश्यक है कि जैसे ही शत्रु जहाज़ दिखलाई पड़े उस पर गोलों की बौछार आरम्भ कर दी जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, ... Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अक्टूबर १९४१

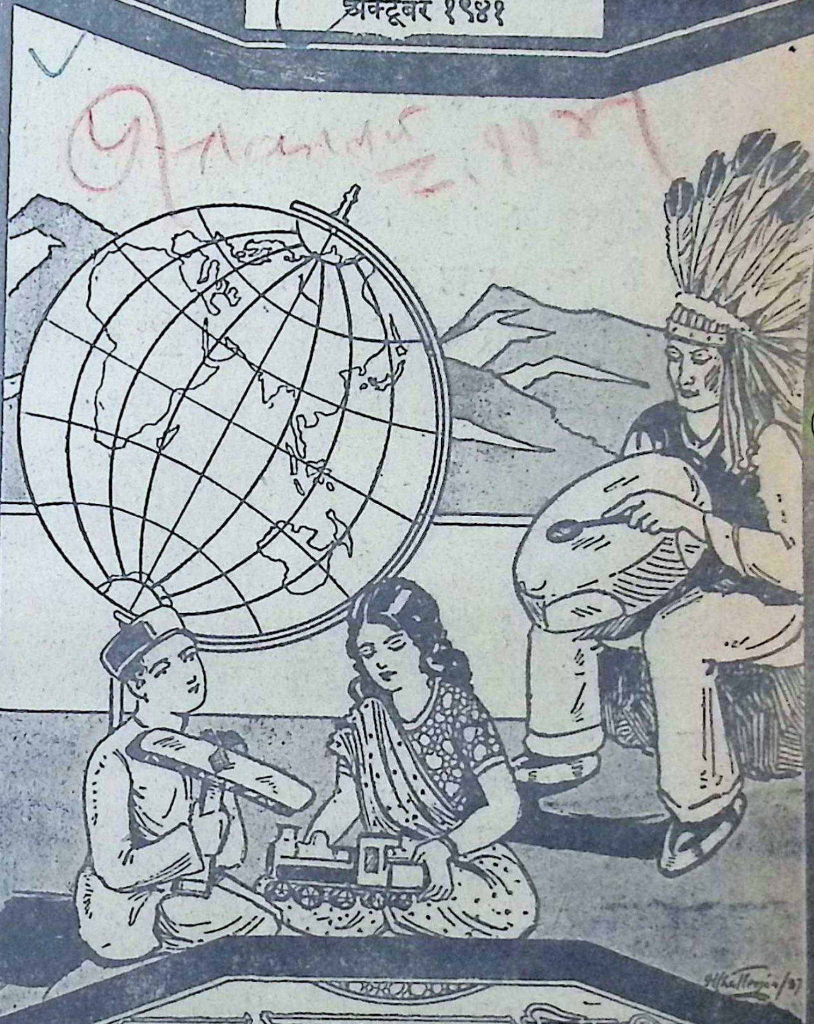

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
In .. : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

e only Geographical Monthly published in India

se : "Bhugol" aims to enrich the geographical section
ire and to stimulate geographical instruction in the

हमें अत्यन्त खेद है कि कई कारणों से 'भूगोल' के प्रकाशन में देरी हो गई। आशा है पाठक गण क्षमा करेंगे।

कागज़ और छपाई का सामान इतना महँगा हो गया है कि 'भूगोल' को उसी मूल्य में प्रकाशित करना असम्भव हो गया है। साथ ही मूल्य बढ़ाने में पाठकों को जो असुविधा होगी वह भी हमें भली भांति विदित है। अतः हमने यह निश्चय किया है कि लड़ाई की अवधि तक 'भूगोल' के केवल २४ पृष्ठ रहें। आशा है पाठक और 'भूगोल' के सहायक हमारी इस योजना से सहमत होंगे और 'भूगोल' के संचालन में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अलास्का के मार्ग	१
२—योरुपीय दुर्भिक्ष	५
३—नवयुग में स्कैण्डिनेविया	६
४—उदविलाव (बीवर)	१३
५—दक्षिण अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह	१५
६—संसार की जनसंख्या	१९
७—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] कार्त्तिक, सं० १९९८, अक्टूबर, १९४१ ई० [अङ्क ६

अलास्का के मार्ग

पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा में अलास्का एक बहुत बड़ा भाग लेगा। आधुनिक योजना के अनुसार उसे सैनिक रूप से दृढ़ बनाने में १७,५०,००,००० रुपये की आवश्यकता है। इस धन से वहां की स्थल सेना, जलसेना, वायुयान तथा सबमरीन आदि का निर्माण होगा। इस धन में से १२०१३७०० रु० लगाया जा चुका है जिसमें से ६,०२,००,००० रु० सेना में और ५,९९,३७,२०० रु० जल सेना में लगाया गया है। परन्तु जब तक अलास्का संयुक्त राष्ट्र से मार्गों द्वारा नहीं मिला दिया जाता है तब तक यह सभी तयारियां निरर्थक हैं। अलास्का के निवासियों के प्रयोग की प्रायः सभी वस्तुओं का सम्बन्ध है वहां तक अलास्का को अस्त्र शस्त्र बाहर से ही मंगाने पड़ेंगे। अभी अलास्का को सामान समुद्री मार्ग तथा पैन-अमरीकन हवाई मार्ग से ही जा सकता है।

अलास्का का उत्तरी तट जुलाई, अगस्त और सितम्बर तीन महीनों तक खुला रहता है। बरो से दक्षिण प्वाइन्ट पोप तक का तट जुलाई से कुछ पहले खुलता है और सितम्बर से कुछ बाद को बन्द होता है।

पश्चिमी तट के नोमे बन्दरगाह पर मई मास में स्टीमर जाने आरम्भ होते हैं और अंतिम स्टीमर नोमे बन्दरगाह को २५ अक्तूबर और ५ नवम्बर के बीच छोड़ देता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह बहुत बड़ा है वहां पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का समस्त जहाजी बेड़ा ठहर सकता है परन्तु इस बन्दरगाह पर बहुधा तूफान आया करते हैं। यह बन्दरगाह नोमे के बाद खुलता है और उस से पहले बन्द हो जाता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह के सिरे पर टेल्लेर नामक छोटा परन्तु बहुत सुन्दर बन्दरगाह स्थित है। इस बन्दरगाह पर छोटे जहाज ठहर सकते हैं परन्तु इसका प्रयोग बहुत कम समय तक किया जा सकता है सेंटमिकेल का बन्दरगाह और अधिक दक्षिण की ओर है और वह उसी समय तक खुला रहता है जब कि नोमे का बन्दरगाह खुला रहता है। सेंटमिकेल का बन्दरगाह यूकोन नदी के मुहाने के समीप है। यूकोन का डेल्टा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में जम जाता है।

उपरोक्त बातों से सिद्ध है कि अलास्का का उत्तरी और पश्चिमी तट साल के केवल कुछ ही महीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक खुला रहता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये विशेष उपायों का प्रयोग करना आवश्यक है।

सोवियट सरकार ने अपने तट पर कुछ स्थान ऐसे बना रक्खे हैं जहां बरफ की चट्टानों की चाल की देख भाल की जाती है। वायुयान इस कार्य में बड़े सहायक होते हैं। रूसी लोगों ने बरफ तोड़ने वाले विशेष जहाज निर्माण किये हैं। इन्हीं उपायों का प्रयोग अलास्का में भी किया जा सकता है। इन उपायों से शायद यूकोन के दक्षिण के बन्दरगाह प्रायः साल भर खुले रह सकेंगे।

दक्षिणी अलास्का के मुख्य बन्दरगाह स्कागवे जुनीव, कोर्डोव और सीवर्ड हैं। पनहांडले के बन्दरगाहों में किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। अलास्का का मुख्य बन्दरगाह ऐंकारेज है। यह बन्दरगाह बरफ के कारण शीतकाल में कई महीने तक बरफ से ढका रहता है। ऐंकारेज का बन्दरगाह कुक की खाड़ी पर स्थित है जहां से संसार में सब से ऊँची लहरें उठती रहती हैं। तीव्र लहरों के कारण बरफ के टुकड़े इधर उधर फैल जाते हैं जिससे बन्दरगाह ६ महीनों तक बन्द रहता है। कुछ लोगों का कथन है कि आधुनिक साधनों के प्रयोग करने से एन्कारेज का बन्दरगाह वर्ष भर खुला रह सकेगा।

अलास्का की खाड़ी में सेवर्ड का बन्दरगाह है। यह एन्कारेज से ८० मील दक्षिण की ओर है और अलास्का रेलवे के बनने के कारण यह शीतकाल का मुख्य बन्दरगाह बन गया है।

केनाई प्रायद्वीप के पूर्व पोर्टेज की खाड़ी को बन्दरगाह बनाया जा रहा है। अभी तो अलास्का का सब से आवश्यक बन्दरगाह एन्कारेज ही है। इसके ठीक पीछे रिचार्डसन का किला है। यह अलास्का का सब से बड़ा सैनिक स्थान है। एन्कारेज से सरकारी रेलवे लाइन उत्तर की ओर जाती है और फेअर बैङ्क में खतम हो जाती है। फेअरबैङ्क से मतनुस्का घाटी तक एक रेल की सड़क जाती है।

अलास्का के बन्दरगाहों को उसके भीतरी भाग से मिलाने के लिये सेवर्ड-फेअरबैङ्कस रेलवे लाइन है। यह ४७० मील लम्बी है। इसकी कई छोटी शाखाएँ हैं। कार्डोवा से जो रेलवे लाइन केपेर नदी के किनारे किनारे जाती थी वह १९३८ ई० में बन्द कर दी गई है परन्तु वह पुनः खोली जा सकती है। यूकोन प्रान्त की रेलवे लाइन सब से बड़ी है, यह स्कागवे से ह्वाइट दर्रे से होकर ह्वाइट हार्स को जाती है। ह्वाइट हार्स से सामान तथा सवारियां नाव द्वारा यूकोन नदी हो कर डावसन और अलास्का के बेसिन को जाती हैं। अलास्का रेलवे लाइन की भांति ह्वाइट दर्रे की लाइन साल भर खुली रहती है।

अलास्का के भीतरी भाग की सब से प्रसिद्ध लाइन रिचर्डसन है। यह वल्डेज से फेअर बैंक्स को जाती है और ३७१ मील लम्बी है। दर्रों पर यह सड़क शीतकाल में बरफ से बन्द हो जाती है परन्तु आधुनिक उपायों के प्रयोग करने से यह साल भर चालू रह सकती है। फेअर बैंक्स से एक सड़क सर्किल को जाती है जिसे स्टीसे मार्ग कहते हैं। बहुत सी सड़कें जंगलों में होकर जाती हैं और शीत काल में खुली रहती हैं परन्तु ग्रीष्म काल में कीचड़ होने के कारण बन्द हो जाती हैं। इसलिये अलास्का को आने जाने तथा सामान ढोने के लिये वायुयानों को ही मुख्य साधन बनाना पड़ेगा।

अलास्का में सामान तथा सवारी ढोने के लिये विमान का ही अधिक प्रयोग करना पड़ता है। १९३८ ई० में अलास्का में उतना ही सामान विमानों द्वारा ढोया गया जितना समस्त संयुक्तराष्ट्र के विमानों में ढोया गया था। अलास्का में तीन मुख्य हवाई मार्ग हैं। (१) पैन अमरीकन हवाई मार्ग यह मार्ग सीट्टेल से वानकूवर को जाता है। दूसरा मार्ग वानकूवर से और तीसरा एडमोन्टन से आरम्भ होता है। इन मार्गों को संगठित रूप से प्रयोग में लाने से न्यूयार्क से फेअर बैंक की यात्रा २० घंटे में समाप्त की जा सकती है दूसरे तीन घंटे की हवाई यात्रा के बाद संयुक्त राष्ट्र और रूस की सीमा तक की यात्रा।

१९३९ ई० में अलास्का में १७५ विमान हवाई लाइनों में काम कर रहे थे। अब उनकी संख्या और अधिक बढ़ गई है। यूकोन और कुस्कोक्विम अलास्का की दो बड़ी नदियाँ हैं। यूकोन नदी उत्तरी अमरीका में तीसरी बड़ी नदी है। इस नदी में इसके मुहाने से डावसन नगर तक स्टीमर चल सकते हैं। मुहाने से डावसन की दूरी ११०० मील है। डावसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से व्हाइट हार्स तक छोटे तथा छिपले स्टीमर चलते हैं जिसकी दूरी ३०० मील है। कुस्कोक्विम नदी में ३३० मील तक जहाज चलते हैं। यह दोनों नदियां मई से अक्तूबर तक खुली रहती हैं। यह प्रस्ताव किया गया है कि यदि बेरिंग सागर के समीप कूकोन और कुस्कोक्विम को नहर द्वारा मिला देने से व्यापारिक मार्ग में बड़ी वृद्धि हो जावेगी। नहर का बनाना सरल है और व्यय भी अधिक न पड़ेगा साथ ही साथ अलास्का के भीतरी आने जाने के मार्ग में एक बड़ी वृद्धि हो जावेगी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से अलास्का को समुद्री मार्ग होना परमावश्यक है। यूगेट साउण्ड से पन्हण्डेल के बन्दरगाहों को जाने वाले जहाज प्राकृतिक रूप से भीतरी मार्ग का ही अनुसरण करते हैं। इस मार्ग में छोटे छोटे द्वीप ब्रिटिश कोलम्बिया और अलास्का का पर्वतीय तट पड़ता है। यह बहुत ही आवश्यक यात्रा मार्ग माना जाता है। अलास्का को जाने वाले दूसरे जहाज खुले समुद्री मार्ग में होकर जाते हैं इस लिये युद्ध काल में उन पर आक्रमण होना अनिवार्य है। तटीय मार्ग होकर जाने वाले जहाज भी खतरे से खाली नहीं रह सकते क्योंकि द्वीपीय तथा पहाड़ी तट पर पनडुब्बे जहाजों के ठहरने को विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं।

अलास्का की जन संख्या ७० हज़ार है। शान्ति के समय में यहां के जल तथा स्थल मार्ग वहां के निवासियों के लिये काफी हैं परन्तु युद्ध काल के लिये यह मार्ग काफी नहीं हैं। यदि अमरीका को प्रशांत महासागर में पराजय होता है तो फिर अलास्का के निवासी अलास्का में क़ैद हो जावेंगे और फिर वह भूकों मर जावेंगे क्योंकि उन्हें भोजन सामग्री भी प्राप्त नहीं हो सकेगी। इन कारणों से पश्चिमी कनैडा होकर अलास्का के लिये एक नये मार्ग की बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रस्ताविक मार्ग के लिये कई मार्गों का प्रस्ताव हुआ है जिनमें से चार ऐसे हैं जिन पर काफी वादा-विवाद हुआ है वह अ, ब, स, द मार्गों के नाम से सूचित किये गये हैं। अ मार्ग के सम्बन्ध में काफी लिखा पढ़ी हुई है। यह मार्ग सीट्टले, वानकूवर, प्रिंसजार्ज, हेजेल्टोन व्हाइट हार्स और फेअर बैंक्स होकर जावेगा। सीट्टले से हेजेल्टोन तक इस मार्ग में सड़क बनी है परन्तु इस मार्ग का बहुत थोड़ा भाग सैनिक प्रयोग के योग्य है। यह मार्ग बड़ा ही सुन्दर है परन्तु पहाड़ी तथा टेढ़ा होने के कारण इस मार्ग होकर रेलवे बनाने में खर्च अधिक पड़ेगा। यह मार्ग तट के समीप पड़ेगा जिससे मार्ग के बन जाने पर यह खूब चालू रहेगा। इस मार्ग में कई एक प्रसिद्ध स्थान भी पड़ेंगे साथ ही साथ यह मार्ग समस्त साल खुला रहेगा शीत काल में भी यह बरफ से नहीं ढकेगा।

इस मार्ग का प्रधान पक्षपाती मिस्टर डोनल्ड मैक्डोनल्ड और अलास्का के अनथनीजे डाइमँड (संयुक्तराष्ट्र के कांग्रेस का सदस्य) के कथन के अनुसार इस मार्ग को तयार करने में लगभग १०८ करोड़ रुपये खर्च होंगे। यह व्यय एक लड़ाका जहाज बनाने के व्यय का केवल तिहाई है। लड़ाका जहाज को चट्टान में टक्कर खाकर टूट जाने की सम्भावना है और उसकी एक नियमित आयु भी है परन्तु मार्ग तो बहुत समय तक चलेगा इस मार्ग के विरोधियों का कहना है कि तट के समीप होने के कारण इस पर शत्रु का हवाई आक्रमण हो सकेगा और विजयी होने की दशा में वह इसे बन्द कर देगा या काट देगा।

ब मार्ग प्रिंस जार्ज तक उसी मार्ग होकर है जिससे होकर अ है परन्तु उसके बाद वह अधिक भीतरी भाग होकर जावेगा। इस सड़क को बनाने में अधिक समय लगेगा और खर्च भी अधिक पड़ेगा। अ और ब दोनों मार्गों के दक्षिणी सिरे प्रशांत महासागर पर हैं इस लिये बहुत से लोगों का कहना है कि यह मार्ग ठीक नहीं है क्योंकि कनैडा के कारखाने दक्षिण पूर्व की ओर और संयुक्तराष्ट्र के कारखाने मिसीसिपी नदी के पूर्व स्थित हैं। इस लिये सामान लादने वाली लारियों को इन मार्गों पर आने के लिये त्रिभुजाकार मार्ग की यात्रा करनी पड़ेगी। लोगों का मत है कि सड़क का आरम्भ शिकागो से होना चाहिये जिसमें विनीपेग आदि स्थान पड़ें।

स मार्ग अधिक सीधा है और अ, ब की अपेक्षा इसमें खर्च कम पड़ेगा। यह मार्ग उपजाऊ प्रदेश में होकर गुज़रता है। यह मार्ग शीत काल के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा ही सुगम होगा जब कि और दूसरे मार्ग बरफ से ढक जाते हैं। इस मार्ग का नोटीकोत्रिन से बड़ी झीलों के पश्चिमी किनारे तक का भाग २ वर्ष पहले बना है।

द मार्ग मैकेञ्ज़ी नदी के समानान्तर कीले नदी के मुहाने तक ज़ाता है। मैकेञ्ज़ी नदी उत्तरी अमरीका की दूसरी बड़ी नदी है। यह सड़क कई भागों में बाँट कर बनाई जा सकती है। यह सड़क लगभग प्रत्येक स्थान पर रेलवे लाइन के समानान्तर रहेगी इसलिये सड़क बनाने के लिये सामान सरलता पूर्वक पहुँच सकेगा। अल्बर्टा प्रान्त के कोष मंत्री का कहना है कि द सड़क के तयार करने में ४ या ५ करोड़ रुपया खर्च होगा। स मार्ग की भांति द मार्ग में दक्षिणी अल्बर्ट और एमसी मूरे के तेल के सोते पड़ते हैं। इसी सड़क पर कनैडा की इम्पीरियल आएल कम्पनी का कारखाना है। नार्मन के तेल सोतों से बहुत ज्यादा तेल निकाला जा सकता है। १९३८ ई० में इम्पीरियल कम्पनी ने ३०,६६७ बैरेल तेल निकाला था। नर्मन क्षेत्र के तेल से यूकान और अलास्का के भीतरी भाग के तेल की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

डी मार्ग बनाने में नार्मन क्षेत्र का तेल केवल सहायक ही न होगा वरन् उ के कारण सड़क सदैव चालू रहेगी। केअर वैंक्स से नार्मन के समाप तक सब ऋतुओं में काम आने वाली सड़क के तयार करने से अलास्का की रक्षा करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

द मार्ग पर शत्रु के हवाई आक्रमण की सम्भावना बहुत कम रहेगी। शीत काल में द मार्ग में शिकागो से पीसे नदी तक (१००० मील) तक बरफ पड़ने से अवश्य ही कष्ट पहुँचने की सम्भावना है।

पैन अमरीकन हवाई कम्पनी संयुक्तराष्ट्र अमरीका और अलास्का के बीच हवाई मार्ग बनाना चाहती है। व्हाइटहार्स पैन अमरीकन मार्ग यूकोन को दक्षिणी लाइन से मिलाता है। यह वानकूवर और एडमोन टन को जाती है।

अलास्का की स्थल तथा जल सेना अपने अपने हवाई अड्डे बना रही है। जल सेना सित्का, कोडियक

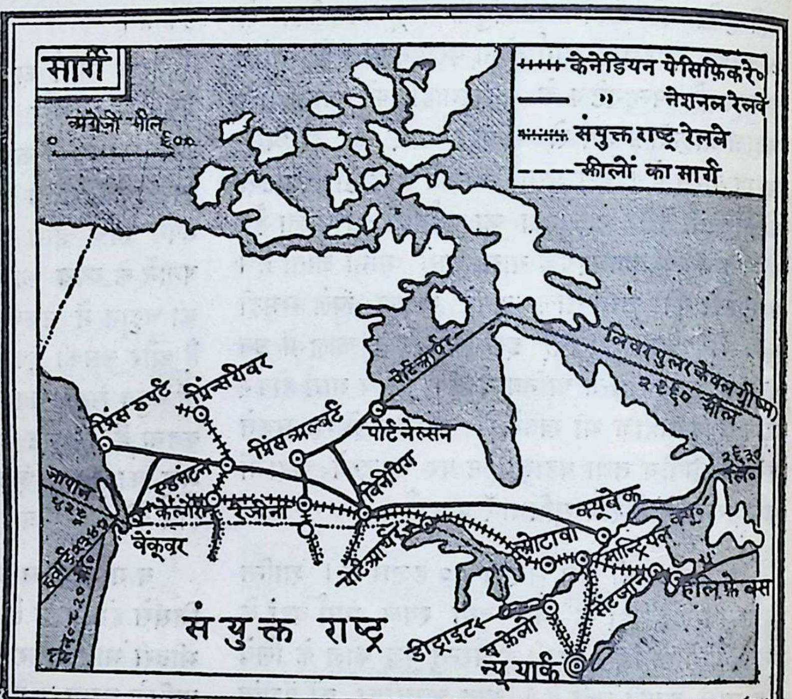

द्वीप समूह और डच हार्बर वाले मार्ग में पिट्रोल द्वारा विमानों को चलाने का प्रबंध किया जा रहा है। सबसे बड़ा हवाई अड्डा ऐङ्कारेज में है। संयुक्त राष्ट्र से अलास्का तक पहुँचने के लिये विमानी मार्ग बन रहे हैं। बड़े विमान अब भी संयुक्त राष्ट्र से उड़कर अलास्का पहुँचते हैं परन्तु छोटे वायुयान नहीं पहुँचते हैं इसी कारण मार्ग में स्थान पर हवाई स्टेशन बन रहे हैं जिससे मार्ग में ठहरते हुये वह अलास्का जा सकें। जब ये मार्ग पूर्ण रूप से तयार हो जावेंगे तो फिर कनैडा और संयुक्तराष्ट्र से लड़ने वाले विमान सभी ऋतुओं में अलास्का जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुपीय दुर्भिक्ष

पत्रों के शीर्षक पंक्तियों द्वारा पता चलता है कि योरुप में अकाल पड़ रहा है अथवा निकट भविष्य में भोजन सामग्री के अति कमी होने की सम्भावना है।

पहले योरुप में बहुधा अकाल पड़ता था परन्तु उसके पश्चात् बर्तमान युग में योरुपीय राष्ट्रों ने ऐसा प्रबंध किया कि वहां अकाल की सम्भावना जाती रही अब वहां पर युद्ध के समय ही दुर्भिक्ष पड़ने की सम्भावना है जैसा कि गत महायुद्ध के समय हो चुका है।

भारतवर्ष, रूस और चीन आदि देशों में अब भी सदैव दुर्भिक्ष पड़ा करते हैं परन्तु योरुप में नहीं पड़ते इसका मुख्य कारण यह है कि वहां पर लोग तथा देशों की सरकारें काफी भोजन सामग्री एकत्रित रखती हैं जो समय पड़ने पर शीघ्र ही प्रजा की सेवा में उपस्थित कर दी जाती हैं। आधुनिक कृषि कला तथा नवीन कलाओं के कारण वहां की उपज बहुत बढ़ गई है फिर वहां पर ऐसे पशु पाले जाते हैं जो नाज के कमी के समय भोजन का काम देते हैं। योरुप में बचपन से ही लोगों को शिक्षा दी जाती है कि भोजन सामग्री ख़राब न की जावे नहीं तो फिर उसकी कमी हो जाने की सम्भावना है। वहां प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ भोजन सामग्री का भण्डार रखने का अभ्यस्त हो गया है। योरुप की जनसंख्या ३३ करोड़ और किसानों की संख्या १२ करोड़ है। १२ करोड़ किसान भोजन सामग्री तयार करने में ही लगे रहते हैं। सभी भोजन बचा कर रखते हैं।

योरुप के देशों में इस समय भोजन नियंत्रण की नीति चल रही है। इस नीति का अर्थ यह कदापि नहीं है कि वहां भोजन की कमी है अथवा दुर्भिक्ष पड़ गया है वरन् इसका मतलब यह है कि वह देश दुर्भिक्ष से बचने और प्रजा तथा सेना को सदैव समान रूप से भोजन पहुँचाने का प्रबंध कर रहा है।

आज योरुप के सभी राष्ट्रों ने भोजन नियंत्रण करने की नीति का अनुसरण किया है इंगलैंड को छोड़ कर योरुप के सभी देश ६ प्रति शत भोजन सामग्री (नाज, आलू और चीनी) विदेश से मंगाते हैं। वे २० प्रतिशत चर्बी और तेल बाहर से खरीदते हैं। बर्तमान युद्ध के आरम्भ होने पर बाहर से आने वाले सामानों में कमी हो गई इसी लिये पोलैंड पर अधिकार जमाने के साथ ही जर्मनी ने भोजन नियंत्रण नीति का अनुसरण किया था। उसके बाद दूसरे राष्ट्रों ने भी वही नीति अपने देशों में चलाई। स्वीडन, फिनलैंड, स्विटजरलैंड, स्पेन और पुर्तगाल को छोड़ कर लगभग सभी योरुपीय राष्ट्रों में युद्ध काल के आरम्भ होते ही भोजन नियंत्रण नीति चल पड़ी थी। जर्मनी में प्रत्येक भांति की भोजन सामग्री नियंत्रित है। स्विटजरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में रोटी पर नियंत्रण नहीं है। डेनमार्क और नार्वे में मांस तथा मछली पर नियंत्रण नहीं है। जर्मनी बेल्जियम और हालैंड को छोड़ कर सभी योरुपीय राष्ट्रों में आलू का नियंत्रण है।

इस वर्ष अप्रैल मास में स्पेन के साधारण भोजन करने वाले को ४३ औंस रोटी दी जाती है बेल्जियम में ५६ और फ्रान्स में प्रति सप्ताह ५९ औंस रोटी दी जाती है। डेनमार्क में ८० औंस और जर्मनी में ८५ औंस रोटी दी जाती है। पेशे वालों के लिये कुछ मुख्य नियंत्रण लगाये गये हैं। मक्खन और चर्बी हालैंड में ३ औंस, अधिकार में किये हुये फ्रान्स में ३ औंस, बोहेमिया और मोराविया में ५ औंस, इटली में ७ औंस हालैंड में ९ औंस, जर्मनी में ९ औंस नार्वे में ११ औंस और डेनमार्क में १२ औंस प्रति-सप्ताह प्रति व्यक्ति को मिलने का नियंत्रण है। इसी प्रकार चीनी का नियंत्रण सवा दो औंस से १३ औंस तक है।

पोलैंड की मुख्य भोजन सामग्री आलू तथा राई की रोटी है। फ्रान्स में मुख्य भोजन गेहूँ की रोटी है। कुछ देशों में भोजन नियंत्रण नीति जल्दी जल्दी बदलती रहती है और जर्मनी आदि में यह नीति लगभग स्थाई सी है। जहां कहीं आलू की अधिक उपज है वहां यदि रोटी का नियंत्रण कठिन है तो इस का अर्थ यह नहीं है कि वहां के लोग पेट भर भोजन नहीं खाते हैं। वह आलू से ही अपना पेट भरते हैं। पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, नार्वे, डेनमार्क और हालैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आलू अधिक होता है। मांस की कमी की पूर्ति मछली, मक्खन, मटर, सेम और मसूर से होती है।

गत वसन्त ऋतु तक योरुप के सभी राष्ट्रों ने अपने यहां की भोजन सामग्री के भण्डार पर अधिकार पा लिया है। इसी लिये जिन वस्तुओं के कमी को शङ्का थी उन पर आवश्यकतानुसार नियंत्रण नीति लागू कर दी गई है। इस कार्य में योरुप के भोजन प्रबन्ध कर्ता शासकों ने अपनी विशेष योग्यता का परिचय दिया है। जर्मनी के बाद भोजन प्रबन्ध के शासन में स्विटज़रलैंड, हालैंड, डेन्मार्क, स्वीडन और फिनलैंड का नम्बर है।

योरुप के कुछ देशों ने युद्ध के बादल घुमड़ते देखकर १६३८-३६ से ही भोजन सामग्री एकत्रित कर लिया था। नार्वे, हालैंड, बेल्जियम और फ्रांस में जर्मन सेना ने अधिकांश भोजन सामग्री के भण्डारों पर अधिकार कर लिया था परन्तु राजनैतिक, सैनिक या कारखानों के सहयोग उनमें से कुछ वापस कर दिये गये हैं।

योरुप के सभी देशों के सुयोग्य भोजनशासकों ने अपने अपने यहां भोजन बचाने के नियम लागू कर दिये हैं। पहले गेहूँ अथवा राई आदि से १०० पौंड में ७० पौंड आटा तयार होता था परन्तु अब मिल के मालिकों को सरकारी नियम के अनुसार ८० या ९० पौंड आटा तयार करना पड़ता है। इस प्रकार जहां ३० या ४० पौंड प्रतिशत चोकर निकलता था वहां अब १० या १५ पौंड चोकर निकलता है। इसी प्रकार रोटी की भी बचत की गई है। जो रोटी पहले चरनी में जाती थी और पशु खाते थे वह अब मनुष्यों के सामने मेज पर आती है। गेहूँ और राई के आटे में जौ, ज्वार, नाज और आलू की माड़ी आदि मिलाए जाते हैं।

जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नार्वे, स्पेन, हँग्री, यूगोस्लाविया और रूमानिया में गेहूँ के आटे में दूसरे प्रकार के आटे मिलाये जाते हैं। स्पेन में गेहूँ के आटे में आधा दूसरी वस्तुओं का आटा रहता है।

इसी प्रकार और दूसरे प्रकार के भोजनों की बचत की गई है। योरुपीय देशों में जितना दूध होता है वह समस्त पहले बच्चों के लिये इकट्ठा होता है। बच्चों से जो बचता है उसका मक्खन, मलाई तथा पनीर बनाया जाता है। मक्खन तथा मलाई का बचा दूध भोजन के लिये प्रयोग होता है। जर्मनी में युद्ध सम्बन्धी "मिगेटी" भोजन बांटा जाता है जिसमें छांछ, आलू की माड़ी और दूसरी वस्तुएं मिली रहती हैं। सोयाबीन से तेल निकाला जाता था और उसकी खली जानवर खाते थे परन्तु अब वह जर्मन सैनिकों को भोजन के लिये दिया जाता है।

योरुपीय देशों में ३५ प्रतिशत नाज खाया जाता था और ६५ प्रतिशत पशुओं को खिलाया जाता था। अब लोगों ने मांस की अपेक्षा रोटी खाना अधिक अच्छा समझा है इसलिये उन्हों ने नाज खाने वाले पशुओं का पालना कम कर दिया है। नाज मुर्गियों और सुअरों को अधिक दिया जाता था। अंडे की खपत अधिकतर इंगलैंड में होती थी। डेनमार्क में पहले १५० लाख मुर्गियां थीं अब वहां ७ लाख रह गई हैं। हालैंड में ३८० लाख के स्थान पर अब २०० लाख मुर्गियां रह गई हैं। सुअर पालने वाले देश सुअरों के लिये नाज विदेश से मंगाते थे। इसी कारण डेनमार्क ने अपने सुअर जर्मनी के हाथ बेंच दिये हैं और अब वहाँ पर ३१ लाख के स्थान पर केवल १५ लाख सुअर रह गये हैं।

डेनमार्क ने अपनी १६ लाख गायों में २ लाख गाएँ डेअरी फार्म ठीक रखने के लिये चुन ली हैं। हालैंड ने अपने यहां के पशुओं में १८ प्रतिशत की कमी कर दी है। फ्रांस में ८ प्रतिशत पशुओं की हानि हुई है।

पशुओं को जहाँ खली, दाना आदि भोजन को दिया जाता था वहाँ अब भूसा, खली, दाना दिया जाना कम कर दिया गया है और उसके स्थान पर समुद्र से प्राप्त वस्तुएँ (घास, काई आदि) दिया जाता है। वृक्षों की पत्तियां तोड़ कर सुखाई जाती हैं और मशीन द्वारा तयार कर जानवरों को दिया जाता है।

विज्ञान शास्त्र द्वारा जंगल से प्राप्त वस्तुओं से पशुओं के हेतु भोजन तयार किया जाने लगा है। सेल्लूलोस कारखानों में तयार किया जाता है। इसके कारखाने दिन प्रति दिन बढ़ रहे हैं। कार्ड लकड़ी की लुब्दी तयार करके जानवरों को खाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी जाती है। इन वस्तुओं का मूल्य कम रक्खा गया है जिससे सभी लोग खरीद सकें।

शीतकाल में योरुप में चारे की अधिक कमी हो जाती है इसलिये गर्मी के दिनों का चारा जो पहले नष्ट हो जाता था अब सुखा कर रक्खा जाता है। जर्मनी, दक्षिणी फ्रान्स, हालैंड, स्विटज़रलैंड और बेल्जियम आदि देशों में चारा रखने के लिये जल्दी जमाने वाले और शीतल स्थान बनाए जा रहे हैं। नमक मिला कर सामग्री रक्खी जाती है जिससे उसका प्रयोग हो सके।

योरुप में बहुत सी ऐसी वस्तुएँ पैदा होती हैं जो अब तक भोजन सामग्री का काम नहीं देती थीं। अब उन्हें भोजन सामग्री बनाने की योजना बनाई जा रही है परन्तु इस कार्य में अभी एक साल तक कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता।

पश्चिमी योरुप में युद्ध के कारण कृषि को बहुत हानि नहीं पहुँची है जो हानि भी हुई थी उसको पुनः ठीक कर लिया गया है। हालैंड ने अपने यहां पुष्पों की खेती मना कर दी है और उसके स्थान पर छोटे बाग बना कर उसमें छोटे छोटे फल पैदा करने के लिये कहा है। बेल्जियम ने ६० प्रतिशत और अधिक गेहूँ तथा २० प्रतिशत और अधिक आलू पैदा करने का निश्चय किया है। फ्रान्स तथा विची सरकार ने ५ लाख एकड़ भूमि में आलू पैदा करने का ठीका दिया है। ठीकेदारों के कार्य पूरा न करने पर तावान देना पड़ेगा।

आलू तथा गुड़ की उपज पर अधिक जोर दिया जा रहा है क्योंकि इनमें नाज से कई गुना शक्ति होती है। योरुप के सभी राष्ट्र इन्हीं वस्तुओं की उपज की कोशिश कर रहे हैं।

जर्मनी अपने देश की उपज अधिक करने के लिये जोर दे रहा है। वह गुड़ तथा आलू की उपज के हेतु चरागाहों तथा परती की भूमि को भी खेत बना रहा है १९४० ई० में अच्छी वर्षा होने के कारण वहाँ एक अरब अड़तालीस करोड़ चालीस लाख मन आलू अधिक हुआ है। ईख पैदा करने की भूमि जर्मनी में १९३२ ई० की अपेक्षा दूनी कर दी गई है। वहां प्रत्येक एकड़ में चीनी तो और अधिक तयार की ही जाती है साथ ही साथ उसमें पशुओं के लिये चारा भी बहुत होता है। नाज की अपेक्षा ईख के खेतों में आठ गुना चारा अधिक होता है।

योरुप में चर्बी की बहुत कमी है। चर्बी की कमी को पूरा करने के लिये सुअरों को अधिक मोटा बनाने के लिये रस निकाली ईख दी जाती है। तेलहन की उपज पर भी बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है। सूर्यमुखी, सरसों, अलसी, जूट, पाट, तिल, पोस्ता आदि की खेती बढ़ाई जा रही है। सोयाबीन और कपास की उपज दक्षिणी योरुप में बढ़ाई जा रही है।

जिन देशों में खेती कम होती थी वहां खेती की भूमि बढ़ाई जा रही है। हालैंड, नार्वे, स्विटज़रलैंड आदि देशों में खेती के लिये नई भूमि खाली की गई है। ज्वेडरजी के पोल्डर्स को पानी से खाली करके खेती के योग्य बनाया जा रहा है। नार्वे में भी इसी प्रकार काम हो रहा है। स्विटज़रलैंड ने अपने यहाँ एक लाख एकड़ भूमि खेती के लिये तोड़ी है। फिनलैंड ने ७ लाख ४० हज़ार एकड़ जङ्गली भूमि खेती के लिये खाली की है। वहाँ पर जौ, जई और आलू की खेती की जावेगी। इन देशों में भेड़ों का गल्ला बढ़ाया जा रहा है। भेड़ तथा बकरियां पहाड़ी स्थानों की घास सुगमता से चर सकती हैं।

सभी देशों में नगरों के अन्दर मुर्गी के बच्चे अधिक पाले जा रहे हैं।

समुद्री तट की भूमि जो खाली पड़ी रहती थी वहां पर भी अब खेती का काम आरम्भ हो गया है। डेनमार्क, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम आदि देशों में अब तक मछली मारने वाले जहाज बन्दरगाहों पर पड़े थे वह ब्रिटिश बम्बाजी अथवा जर्मन सरकार की मनाही के कारण समुद्र नहीं जाते थे परन्तु अब वह समुद्रों में जाने लगे हैं। वह अब मछली का शिकार करते हैं जिससे काफी तेल मिलता है।

गत ग्रीष्म काल से नार्वे तथा डेनमार्क में जितनी मछली मारी जाती है वह नार्वे भेज दी जाती है १९४० ई० में नार्वे के निवासियों ने १० लाख ७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार टन (१ टन=लगभग २८ मन) मछली का शिकार किया। १९११ के बाद से १९३९ तक इतनी अधिक मछली नहीं मारी गईं थी। शिकार की हुई मछली का कुछ भाग स्थानीय कार्य में लग जाता है कुछ बाहर जाती है और शेष का तेल निकाला जाता है। तेल निकालने के पश्चात् जो कुछ बाकी रह जाता है उसकी खाद तयार की जाती है और मछलियों को चारा बनाया जाता है।

जर्मनी ने अपने अधिकार में किये हुये देशों के मध्य व्यापार चलाने में बड़ी चतुरता दिखलाई है। योरुपीय देशों के बीच उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम को जहाजों द्वारा सामान आता जाता रहता है। तटीय व्यापार में ब्रिटिश बम्ब वर्षा के कारण कठिनाई पड़ती है फिर भी व्यापार बिल्कुल बन्द नहीं है।

बल्गेरिया को जर्मनी से पास बिना चुङ्गी के मिलता है और वह पास के बदले में नाज, गेहूँ, सोयाबीन सूर्यमुखी आदि सामान भेजता है। हंग्री और रूमानिया दोनों जर्मनी के हाथ व्यापार करते हैं। डेनमार्क और इटली के मध्य सामान परिवर्तन होता है। चावल, फल, शराब और तम्बाकू इटली डेनमार्क भेजता है। डेनमार्क से मांस अंडा, डेअरी की कलें और दूसरी कलें इटली आती हैं।

फिनलैंड, स्वीडन, स्विटज़रलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस् में विदेशों से भोजन सामग्री जाती है। इन देशों को भोजन सामग्री ले जाने वाले जहाज ब्रिटिश सरकार द्वारा नहीं रोके जाते हैं। लिस्बन और जेनोआ के बीच जहाज आते जाते हैं। फिनलैंड को रूस, अर्जनटाइन और संयुक्तराष्ट्र अमरीका से भोजन सामग्री आती है (परन्तु रूस से युद्ध छिड़ने के कारण अब बन्द है) स्पेन को नाज अर्जनटाइन से मिलता है। फ्रान्स को मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनिस और अर्जनटाइन से काफी मात्रा में नाज आता है। योरुप के भीतरी व्यापार में बड़ी कठिनता हो रही है। सड़कें, रेलें, नदियां और नहरें सामान ढोने वाले जहाजों तथा गाड़ियों से भरी रहती हैं। तटीय व्यापार को ब्रिटिश बम्ब बाजी तथा ब्लाकेड (घेरा) के कारण हानि हो रही है।

वर्तमान साल की उपज का हाल अभी ठीक ठीक ज्ञात नहीं है। वर्षा अच्छी हुई है इसलिये उपज के अच्छे होने की पूर्ण सम्भावना है।

यद्यपि बेल्जियम, मध्यवर्ती पोलैंड और स्पेन में भोजन सामग्री की कुछ कमी है फिर भी मालूम होता है कि वर्तमान युद्ध में अभी योरुप को भोजन सामग्री की इतनी कमी न होगी कि वहां दुर्भिक्ष पड़ जावे। यदि युद्ध अभी दो तीन बर्ष तक चलता है और संयुक्तराष्ट्र अमरीका तीव्रता के साथ युद्ध में भाग लेता है तो अवश्य ही कुछ न कुछ परिवर्तन योरुप की स्थिति में होगा नहीं तो जब तक हिटलर का निरंकुश शासन योरुप में है तब तक योरुप में भोजन सामग्री के कारण किसी प्रकार की गड़बड़ी होने की सम्भावना नहीं है। हां यदि वहां पर विशेष बम्ब वर्षा की गई तो फिर सामान के आने जाने के साधनों में गड़बड़ी पड़ जावेगी तब फिर वहां आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक गड़बड़ी फैलने की सम्भावना हो जावेगी।

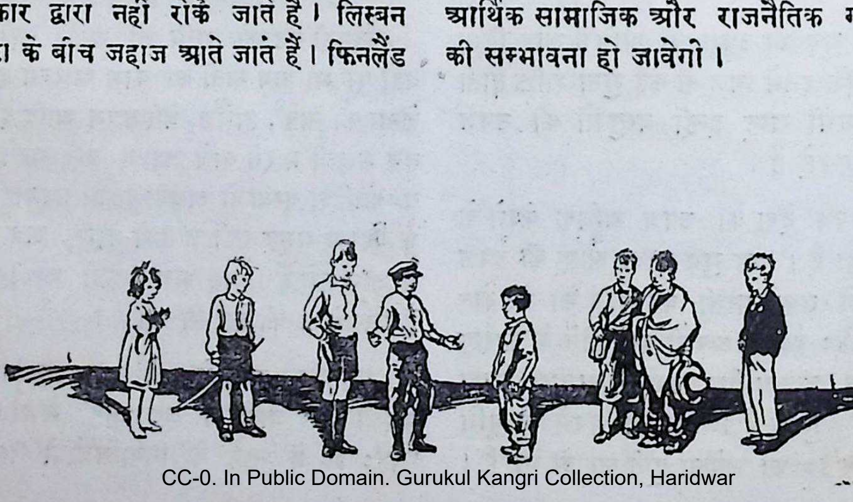

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग में स्कैण्डीनेविया

युद्ध के पहले स्कैण्डीनेविया के देश भौगोलिक, ऐतिहासिक, भाषा, शासन तथा जातीय रूप से एक साथ संगठित थे आज वे जर्मन सत्ता में एक साथ संगठित हैं। जर्मनी ने उनकी रक्षा करने का भार उठाया है।

साल भर युद्ध चलने के पश्चात् स्कैण्डीनैविया के देशों को शान्ति प्राप्त हुई है। हिटलर का विजय रथ उत्तरी देशों को छोड़ दक्षिण को ओर गया और पूर्व की ओर जा रहा है। उत्तर में फ्लेन्सबर्ग की खाड़ो से उत्तरी अंतरीप तक और उसके आगे स्पिटबर्जेन तक हिटलर की सत्ता स्थापित है वहां से ब्रिटिश सत्ता उठ गई है। स्कैण्डीनैविया प्रान्त में जो ब्रिटिश आक्रमण हुये हैं उन्हें बड़ा महत्व दिया गया है परन्तु उन आक्रमणों से बर्तमान सैनिक कार्य में किसी प्रकार को हानि नहीं हुई है।

नार्वे

नार्वे ने जर्मन आक्रमण का सामना करने के लिये साहस किया इसी कारण उसे उसका शिकार होना पड़ा। आज उसकी स्थिति राजनैतिक दृष्टि से अच्छी नहीं। वहां पर राएच के कमिश्नर जोजेफ तेबोवेन का शासन चल रहा है।

जब नार्वे के राजा हैकेन इंगलैंड चले गये तो उनके सभी मन्त्री उनके साथ नहीं गये। उन प्रतिनिधियों और जर्मन सत्ता के बीच सुलह की बातचीत चल रही थो। २५ सितम्बर १९४० ई० में उस सुलह का अंत हो गया। उसके बाद से नार्वे में (तेबोवेन और उसके साथी विडको क्विशलिंग के नियम के सिवा) किसी प्रकार का नियम नहीं है। सभी प्रकार के वैधानिक नियमों तथा कामों का अंत हो गया है। सभी कानून के अनुसार बनाये गये जज हटा दिये गये हैं। सब से बड़े न्यायालय को राएच के कमिश्नर के अधिकार कर दिया गया है। नाजी जर्मनी अथवा रूस के मजदूरों की भांति वहां के मजदूरों को भी चारों ओर आने जाने की आज्ञा नहीं है उन्हें जर्मन सत्ता के अनुसार काम करना तथा मजदूरी ग्रहण करनी पड़ती है। वह गुलामों की भांति बना दिये गये हैं। नार्वे में जितने राजनैतिक दल थे क्विस्लिग के दल को छोड़ कर सभी दल छिन्न भिन्न कर दिये गये हैं। हैकन राजसिंहासन जब्त कर लिया गया है और पार्लियामेंट की बैठक रद्द कर दी गई है। जिस सरकार ने नार्वे के शासन की बागडोर ९ अप्रैल से २५ सितम्बर १९४० ई० तक अपने हाथ में रक्खी थी उसे रद्द कर के राएच की ओर से एक कमिश्नर नियुक्त किया है। कमिश्नर ने १३ सचिव बनाए हैं जो नार्वे के एक एक भाग के एकाधिपत बने हैं और मनमाना शासन कर रहे हैं। हिटलर की सहायता से क्विस्लिग ने नार्वे की सरकार का संगठन किया है। युद्ध के पहले नार्वे में सभी दल आपस में लड़ा करते थे परन्तु आज सभी दलों का नाश हो गया है।

विडकुनक्विस्लिग नार्वे का एकाधिपत बनना चाहता है उसने फ्युहरर अथवा ड्यूस की भांति फोरेरेन की उपाधि ग्रहण की है। क्विस्लिग मंत्रीमंडल का नियंत्रण करता है। नार्वे की प्रजा क्विस्लिग से प्रसन्न नहीं है। सभी लोग उसके विरुद्ध हैं फिर भी हिटलर का पात्र होने के कारण वह नार्वे का सब से बड़ा अफसर बन रहा है। ओस्लो-बर्लिन लिखा-पढ़ी क्विस्लिग के सम्बन्ध में हो रही है क्योंकि नार्वे के पदाधिकारी मानते हैं कि नार्वे की प्रजा क्विस्लिग से बहुत घृणा करती है। नार्वे में केवल ५ प्रतिशत प्रजा उसके साथ है।

नाजी सत्ता में नाजी सेना और उसके सहायक सैनिक नाजी सत्ता के विरोधियों को दबाने में सफल हुये हैं। शासक कौंसिल के रद्द होने के पश्चात् नार्वे में बड़ा अत्याचार तथा दमन हुआ। राजनैतिक नेता जेलों में ठोंसे गये, कनसनट्रेशन कैम्प में डाले गये तथा उन्हें प्राणदण्ड की सजायें दी गईं। बहुत से लोगों को गोलियों से उड़ा दिया गया। ओसलो में अब राजनैतिक कैदियों के लिये तीन जेलें हैं जिन की रखवाली जर्मन सैनिक तथा किराये वाले सैनिक करते हैं। मोलेगटेन नामक जेल सब से कठिन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहां राजनैतिक कैदियों पर भांति भांति के अत्याचार किये जाते हैं।

यह सब व्यवस्थाएं होते हुये भी नार्वे निवासी अपनी कठिनाइयों का सामना बहादुरी के साथ कर रहे हैं। अब भी नार्वे के निवासी ब्रिटेन के सच्चे मित्र बने हैं। नार्वे के जहाजी बेड़े में ९०० जहाज हैं जो ३६ लाख टन के हैं और जिसमें २५ हजार मल्लाह काम करते हैं। वे जर्मन अधिकार में नहीं हैं वरन् ब्रिटिश सहायता से स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। उसका व्यापार नार्वे के लिये हो रहा है। उन जहाजों पर नार्वे का झण्डा लगा हुआ है। उसी जहाजी बेड़े की आय से नार्वे का युद्ध सम्बन्धी बजट चल रहा है। अटलांटिक सागर पार कनैडा में टोरोण्टो नामक द्वीप (छोटा नार्वे) है। वहां पर नार्वे की आकाश सेना तयार हो रही है और ब्रिटिश देख रेख में शत्रु सेना देखने के लिये हवाई बेड़ा तयार हो रहा है।

डेन्मार्क

दो वर्ष पहले नार्वे और डेनमार्क के राज्यों में बहुत कुछ समानता थी। दोनों राज्यों के राजे भाई भाई थे इसी कारण उनके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक बातें भी एक सी थीं। भाषा भी उनकी बहुत कुछ मिलती जुलती थी। आज उनमें बहुत कुछ अन्तर है। डेनमार्क ने जर्मनी का सामना नहीं किया इसलिये डेनमार्क अब भी अपने राजा के आधीन है वहां पर पार्लियामेंट, प्रधान मन्त्री और दूसरे मन्त्री गण हैं। डाक्टर गोबेल्स ने स्टाकहालम में एक भाषण देते हुये कहा था कि "डेनमार्क अधिकार में किया हुआ देश नहीं है। हमसे डेनमार्क से युद्ध नहीं हुआ। हमसे डेनमार्क से सैनिक अड्डे देने के बारे में संधि हुई है। इसलिये डेनमार्क की स्वतंत्रता पहले की भांति अब भी कायम है।"

यह बात कहनी शायद ठीक नहीं है कि डेनमार्क पर जर्मन अधिकार नहीं है। हाँ वहां पर जर्मन शासक नार्वे की भांति नहीं हैं फिर भी वह जर्मन प्रभुत्व में है। चूँकि उसने जर्मनी का सामना नहीं किया इसी कारण और दूसरे देशों की भांति वहाँ पर जर्मन शासन नहीं है। वहाँ पर खुले तौर पर बहुत कम परिवर्तन हुये हैं। वहां का राजा अब भी अपने मन्त्रीगणों की सलाह से राज्य कर रहा है परन्तु डेनमार्क का भविष्य नार्वे, फ्रान्स और पोलैंड आदि देशों की भांति ही अंधकारमय है। वह स्वतंत्र कदापि नहीं कहा जा सकता क्योंकि जब एक दिन डेनमार्क के व्यापारिक मन्त्री क्रिस्मरन पूलर ने कहा कि डेनमार्क का जो रुपया जर्मनी के जिम्मे है उसमें से एक पैसा भी न मिलेगा तो नार्वे के जर्मन कमिश्नर ने उसे त्याग पत्र देने पर वाध्य किया और उसे त्याग पत्र देना ही पड़ा। आज वह गेस्टापो पुलीस के हाथों में एक कैदी की भांति अपना जीवन बिता रहा है।

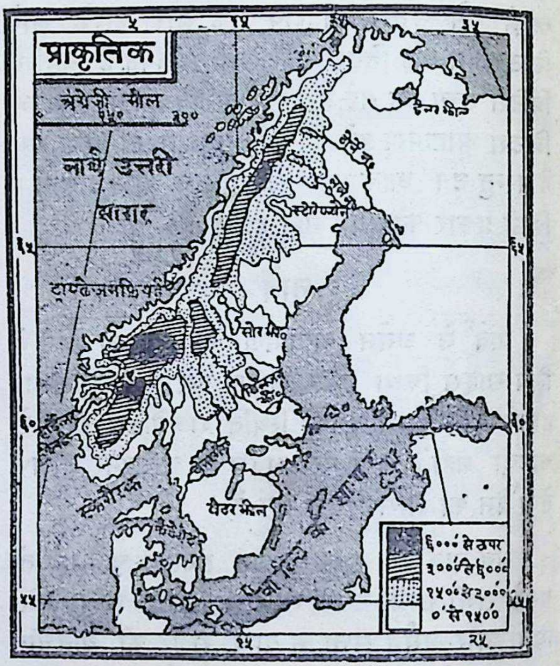

दूसरी बात यह है कि डेनमार्क के संयुक्तराष्ट्र अमरीका के सचिव ने जब ग्रीनलैण्ड के सम्बन्ध में अमरीका और डेनमार्क की संधि का ज़िक्र किया और अपनी प्रसन्नता प्रकट की तो वह कोपेनहेगेन सरकार द्वारा वापस बुला लिया गया। उसके पश्चात् इसी सम्बन्ध में न्यूयार्क, शिकागो और सैनफ्रन्सिस्को में जो डैनिश प्रतिनिधि थे उन्हें भी वापस बुलाया गया परन्तु जब उन्होंने आने से इन्कार किया तो वह अपने स्थानों से निकाल बाहर किये गये।

जर्मनी ने डेनमार्क को मिलाकर उसे लूटा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ का मांस, मक्खन, पनीर, अंडा सब कुछ जर्मनी जाता है। जर्मनी उसका मूल्य नहीं चुकाता वरन् डेनमार्क के रिज़र्व बैंक को उसका दाम चुकाना पड़ता है। डेनमार्क में मक्खन आदि की कमी हो गई है और उसे उसका नियन्त्रण करना पड़ा है। डेनमार्क के बैंकों का जर्मनी लगभग १५ करोड़ क्रोनर का ऋणी है। डेनमार्क के किसान को जो रुपया मिलता है उसका वह कच्चा सामान किसी प्रकार का भी नहीं खरीद सकता है उसे जर्मनी की बनी वस्तुओं को ही खरीदना पड़ता है। बनावटी खाद तथा जानवरों का बनावटी भोजन उसे जर्मनी का ही लेना पड़ता

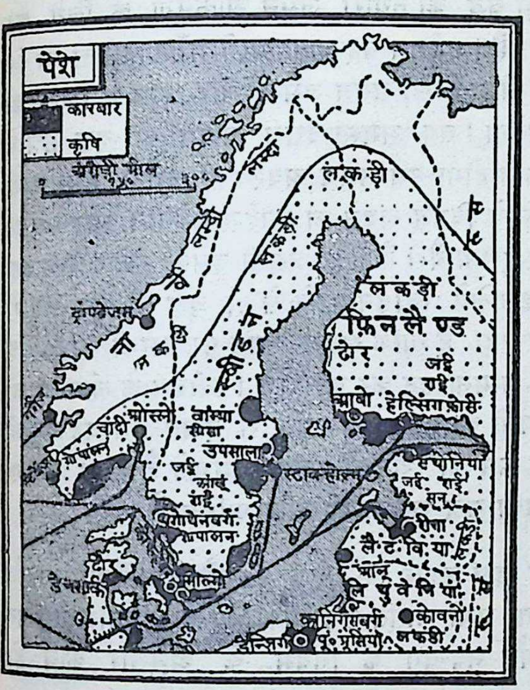

है। ब्रिटिश ब्लाकेड (घेरे) के कारण डेनमार्क चारों ओर से घिरा है। वहाँ किसी प्रकार का विदेशी सामान समुद्र होकर नहीं पहुँच सकता है इसी कारण डेनमार्क में पशुओं की कमी हो गई है। वहां सुअरों की ५० फी सदी, पशुओं की १८ फीसदी, और मुर्गियों की ६० फीसदी कमी हो गई है। इस युद्ध में चाहे जर्मनी की विजय हो या पराजय डेनमार्क को हानि ही पहुँचेगी। उसने जर्मनी को जो ऋण दिया है या दे रहा है उसे वह कदापि वापस नहीं कर सकता।

स्वीडन

जर्मन नव-युग में स्वीडन की क्या स्थिति है यह निर्णय करना बहुत कठिन है। स्वीडन के सरकारी अफसरों का कहना है कि उनका देश पूर्ण स्वतंत्र है परन्तु उसे योरुप की स्थिति देखते हुये अपनी नीति बदलनी पड़ी है वह अब भी पहले की भांति तटस्थ है।

जर्मनी के अल्फर्ड रोजेन बर्ग नामक अफसर ने कहा था कि समस्त स्कैण्डीनेविया प्रान्त हमारी रक्षा के अन्तर्गत है। यह बात उस समय की है जब कि ५ जुलाई सन् १९४० ई० को स्वीडन और जर्मनी के मध्य संधि हुई थी कि जर्मनी स्वीडन होकर अपनी सेना तथा सामान ले आ जा सकता है।

वाशिंगटन से प्राप्त हुये समाचारों से पता चलता है कि अमरीका स्वीडन को कदापि स्वतंत्र मानने के लिये तयार नहीं है। गत अक्तूबर १९४० ई० में अमरीका ने उसे ११० वायुयान देने से इंकार कर दिया जिसका आर्डर स्वीडन की सरकार ने एक वर्ष से अधिक पहले दिया था। एक बार प्रेसीडेण्ट रुज़वेल्ट ने कहा था कि स्वीडन को सामान देना तटस्थता के विरुद्ध है क्योंकि उसका सामान जर्मन प्रयोग में आता है। उसके बाद संयुक्त राष्ट्र में सरकारी अफसरों ने प्रस्ताव किया था कि जो स्वेडिस धन अमरीका में है वह जब्त कर लिया जाय क्योंकि वह धुरी राष्ट्रों के काम में आवेगा।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने धुरी-राष्ट्रों तथा उनके अधिकार में किये देशों पर जो व्यापारिक रोक लगाई है वह स्वीडन पर भी लागू है। न्यूयार्क में स्वीडन के राजदूत मिस्टर ओलमार एफ० बोस्ट्रोम ने कहा था कि अमरीका ने स्वीडन पर बड़ी कड़ी रोक लगाई है। स्वीडन को कच्चा सामान तथा आधा तयार किया हुआ सामान अमरीका से मिलता था वह अब बन्द कर दिया गया है।

आर्थिक तौर पर इस समय स्वीडन जर्मनी का एक भाग बना हुआ है। गत वर्ष उत्तरी योरुप में जो घटनायें घटीं उनके कारण स्वीडन को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है कि वह क्यों जर्मनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी बना है। उसे मजबूर होकर नवयुग में मिलना पड़ा है।

आज स्वीडन की राजनैतिक तथा सैनिक रूप से क्या स्थिति है इसका निर्णय करना कठिन है। कुछ लोगों का कथन है कि वह मित्र राष्ट्रों का साथी है और कुछ का कहना है कि वह जर्मनी का साथी है।

आज स्वीडन की स्थिति बड़ी शोचनीय है। एक ओर प्राचीन प्रजातांत्रिक विधान के नियमों का पालन करना चाहता है दूसरी ओर उसे जर्मनी की चेष्टा भी पूर्ण करनी पड़ती है। स्वीडन की ८० फीसदी प्रजा जर्मनी की पराजय चाहती है। स्वीडन के प्रधान मन्त्री हैनसन तथा परराष्ट्र मन्त्री गुनथेर जर्मनी से मेल रखना चाहते हैं और वह उसके मित्र बने हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या शीघ्र भविष्य में जर्मनी स्वीडन पर अधिकार जमावेगा या नहीं और कहां तक स्वीडन उसका सामना कर सकेगा। डाक्टर गोबेल ने कहा था "हमें स्वीडन पर अधिकार करने का कोई कारण नहीं है और न हमें वहाँ सैनिक अड्डों की ही आवश्यकता है और यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि स्वीडन जर्मन सेना का कितना सामना कर सकेगा"।

जर्मनी ने स्वीडन पर आक्रमण क्यों नहीं किया? इसके कई कारण हैं—(१) स्वीडन ब्रिटिश युद्ध क्षेत्र से बाहर है इसलिये उस पर जर्मन आक्रमण की आवश्यकता नहीं है। (२) सोवियट रूस ने स्वीडन की स्थिति जैसी की तैसी रखने पर ज़ोर दिया था। (३) स्वीडन सरकार ने संधि के अनुसार जो सुविधाएँ जर्मनी को दीं वह बर्लिन में संतोषजनक समझी गईं। (४) स्वीडन की सेना सुदृढ़ तथा सुसंगठित है इसलिये उसको पराजय करना कठिन है। स्वीडन ने अब तक युद्ध की तयारी में तनिक भी शिथिलता नहीं की है। उसने अपने युद्ध व्यय को १४ करोड़ ८० लाख क्रोनर से बढ़ाकर २ अरब ५० करोड़ क्रोनर कर दिया है। इसके सिवा कर आदि से भी युद्ध के लिये बहुत रुपया एकत्रित किया गया है। वहाँ की प्रजा ने एक अरब ५० करोड़ क्रोनर की सहायता की है।

यह समझना एक बड़ी भूल है कि स्वीडन इतनी बड़ी युद्ध की तयारी जर्मन आक्रमण के लिये कर रहा है। स्वीडन यह बात भली भाँति जानता था कि किसी न किसी समय जर्मनी और रूस में झगड़ा हो जावेगा। तब समस्त उत्तरी योरुप को युद्ध क्षेत्र में आना होगा उस समय अवश्य ही जर्मनी स्वीडन को रूस के विरुद्ध लड़ने का आदेश करेगा। रूस स्वीडन का पुराना बैरी है और जर्मनी उसका सदैव मित्र रहा है इसलिये स्वीडन पहले से ही युद्ध की खूब तयारी कर रहा है ताकि समय आने पर उसकी सेना शत्रु का सामना डट कर कर सके। स्वीडन के लोग नाज़ी जर्मनी को आदर्श की दृष्टि से देखते हैं। वह जर्मनी को रूस की अपेक्षा अच्छा समझते हैं इसी कारण उनका रुख जर्मनी की ओर अधिक है।

इस प्रकार हमने देखा कि स्कैण्डीनेविया में जर्मन सत्ता भली भाँति जड़ पकड़ चुकी है और वहाँ पर जर्मन नव-युग के नियम के अनुसार कार्य हो रहे हैं।

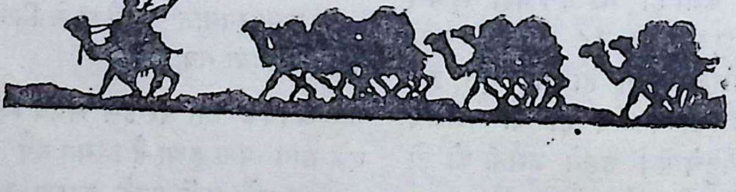

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबिलाव (बीवर)

उदबिलाव (बीवर) अमरीका का एक पशु है। वहां यह बहुत होता है। इसके रूप का ठीक वर्णन करना कठिन है। इसका आकार एक बोरे की भांति होता है जिसके एक सिरे पर मुख तथा दूसरे सिरे पर रबड़ की काली पतवार सी रहती है।

यह अपने चार छोटे पैरों पर चलता है। इसे चलते समय अपनी पीठ को कूबड़ को उठाना पड़ता है जिससे इसका पेट धरती पर रगड़ न खा जाय परन्तु जब यह पानी पर चलता है तो इसकी दशा धरती की अपेक्षा बहुत भिन्न हो जाती है। यह अपने को पानी के ऊपर तेल की भांति फैला देता है और बड़ी सरलता के साथ तैरता रहता है। बीवर बड़ा तैराक होता है। यह पानी में गोते भी बड़ी कुशलता के साथ लगाता है। इसकी पिछली टांगें कुछ लम्बी होती हैं और पैर के पञ्जे में झिल्ली होती है जिससे शीघ्रता के साथ पानी काट सकता है।

तैरते समय उदबिलाव की पूंछ पानी में पतवार की भांति पानी के धरातल में तैरती है इसके सहारे से यह बड़ी शीघ्रता के साथ घूम सकता है। यह अपनी पूंछ को मिट्टी अथवा पत्थर पर बहुत कम रखता है। हां जब इसकी इच्छा होती है तो यह उसे पानी के ऊपर धम से पटक देता है उसके पटकने का शब्द पिस्तौल के शब्द की भांति होता है।

उदबिलाव अपनी पूँछ क्यों पटकता है इसका मुख्य कारण नहीं बतलाया जा सकता है परन्तु शायद वह अपने दूसरे भाइयों को खतरे की सूचना देता है। जिस प्रकार अजनबी को देख कर कुत्ते दाँत निकालते तथा गुर्राते हैं उसी प्रकार मनुष्य को देख कर बीवर भी अपनी पूंछ पटकता है। जब देखता है कि मनुष्य ने उसे देख लिया है तो यह पानी पर अपनी पूंछ पटकता है परन्तु जब यह देखता है कि मनुष्य ने उसे नहीं देखा है तो यह चुपके से शीघ्रता पूर्वक डुबकी लगा जाता है।

उदबिलाव एक शान्त प्रिय जानवर है। यह कभी किसी प्रकार का उपद्रव नहीं करता है परन्तु यदि उसके सामने कोई मुश्किल आ जाती है तो फिर यह उसका डट कर सामना करता है। यह अपनी जान व माल तथा अधिकार की रक्षा के लिये मरते दम तक लड़ाई करता है।

कुछ लोगों का कथन है कि उदबिलाव बोल नहीं सकता है परन्तु यह अपने हृदय की बात भली भांति प्रकट कर सकता है। जब यह क्रुद्ध होता है तो मनुष्य की भांति जोरों से सांस लेता है। उसके सांस का शब्द भली भांति सुनाई पड़ता है। उससे भली भांति प्रकट हो जाता है कि वह क्रुद्ध है। भूक की दशा में भी यह एक अद्भुत आवाज से अपनी भूक बतलाता है। उसके भूक की आवाज बिल्ली के बच्चे की म्याऊँ म्याऊँ की भांति होती है।

उदबिलाव बड़ा हास्यप्रद पशु है। यह जीवन को एक गम्भीर वस्तु समझता है। उदबिलाव अपने अगले दोनों पैरों से उसी प्रकार काम लेता है जिस प्रकार हम अपने हाथों से लेते हैं। यह उनसे लकड़ी की छड़ी पकड़ कर उसकी छाल बड़ी खूबी से खाता है। इसके बड़े बड़े नाखून होते हैं। जब यह अपने पिछले पैरों पर बैठ कर मनुष्य की ओर देखता है तो एक वृद्ध नागरिक की भांति प्रतीत होता है उदबिलाव लकड़ी को बहुत कुतरते हैं। लकड़ी कुतरना उनकी आदत है।

यह पशु जब बन में रहता है तो अपने लिये छोटे तालाब बना लेता है। यह अपने रहने के स्थान को बाड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से घेर लेता है इसके बाड़े की लकड़ियां साफ सुथरी रहती हैं। यह अपने लिये बड़े (१०० फुट तक लम्बे और मनुष्य की ऊँचाई तक के) बांध बनाते हैं। यह अपने घर बड़े सुन्दर बनाते हैं जिनसे इनकी अद्भुत कारीगरी का पता चलता है। इनके बनाये बांध बड़े मजबूत होते हैं। वर्षा काल में जब कि मनुष्य के बांध बह जाते हैं इनके बांध उसी तरह बने रहते हैं।

यह गलती भी करते हैं। बहुधा यह अपने बांध ऐसे स्थानों में बनाते हैं जहां पर बहुत कम पानी रहता है या इनके लिये भोजन की कमी रहती है। जब इसे अपनी त्रुटि मालूम हो जाती है तो यह उसे छोड़ दूसरे स्थान पर चले जाते हैं।

इसके कुछ मिट्टी और लकड़ी के गोले घर बड़े सुन्दर होते हैं। ऐसे घरों की ऊँचाई ७ या ८ फुट होती है और घेरा १२ फुट या अधिक होता है।

एक बार एक अंग्रेज को कुछ काले मनुष्यों ने खदेड़ा वह भाग कर उदबिलाव के घर में घुस गया भीतर जाकर उसने देखा कि वह एक साफ सुथरा उदबिलाव का घर था।

उदबिलाव भीटों या बांधों में सूराख करके अपने घर बनाते हैं। इनके प्रवेश का द्वार बहुधा पानी के अन्दर से होता है। यह बांध के ऊपर अपने घर के द्वार पर लकड़ी तथा कीचड़ इकट्ठा करते रहते हैं। इस प्रकार यह अपने घर की दीवार को एक एक फुट मोटा बना लेते हैं। जब बरफ पड़ती है तो उनकी एक मजबूत ठोस दीवार बन जाती है। शीतकाल में रीछ या भेड़िये उसे खोद कर अपना शिकार बनाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु उनका परिश्रम बेकार होता है।

उदबिलाव का घर जैसे जैसे बड़ा होता जाता है यह अपने द्वार भी बढ़ाते जाते हैं। कभी कभी उनके घरों में ६ द्वार होते हैं। यह द्वार पानी के अन्दर ही बने रहते हैं। कोई कोई द्वार तो पानीदार लम्बी सुरंग होकर रहता है। यह भली भांति जानता है कि इसे किस प्रकार सुख मिल सकता है वह अपने लिये सोने का स्थान भी बहुत अच्छा तयार करता है। मुलायम लकड़ी के तख्ते फाड़ कर चटाई की भांति एक फुट मोटा बिछा लेता है। इसके बाल बड़े तथा मुलायम होते हैं जो कम्बल का काम देते हैं। इसका बाल बड़ा गरम होता है। ऊपर रखवाली करने वाले लम्बे बाल होते हैं जिनका रंग सोनहरा भूरा होता है। इनके नीचे रेशमदार छोटे बाल होते हैं। यह बाल काले भी होते हैं। यह शीतकाल की बिल्कुल चिंता नहीं करता है।

जब बहुत अधिक शीत होती है और तालाब का पानी बहुत ठंडा रहता है तो वह बड़े आनन्द के साथ तैरता दिखाई पड़ता है और इसे जरा भी कपकपी नहीं मालूम पड़ती। यह कभी नहीं भीगता क्योंकि इसके शरीर में तेल की भांति चिकनाहट रहती है जिससे पानी उसके अन्दर नहीं भिद सकता है। वह घंटों अपने तेल को अपने बालों से रगड़ रगड़ कर मलता रहता है। उसके तेल से बहुत सुन्दर बूट (जूते) की पालिश बनती है।

उदबिलाव मनुष्य तथा अन्य जङ्गली पशुओं का बड़ा मित्र होता है। उसके बांधों में मछलियां अपने बच्चों का पालन पोषण करती हैं। दूसरे बिल में रहने वाले जानवर उसके बांध में बिल खोद कर वहाँ इसी के साथ रहते हैं।

बन में बनैले पशु तथा मनुष्य अपना प्राण इन के घर में भाग कर बचाते हैं। जो नदियां गरमियों में सूख जाती हैं वह उदबिलाव के बांधों के पानी से ही भरी रहती हैं।

कभी कभी उदबिलाव कष्टदायक भी होता है। उसे ऊँचा बांध बनाने से कोई मना नहीं कर सकता परन्तु इन्हीं बांधों के कारण नदी के पानी में वर्षा ऋतु में बाढ़ आ जाती है और सड़कों तथा चरागाहों में पानी भर जाता है। जब कभी ऐसा होता है तो लोग जा कर उनके बांधों को तोड़ देते हैं। उदबिलाव चुनौती स्वीकार कर के अपना बांध फिर बना लेता है। उसके बाद केवल एक ही मार्ग बचता है कि उसे फुसला कर किसी दूसरे स्थान पर हटा दिया जावे।

बसंत ऋतु में वह अपने स्थान छोड़ कर किसी ओर चले जाते हैं। इसके चले जाने पर उसके बच्चे रोते रहते हैं और फिर उसकी मादा उसे घर में प्रवेश नहीं करने देती है। वसन्त काल में जब कि सभी जङ्गली पशु बेचैन रहते हैं तो वह भ्रमण करने के लिये निकलता है। वह नदी के बहाव तथा उतार में लम्बी चौड़ी यात्रायें करता है। मार्ग में वह अपनी याद के लिये छोटे बांध बनाता जाता है।

कभी कभी गरमी की ऋतु में भी वह यात्रा करता है। सितम्बर में वह शीत काल की प्रतीक्षा करने लगता है तब वह या तो अपने घर को वापस चला आता है या कोई नया घर बना लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबिलाव अपना घर बनाते समय सब से पहले बांध बांधता है। कुछ लोगों का कहना है कि वह नदी के तटीय वृक्ष को काट कर नदी के आरपार गिरा देता है फिर उसी पर मिट्टी तथा लकड़ी डालता जाता है। वह ऐसे स्थान को चुनता है जहां पहले से ही नदी का धरातल ऊँचा रहता है उसके बाद उस पर वह भी मिट्टी और लकड़ी इकट्ठा करता जाता है। जब तक घर उसके योग्य नहीं होता तब तक वह अपना घर बनाता रहता है।

वह अपना काम बहुधा प्रातःकाल करता है। वह झुण्ड के झुण्ड रहते तथा घर बनाते हैं। कुछ लोग घर बनाते कुछ घर में मिट्टी लगाते और सामान रखने वाले कमरे के लिये हरी छड़ियाँ ले आते हैं। उदबिलाव शीत काल के लिये अपने घर में सामान रख लेता है। प्रत्येक बांध में पानी के नीचे एक स्थान रहता है जहाँ वह पानी के नीचे लकड़ी का एक बड़ा ढेर इकट्ठा कर देता है।

उसका भण्डार घर उसके रहने के स्थान के समीप रहता है। जब बरफ की मोटी तहें जम जाती हैं तो वह तैर कर लकड़ी के ढेर के पास जाता है और फिर वहाँ से जिस सामान की जरूरत होती है उसे ले जाता है और फिर घर जाकर शान्ति पूर्वक जाड़े भर बैठा रहता है।

वह लकड़ी की छड़ियों को इस प्रकार पानी के नीचे ले जाता है कि जिन छड़ियों को वह पानी के नीचे लेजाता है वह हरी होती हैं और रस से भरी रहती हैं। वह आप से आप डूब जाती हैं। वह छड़ियों के एक किनारे को पकड़ कर पानी के अन्दर ले जा कर कीचड़ में गाड़ देता है जहां वह छोटे खम्भे की भांति गड़ जाती हैं।

बीवर का जीवन बड़ा सुखमय होता है मनुष्य अभी उनके बारे में बहुत कम जानता है परन्तु धीरे धीरे मनुष्य को उनके सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

दक्षिणी अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह

डर्बन का बन्दरगाह अफ्रीका के पूर्वी तट पर स्थित है। १०० वर्ष से कुछ पहले इसके स्थान पर बन के सिवा कुछ भी न था। मानव जाति ने आज उसी स्थान पर एक बड़ा नगर तथा बन्दरगाह बना दिया है। दक्षिणी अफ्रीका यूनियन के बन्दरगाहों में डर्बन सबसे बड़ा व्यापार करने वाला बन्दरगाह है।

इस बन्दरगाह पर २५००० टन (लगभग ७ लाख मन) से अधिक भार वाले जहाज आते जाते हैं। किसी समय में इस बन्दरगाह के मुहाने पर मिट्टी का एक बड़ा खतरनाक ढेर था, प्रत्येक तूफान के पश्चात् यह ढेर कम या अधिक होता रहता था। विज्ञान कला द्वारा उस स्थान पर एक झील बना दी गई है, जिससे सारा भय जाता रहा है। ३१ मार्च सन् १९३५ ई० में डर्बन बन्दरगाह में ४,२२३,५७५ टन (लगभग १२ करोड़ १३ लाख मन) का व्यापार हुआ। इस संख्या में कोयला गल्ला आदि सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं।

डर्बन नगर की जन-संख्या २२५,००० है। इस नगर और इस नगर के आस पास कुल ९०,००० योरोपियन रहते हैं। शेष सभी यहां के निवासी रेडइन्डियन आदि हैं। यह बन्दरगाह नैटाल के प्रान्त में स्थित है। जब १४९८ ई० में वास्कोडिगामा भारत का मार्ग ढूँढता हुआ यहां आया था, तभी उसने इस प्रान्त का नाम नैटाल रक्खा था।

पुर्तगाली लोग यहां नहीं गये। डर्बन नगर की उन्नत्ति अँग्रेजों तथा अँग्रेज व्यापारियों के कारण हुई है। अँग्रेज जाति डर्बन हार्बर को नैटाल पोर्ट के नाम से पुकारती है। क्योंकि यही एक स्थान यहां के लम्बे चौड़े तट में है जहां जहाज खड़े हो सकते हैं।

१८३५ ई० में जब सर बेनजामिन डी अर्बन केप का गवर्नर था तो नैटाल के बन्दरगाह के रहने वालों ने एक नगर बसाने का विचार किया। उसी गवर्नर के नाम पर इसका नाम डर्बन पड़ा। १९३५ ई० में डर्बन का बरा डर्बन नगर बन गया। डर्बन खाड़ी पर स्थित व्हार्फ्स (घाट) के लिये अब भी नैटाल बन्दरगाह का नाम प्रयोग किया जाता है।

डर्बन नगर पर केपटाउन से समुद्री मार्ग से ८०० पोर्ट एलिज़बेथ से ४०० मील और ईस्ट लन्दन से २५३ मील की दूरी पर है। इसके उत्तर की ओर समीपवर्ती बन्दरगाह डेलेगोवाबे है जो ३०० मील की दूरी पर है। डर्बन की दूरी साउथहैम्पटन से केप होकर ६७९० मील और स्वेजनहर होकर [illegible] मील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डर्बन का बड़ा बन्दरगाह ७½ बर्ग मील में है। इसकी लम्बाई ३॥ मील और चौड़ाई २ मील है। यह नाशपाती की शकल का है। खाड़ी का पूर्वी दक्षिणी भाग में ब्लफ है। यह हिन्द महासागर में घुसा हुआ है। ब्लफ की ऊँचाई १६५ फुट है। इसकी चोटी पर एक प्रकाश घर है जहां पर ३० लाख बत्तियों की रोशनी होती है।

ब्लफ से लम्बाकार रेखा में प्वाइन्ट नामक भूमि की पट्टी है जो यहां की खाड़ी को समुद्र से अलग करती है। प्वइान्ट के भीतरी भाग में घाट हैं जहां पर जहाज ठहरा करते हैं। भीतर की ओर जाने का मार्ग ब्लफ और प्वाइन्ट के मध्य में है। इसकी रक्षा उत्तरी घाट तथा दक्षिणी ब्रेकवाटर द्वारा होती है। दक्षिणी ब्रेकवाटर बढ़ा कर २३०० फुट लम्बा कर दिया गया है। उत्तरी घाट प्वाइन्ट से मिला कर बनाया गया है। इन दोनों के बीच की कम से कम चौड़ाई ६०० फुट है।

चैनल को खोद कर साफ कर दिया गया है। इसकी गहराई २ फुट से ६ फुट तक थी और यहां पर मल्लाह लोग अपने जहाज टूट जाने के भय से नहीं लाते थे।

ब्लफ तथा प्वाइन्ट प्रायद्वीप प्राकृतिक बन्दरगाह का काम देते हैं। यहां पर ३ मील तक बांध तथा घाट बने हुये हैं। इन घाटों के पानी की गहराई २३ से ३८ फुट तक है। इन घाटों में संसार के प्रत्येक भाग से जहाज आकर ठहरते हैं।

ब्लूफनेल लाइन, हाल लाइन, यूनियन कैसिल लाइन (इन्गलिश) हालैंड-अफ्रीका लाइन, नैवीगाजिआंन लिबेरा ट्रस्टीना, निपन यूसेन केशा, जर्मन इटैलियन और जापानी आदि लाइनों के जहाज डर्बन बन्दरगाह पर आते हैं। थेसेन्स स्टीम शिप कम्पनी की ओर से केपटाउन तथा दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका तट के बीच जहाज चलते हैं।

बड़े जहाज जो डर्बन के बन्दरगाह पर आते हैं, उनमें अथलोनेकैसिल का वज़न २५,५६४ टन, क्लान अर्कुहार्ट ६५६४ टन, हालैंड अफ्रीका लाइन के जागर्स फान्टीन का वज़न १०,०७७ टन है। इनके सिवा और भी दूसरे बड़े जहाज डर्बन बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं।

इस बन्दरगाह का अधिकांश काम प्वाइन्ट स्थान पर होता है। कम्पनियों तथा लाइनों के जहाज यहीं पर ठहरते हैं। यहां पर एक मील से अधिक दूरी में घाट बने हैं। यहां पर सामान रखने उतारने के लिये उत्तम प्रबन्ध है। क्रेनों का काम बिजली द्वारा होता है। सबसे बड़ी क्रेन ८० टन (२२४० मन) बोझ उठा सकती है।

फलों के रखने के लिये ठंडे कमरे बनाये गये हैं, जहां पर योरुप भेजे जाने के पहले फल रक्खा जाता है। इन कमरों में ३३,२८० फल वाले संदूक रक्खे जा सकते हैं। जहाजों की मरम्मत के लिये घाट बने हैं। प्वाइन्ट के दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर तैरता हुआ घाट है। इस घाट की लम्बाई ४७५ फुट और भीतरी चौड़ाई ७० फुट है। यह घाट ५००० टन (१४०,००० मन) का बोझ सँभाल सकता है।

इस घाट के बाद विक्टोरिया के बाँध हैं। यह नगर का खाड़ी की ओर का किनारा है और अलबर्ट पार्क तक फैला हुआ है। इसके पश्चिम की ओर मेडन का घाट है। यह घाट कंगेला के व्यवसाई जिले का बन्दरगाह है। यहां पर पहुँचने का मार्ग मेडन खाड़ी होकर है। यह खाड़ी साफ करके गहरी बना दी गई है। घाटों पर खाड़ी की गहराई २५ फुट से ३८१ फुट तक है।

इस भाग में गल्ला रखने के लिये एलिवेटर (बखार) बने हैं। इन बखारों में ४ ,००० टन (१,१७६,००० मन) अनाज भरा जा सकता है। इनमें एक हजार टन (२८००० मन) प्रति घंटे के हिसाब से अनाज भरा जा सकता है। यहां से मक्का दूसरे देशों को भेजी जाती है।

मेडन घाट के अन्त में प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविंग डाक है। यह घाट १९२५ ई० में खोला गया था। उस समय विश्वत रेखा के दक्षिण यह घाट सबसे बड़ा था। यह घाट नीचे ११५० फुट लम्बा और द्वार पर ११० फुट चौड़ा है। इस घाट में ३८,११८,००० गैलन पानी आता है। यह घाट ४७ मिनट में भर दिया जाता है और ४ घंटे या इससे कम समय में खाली कर दिया जाता है।

जो बड़े जहाज तैरते हुये डाक पर नहीं खड़े हो सकते वे प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविन्ग डाक में आ कर खड़े होते हैं। यह डाक दो भागों में बँटा है और प्रत्येक भाग का प्रयोग स्वतंत्रता पूर्वक किया जा सकता है।

डाकों की गहराई मामूली उतार आने पर ४१ फुट रहती है। इस घाट को आठवें एडवर्ड ने (जब वे वेल्स के राजकुमार थे) खोला था। इस ओर अब बहुत से कारखाने बन गये हैं।

तेल लाने वाले टैंकर्स जहाज ब्लफ में ठहरते हैं और वहां तेल वाले हौजों में अपना तेल भरते हैं। यहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ पिट्रौल रखने वाले हौज़ हैं जहां पर कुल १८०,००,००० टन (४०,४०,००,००० मन) तेल भरा जाता है। तेल वाले घाटों की लम्बाई १००० फुट है।

ठंडे कमरे खाड़ी के मुहाने पर ब्लफ में स्थित हैं। डर्बन से बहुत से कोयला बाहर भेजा जाता है और उसके कारण डर्बन की माली स्थिति अच्छी हो गई है। यूनियन सरकार की ओर से यह कोयला पूर्वी अफ्रीका, लाल सागर और दूसरे देशों को भेजा जाता है। दक्षिणी अफ्रीका में कोयला भेजने के लिये डर्बन मुख्य बन्दरगाह है। वहां पर ५ जहाज एक साथ कोयला भर सकते हैं। कोयला १००० टन (२८००० मन) प्रति घण्टे के हिसाब से भरा जा सकता है। कोयला भरने वाले घाट की लम्बाई २३६५ फुट है।

कोयले के सिवा यहां से चीनी, ऊन, चमड़ा, मक्का, फल आदि भी बाहर भेजे जाते हैं।

खाद, लकड़ी, लोहा, फौलाद, कलें और दूसरी तयार वस्तुएं बाहर से डर्बन बन्दरगाह होकर आती हैं। यहां पर मछली मारने का रोजगार भी काफी होता है। डर्बन नगर दक्षिणी अफ्रीका का हेल मछली के तेल निकालने का भी केन्द्र है। १९३९ ई० में यहां से ४,०००,००० गैलन (४६२५०० मन) व्हेल का तेल बाहर भेजा गया था। व्हेल मछली का मांस खाद बनाने तथा कारखानों में काम आता है।

सन् १९२० ई० में दक्षिणी अफ्रीका के यूनियन की स्थापना हुई तब से डर्बन तथा दक्षिणी अफ्रीका के दूसरे बन्दरगाह दक्षिणी अफ्रीकन रेलवे तथा हार्बर ऐडमिनिस-ट्रेशन के अधिकार में हैं।

डर्बन के बन्दरगाह में टग आग बुझाने वाले जहाज और दूसरे भांति भांति के छोटे जहाज भी हैं। रील बांक नामक हायर डज़र (जालवाला जहाज) दुनिया के बड़े जहाज़ों में से है। यह १९३० ई० में रेनफ़्रयु में बना था। इसका तौल ४५३८ टन है। इस की लम्बाई २७४ फुट, चौड़ाई ५७ फुट ८ इञ्च है।

डर्बन बन्दरगाह में हरसाल हज़ारों की संख्या में यात्री आते हैं। यहां की जलवायु बड़ी अच्छी है। न तो यहां अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक शीत ही पड़ती है। जाड़े के दिनों में यहाँ का सब से नीचा तापक्रम ३३ फा० हा० और गर्मी में सब से ऊँचा तापक्रम ८१ डिगरी फा० हा० रहता है।

ब्लफ का ऊँचा हरा प्रदेश दक्षिण पश्चिम से आने वाली तेज हवाओं को रोकता है, जिस से छोटे छोटे जहाज आनन्दपूर्वक हार्बर के अन्दर चल सकते हैं। आधुनिक उन्नति के कारण डर्बन का समुद्री तट बड़ा सुहावना बन गया है। यहां की जलवायु भी स्वास्थ्य के लिये अच्छी है यहां पर हर साल हज़ारों जवान बूढ़े तथा बच्चे अपने स्वास्थ्य सुधारने के लिये आते हैं।

डर्बन के टाउन हाल तथा म्यूनिसिपैलिटी के मकान नगर के केन्द्रीय भाग में वेस्ट स्ट्रीट पर स्थित हैं। यह सड़क विक्टोरिया बांध के समानान्तर है। नगर के पीछे बेरिया की पर्वतीय श्रेणियां हैं जिनके ऊपर नगर के मुख्य बाहरी भाग स्थित हैं। गर्मी के दिनों में यहां की वाटिकाओं और पार्कों में हरे भरे पेड़ दिखाई पड़ते हैं। नगर के भीतर चौड़ी सायादार सड़कें हैं, जिन का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। जो लोग डर्बन पोर्ट को एक बार घूम आये हैं वे उसे वाटिका-नगर के नाम से याद करते हैं।

डर्बन में समुद्र के किनारे पर सामान लादने वाले तथा सवारी वाले जहाज अपने कार्यों में व्यस्त दिखाई पड़ते हैं। व्हेल मछली लादने वाले जहाज़ भी रहते हैं। यह जहाज छोटे बड़े कई प्रकार के होते हैं। दक्षिणी अफ्रीका के निवासी जो सैकड़ों मील तटों से दूर रहते हैं वे भी समुद्री जीवन के प्रेमी होते हैं। तैराक, मल्लाह तथा सैर सपाटे वाले यात्री सभी जहाज़ों पर बैठ कर मछलियों का शिकार करते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के किनारों पर खनिज पदार्थ तो बहुत है किन्तु प्राकृतिक गहरे हार्बर नहीं हैं। हार्बर बनाने वाली योजना के अनुसार डर्बन एक सुन्दर हार्बर बन गया है।

पहले भारतवर्ष, ईस्ट इन्डीज़ (पूर्वी द्वीप समूह) चीन आदि देशों से आने वाले जहाज और उनके मल्लाह यहां के जङ्गली किनारों पर आकर बहुत परेशान होते थे। बहुधा उनके जहाज टूट जाते थे और यदि किसी न किसी भांति वे बच भी गये तो भूकों मर जाते थे। जो लोग लोवरेनको मारक्वीस (पुर्तगाली बस्ती) को पहुँचना चाहते थे, उनको अफ्रीका के असभ्य निवासी मार्ग ही में मार डालते थे।

डर्बन हार्बर के तट के आदि निवासी और दूसरे निवासियों से कम जङ्गली थे। यह लोग औरों की अपेक्षा क्रोधी भी कम थे। सत्रहवीं शताब्दी में गुडहोप, बोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेन्चुरा, स्टावनीसे नामक तीन जहाज़ यहां आकर किनारे पर टूट गये। उन के कुछ आदमी डूब गये और कुछ बच गये। जो लोग बच गये थे उन लोगों ने मिलकर एक जहाज़ ५० फुट लम्बा और १४ फुट चौड़ा बनाया। लगभग २० आदमी इस जहाज को केप ले गये और वहां डच गवर्नर के हाथ जहाज बेच दिया। डच गवर्नर ने इस जहाज को और दूसरे टूटे हुये जहाजों की सहायता के लिये अफ्रीका के किनारे पर भ्रमण करने के लिये भेजा। इस प्रकार यहां पर आने वाले योरुप निवासियों ने बड़ी बड़ी कठिनाइयां सह कर डर्बन हार्बर बनाने का कष्ट उठाया था।

सैलिसबरी नामक नौका से डर्बन बन्दरगाह का इतिहास आरम्भ होता है। यह नौका तूफान चलने के कारण डर्बन खाड़ी में आ कर टूट गई। इसी की याद में खाड़ी के अन्दर एक द्वीप का नाम सैलिसबरी द्वीप रक्खा गया है। यह नौका जेम्स साउन्डर्स किङ्ग की अध्यक्षता में थी। फ्रान्सिस जार्ज फेअरवेल उसका एक साथी था। यह दोनों युवक बड़े साहसी थे, इन लोगों ने नैपोलियानिक युद्ध के पश्चात् केप टाउन गये और वहां पर छोटी छोटी नावें बना कर अफ्रीकन तट की पड़ताल करनी आरम्भ कर दी। यह लोग यहां के आदि निवासियों के साथ वस्तुओं की अदला बदली करने का व्यापार आरम्भ किया। डर्बन खाड़ी का कार्य समाप्त कर किंग लन्दन वापस लौट गया। फेअरवेल दूसरी बार फिर नैटाल के बन्दरगाह पर आया। इसके साथ में दो जहाज थे।

पहला जहाज हेनरी फ्रान्सिस फीन की अध्यक्षता में था। हेनरी आयरलैंड का निवासी था और बड़ा कूटनीतिज्ञ था। जब यह जहाज डर्बन खाड़ी में पहुँचा तो उस समय खाड़ी और उसके चारों ओर का इलाका चाका के आधीन था। चाका ज़ुलू जाति का नेता था। इसने अपने साथियों को लड़ाकू सैनिक बना रक्खा था। चाका अफ्रीका के नैपोलियन के नाम से प्रसिद्ध था। चाका से फीन से दोस्ती हो गई। फीन ने चाका को एक चोट से अच्छा किया था। यह चोट चाका की प्राण घातक थी।

चाका के ऊपर इस (चोट के अच्छा करने की) दवा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने पोर्ट नैटाल और उसके आस पास की हज़ारों बर्गमील भूमि अँग्रेजों को सौंप दिया। उसने एक इकरारनामा भी इसी भूमि के देने का लिख दिया।

जब किंग ने अपने मित्र की सफलता का हाल सुना तो नैटाल बन्दरगाह के लिये रवाना हुआ किन्तु बन्दरगाह के उत्तरी सिरे पर आकर उसकी नौका टूट गई। चाका ने किंग को भी भूमि प्रदान की। १८२८ ई० में किंग की मृत्यु हो गई।

चाका को अँग्रेज लोग मरहम तेल और दवा की गोलियाँ देते थे, वह इसी की बदौलत श्वेत चमड़े वालों के कहने के अनुसार बड़ा अत्याचार करने लगा। हज़ारों की संख्या में उसने अपने आदमियों को मरवा डाला। चाका को भी अन्त में मार डाला गया और उसका भाई डिङ्गान गद्दी पर बैठा। फेअरवेल भी मार डाला गया। अलेन फ्रान्सिस गर्डनर ज़ूलू जाति वालों को ईसाई बनाना चाहता था, इसलिये उसने १८३५ ई० में वहां नये बसने वालों की एक सभा बुलाई। सभा में डर्बन नामक टाउन स्थापित करने की राय पास हुई।

जब इस नगर की स्थापना की गई तो इस पर बड़ी बड़ी कठिनाइयां आईं। एक बार ज़ूलू लोगों ने इस पर आक्रमण किया और सारे श्वेत लोगों को मार डाला केवल १२ आदमी बच रहे।

कुछ सालों के बाद बोर लोगों ने डिङ्गान को निकाल कर डर्बन पर अधिकार जमा लिया। अँग्रेजों ने एक सेना बाद में डर्बन लेने को भेजी। कांगोला नामक स्थान पर बोर लोगों ने अँग्रेजों का सामना किया और अँग्रेजों को बुरी तरह घेर लिया। डिक राजा एक आदि निवासी के साथ बोट पर भाग कर ब्लफ आया और वहां से घोड़े पर यात्रा करके ६०० मील की दूरी पर ग्राहम्स टाउन पहुँचा। वहां जा कर सार हाल कह सुनाया। बाद में नैटाल प्रान्त भी अंग्रेजी सेना द्वारा ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया।

डर्बन हार्बर बनाने की बड़ी बड़ी योजनायें की गईं किन्तु आपस में ही मतभेद होने के कारण कार्य आरम्भ नहीं हुआ। जब ईस्टइन्डिया कम्पनी के सामने यह प्रश्न उठा तो उसने (यह कह कर कि डर्बन बन्दरगाह के मुहाने पर बालू का एक बड़ा ढेर है जिसमें बिना ठोकर खाये कोई जहाज अन्दर नहीं जा सकता) इंकार कर दिया।

बीसवीं शताब्दी में डर्बन बन्दरगाह के बनाने के बारे में बड़ी लिखा पढ़ी हुई। आज लगभग सौ साल के बाद वही डर्बन दक्षिणी अफ्रीका का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

जब नैटाल का व्यापार उन्नत्ति करने लगा तो डर्बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दरगाह बनाने की बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई। सबसे पहले प्वाइन्ट नामक स्थान पर घाट बनाया गया। इसके बनाने में सफलता प्राप्त हुई और तेज़ी से काम आरम्भ हुआ किन्तु जब इस बात की खबर हुई कि मुहाने की रेती में एक बड़ी चट्टान है और वहां १८ फुट से अधिक गहराई नहीं हो सकती तो काम बन्द कर दिया गया।

जब अफ्रीका की सोने तथा हीरे की खानों का पता चला तो फिर मुहाने की चट्टान को साफ करने का प्रयत्न किया गया। इस बार पड़ताल होने पर पता चला कि वहां की चट्टान बड़ी लगातार चट्टान न थी वरन् छोटी छोटी चट्टानें तथा रोड़े थे। अंत में वे चट्टानें साफ कर दी गईं।

१८५९ ई० में प्रथम बार डर्बन हार्बर में जहाज बनाये गये। दूसरे साल डर्बन नगर से प्वाइंट तक रेल बनाई गई। दक्षिणी अफरीका में यह पहली रेल बनाई गई थी। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में खाड़ी की गहराई २० फुट हो गई थी। तबसे बराबर गहराई बढ़ती जा रही है और आज तक गहराई लगभग ४० फुट हो गई है। सबसे बड़ा जहाज पेलागोस (१२०६७ टन) १९३० ई० में डर्बन बन्दरगाह पर गया। यह ३६ फुट ८ इञ्च गहरा पानी खींच रहा था।

कनजेला एक रोज़गारी जिला है। नैटाल के अधिकांश कारखाने डर्बन नगर या उसके इधर उधर स्थित हैं।

डर्बन में आज रेलों का जाल सा बिछा है और सभी डाक्स साउथ अफ्रीकन रेलवे से रेल द्वारा मिले हुये हैं। इस प्रकार देश के अन्दर का सारा माल सीधे डर्बन में आकर उतरता है। यह सामान सीधे घाटों पर उतार दिया जाता है।

रोडेशिया, ट्रान्सवाल आदि देशों से डर्बन बन्दरगाह और दूसरे बन्दरगाहों की अपेक्षा समीप पड़ता है। डर्बन से रोडेशिया १,१७० मील है इसकी यात्रा लगभग ७ घंटे में हो जाती है।

संसार की जन-संख्या

आवागमन के साधनों के उन्नति करने और भांति भांति के परिवर्तनों के होने तथा नवीन युग के लोगों के जनमत बढ़ने के कारण अब दिन प्रति दिन समस्त संसार को एक दृष्टि से देखने का मत बढ़ रहा है। ऐसी दशा में अध्यापकों और खास कर भूगोल के अध्यापकों को अपनी शिक्षा के प्रचार का अच्छा समय है। स्कूल में प्रान्तीय शिक्षा तथा संसार की मानव सम्बंधी शिक्षा भली भांति दी जा सकती है। इस योजना का कुछ भाग एक समय में पढ़ाया जा सकता है। सबसे पहला भाग जनसंख्या और उसका प्रत्येक स्थान पर बराबर न होने का हो सकता है। संसार की जनसंख्या लगभग २ अरब २० करोड़ है। संसार की जनसंख्या लगभग २ करोड़ सालाना के हिसाब से बढ़ रही है। यह बढ़ती भिन्न भिन्न भागों की भिन्न भिन्न है और इसी भिन्नता के कारण संसार में जातीयता, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

संसार की जनसंख्या २ अरब २० करोड़ है। यह अंक कल्पित है क्योंकि कुछ देशों में बहुत वर्षों से जन गणना नहीं हुई है। संसार की जनसंख्या का ⅔ भाग कभी भी गणना में नहीं आया। दक्षिणी अमरीका के कुछ भीतरी भाग ऐसे हैं जो अब भी उतने ही अपरिचित हैं जितने कि पुर्तगालियों अथवा स्पेन वालों के जाने के पहले थे। अफ्रीका के उष्ण भागों की जनसंख्या केवल अनुमान पर लगाई गई है। दक्षिणी पश्चिमी एशिया की जनसंख्या का भी ठीक ठीक कोई हिसाब नहीं है। सब से बड़ी कठिनाई चीन में पड़ती है जहां कि कभी भी ठीक ठीक जन गणना नहीं हो सकती। चीन की जनसंख्या संसार की जनसंख्या का पाँचवां भाग है।

संसार के तीन चौथाई लोग कर्क रेखा के उत्तर में और केवल तीन प्रतिशत लोग मकर रेखा के दक्षिण निवास करते हैं। एशिया में संसार की समस्त जनसंख्या का आधा भाग और योरुप में चौथाई भाग निवास करता है। दक्षिणी अमरीका और आस्ट्रेलिया की जनसंख्या बहुत कम है। एशिया के मानसूनी प्रदेश में जनसंख्या की सघनता ३५० प्रति वर्ग मील है। योरुप में प्रति वर्ग मील में १२५ मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अमरीका में प्रति वर्ग मील में केवल ४२ मनुष्य रहते हैं। प्रत्येक महाद्वीप में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ आबादी बहुत घनी है कुछ ऐसे हैं जहां औसत दर्जे की आबादी है और कुछ स्थान ऐसे भी हैं जो बिल्कुल निर्जन हैं।

संसार में बहुत कम ऐसे भाग हैं जहाँ लोग नहीं बसे हैं और उससे भी कम ऐसे भाग हैं जहां मनुष्य नहीं रह सकता है। आज कल संसार में जो पांच प्रदेश हैं उनमें टुंड्रा और उष्ण मरुप्रदेशों में रहने में बड़ी कठिनाई होती है। अमरीका में कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य तथा बाहर वाले प्रदेशों में काफी अन्तर है परन्तु यूरेशिया में भी उसी प्रकार अन्तर है। स्विटजरलैंड और अफगानिस्तान में बहुत बड़ा अन्तर है। वर्तमान समय में टुंड्रा के रहन-सहन तथा निवासियों में बहुत कुछ अन्तर आ गया है। जिन स्थानों में एक भी मनुष्य नहीं रहते हैं अब वहां लोग आते जाते और रहते हैं। रूस ने उत्तर की ओर ४० हजार आदमी आर्कटिक वृत्त में रहने के लिये भेजे हैं। उष्ण मरुस्थलों में लोग सूर्य के प्रकाश को बुरा समझते हैं और उन्हें पानी की कमी रहती है। यह सम्भव है कि पञ्जाब की पाँच नदियां किसी समय भारत के उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश को हरा भरा बना दें। सहारा का रेगिस्तान खेती में बदला जा सकता है परन्तु उसके लिये काफी पानी मिलना दुर्लभ है। एक विदेशी इंजीनियर ने अपनी राय दी है कि रूम सागर को दोनों किनारों पर बांध द्वारा बांध दिया जावे उसके बाद वहाँ का पानी भाप बन कर स्वयम् सहारा में वर्षा कर के उसे हरा भरा कर देगा।

रेगिस्तानों के अलावा जंगल और दूर वाले भीतरी मैदान हैं जो निर्जन हैं। जब से भाप का सहारा मनुष्य को मिला है और रेलवे लाइनें खुली हैं तब से प्रेरीज़ तथा उत्तर और दक्षिण के बनों में जाकर उन्हें वनस्पति उगाने के योग्य बनाया गया है।

साधारण आबादी वाले स्थानों की शिक्षा में अधिक कठिनाई पड़ती है क्योंकि उनकी दशा मध्यम है। इस लिये वहां की शिक्षा देने के लिये वहाँ के ताप, वर्षा और कृषि का मानचित्र तयार कर लेना चाहिये। पहले शीतोष्ण और उष्ण कटिबंध को अलग कर लेना चाहिये। शीतोष्ण कटिबंध में भूमि की भिन्नता के अनुसार विभाजन किया जा सकता है। पहाड़ी स्थान मैदानों तथा चरागाहों से सुगमता पूर्वक अलग किये जा सकते हैं। जिन देशों में एक प्रकार की खेती होती है वह देश उन देशों से भिन्न हैं जहां कई प्रकार की खेती होती है फिर साधारण खेती वाले भाग और व्यापारिक खेती वाले भागों में भी भिन्नता है। उनकी सघनता में भी महान अन्तर है। अफ्रीका के उष्ण प्रदेश में भी प्राचीन निवासियों तथा स्वेत खेती करने वालों के काम और सघनता में भारी अन्तर है। प्रत्येक स्थान में खेतों में मजदूरों की आवश्यकता है साथ ही साथ उन्हें अपने जीवन के निर्वाह करने वाली वस्तुओं की भी आवश्यकता है। एशिया के मानसूनी प्रदेश के निवासी संसार के सब से सघन भागों के रहने वाले हैं।

यदि हम संसार को जनसंख्या के मानचित्र पर दृष्टि डालें तो हमें जनसंख्या की सघनता के तीन भाग भली भांति दृष्टिगोचर होंगे। यह तीनों भाग एशिया के मानसूनी प्रदेश, योरुप और उत्तरी अमरीका के पूर्वी भाग हैं। एशिया का मानसूनी प्रदेश सबसे बड़ा है और उसमें संसार की जनसंख्या का आधा भाग निवास करता है। इस प्रदेश के अधिकांश निवासी छोटे खेतों में कार्य करते हैं। इस भाग में कारखानों का काम अभी हाल में ही आरम्भ हुआ है इस लिये बड़े बड़े कारखाने नहीं हैं। जापान में भी अभी बहुत कम कारीगर तथा कारखाने में काम करने वाले लोग हैं। जापान के कारखाने अभी इंगलैण्ड जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कारखानों से बहुत पीछे हैं। इस बड़े प्रदेश के कई भाग हैं। प्रत्येक भाग के निचले मैदानों में सघनता अधिक है और वहां वर्षा तथा गर्मी भी अधिक होती है। भारतवर्ष में जनसंख्या की सघनता में बड़ी भिन्नता है। राजपूताने में प्रति वर्गमील में १३० और बंगाल में प्रति वर्गमील में ६०० मनुष्य निवास करते हैं। उत्तरी तंजौर के मैदान में सघनता और भी अधिक हो जाती है। चीन में सघनता के जो ६ प्रान्त हैं उनमें से ५ प्रान्त नदियों के बेसिन में स्थित हैं। उत्तरी, मध्यवर्ती और दक्षिणी भाग क्षेत्रफल में बराबर हैं परन्तु उत्तरी भाग की जनसंख्या केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ करोड़ है और मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग की जनसंख्या १८ करोड़ है। जापान के अधिकांश निवासी ३७' अंश उत्तरी अक्षाँश के दक्षिण में रहते हैं। उस भाग में सबसे धनी तथा सघन प्रदेश डेल्टों में हैं। जापान के बड़े राष्ट्रीय नगर दक्षिण की ओर ही स्थित हैं।

योरुप और पूर्वी उत्तरी अमरीका में खेती मशीनों द्वारा होती है। वहां खेती व्यापार तथा रोजगार के ध्यान से की जाती है। योरुप में कोयले की खानों के साथ ही साथ उपजाऊ भूमि भी है। यह दोनों पट्टियां मध्यवर्ती ऊँचे प्रदेश, राइन प्रान्त, स्विटजरलैंड, बेल्जियम और इंगलैंड में फैली हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जन-संख्या की सघनता शिकागो से न्यूयार्क तक है। इस प्रदेश में तीन बड़ी कोयले की खानें हैं। इस भाग में संयुक्तराष्ट्र के कारखानों का तीन चौथाई माल तयार होता है। इस भाग में बहुत अधिक रेलवे लाइनें हैं जो अटलांटिक सागरी बन्दरगाहों की ओर जाती हैं। अमरीका में योरुप की अपेक्षा आबादी की सघनता कम है। इस भाग में ५० नगर ऐसे हैं जिनकी जन-संख्या १ लाख से अधिक है। इस प्रकार की जन-संख्या इंगलैंड और जर्मनी में है। इसलिये प्राकृतिक रूप से इन तीनों देशों में किसी न किसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध होना आवश्यक है।

केवल आबादी की कमी के कारण ही कठिनाई नहीं है वरन् आबादी अधिक होने के कारण भी कठिनाई पड़ जाती है। यह कठिनाई जातीयता, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की होती है।

समस्त संसार की जन संख्या में एक प्रतिशत की बढ़ती होती है। यदि इसी प्रकार बढ़ती होती रही तो १०० वर्षों में वर्तमान की दुगुनी आबादी हो जावेगी। क्या संसार इस बढ़ती के भार को संभाल सकेगा। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में माल्थून ने अपनी जन-संख्या के नियम संबन्धी विज्ञान में कहा था कि जब जन-संख्या में बराबर बृद्धि हो रही है और धरती की मात्रा अचल है तो फिर मनुष्य को भोजन कहां से प्राप्त होगा? इसमें शक नहीं कि विज्ञान शास्त्र के द्वारा अद्भुत् नई खोजें की जा सकती हैं फिर भी कोई न कोई समय ऐसा आवेगा जब कि जन-संख्या की अधिक बढ़ती को रोकना पड़ेगा

गत दो सौ वर्षों में श्वेत लोगों की जन-संख्या में अधिक बृद्धि हुई है। १७७० ई० में श्वेत वर्ग वालों की जन-संख्या एक करोड़ ५५ लाख थी। १९४० ई० में उनकी संख्या बढ़ कर ७ करोड़ ३० लाख हो गई। पश्चिमी राष्ट्रों में १९११ ई० तक जन संख्या में बृद्धि पैदा होने के कारण थी। भांति की उन्नति होने के कारण इंगलैंड की आबादी १८०१--१८५१ ई० के बीच में दोगुनी हो गई। १९११ के बाद से पैदा होने वाले बच्चों की कमी हो गई है फिर भी पैदा होने वालों की संख्या मरने वालों से अधिक है, यही दशा और दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों की भी है।

पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी योरुप में पैदा होने वालों की बृद्धि है और मरने वालों में कमी है। रूस की जन-संख्या १७ करोड़ है। इसमें ३० लाख प्रति वर्ष बृद्धि हो रही है। यदि यही दशा २०वीं सदी के अन्त तक जारी रही तो रूस की जन-संख्या ५० करोड़ हो जावेगी और पश्चिमी योरुप की जन संख्या में १५ करोड़ की कमी हो जावेगी परन्तु अब बढ़ने वालों की संख्या आधी हो गई है। प्रोफेसर कार सौंडर्स के अनुमान से भविष्य में इंगलैंड की जन-संख्या में घटती होती रहेगी।

सभी पश्चिमी राष्ट्रों की जनसंख्या परिवर्तनशील नहीं है। फ्रान्स की जनसंख्या लगभग समान थी। १९३१ ई० तक सीमा में परिवर्तन होते हुये जर्मनी की जनसंख्या में ६ करोड़ ४० लाख की बृद्धि हुई है जिसमें तीस लाख विदेशी भी शामिल हैं। फ्रांस ने अपनी कमी को पूरी करने के लिये विदेशियों को अपने यहां स्थान देना आरम्भ कर दिया। प्राकृतिक रूप से भी उन्होंने जन-संख्या बढ़ानी चाही परन्तु १९३२—३६ ई० के बीच केवल ६ हजार की वृद्धि हुई है। यदि हम इस बृद्धि की समानता कनैडा के फ्रान्सीसियों से करें तो हमें बड़ा विस्मय होगा। १७६७ ई० में क्यूबेक प्रान्त में ५० हजार फ्रान्सीसी थे आज उनकी संख्या ३० लाख है।

१७०० ई० में आयरलैंड की जनसंख्या २ लाख थी १८४५ ई० में उसकी जन संख्या ८० लाख हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई थी । उसके बाद वहां दुर्भिक्ष पड़ा और नाज की उत्पत्ति न होने के कारण ६ वर्ष में १० लाख गरीब किसान भूकों मर गये । भूक के भय से लोग आयरलैंड छोड़ कर भाग गये । १० वर्ष के भीतर २० लाख आदमी संयुक्त राष्ट्र अमरीका चले गये । उसके बाद फसल के खराब होने से और लोग भी वहां गये । उन्नीसवीं सदी के अन्त में वहां की जन संख्या में ४० लाख की कमी हो गई थी । जब कि इँगलैंड की जन संख्या बढ़ रही थी । उसके बाद ब्रिटिश तथा आयरिश सरकार ने वहां की दशा में सुधार करने का प्रयत्न किया और अब वहां जन संख्या में बृद्धि हो रही है ।

योरुप वालों ने जो वस्तियां बसाई उनमें भी युद्ध, बीमारी और दूसरे कारणों से जन संख्या में कमी हुई है । तस्मानिया के निवासियों का अंत हो गया । एस्किमो, अमरीकन, इंडियन और आस्ट्रेलियन आदि में वृद्धि हुई है । मओरिस लोगों की संख्या ५० वर्षों में ६० हजार से घट कर ४५ हजार हो गई है । मर्क्वेसस की जन संख्या १०० वर्षों के भीतर १६ हजार से घट कर ६२० हो गई है । गुलामों के व्यापार के कारण अफ्रीका की जन-संख्या में १० करोड़ की कमी हो गई है । अब अमरीकन इंडियन और अफ्रीका के निवासियों के बीच भी वृद्धि हो रही है ।

जन संख्या की तुलना करने में कठिनाई का उत्पन्न होना कोई आवश्यक बात नहीं है जैसा कि अमरीका और कनैडा के आपसी व्यवहार से साबित हो चुका है परन्तु फिर भी जब उसमें दूसरी बातें मिला दी जाती हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े बढ़ जाते हैं । फ्रांस जर्मनी से भय खाता रहा है । जर्मनी को रूस से भय बना रहा है । आयरलैंड के प्रश्न तथा आयरलैंड की जन संख्या की बृद्धि और उन्नति के कारण अँग्रेज़ों को चिन्ता बनी रही है ।

प्रत्येक देश को अपनी बढ़ती हुई जन संख्या के कारण सालाना अपने राष्ट्रीय कार्यों का ब्योरा लगाना पड़ता है । सोवियट यूनियन को अपनी बढ़ती प्रजा के रखने के लिये स्वयम् अपने देश में काफी स्थान है । जापान और इटली में पर्वतों के कारण रहने योग्य स्थान प्राकृतिक रूप से कम हैं वहां अधिक उपज करने तथा सामान तयार करने की कोशिश की गई । विदेशी व्यापार बढ़ाया गया फिर भी उन्हें अपने लिये विदेशों में स्थान ढूंढ़ने की आवश्यकता प्रतीत हुई ।

इटली में गेहूँ की अधिक उपज होने के कारण आन्दोलन किया गया जिससे वहां की आवश्यकता की पूर्ति के लिये गेहूँ की उपज होने लगी है । दूसरी वस्तुओं की उपज बढ़ाने के लिये भी प्रयत्न किया गया है । वहाँ कारखानों की वृद्धि की गई जिससे इटली की गणना आज संसार के बड़े कारखाने वाले देशों में हो गई । फिर इटली ने विदेशों में अपना अधिकार जमाया और वहां अपने यहाँ के लाखों मनुष्यों को रहने का स्थान दिया ।

२० वर्ष पहले इटली के लोग अमरीका में जाकर बस जाते थे परन्तु अमरीका की सरकार ने एक कानून बना कर विदेशी लोगों का अपने देश में घुसना बन्द कर दिया है । इटली की सरकार ने भी एक नियम बना कर अपने यहां के निवासियों का विदेशों में जाकर बसना रोक दिया है । अब इटली के निवासी केवल अफ्रीका के इटैलियन प्रान्तों में जा सकते हैं । इस नियम का आशय यह है कि इटली की जनसंख्या में बृद्धि हो । इटली में ब्रह्मचारी मनुष्य पर कर लगा दिया गया है । जिन वंशों में कम बच्चे पैदा होते हैं उन्हें जुर्माना किया जाता है । अधिक बच्चे उत्पन्न करने वाले घरों को सरकार की ओर से सहायता मिलती है । १९३६ ई० में मुसोलनी ने घोषणा की थी कि यदि इटली को संसार में अपनी गणना करानी है तो उसकी जनसंख्या १९५० ई० तक ६ करोड़ अवश्य हो जानी चाहिये ।

मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई कारणों से जाता है । अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दफ्तर के विभाजन के अनुसार दो मुख्य कारण हैं । पहला तो यह कि मनुष्य मजदूरी अथवा खेती का काम करने के लिये अपने महाद्वीप के भीतर ही एक देश से दूसरे देश को चला जाता है और ऋतु के समाप्त होने पर फिर वापस चला आता है दूसरा कारण यह है कि जब मनुष्य को अपने देश में भोजन प्राप्त नहीं होता तो वह अपने देश को छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपने रहने के लिये घर बना लेता है । लोग सोना, धन और मुफ्त धरती तथा दूसरी लालचों के कारण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपना निवास स्थान बना लेते हैं। ब्रिटिश द्वीप समूह से जो लोग दूसरे देशों में जाकर बसे हैं उसके कई कारण हैं।

वर्तमान काल में योरुप और एशिया के मानसूनी प्रदेश के लोगों ने अपने देश छोड़ कर दूसरे देशों में अपने घर बनाए हैं। यह लोग प्रशांत महासागर के देशों में ही जाकर बसे हैं। यद्यपि वर्तमान समय में यह प्रयत्न किया जा रहा है कि कोई भी देश अपने यहां के निवासियों को दूसरे देश में न बसावे फिर भी यह काम पूर्ण रूप से रोका नहीं जा सकता। मानव जाति अपनी प्रकृति के अनुसार सदैव घूम-फिर लगाए ही रहेगी।

दूसरे देशों में जाकर बसने के साथ ही साथ नई बस्तियों का भी घनिष्ट सम्बंध हो जाता है। ब्रिटिश, डच, फ्रांसीसी आदि जातियों ने किस प्रकार अपनी बस्तियां बसाई यह इतिहास से भली प्रकार विदित है। नव बस्तियों की नीति समय समय पर बदलती रही है। सब से उन्नति शील नीति आज कल वेस्ट-मिनिस्टर के इन्स्टीट्यूट की है। इस नियम के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत रह कर स्वतंत्र रूप से अपना काम करते हैं। उन्हें डोमीनियन राष्ट्र नाम दिया गया है।

नई बस्तुयों के बसाने में जिन उपायों का प्रयोग किया जाता है उनका अध्ययन करना भी प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। नई बस्ती बसाने के लिये अच्छे शासन धन और मज़दूरों की आवश्यकता है। सरकार को नई बस्ती में आने जाने के साधनों को वृद्धि करनी पड़ती है उसे सस्ता और सरल बनाना पड़ता है, खेती के लिये सिंचाई का प्रबंध करना पड़ता है, सिंचाई भी सस्ती करनी पड़ती है। सरकार को शिक्षा विज्ञान आदि का भी भली प्रकार प्रचार करना पड़ता है।

इस प्रकार भूगोल की शिक्षा प्रदान करने के लिये अध्यापकों को आवश्यक है कि वह भारत के मान-चित्र के साथ ही साथ संसार का मानचित्र भी अपने साथ रक्खें और फिर संसार के मान चित्र में भारत का स्थान समझाते हुये विद्यार्थियों को भूगोल की शिक्षा प्रदान करें। सब से पहले भूगोल के विद्यार्थी को स्थान का ज्ञान होना आवश्यक है उसके बाद वहां की भूमि तथा जनसंख्या का बताना ज़रूरी है क्योंकि इन्हीं बातों पर संसार के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रश्न निर्भर रहते हैं।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ अक्टूबर—१९४१ रूम सागर में जर्मन बम्बवर्षक विमानों ने ब्रिटिश पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया। मास्कों पर जर्मन विमानों ने आक्रमण किया जिसमें उसकी बड़ी हानि हुई।

२ अक्टूबर—नाज़ी सेना क्रीमिया की ओर बढ़ी। फिन सेना ने पेट्रोज़ावाडस्क पर अधिकार प्राप्त कर लिया। ईरान के भूतपूर्व राजा ने इरान छोड़ दिया। उसके सामान की तलाशी बन्दरअब्बास पर हुई। खरकोव रूसी नगर जर्मन आक्रमण द्वारा खतरे में हो गया। पोलटावा के मध्य भीषण युद्ध हुआ।

३ अक्टूबर—नाज़ी विमानों ने उजाली रात में ब्रिटिश तट पर आक्रमण किया। हिटलर ने रूसी युद्ध सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया और बतलाया कि २५ लाख रूसी सेना गिरफ़्तार हो चुकी है। हिटलर ने अपने सहायक राष्ट्रों से शीतकाल के आक्रमण में सहायता के लिये अनुरोध किया।

४ अक्टूबर—लेनिनग्राड के सामने रूसी सेना जर्मन सेना का डटकर सामना किया। उत्तरी-पश्चिमी मोर्चे की ओर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। इंगलिश चैनल ने नाज़ी पथरक्षक सेना तथा आस्टेण्ड बन्दरगाह पर ब्रिटिश बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया और एक जहाज़ को जला दिया। इंगलैंड के पूर्वी जिलों पर जर्मन बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया।

५ अक्टूबर—दक्षिणी यूक्रेन में रूसी सेना ने आक्रमण किया। नीप्रोपेट्रोव्स्क स्थान पर भीषण टैंक युद्ध हुआ। करेलियन स्थमस पर नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। मास्को और लेनिनगाड पर भीषण बम्बवर्षा की गई।

६ अक्टूबर—उत्तर और दक्षिण रूसी सेना में धावा मारा। लेनिनग्राड से नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। दक्षिणी यूक्रेन ने रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया।

७ अक्टूबर—मास्को और खारकोव रूसी नगरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर भीषण नाजी सेनायें बढ़ीं। उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर से जर्मन सेनायें मास्को की ओर बढ़ीं। हिटलर ने शीत काल के पहले ही वालगा तक पहुँचाने का निश्चय किया। रूम सागर में तेरह शत्रु जहाज डुबाये गये।

८ अक्टूबर—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। मास्को की ओर नाजी सेनायें बढ़ीं। मध्यवर्ती क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। रूज़वेल्ट ने कांग्रेस के नेताओं को सलाह दिया कि तटस्थता के नियम को बदल कर अमरीकन व्यापार के जहाज़ों को हथियार बन्द करना चाहिये।

जर्मन सेना का भीषण आक्रमण हुआ। व्याज़मा और ब्रीयन्स्क नगरों में लड़ाइयां हुईं। कई रूसी सेनायें घेर ली गईं। रूसी लोगों ने ओरेल को खाली कर दिया। टिमोशिन-को रूसी जनरल ने प्रत्याक्रमण करने की तयारी किया।

९ अक्टूबर—इंगलैंड, अमरीका और डच पूर्वी द्वीप समूह ने मिल कर जापान को तेल भेजना बन्द कर दिया। मध्यवर्ती रूसी सीमा पर भीषण संग्राम हुआ। जर्मन समाचार के अनुसार टिमोसिनको रूसी जनरल की सेना घेर ली गई। रूसी पूर्वी सीमा की स्थिति जटिल हो गई। नाज़ी समाचार के अनुसार ७० डिवीजन रूसी सेना घेर ली गई।

टर्की और जर्मनी के मध्य सामान परिवर्तन करने वाली संधि हुई।

१० अक्टूबर—अजब सागर के बन्दरगाहों पर नाज़ी अधिकार हो गया। जर्मन सेना मास्को की सड़क पर मास्को की ओर बढ़ी। व्याज़मा रण-क्षेत्र में नाज़ी सेना को सफलता प्राप्त हुई। लेनिनग्राड क्षेत्र में रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया। रूस को सहायता देने के लिये अमरीका में बिल तयार करके सेनेट के सामने रक्खा गया।

११ अक्टूबर—तूला नगर (जो मास्को और ओरेल के मध्य में है) पर नाज़ी सेना का अधिकार हो गया।

२०० ब्रिटिश बम्ब वर्षक वायुयानों ने रूह प्रान्त पर धावा मारा। राटर्डम आस्टेण्ड और डंकिर्क के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। तोबरक प्रान्त में नाज़ी टैंकों ने भ्रमण किया।

१२ अक्टूबर—मास्को नगर पर अधिकार करने के लिये रात दिन लगातार युद्ध होता रहा। ओरेल व्याज़मा और ब्रीयन्स्क के चारों ओर युद्ध हुआ। नवीं तथा अठार-हवीं रूसी सेना नष्ट कर दी गई। रूस की स्थाई सेना का अधिकांश भाग मध्यवर्ती क्षेत्र की ओर भेजा गया।

१३ अक्टूबर—जर्मन सेना ने रूस के रण स्थान में १४ हजार टैंकों का प्रयोग किया। जर्मन सेना सफलता पूर्वक मास्को नगर की ओर बढ़ती गई। २ लाख रूसी सेना पकड़ी गई। यूक्रेन में रोस्टोव नगर की ओर नाज़ी सेना बढ़ी। ब्रीयन्स्क नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। लेनिन-ग्राड रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने पुनः आक्रमण किया परन्तु आक्रमण रोक दिया गया। रूस की परिस्थिति जटिल हो गई।

१४ अक्टूबर—व्याज़मा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मास्को रण स्थल से रूसी सेना पीछे हट गई। नाज़ी लोगों का कहना है कि उन्होंने ३ लाख ५० हज़ार रूसी सैनिकों को गिरफ्तार किया। लेनिनग्राड रणक्षेत्र में जर्मन आक्रमण तथा रूसी प्रत्याक्रमण हुआ।

बवेरिया, राइनलैंड तथा और दूसरे प्रान्तों पर ३०० ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। अटलांटिक सागर में एक पुर्तगाली जहाज़ डुबाया गया।

ब्राएंस्क प्रान्त में कुछ जर्मन टैंक नष्ट कर दिये गये। मास्को से ६३ मील की दूरी पर नाज़ी सेना रोक दी गई। जर्मन तोपें मास्को रक्षक सेना की तोपों की पहुँच में आ गईं। रूम सागर में शत्रु के सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर ब्रिटिश सबमेरिनों ने धावा मारा और तीन जहाज़ डुबा दिये।

१५ अक्टूबर—नार्वे तट के समीप शत्रु जहाजों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। डच तट के लेहेवरे शत्रु डाक पर ब्रिटिश विमानों का आक्रमण हुआ। जापान के प्रधान मन्त्री ने एक सभा किया जिसमें जटिल राजनैतिक प्रश्नों पर विचार किया गया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश जहाजों पर शत्रु हवाई टारपीडो ने धावा मारा परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

१६ अक्टूबर—मास्को की दशा शोचनीय हो गई। बहुत सी मशीनें आदि फौजी सामान नाजी सेना के हाथ लगा। जर्मन सेना मास्को से ६५ मील पश्चिम १०० पश्चिम और २०० मील दक्षिण की ओर तक पहुँच गई। कलीनिन, व्याज़मा, ब्रीयन्स्क, ओरेल और यूक्रेन आदि रण-क्षेत्रों में घोर संग्राम हुआ।

१७ अक्टूबर—सोवियट सरकार ने मास्को छोड़ दिया नगर के बाहरी रक्षक क्षेत्र में आग लगा दी गई। जर्मन तथा रूस दोनों की बड़ी हानि हुई। रूमानिया की सेना ने ओडेसा बन्दरगाह में प्रवेश किया। ओडेसा की गलियों में युद्ध हुआ। काज़न रूस की नई राजधानी बनाई गई। लेनिनग्राड में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की सरकार में परिवर्तन हुआ। जापान की नई सरकार बनाई गई और कोनोये की सरकार ने स्तीफा दिया। नई सरकार के बनने से अमरीका पर आक्रमण की सम्भावना है। आइसलैंड के दक्षिण पश्चिम अमरीकन विध्वंशकारी जहाज़ डुबाया गया।

१८ अक्टूबर—जनरल तोजो ने जापान की नई सरकार बनाई। साइबेरिया अथवा दक्षिण की ओर जापानी आक्रमण की सम्भावना है। मन्चूरिया में दस लाख जापानी सेना एकत्रित की गई। ओडेसा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मध्यवर्ती रणक्षेत्र की सीमा को तोड़ दिया। कलीनिन क्षेत्र में नाज़ी सेना का आगे बढ़ना रोक दिया।

१९ अक्टूबर—मास्को के चारों ओर दृढ़ किलेबन्दी की गई। रूसी सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ शत्रु का सामना किया जिससे नाज़ी सेना की बड़ी हानि हुई। जर्मन सेना ने भीषण आक्रमण किया। रूस जवांमर्द बहादुरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा अपना बलिदान चढ़ाकर किया। ओडेसा नगर बम्ब वर्षा के कारण अंगारों का ढेर बना दिया गया।

२१ अक्टूबर—मास्को नगर के सामने नाज़ी सेना रोक दी गई। रूसी सरकार कुइब्रोशेव चली गई। रूसियों ने प्रत्याक्रमण करके कई नगरों पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना काकेशस की ओर बढ़ने लगी। उसका लक्ष्य रोस्टोव नगर पर है। मेसेसाइड प्रान्त में नाज़ी बम्ब वर्षकों ने आक्रमण किया। आइसलैण्ड के समीप उत्तरी अटलांटिक सागर में और दक्षिणी अटलांटिक में अफ्रीका के तट के समीप जर्मन सबमेरीन द्वारा अमरीकन जहाज डुबाये गये।

२२ अक्टूबर—मध्यवर्ती रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने मैजिस्क स्थान पर रूसी लाइन तोड़ दिया। स्टालिनो नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। मास्को का युद्ध पहले की भांति होता रहा। कलीनिन पर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। जर्मन सेना का कहना है कि बाल्टिक सागर के डगोये द्वीप पर उन्होंने अधिकार कर लिया।

२३ अक्टूबर—तगनेराग नगर को रूसियों ने खाली किया। मास्को सीमा पर जर्मन सेना रोक दी गई। रूसियों का प्रतिकूल आक्रमण हुआ। डोनेज़ बेसिन की ओर जर्मन सेना बढ़ी।

जापानी सेना ने थाई सीमा के किलेबन्दी वाले स्थानों पर अधिकार कर लिया।

२४ अक्टूबर—मास्को की रक्षक सीमा को नाज़ी सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना मास्को से ३८ मील की दूरी पर रह गई। कलीनिन नगर की गलियों में युद्ध हुआ। क्रीमिया में नया आक्रमण आरम्भ हुआ।

जापान ने संयुक्त राष्ट्र से लड़ने की तयारी किया। जापान अपना घेरा डलवाने के लिये तयार नहीं है वह उसका विरोध अपनी पूरी शक्ति के साथ करेगा।

२५ अक्टूबर—संयुक्त राष्ट्र के पर राष्ट्र मन्त्री कर्नल वाक्स ने भाषण दिया कि जापान के दूसरे देशों में फैलाव की नीति के कारण सुदूर पूर्व में युद्ध की पूर्ण सम्भावना है। जर्मन सेना रोस्तोव नगर की ओर बढ़ी। मास्को नगर के लिये घोर संग्राम हुआ। क्रीमिया में नाज़ी सेना का प्रवेश रोक दिया गया। डोनेज प्रान्त जर्मन अधिकार में चला गया।

२६ अक्टूबर—नाज़ी सेना के समाचार के अनुसार खारकोव नगर पर नाज़ी अधिकार हो गया। डोनेज़ बेसिन में घोर संग्राम हुआ। मास्को सीमा पर नवीन नाज़ी सेना पहुँची। मोजेस्क प्रान्त में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। क्रीमिया में रक्षक लाइन तोड़ने के लिये नाज़ी सेना ने भरसक प्रयत्न किया।

आर० ए० एफ० (ब्रिटिश) विमानों ने नैपुल्स के ऊपर आक्रमण किया और हज़ारों पौण्ड के बम्ब गिराये।

२७ अक्टूबर—डोनेज़ बेसिन के लिये रूसी सेना तथा जर्मन सेना में घोर संग्राम हुआ। मालो-यारोस्लावेज़ के समीप रोक दिये गये। रोस्टोव और खारकोव नगर से रूसी सेना हटाई गई।

२८ अक्टूबर—खारकोव के समीप से सेना हटाई गई। मास्को से ४० मील की दूरी पर घोर संग्राम हुआ।

लेनिनग्राड रणक्षेत्र सीमा में स्थानीय विजय रूसियों को प्राप्त हुई।

ईरान होकर युद्ध-सामग्री ब्रिटिश सरकार द्वारा रूस भेजी गई। फिनलैंड की खाड़ी में दो सोवियट विध्वंसकारी जहाज़ डुबाये गये।

प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जल सेना दिवस (नैवी डे) के दिन भाषण में कहा कि हिटलर का अमरीका सम्बन्धी गुप्त मानचित्र उसे मिल गया है जिससे हिटलर की अमरीका सम्बन्धी भावना का साफ तौर पर पता चलता है। रूज़वेल्ट ने अमरीकन तटस्थता नियम के रद्द करने की घोषणा की और कहा कि व्यापारिक जहाज़ों की रक्षा के लिये आवश्यक है कि जैसे ही शत्रु जहाज़ दिखलाई पड़े उस पर गोलों की बौछार आरम्भ कर दी जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose: "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents: Articles are published on varied topics of geographical interest: Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department: The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools: The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances: Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य	३)
विदेश में	५)
एक प्रति का	।-)

नवम्बर १९४१

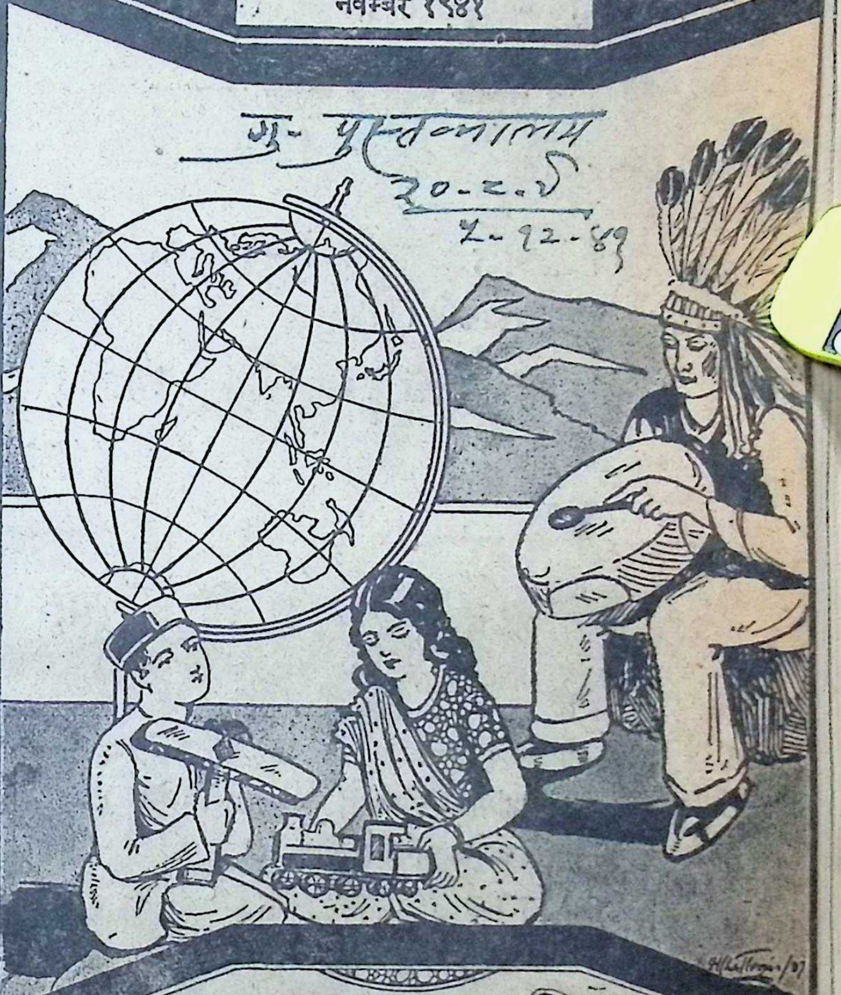

गु० पुस्तकालय
२०.८.४
५-१२-४१

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian: Rs. 3/-
Foreign: Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी.ए.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगी तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा आसानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ॥=) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित ॥) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य ‐)॥

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १।) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—प्रवाल या मूँगा	१
२—एक फ्रांसीसी कहानी (राज कुमारी रासेटी)	५
३—अफ्रीका का दरियाई घोड़ा	८
४—वर्तमान सुरँग	१०
५—गोटा कैनाल (नहर)	११
६—हिस्पनिओला	१५
७—१९२९ ई० के पश्चात् योरुपीय मानचित्र में परिवर्तन	२१
८—समालोचना	२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] मार्गशीर्ष, सं० १९९८, नवम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ७

प्रवाल या मूँगा

प्रवाल नाम का एक खास कीड़ा समुद्र में होता है। इस छोटे कीड़े अथवा कीट का ढांचा बड़ा मज़बूत होता है। उसका ढांचा एक छिछले प्याले की भांति होता है। यह ढांचा मूँगे से भली भांति जुड़ा रहता है। ढांचा समीपवर्ती अपने दूसरे पड़ोसियों से भी अच्छी तरह जुड़ा रहता है। इस प्याले के बीच से उसके किनारे तक पतले पतले बहुत से पत्ते रहते हैं जो भीतरी भाग को बहुत से भागों में बाँट देते हैं। प्रत्येक भाग को कीड़े के मांस वाले भाग से भोजन मिलता रहता है। यही जीवित भाग प्याले के बाहरी हिस्से को भी ढके रहता है। बाहर चारों ओर रोंगटे से रहते हैं। यह रोंगटे जीवधारी होते हैं। इनके बीच में प्रवाल का मुँह रहता है।

यद्यपि मूँगे के और कीड़ों की सूरत बहुत कुछ एक दूसरे से भिन्न होती है तो भी हम कह सकते हैं कि उन सभों की बनावट लगभग उसी भांति होती है जैसा कि ऊपर बताया गया है। कीटों की भिन्नता के कारण ही मूँगे की दीवार बनती है और उसमें सुन्दरता आती है।

मूँगे की दीवार

प्रवाल दीवार को बनाने वाले समस्त प्रवाल अलग होते हुये भी एक दूसरे से मिले रहते हैं। उनका नरम भाग एक दूसरे से सम्बन्ध रखता है। इस लिये जब कोई कीड़ा भोजन करता है तो वह स्वयम् अपने को तो बढ़ाता ही है अपने साथ साथ समस्त मूंगे की दीवार के कीड़ों को अपनी शक्ति का कुछ न कुछ भाग बांटता जाता है। इस लिये वह कीड़ा स्वयम् अकेले पूर्ण रूप से एक छोटा कीड़ा तो है पर वह उस बड़े कीड़े का केवल एक भाग मात्र है जिससे मूंगों की दीवार बनती है।

बहुत से मूंगे अपने निवास स्थान अलग अलग बनाते हैं। मूंगे के कीड़े के अन्दर से दूध की भांति एक रस निकलता है। यह रस स्वयम् कीड़ा बन जाता है और फिर इसके भीतर से दूसरे कीड़े बनते हैं। इस प्रकार बृक्ष की भांति यह तेजी के साथ बढ़ता जाता है।

एक दूसरे प्रकार का मूँगे का कीट होता है जिसका मुंह बीच में संकरा हो जाता है। उसके बाद उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नली बन जाती है जो मुंह को दो भाग में बाँट देती है। धीरे धीरे नली गहरी होती जाती है और समस्त मूँगे के कीड़े को बीच से दो भागों में बाँट देती है। इस प्रकार एक शरीर से उत्पन्न होते हुये और मिले हुये भी दो मूँगे के कीड़े ढांचे बन जाते हैं। इसी प्रकार के बार बार बांट से प्रवाल मस्तिष्क बनता है जिसके भीतर मक्का की भांति मूँगे का ढांचा बढ़ता है। मूंगे का मस्तिष्क मनुष्य की भांति होता है।

ग्रेट बैरियर रीफ (बड़ी प्रवाल दीवार)

क्वीन्सलैंड के उत्तरी-पूर्वी तट पर ग्रेट बैरियर रीफ (मूंगे की दीर्घ दीवार) है। यह १२ मील लम्बी है। यह मूँगे द्वारा बने हुये स्थानों में सबसे बड़ी है। इस बड़ी दीवार का क्षेत्रफल एक लाख वर्गमील है। यह मरे हुये कीटों तथा उनसे उत्पन्न कीड़ों के ढांचों से बनी है।

इस बड़ी दीवार तथा आस्ट्रेलिया के बीच द्वीप के झील की भांति एक नहर है। इस नहर की चौड़ाई २० से ७० मील तक है। पानी की गहराई कहीं कहीं ४०० फुट है। इस नहर में बड़े बड़े जहाज आकर रुकते हैं। कभी कभी इस बड़ी दीवार में प्राकृतिक जल-मार्ग दीवार को पार करते हुये बन जाते हैं जिनके भीतर जहाज सुरक्षित रूप से घुस सकते हैं।

इस बड़ी दीवार की अवस्था निर्णय करना कठिन है परन्तु सचमुच ही सैकड़ों सदियां व्यतीत हुई जब कि प्रथम कीट समुद्र के नीचे चट्टान पर जाकर लगे थे और उन्होंने अपना बड़ा कार्य आरम्भ किया था। आज उन्हीं की संतान के ढांचों का भार करोड़ों टन है।

यह बड़ी दीवार अपनी बड़ाई तथा उत्पत्ति के कारण ही विचित्र नहीं है वरन् वह अपने अनोखे रंगों के कारण है। जब मनुष्य उसके दृश्य को एक बार देख लेता है तो फिर उसका दृश्य उसकी आंख से कभी नहीं हट सकता। वह एक बहुत बड़ी वाटिका सी है जिसके भीतर लाल, पीले, नारंगी रंग के हरे गुलाबी आदि भांति भांति के पुष्प खिले हुये हैं।

जब दीवार के समीप लोग पहुँचते हैं तो उन्हें मूँगे के भिन्न भिन्न प्रदेश दिखाई पड़ते हैं। यह प्रदेश वृक्ष की भांति होते हैं। डालियां, टहनियां निकली रहती हैं। मालूम होता है कि वह शायद कोई जादू का बन है। उनकी सूरत अद्भुत और निराली होती है।

तारागण वाले प्रवाल के प्रदेश बड़े विचित्र तथा प्रसिद्ध हैं। इनमें से कितने ही बड़े गोले, बराबर धरातल वाले पत्थर की भांति होते हैं।

एक दूसरा नली की शरीर वाला मूंगा होता है। इसमें प्रत्येक कीड़े में एक रस वाली नली होती है। यह सभी नालियाँ एक दूसरे से मिली रहती हैं और एक बड़े शरीर के बाँसुरियों की भांति प्रतीत होती हैं। नलियों का रंग गहरा लाल होता है। जीवित कीटों का रंग गुलाबी लाल होता है। एक प्रकार के दूसरे कीट होते हैं जो बड़े तेज होते हैं। वह अपनी शाखें ऊपर की ओर स्तम्भों की भांति फेंकते हैं। यह स्तम्भ बीस बीस फुट के होते हैं। इन्हीं स्तम्भों के सिरे पर कोरल प्रदेश बसता है। यह चिड़ियों के एक बड़े लाल घोंसले की भांति होता है। इन कीटों को पोराइट कहते हैं। यह गर्म स्थानों में पाये जाते हैं। ग्रेट बैरियर रीफ में यह पोराइट लीलाक पुष्प भूरे, गहरे पीले या लाल रंग के हैं। पश्चिमी द्वीप समूहों के पोराइट गहरे नीले अथवा हरे हैं।

मूँगों का रंग भांति भांति का क्यों होता है यह निर्णय करना अभी कठिन है। मूङ्गों के द्वीप और दीवारों में जो झीलें पाई जाती हैं उनमें भांति भांति की रंगीली मछलियां रहती हैं जो अपने रंगों के कारण अपने को वैरियों से बचाये रहती हैं। इनका रंग बड़ा भड़कीला तथा मनोहर होता है।

मूँगे की चट्टानें उन्हीं स्थानों में पाई जाती हैं जहां पर उनका बढ़ना और रुकना सम्भव होता है। यह उन्हीं स्थानों में होते हैं जहां समुद्र का ताप ६८ अंश से नीचे नहीं होता है। इस कारण गर्म स्थानों के समुद्रों में भी जहां कहीं समुद्र के नीचे अधिक शीत धारायें पाई जाती हैं वहां पर प्रवाल की चट्टानें नहीं पाई जाती हैं। प्रवाल चट्टानों के पाये जाने की दूसरी बड़ी शर्त यह है कि समुद्र की गहराई १२० फुट से अधिक न होनी चाहिये। कोरल (प्रवाल चट्टानों) के लिये यह भी जरूरी है कि समुद्र ऐसा होना चाहिये जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीटों को भोजन ठीक प्राप्त हो सके। उस स्थान पर बालू, कीचड़ और कछारी मिट्टी का पाया जाना आवश्यक है। वहां पर स्वच्छ पानी न होना चाहिये। इसी कारण बड़ी नदियों के स्चुअरियों के समीप कोरल रीफर मूंगे की दीवार नहीं पाई जाती है।

उपरोक्त शर्तें मूंगे के लिये बड़ी आवश्यक हैं। इसी लिये यह अफ्रीका के पश्चिमी तट, अमरीका और समस्त अटलांटिक सागर में नहीं पाया जाता है। प्रशान्त महासागर के अन्दर कुछ मुख्य अक्षांशों के मध्य मूंगे की चट्टानें पाई जाती हैं। आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर बहुत ज्यादा प्रवाल दीवारें और द्वीप हैं जिनमें बड़ी मूंगे की दीवार की भी गणना है। सालमन, एलिस, न्यूगोलडोनिया आदि बड़े प्रवाल द्वीप हैं जो इस भाग में पाये जाते हैं।

जिस भाग में मूंगा पाया जाता है उसे कोरल सी (मूंगे का समुद्र या प्रवाल समुद्र) कहते हैं। यह समुद्र न्यूगिनी तक फैला हुआ है। फ्लाई और दूसरी नदियों के स्वच्छ पानी के कारण पापुवा के दक्षिणी तट पर कोरल चट्टानें इसी कारण नहीं बन सकतीं।

हिन्द महासागर में लकाद्वीप, मालद्वीप, चागोस द्वीप समूह, कोकास कीलिंग द्वीपसमूह, सेसेलीस, मेडागास्कर द्वीप की मूंगे की दीवारें और मौरीटियस आदि प्रवाल के बने हैं।

पश्चिमी द्वीप समूह, ब्राज़ील और फ्लोरीडा के तट के समीप बहुत सी प्रवाल दीवारें हैं। बरमूदा का द्वीप भी प्रवाल का बना हुआ है परन्तु यहां के मूँगे विश्वतरेखा के प्रवालों से कहीं भिन्न हैं।

मूंगे के विषय में प्राकृतिक अध्यापकों की खोज

कोरल रीफ (प्रवाल दीवार) की विशेषताओं के कारण प्रकृति के अध्यापक लोगों का ध्यान उसी ओर आकर्षित होगया और उन्होंने उसके तह तक पहुँचने का प्रयत्न किया।

प्राचीन प्रकृति के ज्ञानियों का विश्वास था कि मूंगे की चट्टानें समुद्र के तह से ठोस बनाती हुई ऊपर आई हैं। संस्कृति साहित्य में मूंगा "रत्नवृक्ष" अथवा "स्फुट विद्रुम" के नाम से प्रसिद्ध है। इससे जान पड़ता है कि हमारे पूर्वज इसे उद्भिद् सृष्टि के अन्तर्गत गिना करते थे। परन्तु बाद की खोज से सिद्ध हुआ कि पालीप (कीट अथवा प्रवाल कीड़ा) १२० फुट गहरे समुद्र के नीचे गहराई में नहीं अंकुरित हो सकता। इस लिये यह निर्णय किया गया कि मूंगा पानी के भीतर डूबी हुई चट्टानों या आग्नेय पर्वत की बढ़ी हुई पानी के भीतर १२० फुट नीचे वाली चट्टानों पर ही होता है यद्यपि इस बात का पता लगाना कठिन होगया कि समस्त गर्म प्रदेश में यह चट्टानें १२० फुट की गहराई पर ही क्यों पाई जाती हैं।

बीगले की समुद्री यात्रा के समय चार्ल्स डर्बिन मूंगे की चट्टानों के बनने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। अध्ययन करने के पश्चात् उसने अपनी खोज मूंगे के सम्बन्ध में संसार के सामने रक्खी। उसने मूङ्गों की चट्टानों के तीन भाग बतलाये हैं।

१—झालदार चट्टानें बहुत छोटी होती हैं और द्वीप के चारों ओर अथवा किनारे पर बनती हैं। गर्म देशों में इस प्रकार की चट्टानों की अधिकता है और यह चट्टानें गहरी खाड़ियों द्वारा समूह से अलग नहीं रहती हैं।

दूसरी मूंगों को दीवारों की चट्टानें होती हैं यह स्थल से दूर होती हैं। यह गहरी खाड़ियों द्वारा स्थल से अलग होती हैं। समुद्र की गहराई में होने के कारण इन चट्टानों को बढ़ने का अच्छा अवसर मिलता है। यह सारी बातें आस्ट्रेलिया के ग्रेट बैरियर रीफ (मूंगे की बड़ी दीवार) में पाई जाती हैं। वृत्ताकार एक और प्रवाल बैरियर रीफ होती है। यह द्वीपों में उथले पानी में होती है परन्तु स्थल से एक स्थली गहरे समुद्र द्वारा अलग रहती है।

तीसरी भांति की मूंगे की चट्टान लच्छेदार होती है। अधिकतर प्रवाल द्वीप अधिकतर इसी के बने हैं। इसका आकार लच्छेदार घोड़े की टाप की भांति होता है। जिस प्रकार घोड़े की टाप आगे और पीछे खुली रहती है उसी प्रकार यह चट्टानें भी आगे पीछे खुली रहती हैं। यह चट्टानें वृत्ताकार प्रवाल चट्टानों की भांति ही होती हैं परन्तु अन्तर केवल यह होता है कि जिस झील के चारों ओर यह होता है उसके बीच में कोई द्वीप नहीं होता है।

ज्वारभाटा के समय प्रवाल चट्टानें भलीभांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी जा सकती हैं। इन चट्टानों पर बालू, मिट्टी, लकड़ी, मरे मूंगे आदि जमा होते रहते हैं और पुरानी होने पर बढ़ते बढ़ते यह पानी के ऊपर आ जाती है। धीरे धीरे बहते हुये वृक्षों के तने, चिड़ियाँ आदि इन द्वीपों पर आने लगते हैं। चिड़ियों द्वारा बीज भी आजाते हैं और बनस्पति तथा पौदों का संचार होने लगता है। समय पा कर वहाँ पर लोग बस जाते हैं और वहाँ पर खेती होने लगती है बड़े नगर तथा बन्दरगाह बन जाते हैं।

डार्विन के कथनानुसार पृथ्वी के कुछ भाग नीचे की ओर धसते जाते हैं और कुछ ऊपर की ओर उठते रहते हैं। जब किसी डूबी चट्टान पर प्रवाल जमने लगते हैं या जड़ पकड़ लेत हैं और नीचे की चट्टान नीचे धसती है तो प्रवाल की चट्टान ऊपर की ओर ठहरने का प्रयत्न करती है इस प्रकार समय पाकर नीचे की चट्टान समुद्र में डूबती चली जाती है और ऊपर मूँगे की चट्टान छल्लेदार निकल आती है फिर वह या तो प्रवाल दीवार बन जाती है या प्रवाल द्वीप के आकार में वदल जाती है और वहां पर मानव बनस्पति संचार हो जाता है।

डार्विन के बचन को बहुत से वैज्ञानिकों ने मान लिया है और बहुतों ने उसका खण्डन भी किया है। खण्डन करने वालों में लूई अगासिज और सरजान मूरे हैं।

डार्विन का कहना है कि एक ही ऊँचाई परकैसे सभी प्रवाल चट्टानें हो सकती हैं इसी कारण उसने प्राचीन वैज्ञानिकों का विरोध किया था परन्तु मूरे का कथन है कि चट्टानें जब ऊपर आते आते १२० फुट गहराई पर आ जाती हैं तो वहाँ प्रवाल कीड़ा अंकुरित करने लगता है। चट्टान के किनारों पर जब प्रवाल के कीड़े जम जाते हैं तो वह समुद्र की लहरों से अपना भोजन पाकर किनारे किनारे अधिक बढ़ने लगते हैं। किनारे के अधिक बढ़ने के कारण बीच के कीड़े निर्बल हो जाते हैं और मर जाते हैं साथ ही साथ समुद्र की लहरों से वह साफ होते रहते हैं। प्रवाल सख्त होने के कारण न तो टूटता है और न बहता है। समय पाकर बढ़ते बढ़ते वह लच्छेदार (अंगूठी की भांति) ऊपर आ जाते हैं। इस कथनानुसार चट्टानें डूबती नहीं वरन् ऊपर उठती हैं। इस प्रकार बना हुआ उत्तरी प्रशान्त महासागर में पेल्यू द्वीप है।

दूसरे वैज्ञानिकों की खोज से पता चला है कि फ्लोडा की रीफ, फिजी द्वीप समूह, पश्चिमी हिन्द सागर और बड़ी प्रवाल दीवार आदि डूबती हुई चट्टानों पर नहीं वरन् ऊपर उठती हुई चट्टानों पर बने हैं।

कोरल चट्टानों तथा उनके बीच वाली झीलों में बोरिंग करके पता लगाने से भी यह ठीक तौर पर निश्चित नहीं हो सका कि प्रवाल की उपज डूबती चट्टानों पर या उठती हुई चट्टानों पर होती है।

लाल प्रवाल या मूँगा जिससे सभी परिचित हैं वह अधिकांश रूम सागर में पाया जाता है। यह सजावट के लिये प्रयोग होता है। आभूषणों में इसका प्रयोग होता है। रोमन लोगों का विश्वास था कि दुष्ट दृष्टि के प्रभाव से बचाने के लिये लाल मूंगा अद्वितीय औषधि है। बर्तमान इटैलियन, हिन्दुस्तानी अब भी इसको पहिनते हैं। पूर्वी देशों और भारत में इसका प्राचीन समय से ही प्रचार है और शुभ माना जाता है। रूम सागर के मूंगे पर अधिकार जमाने के लिये स्पेन, इटली और फ्रान्स में झगड़े हुये थे। आजकल ईजियन सागर के मूंगों पर फ्रान्स का अधिकार है। १० साल में मूंगे तयार होते हैं। इस लिये उसके ७ खण्ड कर दिये गये हैं और प्रत्येक साल एक भाग के मूंगे निकाले जाते है। गुलाबी रंग का अच्छा प्रवाल १२० पौ० (१८०० रु०) को बेंचा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

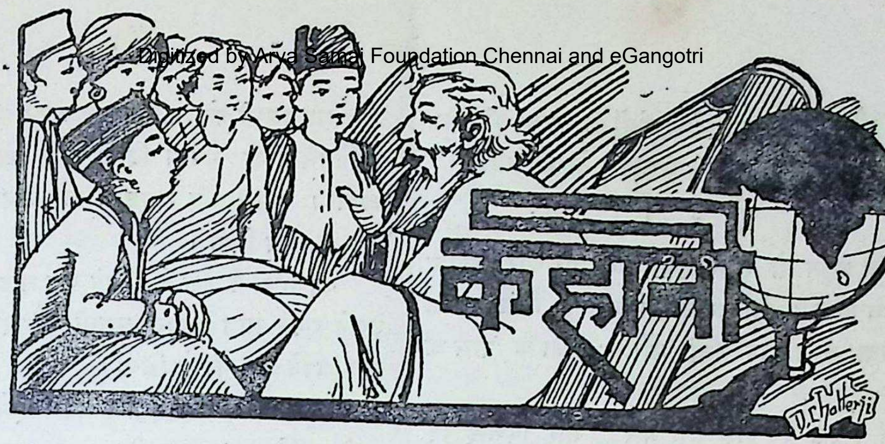

एक फ्रांसीसी कहानी

राजकुमारी रासेटी

(१)

किसी समय में एक राजा तथा उसकी रानी थी। उनके दो बड़े सुन्दर लड़के थे। थोड़े समय के पश्चात् उनके एक पुत्री पैदा हुई। लड़की का नाम रासेटी रक्खा गया। उसका भाग्य पूछने के लिये परियां बुलाई गईं।

परियों ने छोटी लड़की के भाग्य बतलाने में टाल मटोल किया परन्तु रानी की प्रार्थना पर उन्होंने कहा "रासेटी के कारण उसके भाइयों को कष्ट मिलेगा। हम इसमें किंचित मात्र भी सहायता नहीं कर सकतीं।"

रानी ने यह बात राजा से कही। राजा बड़ा दुखी हुआ। उसने पुत्री को मार डालने की सलाह दी।

रानी ने कहा नहीं हम उसे मारेंगे नहीं। मैं बन के चतुर तथा सुजान मनुष्य के पास जाती हूँ। वह मुझे इससे बचने का मार्ग बताएगा।

रानी जंगल में गई। वहां एक बड़ा ही चतुर मनुष्य रहता था। रानी ने सारा हाल उससे कहा। चतुर मनुष्य ने कहा "एक बड़ा गुम्बद वाला स्तम्भ बनाओ और उसी में पुत्री को रक्खो। उसको उसके बाहर कभी न जाने दो। यदि राजकुमारी उसमें बन्द रहेगी तो वह किसी को दुख न दे सकेगी। रानी घर गई और सारा वृत्तान्त राजा से कहा।

राजा ने शीघ्र ही एक बड़ा स्तम्भ बनवाया। उसी में उसने राजकुमारी को बन्द कर दिया। राजा, रानी और उनके दोनों पुत्र रोज़ाना उसे देखने जाते थे।

दोनों राजकुमार अपनी बहिन को बहुत प्यार करते थे। जैसे जैसे समय बीतता गया उनका प्रेम भी बढ़ता गया। आखिरकार वह युवा हो गई। वह बहुत सुन्दर थी। वह बड़ी गुणवती भी थी।

जब वह १४ साल की हुई तो राजा और रानी दोनों मर गये। बड़ा भाई राजा हुआ। राजगद्दी पर बैठने के पश्चात् सबसे पहले वह अपनी बहिन से मिलने गया।

राजकुमारी शिष्टता पूर्वक घुटनों के बल बैठ गई और उसने अपने भाई के हाथ चूमे। उसने कहा "भय्या मैंने आजतक इस कारागार में अपना जीवन अकेले व्यतीत किया है। अब मुझे स्वतन्त्र कर दो। राजा ने बहिन का हाथ चूमा और अपने साथ उसे बाहर ले आया। वे वाटिका में टहलने लगे।

वाटिका में फूल, फल और फव्वारे थे। उन्हें देख कर राजकुमारी मारे खुशी के नाचने लगी। वह और उसका कुत्ता दोनों कुछ समय तक वाटिका में कुलेलें करते रहे।

कुछ समय के बाद राजकुमारी जंगल में गई। वहां उसने मोर नाचते देखा। उसने वैसा दृश्य उसके पहले कभी न देखा था। वह मारे खुशी के तालियां बजाने लगी।

राजा और उसका छोटा भाई राजकुमारी के पास गये। उन्होंने उसकी प्रसन्नता का कारण पूछा। उसने मोर की ओर संकेत किया। राजा ने कहा बहिन यह मोर नाच रहा है।

राजा ने कहा यह जानवर कभी कभी मार डाले जाते हैं और खाये जाते हैं।

राजकुमारी ने कहा "ऐसे सुन्दर पक्षी को मारना बड़े लज्जा की बात है। मैं आप से कहती हूँ कि मैं मोरों के राजा से व्याह करूंगी। जब मैं मोरों की रानी हो जाऊँगी तो फिर किसी को मोर न मारने दूंगी।"

उसके भाई उस पर हंसने लगे। परन्तु राजकुमारी ने कहा "जो कुछ मैंने कहा है वह बिलकुल सत्य है। मैं अपने दृढ़ संकल्प से हट नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा और उसका भाई दोनों मोरों के राजा की खोज में चले। राज काज का काम राजकुमारी देखने लगी।

(२)

उन्होंने बहुत से स्थान घूम डाले पर मोर के राजा का पता न चला। आखिर उन्हें एक टिड्डा मिला। वह मार्ग जानता था। वह उन्हें मोर के राजा के पास ले गया।

मोरों के देश में चारों ओर मोर ही मोर दिखाई पड़ रहे थे। उनकी आवाज़ चारों ओर गूंज रही थी। वहाँ अपनी आवाज़ सुनना भी बड़ा कठिन था। राजा ने कहा यदि मोरों का राजा भी मोर ही होगा तो फिर उसका व्याह राजकुमारी के साथ कैसे होगा?

थोड़ी देर के पश्चात् उन्होंने देखा कि मोरों का राजा सोने के रथ पर चढ़ा चला आ रहा है। रथ को १२ मोर खींच रहे थे। मोरों के राजा का वस्त्र मोर पङ्ख का बना हुआ था। मोरों का राजा युवा था। वह बड़ा सुन्दर था। उसके बाल घुँघराले थे। उसकी आंखें नीली थीं।

जब मोरों के राजा ने दोनों भाइयों को देखा तो उन्हें बुलाया। दोनों भाइयों ने आकर झुक कर प्रणाम किया और कहा "महाराज हम बहुत दूर से आपको एक तस्वीर दिखाने आये हैं।"

उन्हें अपनी बहिन की तस्वीर दिखाई। मोरों का राजा उसे देख अचम्भे में पड़ गया। उसने कहा "क्या सचमुच ऐसी सुन्दर राजकुमारी दुनिया में है।"

बड़े भाई ने कहा वह इस तस्वीर से भी अधिक सुन्दर है। मोरों के राजा ने कहा "नहीं तुम हँसी कर रहे हो।"

छोटे भाई ने कहा महाराज मेरे ये बड़े भाई आप ही की तरह राजा हैं। हमारे एक बहिन है। यह उसी की तस्वीर है। यदि आप उसके साथ विवाह करेंगे तो हम आपको एक बोरा सोना देंगे।

मोरों के राजा ने कहा "अच्छा जैसा तुम कहते हो मैं वैसा ही करूंगा। उसे शीघ्र बुलाओ परन्तु जब तक वह न आयेगी तुम्हें जेल में रहना होगा। यदि वह तुम्हारे कहने के अनुसार सुन्दर नहीं होगी तो तुम लोगों को बड़ा कष्ट सहना पड़ेगा।"

राजा और उसका भाई दोनों जेल में डाल दिये गये। जेल में उनके साथ बड़ा अच्छा सत्कार किया जाता था। एक नौकर राजकुमारी को बुलाने के लिये भेजा गया।

राजकुमारी को समाचार पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने मित्रों को नेवता दिया और अच्छे अच्छे भोजन कराया। उसके बाद राजकाज का भार राज्य के एक चतुर वृद्ध को सौंप दिया।

वह मोरों के देश के लिये एक बोट में बैठ कर चली। उसने अपने साथ अपनी पुरानी नौकरानी उसकी लड़की और अपने कुत्ते को ले लिया।

बहुत दिनों की यात्रा के पश्चात् वे मोरों के देश के समीप पहुँचे। राजकुमारी तट पर उतरने के लिये तयार हुई।

(३)

वृद्धा नौकरानी बोट खेने वाली के पास गई और कहा यदि तुम जीवन भर धनी रहना चाहती हो तो राजकुमारी को आज रात को नदी में फेंकने में मेरी सहायता करो। मैं अपनी लड़की को राजकुमारी का भेष धारण करा दूंगी। उसके साथ मोरों का राजा व्याह कर लेगा। उसके बाद तुम अपनी बोट में जितना सोना आवे ले जाना।

जब आधी रात हुई तो उन्होंने राजकुमारी को उसके विस्तर तथा कुत्ते के साथ पानी में फेंक दिया। राजकुमारी विस्तर के ऊपर होने के कारण नहीं डूबी और वह बहती हुई चली गई।

नौका किनारे लगी। मोरों के राजा ने अपने नौकरानी का शुभागमन करने के लिये १०० रथ भेजे थे। उन रथों में शेर, भालू, बारासिंघे, भेड़िये, घोड़े, बैल, गदहे और मोर जुते हुए थे। राजकुमारी के लिये जो रथ था उसमें ६ नीले बन्दर जुते हुये थे।

नौकरानी ने अपनी लड़की को राजकुमारी के गहने और कपड़े पहना दिये किन्तु वह बड़ी कुरूपा थी। जब लोगों ने उसे देखा तो बड़े चकित हुये।

नौकरानी की लड़की ने नौकरों को डाटा और कहा, "मेरी ओर क्यों घूर कर देख रहे हो। जाओ और मुझे कुछ भोजन ले आओ।" उसने नौकरों के कान उमेठ दिये।

राजकुमारी के कोच के दोनों ओर मोरों की दोहरी कतार थी। वे "रानी चिरंजीवी हों" की ध्वनि करने के लिये रक्खे गये थे परन्तु वे "बड़ी कुरूपा है" कह कह कर चिल्ला रहे थे।

मोरों का राजा रानी से मिलने आया। वह अपने साथ राजकुमारी की तस्वीर भी ले आया। उसे देखना था कि रानी उस तस्वीर से अधिक सुन्दर है कि नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उसने बनी हुई रानी को देखा तो आग बबूला हो गया। उसने नौकरों से कहा "इस कुरूपा के भाइयों को मेरे किलों में कैद कर दो, उन्हें काल कोठरी में डाल दो" काल कोठरी में बहुत से जानवर थे। उसमें पानी भी गर्दन तक भर दिया गया।

उसके बाद राजा काल कोठरी के पास गया। उसने एक छेद द्वारा कहा। "तुम दोनों ने मुझसे कहा था कि तुम राजा और राजकुमार हो परन्तु तुम तो केवल भिखमंगे हो। तुम्हारे फांसी देने के लिये मैं रस्सी बनवा रहा हूँ"।

कैदी राजा ने उत्तर दिया 'क्यों, क्या मामला है, जो आप कहते हैं संभल कर कहिये। रही फांसी लटकाने की बात सो हमें फाँसी देने के पहिले आप दो तीन बार खूब विचार कर लीजियेगा।

दूसरे ही दिन दोनों कैदी जजों के सामने लाये गये। उनका मुकदमा हुआ और उन्हें उनके सिर काट लेने की सजा दी गई। बड़े भाई ने ७ दिन की छुट्टी मांगी। उसे छुट्टी प्रदान की गई।

(४)

जब सबेरा हुआ तो राजकुमारी की नींद खुली। अपने को पानी में बहता देख वह बहुत रोई और चिल्लाई। वह दो दिन तक इसी प्रकार बहती रही। जाड़े और भूक के मारे उसकी जान निकल रही थी। उसका कुत्ता उसके साथ था। वह रात दिन भौंकता रहा। उसके भय से बड़ी मछलियां राजकुमारी के समीप नहीं आ पाती थीं।

तीसरे दिन राजकुमारी की शय्या किनारे पर लगी। समीप ही एक गरीब का झोपड़ा था। वह मनुष्य बड़ा दयालु था। राजकुमारी ने अपने हाथ बढ़ाकर निकालने की प्रार्थना की।

वह अपनी गर्दन भर पानी में उतरा और शय्या को खींच कर किनारे ले आया। वह रसोई के अपने झोपड़े में ले गया। उसे आग तपाया। उसने उसे साफ कपड़े पहिनने को दिये। वे कपड़े मोटे थे। रासेटी ने वैसे कपड़े न पहिने थे।

उसके बाद राजकुमारी ने सारी कहानी कह सुनाई। उस गरीब ने कहा "आप मेरे पास मोटा भोजन खाकर कैसे रह सकती हैं।" रासेटी ने उससे एक टोकरी मांगा। उसे उसने कुत्ते के गले में बांध दिया और कहा "नगर में सबसे अच्छे घर में जाओ और मेरे लिये भोजन ले आओ।" कुत्ता गया और शीघ्र ही सुन्दर भोजन लेकर लौट आया। वह मोरों के राजा के भंडारे में गया था और वहीं से भोजन लाया था। राजा के रसोइये ने कुत्ते को देख लिया था। वह उसके पीछे दौड़ा और गरीब बूढ़े आदमी का झोपड़ा देख आया।

थोड़ी देर के बाद वह रसोइया बहुत से आदमी लेकर पहुँचा। उन्होंने, उस आदमी, राजकुमारी और कुत्ते को रस्सी में बांधा और रानी के पास ले गये।

राजा ने कहा "कल इन्हें भी उन दोनों आदमियों के साथ फांसी होगी।"

बूढ़ा आदमी राजा के पैरों पर गिर पड़ा और अपनी कहानी सुनाने की प्रार्थना की। राजा ने राजकुमारी की ओर देखा। जो बिलख बिलख कर रो रही थी। रासेटी राजकुमारी का नाम लिया तो राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उछलने लगा। उसके बाद वह राजकुमारी के पास गया और अपने हाथों से उसने रस्सी खोल दी।

वे लोग शीघ्र ही कारागार में गये और वहां जाकर दोनों दुखी भाइयों को देखा। वे लोग बैठे मौत की बाट देख रहे थे।

जब उन्होंने रासेटी को देखा तो उनका दुख सुख में बदल गया। नौकरानी, उसकी लड़की और मल्लाह शीघ्र ही बुलाये गये और उनकी सारी कहानी सुनाई गई।

दोनों राजा, राजकुमार और राजकुमारी रासेटी इतने खुश हुये कि नौकरानी को दण्ड देना भी भूल गये। उन्होंने उसे मुक्त कर दिया। नौकरानी ने भी अपने किये पर पछ-तावा किया और दुखी हुई।

उसके बाद रासेटी और मोरों के राजा का व्याह हुआ। १५ दिन तक खाना-पीना, गाना-बजाना होता रहा। उसके बाद सुखपूर्वक सब के जीवन व्यतीत हुये।

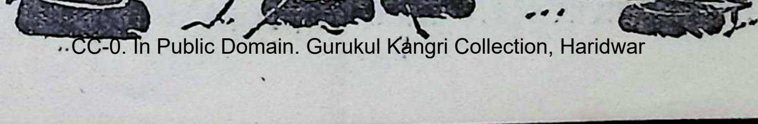

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका का दरियाई घोड़ा

दरियाई घोड़े को अंग्रेजी भाषा में हिप्पोपोटामस कहते हैं। यह इतना सुस्त तथा आनन्दपूर्वक बेफिक्री के साथ चलने वाला पशु होता है कि इसे देखने से प्रतीत होता है कि यह बड़े अच्छे स्वभाव वाला पशु है। उसके दांत बड़े लम्बे होते हैं। जितना ही अधिक हम उसे ध्यान पूर्वक देखते हैं उतना ही अधिक वह हमें सीधा मालूम होता है। उसके भीतर वही सीधापन तथा सुस्ती पाई जाती है जो एक मोटे मनुष्य में होती है।

मध्यवर्ती अफ्रीका की नदियों और झीलों में किसी चट्टान अथवा छोटे द्वीप पर दरियाई घोड़ा अपने परिवार के साथ धूप में आनन्दपूर्वक सोता हुआ देखा जा सकता है। वहां पर वह २० या ३० की संख्या में खेलते-कूदते, और तैरते या सोते हुये दिखाई पड़ते हैं। दरियाई घोड़े की मादा भी बड़ी मोटी होती है। बच्चे भी बड़े मोटे होते हैं। बच्चे अपनी मां की मोटी चौड़ी पीठ पर चढ़ जाते हैं और मां उन्हें लेकर जल में तैरती रहती है।

दरियाई घोड़ा अपने को किसी प्रकार भी परेशान करवाना पसन्द नहीं करता है। जब तक उसके रहने के स्थान में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं की जाती या उसे भय नहीं दिलाया जाता है वह मनुष्य पर आक्रमण नहीं करता है। शिकारी के ऊपर आक्रमण करते हुये बहुत कम दरियाइ घोड़े देखे गये हैं। यदि वह किसी प्रकार का खतरा देख लेता है तो पानी के भीतर गोता लगा कर नीचे चला जाता है। उसके परिवार वाले खतरे को थोड़ी थोड़ी देर में अपना सिर पानी से निकाल निकाल कर देखते रहते हैं परन्तु यदि दरियाई घोड़े को अपने परिवार पर कोई आपत्ति आती दिखाई पड़ती है तो वह बड़ा भयानक हो जाता है।

एक बार एक अंग्रेज़ महाशय जो दरियाई घोड़े की तसवीर खींचने के लिये गये थे उन्होंने मध्यवर्ती अफ्रीका के एक छोटी झील में लगभग १२ दरियाई घोड़ों को देखा। वह एक छोटी बोट लेकर एक अफ्रीकन बालक के साथ झील में गये। वह समीप से दरियाई घोड़े की तस्वीर खींचना चाहते थे। वह अपनी बोट को दरियाई घोड़ों के समूह के समीप ले गये। उन्हें एक बूढ़ा दरियाई घोड़ा बड़े ध्यान पूर्वक देख रहा था। उसे खतरा प्रतीत हुआ और उसने पानी में डुबकी लगाई।

दरियाई घोड़े दो प्रकार से आक्रमण करते हैं। एक तो यह कि वह जिस वस्तु पर धावा मारते हैं उसे अपने बड़े जबड़ों के मध्य दबा कर पीस डालते हैं या डुबकी लगा कर वह उस वस्तु के नीचे जा निकलते हैं और उसे उलट कर पानी में डुबा देते हैं। वह थोड़ी दूर पर पानी से सिर निकाल निकाल कर देखते जाते हैं।

डुबकी मारते ही अंग्रेज महाशय चौकन्ने हुये और उन्होंने अपनी बोट किनारे की ओर लौटाई। वह केमरे तथा तस्वीर का ध्यान तो भूल गये अब उन्हें अपनी जान के लाले पड़ गये। दरियाई घोड़े ने बोट को कोई भारी काली वस्तु समझा था जो उसे मारने को जा रही थी। इसी कारण वह तेजी के साथ नाव की ओर बढ़ रहा था। अंग्रेज महाशय अपने बालक मल्लाह की सहायता से तेजी के साथ बोट किनारे की ओर ले जा रहे थे। धीरे धीरे दरियाई घोड़ा नाव के समीप लगभग २० गज की दूरी पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया और दूसरी डुबकी में नाव उलट देने ही को था कि भाग्यवश झील के किनारे का उथला भाग आ गया। उथले भाग में वह तेज़ी से न चल सका, नाव फिर भी अपनी पूरी चाल से आ रही थी। आखिर अंग्रेज़ महाशय और वह बालक कूद कर किनारे जा खड़े हुये। दरियाई घोड़ा भी मजबूर होकर लौट पड़ा। इस प्रकार अंग्रेज महाशय की जान बची।

दरियाई घोड़ा झीलों के मध्य कछुओं, मगर और घड़ियालों के बीच देखा गया है। घड़ियाल उसे निगल सकते हैं फिर भी वह उनके बीच रहता है इसका रहस्य ईश्वर जाने।

दरियाई घोड़े का मुख्य बैरी मनुष्य है। अफ्रीका के निवासी उसे इस लिये मारते हैं कि वह उनके बाग़ में जाकर उनकी फसल तथा पौदों को नष्ट कर डालता है। दूसरे वह लोग कहते हैं कि दरियाई घोड़े का मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है। खासकर उसका पैर खाने में बड़ा मजेदार होता है। श्वेत चमड़े वाले लोग उसका शिकार चमड़े और दांत के लिये करते हैं। उसका चमड़ा छड़ी के ऊपर लगाया जाता है और उसके दाँत का भी प्रयोग किया जाता है परन्तु इनमें मनुष्य को अधिक मूल्य नहीं प्राप्त होता है।

ऐसे सीधे पशु को मारना अच्छा नहीं है इसी लिये लोग उसका शिकार कम करते हैं फिर भी शिकार खेलने वाले तो शिकार करने की आनन्द को प्राप्त करने के लिये शिकार किया ही करते हैं।

यह बड़ा इच्छुक पशु होता है और बार बार सिर निकाल कर देखता है। एक बार एक महाशय ने एक तालाब में एक दरियाई घोड़े को गोली मारा वह डूब गया, फिर दूसरा ऊपर निकला उसे भी उन्होंने पहला ही समझ कर गोली मार दिया। इसी प्रकार उन्होंने बारह गोलियां चलाईं। आखिर कुछ घंटों के बाद १२ दरयाई घोड़े किनारे पर मरे हुये देखे गये। हाथी की भांति हिप्पो (दरयाई घोड़ा) भी उस स्थान पर रहना छोड़ देता है जहां पर उसका एक भी साथी मारा जाता है।

वह किनारे पर रहना कम पसन्द करता है अधिकतर वह बीच में किसी छोटे द्वीप में रहना अधिक पसन्द करता है। जब वह विवश हो जाता है तभी किनारे पर रहता है। वह एकान्त स्थान पर रहना अधिक स्वीकार करता है। जल उसका घर है। वह जल के भीतर तेज़ी के साथ दौड़ सकता है और पानी के ऊपर फुर्ती से दौड़ सकता है। जब वह पानी के भीतर तेज़ी से दौड़ता है तो पीछे कीचड़ की रेखा बनती जाती है। मज़बूत से मज़बूत मनुष्य भी उसके बच्चे को नहीं पकड़ सकता है।

यद्यपि दरियाई घोड़ा अपना अधिक समय पानी में व्यतीत करता है और पानी का पशु है तो भी वह पानी के जीवों का शिकार नहीं करता है। वह मछलियों को नहीं मारता है। वह मांसाहारी पशु नहीं वरन् शाकाहारी पशु है। वह जब भूखा होता है तो किनारे पर जाता है और स्थल पर घास-पत्तियाँ आदि चरता है। वह पानी के भीतर सेवार आदि घास भी नहीं खाता है। वह अपना जीवन कट्टर सनातनी लोगों की भांति शाक-पात पर व्यतीत करता है। जब वह चरता है तो बड़े आनन्द पूर्वक जनवासी चाल से आहिस्ता आहिस्ता चरता हुआ चलता है। वह किनारे का प्रयोग केवल भोजन के लिये और कभी सोने के लिये करता है। वह सोने में हातिम (बहुत ज्यादा सोने वाला) या कुम्भकर्ण है। शायद वह किसी समय में स्थल का रहने वाला पशु रहा होगा।

ग्रीष्म ऋतु में छोटे ताल, नदियां और झीलें सूखने लगती हैं तो वह जल के बाहर दिन में बनों में रहता है और रात को पानी में आता है। जब उसके रहने का स्थान बिल्कुल सूख जाता है तो वह उसे छोड़ कर रातों रात यात्रा करता हुआ किसी दूसरे पानी वाले स्थान पर चला जाता है।

वह प्राकृतिक रूप से कष्ट सहने वाला या ख़तरे के समीप जाने वाला पशु नहीं है। वह किसी भी वस्तु पर बिना कारण आक्रमण नहीं करता है। कहीं कहीं पर दरियाई घोड़े पानी से दूर दो झीलों के मध्य बनों में पाये गये हैं। वह कभी कभी कीचड़ में भी घुसे रहते हैं परन्तु सभी दरियाई घोड़ों का यह स्वभाव नहीं होता है।

दरियाई घोड़े नदियों में स्वतंत्रता पूर्वक तैरते रहते हैं। उनका तैरना देखकर बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। वह देखने में बड़े अच्छे लगते हैं। दरियाई घोड़े यदि छेड़े न जावें तो वह मनुष्य के लिये कदापि भयावह न हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्तमान सुरंग

यद्यपि बहुत समय तक सुरंगें रक्षक अस्त्र मानी जाती थीं और १९०७ ई० के हेग नियम के अनुसार इनका बिछाया जाना नियमानुकूल माना जाता था परन्तु जर्मनी के हेग के नियम के विरुद्ध इसे आक्रमक अस्त्र की भांति भी युद्ध में प्रयोग किया है। आक्रमक अस्त्र की भांति जब सुरंगों का प्रयोग होता है तो फिर उसमें न तो मानव जाति की रक्षा हो सकती है और न अन्तर्राष्ट्रीय नियम की ही रक्षा की जा सकती है। जर्मन लोगों ने अन्तर्राष्ट्रीय नियम और मानवी नियम दोनों की परवाह नहीं की है।

सुरंगों को लगा कर उससे किसी भी जहाज की रक्षा करना कठिन है। जो लोग तोप चलाते हैं अथवा टारपीडो का प्रयोग करते हैं वह अपने निशाने को भली भांति समझ लेते हैं। यदि वह ऐसी दशा में किसी तटस्थ जहाज का निशाना लगाते हैं तो इससे यही सार निकलता है कि उन्होंने जान बूझ कर निशाना लगाया है। इसी कारण हेग का नियम बनाया गया था कि सुरंगों द्वारा किसी की भी पहचान नहीं की जा सकती इसलिये जहां कहीं भी सुरंग रक्षा के लिये लगाई जावें उसकी घोषणा संसार में कर दी जावे जिससे उस स्थान में तटस्थ जहाज न जावें।

इंगलैंड ने ग्रेट ब्रिटेन के समस्त पूर्वी तट पर सुरंगें बिछा दी हैं। उसका यह काम नियमानुकूल हुआ है क्योंकि उसने जितने स्थान में सुरंगें बिछाई हैं उसको संसार के सामने पत्रों द्वारा घोषित कर दिया है। उस स्थान पर तटस्थ राष्ट्र के जहाज नहीं जाते और यदि उस ओर जाना होता है तो सुरंग वाले क्षेत्र के किनारों से होकर जाते हैं। यदि उस क्षेत्र होकर तटस्थ जहाज जाते हैं तो उसका मतलब है कि वे तटस्थ नहीं हैं। यही हाल जर्मनी द्वारा घोषित किये हुये सुरंग क्षेत्रों का है।

परन्तु बिना घोषणा किये हुये जो सुरंगें जर्मनी ने लगाई हैं वह १९०७ के हेग नियम तथा हिटलर और ग्रेंड ऐडमिरल रेडर के वादों के विरुद्ध हैं। उनसे किसी भी तटस्थ जहाज का बचना कठिन है। उन सुरंगों की सफलता ही उनके गुप्त रहने में है। यदि तटस्थ जहाज ऐसी सुरंगों से बचना चाहें तो इसका मतलब यह है कि वे सदैव बन्दरगाह ही पर खड़े रहें।

गुप्त सुरंग क्षेत्र जर्मन पनडुब्बे युद्ध का प्रधान भाग है। यू-बोट जो सुरंगों को बिछाते हैं उनमें टारपीडो (जहाज तोड़ने का गोला) और तोप लगे रहते हैं। बहुत सी चुम्बकीय सुरंगें समुद्री वायुयानों द्वारा बिछाई गई थीं।

संकरे समुद्र में पनडुब्बे जहाज सुरंग बिछाते हैं। यह जहाज बड़े भयानक होते हैं। सुरंग भी इनके लिये बड़ी भयानक होती हैं। गत महायुद्ध में ब्रिटेन के ६ पनडुब्बे जहाज सुरंगों द्वारा डुबाये गये थे। इसके सिवा २१ पनडुब्बे जिन का पता नहीं लगा उनमें से अधिकांश सुरंग द्वारा ही नष्ट हुये थे। १९९ यू-बोट जो लौट कर इंगलैंड नहीं पहुँचे थे वे भी सुरंगों द्वारा नष्ट हुये थे। इसके सिवा और भी न मालूम कितने जहाज सुरंगों द्वारा डुबाये गये।

डोवर जल संयोजक और नार्वे तथा आर्कनीज के मध्यवर्ती समुद्र में सुरंगें लगाई गई थीं। इन दोनों स्थानों में जर्मन सबमरीनों (पनडुब्बे जहाजों) का जहाजी बेड़ा था। नार्वे तथा आर्कनीज के मध्यवर्ती समुद्र में इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने मिल कर ६२११७ सुरंगें लगाई थीं। इन दोनों स्थानों की घोषणा कर दी गई थी इसका लाभ जर्मनी ने उठाया। उस समय डूबे हुये पनडुब्बे जहाजों से बचने के लिये अधिक गहराई में बहुतायत संख्या में सुरंगों का बिछाना आवश्यक था।

बर्तमान सुरंगें एक दूसरे से जोड़कर स्थानीय दशा के अनुसार समुद्र के धरातल के कुछ नीचे ही बिछाई जाती हैं जिससे वे आक्रमणकारक जहाजों को पकड़ सकें। पनडुब्बे जहाजों के लिये पानी के नीचे अधिक गहराई में भी सुरंगें लगाई जाती हैं।

सुरंगों से टक्कर खाने पर पनडुब्बे जहाज शीघ्र ही फट जाते हैं। समुद्र के धरातल पर का जहाज तो टक्कर खाने पर एकाएक फटने से बच भी सकता है परन्तु सबमरीन (पनडुब्बा) जहाज कदापि नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच सकता। यदि सुरंग के टकराने से लेश मात्र भी सूराख पनडुब्बे में हो जाता है तो वह उसके लिये भयानक होता है। पनडुब्बे के ऊपर अथवा प्रकाश पहुँचाने वाले स्थान पर टक्कर लगने और सूराख होने से सबमरीन को शीघ्र ही ऊपर आना पड़ता है फिर समुद्र का पानी भीतर जाने से क्लोरियन (एक श्वासरोधक वाष्पीय पदार्थ) गैस पैदा हो जाती है। यह गैस मारक होती है। फिर सुरंग लगे हुये क्षेत्र में पनडुब्बे का चलना अथवा अधिक समय तक पानी के भीतर रहना भी अधिक हानिकारक हो जाता है। उसे सुरंगों से बचने का प्रयत्न करना आवश्यक होता है।

गोटा कैनाल (नहर)

यह नहर स्वीडन देश में है और नदियों, नहरों तथा झीलों को मिलाकर बनाई गई है। यह नहर स्वीडन के बड़े बन्दरगाह गोथेनबर्ग को स्टाकहोम राजधानी से मिलाती है। यद्यपि यह नहर स्वेज़ तथा पनामा नहरों की भांति बड़ी नहीं है और इसमें बड़े बड़े समुद्री जहाज़ नहीं चल सकते तो भी देश के अन्दर सामान ले आने ले जाने का यह बड़ा साधन है। यह नहर बड़ी ही चतुरता से बनाई गई है और मनोहर दृश्यों के बीच होकर जाती है।

यह नहर बराबर तथा समतल मार्गों में होकर नहीं जाती। इस नहर का मार्ग कहीं कहीं पर बहुत संकरा हो गया है। जब जहाज़ इन संकरे स्थानों में होकर जाते हैं तो और किनारों के बीच बहुत कम जगह खाली रह जाती है इसलिये उन्हें बड़ी चतुरता के साथ जाना पड़ता है। कहीं कहीं पर इन जहाज़ों को झालों द्वारा २०० फुट तक ऊपर जाना और फिर नीचे आना पड़ता है।

गोथेनबर्ग और स्टाकहोम के बीच इस नहर को केवल २४७ मील खोद कर बनाना पड़ा है। शेष नहर का भाग नदियों और झीलों को जोड़ कर बनाया गया है। सवारी वाले इस नहर में गर्मी के दिनों में चलते हैं और उन्हें गोथेनबर्ग से स्टाकहोम जाने में केवल २॥ दिन लगते हैं।

स्वीडन की भूमि के ८ प्रतिशत भाग में पानी है। यहां पर झीलें बहुत पाई जाती हैं। वेनेर की झील का क्षेत्रफल २१५० वर्गमील है। यह योरुपीय रूस में सबसे बड़ी झील है। वेनेर झील का क्षेत्रफल ७३० वर्गमील है। यह स्वीडन में दूसरे नम्बर की झील है। ये दोनों झीलें गोटा नहर प्रणाली में शामिल हैं।

टामस टेलफोर्ड स्काटलैंड के इञ्जीनियर ने इस नहर के खाके को बनाया था। जान एरिक्सन उस समय केवल १३ वर्ष का बालक था, वह पड़ताल करने तथा ड्राइंग बनाने में सहायता देने के लिये नौकर रक्खा गया था। एरिकसन का पिता नहर बनाने में काम करता था। इस नहर का बनाने वाला वाउन्ट वान प्लैटन है। एरिकसन के कार्य को देखकर प्लैटन का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया।

एरिकसन अपने जीवन काल में नई नई बातों का आविष्कारक हुआ और उसने बहुत से प्राचीन जहाज़ी बेड़े बनाये। एरिकसन ने स्क्रू प्राप्लर (ढकेलने वाला पेंच) बनाया। इसके बन जाने पर जंगी तथा और दूसरे जहाज़ों की बनावट बदल गई। एरिकसन ने मानीटर नामक जहाज़ बनाया था जिसने मैरीमेक नामक जहाज़ को अमरीकन गृह युद्ध में हराया था। एरिकसन ने ही तोप चलाने वाले जहाज़ों को बनाया था, जिससे जंगी जहाज़ी बेड़ों की नीति में बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है।

स्वीडन के मानचित्र को देखने से पता चलता है कि यदि यहां की दोनों बड़ी झीलों तथा और दूसरी छोटी झीलों को मिला दिया जाय तो वह जल मार्ग समुद्र तटों में मिल जायगा। यही अनुमान सदियों पहले किया गया था।

बिशप ब्रास्क ने १५२५ ई० में शाह को पत्र में लिखा था कि वर्ग और सोडर कोपिंग के बीच नहर बनाई जावे उसी के अनुसार नहर बनाने का काम आरम्भ हुआ था किन्तु बिशप देश छोड़ कर भाग गया था। चार्ल्स नवें के समय में चार्ल्स डिच का उद्घाटन हुआ था। यह रानम के झरने के पार गोटा नदी से मिलाई गई थी। यह नहर स्वीडन देश की सबसे प्राचीन नहर है।

समय समय पर लोगों के दिल में इस नहर को बनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात सूझी किन्तु यह काम ट्रोल हट्टे की नहर के खुलने तक समाप्त न हुआ। ट्रोल हट्टे नहर के खुल जाने से वेनर नदी और कैटेगाट के बीच मार्ग खुल गया और गोटा नदी में जो कठिनाइयां थीं वह सभी दूर हो गईं।

चार्ल्स डिच के बनाने में रानूम के प्रथम झरने को मार्ग से हटा दिया गया था किन्तु ट्रोल हट्टे के झरने की कठिनाई को दूर करने में बड़ा समय लगा।

प्रथम बार जो कोशिश की गई वह बिलकुल बेकार हो गई और बहुत हानि हुई। ५ साल के कठिन परिश्रम के पश्चात् १७५५ ई० में यह नहर लगभग समाप्त होने पर आ गई थी और केवल फ़्लाटबर्ग के झरनों के बांध बनाने का काम शेष रह गया था।

कहा जाता है कि यहां के किसान सोच रहे थे कि नहर बनने से उन्हें हानि होगी इसलिये जो लकड़ी के तख्ते बांध को रोकने के लिये इकट्ठे किये गये थे उसे किसानों ने नदी में फेंकना आरम्भ किया और इस प्रकार बांध टूट गया और सालों का परिश्रम बर्बाद हो गया था।

इसके बाद बहुत समय तक फिर काम आरम्भ करने का साहस न हुआ। सदी के अन्त में फिर काम लगाया गया और सफलता प्राप्त हुई। सन् १८०० ई० में नहर खोली गई। उसके बाद से कई बार इस नहर में वृद्धि की गई और सन् १९१६ ई० में यह नहर फिर से बनाई गई।

ट्रोल हट्टे नहर खुल जाने पर इसको बढ़ा कर वेनर झील को बाल्टिक सागर से मिलाये जाने की बात सोची जाने लगी। इस बड़ी योजना को बनाने वाला काउन्ट बाल्टज़र बोजिसलाउस वान प्लैटन था। स्वीडन के बादशाह ने उसे आज्ञा दिया कि वह इसके बारे में जांच पड़ताल करे। प्लैटन ने टेलफोर्ड को बुलाकर नहर की पड़ताल किया। जब नहर बन गई तो स्वीडन के बादशाह ने टेलफोर्ड को नाइट की उपाधि दी।

काउन्ट वान प्लैटेन नहर के समाप्त होने के पहले ही स्वर्ग सिधारे, किन्तु उसके पक्के इरादे ने सारी कठिनाइयों को दूर कर दिया था।

जब नहर बन कर तयार हुई तो जितना उसके बनाने का हिसाब लगाया गया था उससे दस गुना रुपया खर्च हो गया।

गोटा नहर फ्रेडस के किनारे किनारे होकर वीकेन झील को जाती है। यहां पर इसकी उंचाई ३०० फुट तक है। वीकेन और बोहेन झीलों को फ़ोर्सविक मिलाती है। रोडेसन्ड स्थान पर बोहेन झील वेट्टर झील से मिलती है।

वेट्टर की झील को पार करने के पश्चात् मोटाला जाते हैं और वहां से फिर बोरेन झील को रवाना होते हैं। बोरेन से बरेन्सबर्ग रूदा और फिर जन्ग जहाज जाते हैं।

नारशाल्म के पश्चात जावसटैड और कार्ल्सबोर्ग और फिर मेम का अन्तिम स्टेशन आता है। मेम गोथेनबर्ग से २४२ मील है और बाल्टिक सागर की एक भुजा पर स्थित है। मेम से स्टीमर सोडर टैलजो नहर होकर स्टाकहोम को जाते हैं।

रिड्डारहालमेन मलार झील पर स्थित है, यहां से सवारी वाले स्टीमर नहर के लिये चलते हैं। जहां पर मलार झील बाल्टिक सागर से मिलती है, वहीं पर स्टाकहोम का नगर स्थित है। स्टाक होम नगर पानी से इस प्रकार घिरा है कि यह उत्तरी वेनिस के नाम से प्रसिद्ध है।

स्टाकहोम से स्वीडन देश के भीतरी भाग की ओर भी मार्ग जाता है और समुद्र की ओर भी मार्ग जाता है। यद्यपि यह नहर गोथेन बर्ग की भांति बड़े बड़े जहाजों को स्थान नहीं देता तो भी यहां पर बहुत ज्यादा व्यापार छोटे छोटे जहाजों द्वारा होता है। यह स्वीडन का व्यापारिक केन्द्र है। यहां से बाल्टिक सागर की दूरी समुद्री मार्ग होकर ७५ मील है किन्तु इस मार्ग का प्रयोग नहीं होता। सोडर टेल जी नहर मलार झील और बाल्टिक सागर को मिलाती है। इसी नहर होकर जहाज स्टाकहोम जाते हैं।

रिड्डारहोम (स्टाक होम) से जहाज चल कर प्राचीन बाल्टिक सागर के मार्ग होकर मलार झील के दक्षिणी तट होते हुये जाते हैं। मलार झील के अन्दर बहुत से छोटे छोटे द्वीप हैं। यह हजारों की संख्या में हैं। यहां पर "किन्ग्स हैट" नामक एक द्वीप है जहां पर एक लकड़ी के खम्भे के ऊपर एरिक वेडर हाल बादशाह का टोप है। वक द्वीप के समीप खाड़ी की चौड़ाई कम हो जाती है। सोडर टेलजी के समीप यह खाड़ी नहर से मिल जाती है। किसी समय में मलार की झील बाल्टिक सागर से मिली हुई थी किन्तु कुछ मीलों तक पृथ्वी के ऊपर आने से मलार झील बाल्टिक सागर से अलग हो गई।

सोडरटेलजी की नहर १८१९ ई० में बनी थी। १९२४ ई० में यह नहर फिर से गहरी करके बनाई गई है। इस नहर की लम्बाई ३ मील चौड़ाई ७५ फुट ६ इञ्च और गहराई २२ फुट थी, नई पानी की मोरी जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाई गई हैं, वह आधुनिक इञ्जीनियरिंग का एक अनुपम उदाहरण है। इस मोरी की लम्बाई ४४३ फुट चौड़ाई ६५ फुट ७ इञ्च और २४ फुट ७ इञ्च गहरी है।

इस मोरी का द्वार ३०० टन (८४००)मन का है। कन्ट्रोल घर का आदमी इस द्वार को कल द्वारा बन्द करता तथा खोलता है। वही जहाजों को भीतर आने तथा भीतर जाने का भी सिगनल देता है। यह मनुष्य किसी समय भी बाल्टिक अथवा मलार की गहराई बता सकता है।

मामूली तौर पर मलार झील के पानी का तल बाल्टिक तल से १ फुट ऊँचा रहता है कभी कभी दोनों का तल बराबर हो जाता है और कभी झील का तल कुछ नीचा भी हो जाता है। यहां पर जो नया झाल बना है वह बाल्टिक सागर के जहाजों के लिये बहुत बड़ा है।

नहर से निकलने के पश्चात् जहाज हाल्स जार्डन में आते हैं। यह समुद्री भाग पहले तो कम चौड़ा किन्तु आगे चौड़ा होता चला जाता है। इसी मार्ग में मोरक्को का द्वीप है। जिसके अन्त के भाग में स्टेन्सकार नामक चट्टान पर प्रकाश घर है। इस प्रकाश घर से लाल हरी तथा श्वेत रोशनी दिखाई जाती है। जिससे मालूम हो सके कि कोई जहाज खतरे में तो नहीं है। यहां पर मार्ग कठिन होने के कारण वहां का स्थानीय ज्ञान होना जहाज चलाने वालों के लिये बहुत आवश्यक है।

इस प्रकाश घर को पार करने के बाद जहाज हजारों द्वीप वाले कुटिल मार्ग को पार करके साओ के सुन्दर द्वीप में आता है। यहां पर जहाज स्टेनडांरेन (पत्थर द्वार) में होकर जाता है। यहां पत्थर की चट्टानें बहुत हैं।

मार्ग इतना सकरा है कि यदि यात्री चाहे तो जहाज के ऊपर से कूद कर चट्टान पर जा सकता है। आक्से-लोसड स्थान पर जहाज ठहरते हैं। इस बन्दरगाह से मध्य स्वीडन का लोहा जहाजों द्वारा बाहर भेजा जाता है। इस बन्दरगाह पर बहुत सी रेलों का अन्त होता है। यहां का हार्बर गहरा है और यहां बहुत से घाट बने हुये हैं। इसके बाद दूसरा आर्कोसुण्ड का बन्दरगाह है। जहां पर जहाज ठहरा करते हैं। आर्कोसुण्ड में लोग गर्मी के दिनों में खाने के लिये जाते हैं। आर्कोसुण्ड के बाद मेम का बन्दरगाह है।

मेम गोटा नहर का समुद्री द्वार है। सोडरटेलजी नहर से मेम तक का जल मार्ग बड़ा दुर्गम है। इसी भाग में मल्लाहों को जहाज के चलाने में बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है।

मेम को जाने वाला बाल्टिक का समुद्री भाग स्लाटवे कन कहलाता है। इसको पार करने के बाद जहाज स्वीडन के पार जाने वाले मार्ग पर पदार्पण करते हैं। इस मार्ग में जहाजों को गोटा तथा ट्रोलहट्टे नहर के झालों को पार करना पड़ता है। इन झालों में होकर जहाज़ ३०० फुट ऊँचे ऊपर जाते हैं और फिर नीचे उतर कर समुद्र में दाखिल होते हैं।

जब नहर बनी थी। ज़मींदार अथवा किसान जिनकी भूमि मार्ग में पड़ती थी उनसे भूमि लेना बड़ा कठिन था। उनकी भूमि छीनने के लिये भी कोई कानून नहीं बनाया जा सकता था और न उनसे जबरदस्ती ही भूमि छीनी जा सकती थी। काउन्टवान प्लैन्टेन ने कुछ लोगों की एक कमेटी इन किसानों और ज़मीदारों को फुसलाने के लिये भेजा। कमेटी के लोगों ने किसानों से प्रश्न किया कि क्या वे जानते हैं कि उनके देश के एक ओर की भूमि दूसरी ओर से ऊँची है। किसानों ने जवाब दिया कि हां वे इस बात को भली प्रकार जानते हैं। फिर कमेटी के लोगों ने प्रश्न किया कि क्या उन्होंने कभी पानी पहाड़ों के ऊपर की ओर बहते देखा है और जहाज़ को पहाड़ों के नीचे बिना पानी के चलते देखा है। किसानों ने जवाब दिया कि उन्होंने ऐसी बात कभी नहीं देखी। इस पर कमेटी के लोगों ने समझाया कि जो आदमी यह नहर बनाने जा रहा है वह पागल है और ऐसी बात कभी पूरी नहीं हो सकती। इस-लिये किसानों को चाहिये कि उस पागल से रुपया लेकर किसान भूमि दे दें और जब नहर न बन सकेगी तो उनकी भूमि तो ज़रूर ही वापस हो जावेगी। इस बात पर किसानों ने अपनी अपनी भूमि बेंच दी। इस प्रकार नहर की भूमि खरीदी गई थी जो कि उन्हें कभी भी वापस नहीं की गई।

मेम का झाल जहाज़ों को ६ फुट ८० इञ्च ऊपर उठाते हैं। इस झाल के बाद सोडा कोपिना तक की भूमि बराबर है। इसके बाद बहुत से झाल पड़ते हैं। इन झालों को पार करने के बाद जहाज़ कार्ल्स बो ँ पहुँचते हैं। कार्ल्स बोर्ग के बाद मार्ग का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है। यहां पर नहर समुद्र के बगल को काट कर ले जाई गई है। यहां पर एक क्लामान (मरोड़दार) डाक है। इसका नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरोड़दार डाक इसलिये है कि यह डाक मरोड़दार घूमता हुआ बना है।

असप्लाञ्जन झील में पहुँच कर नहर चौड़ी हो जाती है। यहाँ पर हुल्टा झाल है। ब्जोर्न बाडेट पुल पर बड़े ऊँचे ऊँचे नहर के बांध बने हैं। नार्सहोम झाल होकर रोक्सेन झील में जहाज़ जाते हैं। रोक्सेन झील में तीन नदियाँ आकर गिरती हैं और एक नदी इस झील से निकलती है। जब इस झील में गिरने वाली नदियों में बाढ़ आती है तो झील का पानी काफी ऊँचा हो जाता है। लेक रोक्सेन से बर्ग का मार्ग पार करने के पश्चात् नहर ऊपर की ओर चढ़ती है। यहां पर २९९७ गज़ के अन्दर १५ झाल बने हैं। इन लाकों में होकर नहर ३० फुट ऊपर पहुँचती है। इस भाग को पार करने में जहाजों को लगभग दो घंटे लग जाते हैं। समीप ही यहां पर बरेटा अबे है। जहां पर स्वीडन के राजा तथा उसके दूसरे बड़े बड़े सूरमाओं की कब्रें हैं। हेडा झाल पर पहुंच कर चढ़ाई समाप्त होती है। यहीं पर मोटाला नदी तथा नोरबी झील है। नोरबी झील से नहर बहुत ऊँची है और इस झील के किनारे वृक्षों की चोटी जहाज़ों से नीचे दिखाई पड़ती है। बोरेन्सबर्ग के झाल पर पहुँच कर जहाज़ बोरेन झील में प्रवेश करते हैं। इस झील का पानी बड़ा स्वच्छ है।

इस झील के दक्षिणी तट पर सेंट ब्रुजेटसनेस है इसको सेंट ब्रुजेट ने बनवाया था। सेंट ब्रुजेट मध्य कालीन समय की एक प्रसिद्ध स्त्री है।

बोरेन झील के अन्त में वोरेन शाल्ट स्थान है। यहां पर पांच झाल हैं। इन झालों में होकर जहाज़ बट्टेर झील में पहुँचते। यद्यपि इन झालों के बीच का मार्ग केवल तीन मील लम्बा है तो भी जहाज़ को एक घंटा लग जाता है। इन झालों के बाद मोटाला नगर है, जिसको काउन्ट वान प्लैटेन ने बसाया था। इस नगर में इञ्जीनियरिंग शाप और लोहे के कारखाने हैं। इसी नगर में वान प्लैटेन की कब्र है। और यहीं से पूर्वी गोटा नहर का अन्त हो जाता है।

वेटर झील समुद्र तल से २८९ फुट ऊँची है। यह स्वीडन के केन्द्रीय भाग में स्थित है। यह उत्तर से दक्षिण को ८० मील लम्बी है। संकरे से संकरे स्थान पर इसकी चौड़ाई २० मील है। इस झील की गहराई ६० फुट है। इस झील का पानी इतना साफ है कि ६० फुट नीचे की तह दिखाई पड़ती है। इस झील की तह में भी धाराएँ दिखलाई पड़ती हैं।

इस झील के दक्षिण की ओर जानकोपिंग नगर है। यहां पर सेफ़्टी दियासलाइयों के बनाने का बड़ा भारी कारखाना है। स्टाकहोम से आने वाले जहाज़ों का यह अन्तिम स्टेशन है और दूसरे जहाज़ वाडस्टेना, हास्थाल्मेन और हजो आदि बन्दरगाहों को जाते हैं।

स्टीमरों का मुख्य मार्ग मोटाला से कार्ल्सबोर्ग को है। यहां रोडेसुण्ड से पश्चिमी गोटा नहर का आरम्भ होता है। फासविक झाल द्वारा जहाज़ इस नहर की चोटी पर पहुँचते हैं। यह चोटी समुद्र तल से ३०० फुट ऊँची है और वोकेन झील के तल के बराबर है। अनडेन झील बीकेन झील से भी अधिक ऊँची है। वीकेन झील में जाने का मार्ग चट्टानों को काटकर बनाया गया है। इस झील से नहर को पानी पहुँचाया जाता है, किन्तु कभी कभी जब पानी का तल नीचा हो जाता है तो अनडेन झील से पानी लिया जाता है।

टाटोर्प स्थान पर जहाज़ रोककर कैनाल में प्रवेश करते हैं। यह भाग बड़ा तंग तथा मनाहर है। लैंडर्थाजडेन को पार करने के बाद जहाज़ खुले मैदान में आते हैं। हाज्सटार्ट झाल से उतराई आरम्भ होती है, इसके बाद बहुत से झालों में होती हुई नहर लीरेस्टाड और स्जाटोर्प पहुँचते हैं जो वेनर झील के तट पर हैं। वेनर झील स्वीडन की सबसे बड़ी झील है।

वेनर झील में चारों ओर स्टीमर चलते हैं। इस झील में बहुत सी नहरें आकर मिलती हैं इन नहरों में डाल्सलैंड नहर सबसे बड़ी है जो नार्वे की सीमा से आती है।

वेनर झील केवल ट्रोलहट्टे नहर होकर ही समुद्र से मिली हुई है। स्जाटोर्प से वेनर्स बोर्ग को जहाज़ जाते हैं। मार्ग में उन्हें कई स्थानों पर ठहरना पड़ता है। वेनर्स बोर्ग स्थान पर जहाज़ नहर में प्रवेश करते हैं। स्जाटोर्प और वेनर्सबोर्ग के बीच का मार्ग ७० मील लम्बा है।

वेनर्स बोर्ग झील के दक्षिणी किनारे पर गोटा नदी के मुहाने के समीप स्थित है। वास्याट्टन की झील को पार करने के पश्चात् जहाज़ चार्ल्स डिच में पहुँचते हैं। यहां पर नीचे उतरने के लिये ब्रिंकेबार्सकुन्ले का झाल है। इस झाल के बाद गोटा की नदी है। नदी में होकर जहाज़ ट्रोलहाट्टन के झाल पर जाते हैं। यह झाल प्रपातों के बनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये बनाया गया है। इसके बाद स्टीमर नदी के मार्ग होकर अक्रेर्स ट्रोस को जाते हैं।

लीलज़ा एडेट पर अन्तिम प्रपात है। यहां पर अन्तिम भाल प्रपात बचाने के लिये बनाया गया। स्टाकहोम से यहां तक कुल ७५ भाल हैं। इसके आगे गोथेनबर्ग का मार्ग बिलकुल साफ है इस मार्ग में सुन्दर तथा मनोहर दृश्य हैं। यहां के प्रपात से बिजली तयार की जाती है, जिससे आस पास के कारखानों को बिजली पहुँचाई जाती है। गोथेनबर्ग में क्लिलका हार्बर में जहाज ठहरते हैं।

नहर के होने के कारण गोथेनबर्ग स्वीडन का मुख्य बन्दरगाह है। इस नगर को ३० साल हुये गस्टवस अडाल्फस ने स्थापित किया था। यह स्वीडन का दूसरे नम्बर का नगर है। कैट्रेगाट और उत्तरी सागर गोटा नदी तक एक पतली नहर है। यह ५०० फुट चौड़ी और ३३ फुट गहरी है। इस हार्बर की लम्बाई ७॥ मील है। यहां पर उत्तरी सागर, बाल्टिक सागर, रूम सागर और दूसरे समुद्री तथा तटीय जहाज़ आते हैं।

इस नहर में सबसे पहला आने वाला सवारी जहाज़ ऐडमिरल वान प्लैटेन था। वह १८३४ ई० में नहर में आया था। सन् १६४६ ई० में सबसे पहला लिकोंपिंग नामक सामान लादने वाला जहाज़ नहर में आया था।

अब गोटा कैनाल स्टीमशिप कम्पनी के सवारी वाले जहाज़ नहर में चलते हैं। यह कम्पनी स्टाकहोम में सन् १८६८ ई० में स्थापित हुई थी।

जूनो, पाल्लास, आस्ट्रिया, विल्हेल्म, थाम आदि सवारी वाले जहाज नहर में चलते हैं। इनका वज़न २५५ से २८४ टन तक है।

स्टाकहोम और जानकोपिंग के मध्य मोटा लास्ट्रोम और प्रीमस नामक जहाज़ चलते हैं।

गोटा कैनाल स्टीमशिप कम्पनी के जहाज़ों द्वारा इस नहर से १७,००० मनुष्य सालाना यात्रा करते हैं। सामान लादने वाले जहाज़ भी बहुत चला करते हैं। स्वीडन के लोग बहुत समय से अच्छे मल्लाह रहे हैं। इन नहरों में जहाज चलाने में उन्हें सदैव चौकसी के साथ काम करना पड़ता है।

भाल—जल मार्ग में चलते हुये जहाज़ के रास्ते में जब कोई ऊँचा भाग आ जाता है तो जहाज़ उसी जल-मार्ग में एक घेरे के अन्दर करके पानी भर दिया जाता है और जहाज़ ऊपर उठकर आगे बढ़ जाता है।

हिस्पनिओला

क्रिस्टुफर कोलम्बस ने जब अपनी प्रथम समुद्री यात्रा किया तो वह पश्चिमी द्वीप समूह में एक कैरीबियन द्वीप में पहुँचा। जिसका नाम उसने हिस्पनिओला (छोटा स्पेन) रक्खा। वह हिस्पनिओला द्वीप में ६ दिसम्बर १८९२ ई० को पहुँचा था। आजकल हिस्पनिओला को हैटी नाम से पुकारते हैं। यह एक डोमीनियन प्रजातंत्र राष्ट्र है।

कोलम्बस ने हिस्पनिओला के दनदानेदार तट पर लानैविदाद नामक दुर्ग बनाया। नई दुनिया में हिस्पनिओला ही पहला स्थान था जहां स्पेन ने सर्व प्रथम अपनी नई बस्ती बसाई। कोलम्बस ने वहां एक विश्वविद्यालय स्थापित किया तथा अपना मठ बनाया। उसी मठ में कोलम्बस की समाधि है।

जब कोलम्बस हिस्पनिओला पहुँचा तो वहां शान्तिमय, कोमल इण्डियन रहते थे। उनको कोलम्बस के साथियों ने बेदर्दी के साथ तलवार के घाट उतारा था। १५०६ ई० में वहां ईख की खेती आरम्भ की गई। १५१२ ई० में वहां स्पेन वाले निग्रो गुलामों को काम करने के लिये ले गये। निग्रो गुलामों ने वहां मसाले, तम्बाकू, नील और ईख की उपज किया। धीरे धीरे द्वीप धनी हो गया और गुलामों की संख्या भी बढ़ी। आज हैटी में ९० प्रतिशत शुद्ध निग्रो जाति वाले और १० प्रतिशत मिश्रित वर्ण वाले निवास करते हैं। लाइबेरिया को छोड़कर संसार में यह ही केवल एक निग्रो प्रजातंत्र राज्य है। इस के समीप ही जो दूसरा डोमिनियन प्रजातंत्र राज्य है उसमें २० प्रतिशत सफेद चमड़े वाले तथा शेष दोगले और इण्डियन लोग रहते हैं। हैटी की भाषा फ्रांसीसी तथा क्रेओले है। सैंटो डोमिनियन की भाषा स्पैनी है।

हिस्पनिओला का इतिहास हत्याकाण्ड रोमांच-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी घटनाओं, अज्ञानतापूर्ण कार्यों, विदेशी हस्तक्षेप और काले जादू की घटनाओं से भरा है। पहले स्पेन वालों ने सैंटो डोमिंग में अपना डेरा डाला क्योंकि वहां कुछ सोना पाया जाता था। उसी बीच अँग्रेज तथा फ्रांसीसी हैटी में पहुँचे और वहां उन्हें अधिक लाभ हुआ। चूँकि हैटी एक धनी देश था इसलिये उपरोक्त जातियों ने उसे लूटना आरम्भ किया। धीरे धीरे इस द्वीप पर फ्रांसीसियों का प्रभुत्व बढ़ गया और स्पेन वाले वहां से हट गये इस प्रकार १७९५ ई० में हिस्पनिओला फ्रांसीसियों का हो गया।

फ्रांसीसी क्रान्ति की लहर हैटी में भी पहुँची और निग्रो जाति ने फ्रांसीसी सरकार के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। टौसैंट ला ओअरचार नामक निग्रो सरदार ने १८०१ ई० में फ्रांसीसियों को हरा कर अपना स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य स्थापित किया। नैपोलियन ने जनरल लेक लेर्क को फ्रांसीसी सेना ले कर वहां भेजा। टौसेराठ पकड़ गया परन्तु फिर भी विद्रोह की आग जलती रही। देसलाइन्स तथा क्रिस्टोफे नामक सर्दारों ने युद्ध जारी रक्खा और आखिर अपने देश को स्वतन्त्र करने में सफल हुये। देसलाइन्स १८०४-६ तक वहाँ का सम्राट रहा उसके पश्चात् १८११ ई० में क्रिस्टोफे, हेनरी प्रथम के नाम से राजा हुआ। १८२० ई० में क्रिस्टोफे ने अपनी आत्म हत्या कर डाली। उस के बाद से हैटी एक प्रजातन्त्र राष्ट्र रहा है।

सैण्टोडोमिंगो का इतिहास लड़ाइयों तथा परिवर्तनों से परिपूर्ण है। कभी यह राज्य हैटी के साथ मिला कभी स्पेन का अधिकार हुआ और कभी फ्रांस का अधिकार रहा। आखिर १८६६ ई० में इस राज्य ने संयुक्तराष्ट्र अमरीका में मिलाये जाने की अपील संयुक्तराष्ट्र अमरीका से किया परन्तु संयुक्त राष्ट्र के सिनेट ने एक ओर से प्रस्ताव को रद्द कर दिया।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम काल तथा बीसवीं सदी के आरम्भ में इन देशों में बड़ी गड़बड़ी रही। देश भर में क्रान्ति की आग जल रही थी। १९१५ ई० में हैटी की दशा बड़ी खराब थी। चार वर्ष के भीतर वहां ६ सभापति हुये जिनमें से तीन की हत्या कर दी गई थी। जब गिलल्यू में सैम नामक सभापति को वहां के विद्रोहियों ने घसीट कर चिथड़े चिथड़े कर के मार डाला तो संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अपनी जल सेना भेज कर वहां शान्ति स्थापित किया।

संयुक्तराष्ट्र ने जब हैटी पर अधिकार जमाया तो वह मार्की साम्राज्यवाद के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। संयुक्त राष्ट्र के निजी व्यक्तियों का धन हैटी में लगा था। हैटी के राष्ट्रीय बैंक अमरीका के लोगों का धन लगा था। न्यूयार्क के राष्ट्रीय सिटी बैंक का धन वहाँ एक रेलवे लाइन में लगा था। इन्हीं की रक्षा के हेतु संयुक्तराष्ट्र ने वहां दखल दिया। अमरीका ने वहां का विधान लिखा और चापलूस राजनीतिज्ञों द्वारा वहां का शासन किया।

अमरीकन अधिकार होने के कारण हैटी की दशा में सुधार हुआ। अमरीका निवासी हैटी पर अपना अधिकार सदैव के लिये नहीं जमाना चाहते थे इसी से १९३४ ई० में १९ वर्ष के पश्चात् अमरीका ने हैटी को स्वतन्त्र कर दिया। अमरीकन अधिकार होने के कारण वहां पर शान्ति स्थापित हुई। नागरिकता और विद्या का प्रचार हुआ। बहुत से प्रजाहितार्थ कार्य भी किये गये।

हैटी पर अधिकार करने के एक वर्ष बाद १९१६ में संयुक्त राष्ट्र की सेना डोमिनियन प्रजातन्त्र राज्य में गई। १९२४ ई० के बाद से दोनों राष्ट्रों में कोई अमरीकन सेना नहीं है न रजनैतिक अधिकार ही है। डोमिनियन प्रजातन्त्र राज्य ने अमरीका से ऋण ले रक्खा है उसी ऋण का चुकता अमरीका वहां की राष्ट्रीय आय से कर रहा है। हैटी में अमरीका का दूत रहता है जो वहां के स्थानीय कोष तथा चुङ्गी का प्रबन्ध हैटी के अधिकारियों की सहायता से करता है।

डोमिनियन प्रजातन्त्र राज्य का क्षेत्रफल पश्चिमी बर्जीनिया से कम और जनसंख्या लोस ऍंजलीस से कम है। बहुत बातों में यह ग्वाटेमाला से मिलता जुलता है। वहां का शासक (एकाधिपत) जनरल ट्रूजिलो है।

डोमिनियन प्रजातंत्र राज्य में न तो कोई भीख मांग सकता है और न नङ्गे पांव चल सकता है। वहां पार्क में बच्चे जब ही प्रवेश कर सकते हैं जब कि वह [illegible] आरम्भ किये हों। वहां के निवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रकारों आदि से घबड़ाते हैं तथा विदेशी यात्रियों की बड़ी छान बीन रखते हैं।

डोमिनिकन प्रजातन्त्र राज्य का शासक जनरल ट्रूजिलो नेक सख्त तथा मजबूत मनुष्य है। वह एक प्राचीन लैटिन स्वावलम्बी अमरीकन राजा की भांति है। वह १८९१ ई० में पैदा हुआ था। वह सेना का सेनापति, राज्य का शासक तथा सभी राज्यविभागों का प्रधान है। वह वहां का प्रथम पत्रकार माना जाता है। विदेशी लोग उसे मिजोंकन अथवा मि० जैक्सन नाम से पुकारते हैं।

ट्रूजलो मिश्रित जाति का व्यक्ति है। वह बालपन में एक साधारण चपरासी के पद पर था। राष्ट्रीय सैनिक स्कूल से विशारद होकर वह सेना में भर्ती हुआ। ८ वर्ष तक सैनिक सेवा करने के पश्चात् वह कर्नल बना। संयुक्तराष्ट्र अमरीका के जहाजी अफसर ट्रूजिलो को प्यार करते थे। मेजर वाटसन नामक अफसर ने उसे उन्नति दिया और जिस प्रकार ब्रिटिश जनरल आइरन साइड ने अफगानिस्तान के बादशाह को गद्दी दिया है उसी भांति वाटसन ने भी ट्रूजिलो को वहां का शासक बनाया।

वह १९३१ ई० में डोमिनिकन राज्य का सर्वाधिकारी बन बैठा। उस समय वहां से अमरीकन जलसैनिक अफसर चले गये थे। १९३० ई० वहां का सभापति होरासिओवास्क्वेज था। ट्रूजिलो उस समय सेना का प्रधान अफसर था। उसने सभापति को १९३० में बतलाया कि सेना राजधानी की ओर आरही है। सभापति ने भय के कारण स्तीफा दे दिया। ट्रूजिलो ने एक दूसरे व्यक्ति को उस समय सभापति बनाया। उसके बाद निर्वाचन द्वारा वह सभापति चुना गया। १९३९ ई० तक वह सभापति रहा। उसके बाद वह पर्दे के पीछे से राज्य शासन करने लगा। १९३९ ई० में उसने योरुप का भ्रमण किया और मार्ग में उसने सर्वप्रथम अमरीका को भी देखा। १९४० ई० में उसने दोबारा अमरीका भ्रमण किया।

जनरल ट्रूजिलो डोमिकन में पूर्ण निरंकुश शासन चला रहा है। कभी कभी उसे बड़े मजबूत तथा सख्त कदम उठाने पड़ते हैं। १९४० ई० के आरम्भ काल में वहां के कुछ सैनिक अफसर लापता हो गये बाद को मालूम हुआ कि एक को जेल में जहर दे दिया गया था। १९४० में बाद को जब यह समाचार मालूम हुआ कि ट्राजिलो बीमार है तो उसके पुराने मित्रों ने अपने हाथ में राज्य शक्ति लेनी चाही। उनमें एक जनरल जोजे स्ट्रेला भी था जो पहले ट्रूजिलो का बड़ा भारी मित्र था। विद्रोह का प्रधान स्थान सैंटियागो था। परन्तु राजधानी के एक अफसर ने धोका दिया और षडयंत्र को खोल दिया। इस पर स्ट्रेला को २० वर्ष का कारागार दिया गया।

डोमिनिकन में पार्टिडो डोमिनिकाना नामक केवल एक राजनैतिक संस्था है। १९४५ ई० में उसका विच्छेद हो गया और उसी में से पार्टिडो ट्रूजिलिस्टा नामक संस्था निकली जिसका प्रधान डाक्टर जैसे एनरीक ऐबर है। यह ट्रूजिला का परम मित्र तथा हितकारी है।

१९४७ ई० में ट्रूजिलो ने सब से अधिक बुरा पाप और हत्या का कार्य किया। वह कैरीबियन प्रान्त पर अधिकार करना चाहता था इस कारण उसने अपने कुछ आदमी हैटी में क्रान्ति की आग सुलगाने के लिये भेजे। यह आदमी पकड़ लिये गये और गोली से मार डाले गये। उसके बदले में ट्रूजिलो ने आज्ञा दिया कि उसके राज्य में जितने हैटी के निवासी हैं मार डाले जावें। उसकी आज्ञा के अनुसार ७००० हैटी निवासी कुल्हाड़ियों से बोटी बोटी काट डाले गये। इन में अधिकतर किसान तथा मजदूर थे।

इस दुर्घटना के कारण अमरीका में ट्रूजिला बदनाम हो गया। यह जान उसे भय हुआ और तब से उसने ऐसा काम करने का साहस नहीं किया वह। संयुक्तराष्ट्र का सहायक है और चाहता है कि उसके देश में संयुक्तराष्ट्र के सैनिक तथा हवाई अड्डे बनाये जावें क्योंकि इससे उसकी शक्ति और अधिक दृढ़ होने की सम्भावना है।

डोमिनिकन प्रजातंत्र के सम्बन्ध में सत्य बात यह है कि अमरीकन ईख के रोजगार को छोड़ कर वहां का समस्त रोजगार तथा व्यापार ट्रूजिलो अथवा उसके हाथ के कठपुतली वालों के अधिकार में है। उसका अपना एक निजी छोटा राज्य है जिसका प्रबन्ध वह बड़ी कुशलता से करता है। स्पेन छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य से बड़ी आय करता है। वह किसानों तथा मजदूरों से जबरदस्ती काम लेता है और कर द्वारा उन्हें गरीब बनाये हुये है।

डोमिनिकन का ६० प्रतिशत कोष चीनी के रोजगार पर निर्भर करता है। संयुक्तराष्ट्र का ध्यान रखते हुये ट्रूजिलो चीनी के रोजगार में दखल नहीं देता है। जब हैटी के लोगों का हत्याकाण्ड हुआ तब भी जो लोग अमरीकन रक्षा में गये उन्हें उसने छोड़ दिया था। यह प्रतीत होता है कि वह ६० प्रतिशत अपने देश का कोष अमरीकन हाथ में रहने से पूर्ण रूप से सहमत है यदि उसे मनमानी काम करने दिया जावे।

परन्तु सैण्टो डोमिंगो के लिये संकट का समय समीप आ रहा है। वहां की चीनी का ६० प्रतिशत भाग कनैडा तथा इंगलैंड जाता था। १९४० ई० में इंगलैंड ने युद्ध के कारण वहां से चीनी बिलकुल नहीं खरीदी इस कारण वहां आर्थिक संकट की सम्भावना हो गई। इसी बीच अमरीका ने सहायता किया और डोमिनिकन प्रजातंत्र राज्य को एक करोड़ ५ लाख रु० ऋण दिया। यह रुपया राजधानी में होटल तथा सड़क बनाने के लिये दिया गया है। अमरीका डोमिनिकन चीनी से शराब बनाने का प्रयत्न कर रहा है। शराब बनाने में वहां की १२ प्रतिशत ईख का व्यय हो गया।

१९४१ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अपनी नीति के अनुसार डोमिनिकन चुङ्गी पर से अपना अधिकार हटा लिया है।

जनरल ट्रूजिलो की अवस्था ५० वर्ष की है वह लैटिन अमरीका का एक सफल एकाधिपत है। बैंक में उसका बहुत सा धन जमा है। उसे जीवन की सभी आनन्ददायक वस्तुएँ प्राप्त हैं। उसके हाथ में राज्य शासन की पूरी बागडोर है। उसकी सेना उसकी सहायक है और प्रजा भड़काने पर काम करने के लिये तयार है। संयुक्त राष्ट्र के साथ उसकी मैत्री है। उसके विरोधी कारागार में हैं या विदेशों में पड़े हैं।

ट्रूजिलो दूसरे राजनैतिज्ञों की भांति आराम और आनन्द का इच्छुक है। उसके पांच मकान हैं। उसमें से एक में नाइट क्लब (रात का क्लब) स्थापित है। वह एक अच्छा घोड़सवार है और अच्छे भोजन करना तथा शराब पीना पसंद करता है। वह तम्बाकू पीता तथा नाचता गाता है। उसकी नौका रैनफिस है। जो कैरीबियन में सबसे अधिक सुन्दर है। नौका में सभी अमरीकन कार्यकर्ता हैं। वह सुन्दर वस्त्र बहुत पसंद करता है। प्रत्येक घर में वह अपने प्रत्येक भांति के पूरे कपड़े रखता है। उसकी स्त्री डोनामैरिया डेलोस ऐंजलीस मार्टिनिज अल्वा शुद्ध स्पैनी जाति की है उसके कई बच्चे हैं। वह अपने बच्चे तथा रिश्तेदारों को बहुत प्यार करता है। उसके चार बहिनें तथा कई भाई हैं। उसका एक भाई बेल्जियम तथा दूसरा स्विज़रलैंड में राजदूत है। इसी प्रकार और दूसरे भाई तथा रिश्तेदार बड़े बड़े पदों पर हैं। उसका दस वर्षीय बालक अभी ब्रिगेडियर जनरल बनाया गया है।

डोमिनिकन प्रजातंत्र राज्य का सभापति डाक्टर मैनुएल ट्रोनकोसो डेला कोंचा है। उसकी अवस्था ६० वर्ष है। वहां का परराष्ट्र मन्त्री डाक्टर आर्तुटो डेस्परेडेज़ है जो एक प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ है। वैनों पिचार्डो नामक व्यक्ति वहां के पोरटीडो डोमिनियन का प्रधान है।

वहां पर फिफ्थ (पाँचवाँ) कालम नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां नाज़ी संस्था के लिये स्थान ही नहीं है। अमरीका के विमान वहां के हवाई स्टेशनों का प्रयोग करते हैं। यह देश सैनिक दृष्टि से संयुक्तराष्ट्र अमरीका पर ही निर्भर करता है।

कोमल हृदय वालों को शायद ट्रूजिलो का हाल पढ़ कर दुःख हो परन्तु उसने एक बड़ा सराहनीय कार्य किया है। उसने योरुप के निकाले तथा भागे हुये मनुष्यों को सोसुवा की जागीर दी है। यह द्वीप का उत्तरी भाग है।

सोसुवा में ट्रूजिलो की अपनी ५० हजार एकड़ धरती है। इसे उसने अपनी डोमिनिकन प्रजातंत्र सेटिलमेंएट संस्था को दान दिया है। पहले ट्रूज़िलो ने भागे हुये लोगों के लिये २६ हजार एकड़ भूमि दिया था जिसका मूल्य साढ़े तीन लाख रुपया है। उसके बाद उसने दूसरी भूमि दी जिसमें पर्वतीय प्रान्त भी सम्मिलित हैं।

स्विज़रलैंड के एवियान नामक स्थान में योरुपीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों के लिये एक सभा हुई थी जिसमें एक कमेटी उनकी सहायता के लिये बनाई गई थी। प्रत्येक राष्ट्र तथा व्यक्ति से सहायता मांगी गई थी। डोमिनिकन प्रथम राष्ट्र है जिसने सहायता की। ट्रूजिलो ने २५ हजार एकड़ भूमि रिफ्यूजी लोगों को दान रूप में दिया। इस भूमि में एक लाख रिफ्यूजी (निकाले तथा भागे) लोगों को शरण दी जा सकती है।

इस दान का मुख्य कारण यह था कि ट्रूजिल संयुक्त राष्ट्र से अपना नाम पैदा करना चाहता था। वह उसे प्रसन्न करने का इच्छुक था। साथ ही वह अपने देश के रज को श्वेत रज से मिला कर मजबूत बनाना चाहता है।

न्यूयार्क के जेम्स एन० रोजेन बर्ग ने ट्रूजिलो का समर्थन किया और उसने डोमिनिकन प्रजातंत्र सेटिलमेण्ट संस्था स्थापित किया। यह संस्था योरुपीय रिफ्यूजियों को (खासकर यहूदी) डोमिनिकन भूमि में लाकर टिकाती है। लगभग ३०० रिफ्यूजी टिकाये जा चुके हैं। वह ७५० एकड़ भूमि में खेती का काम कर रहे हैं। १९४१ ई० में एक हजार और और दूसरे लोगों के टिकाने की आशा है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से मकान आदि बनाने की सहायता मिल रही है।

सोस्बा के अनुभव से पता चल जावेगा कि योरुपीय लोग दक्षिणी अमरीका के गर्म प्रदेश में रह सकते हैं या नहीं। दूसरे यह कि वह अपने भोजन के सिवा अधिक उत्पन्न कर सकते हैं या नहीं। ३—उनका डोमिनिकन निवासियों के साथ क्या सम्बन्ध होगा।

हैटीद्वीप चुड़ैलों (पपालोइस या ममन लोइस) का देश कहलाता है। वहां पहाड़ों के ऊपर वाले बनों में भूत पिशाच डंके बजाया करते हैं। इस प्रकार के अंध विश्वास वहां अब भी प्रचलित हैं।

वूडू वहां का एक खास मत है। यह मत जादू भेद और गुप्त बातों पर निर्भर है। वूडू पुजारी प्रकृति शक्तियों की पूजा करते हैं और उन्हीं से अपना काम करवाने का बहाना करते हैं। वह चमकते सूर्य, पर्वत, वायु, सांप तथा ज़हरीली जड़ी बूटियों की पूजा करते हैं जिससे ये उन पर रुष्ट न हों। इसी प्रकार की पूजा से वह अपनी रक्षा अपने शत्रुओं से करने की कोशिश करते हैं। वह अपने शत्रु को उससे पहले श्राप देने की कोशिश करते हैं। चुड़ैलों का वैद्य (विच डाक्टर) प्रत्येक कार्य के लिये अलग अलग जादू के मन्त्र रखता है। वह जादू के मन्त्रों भूत, पिशाच और दूसरे बुरी शक्तियों से हानि अथवा लाभ पहुँचाने का दावा करता है। वूडू पुजारी बड़ा प्रभावशाली होता है। प्रत्येक मनुष्य उससे भय खाता है और सदैव उसकी सहायता लेता है। वहाँ भारतवर्ष के कुछ भागों की भाँति "आँख लगना" (बुरी दृष्टि का प्रभाव) भी माना जाता है और इस से सभी लोग बचने का प्रयत्न करते हैं। पुजारियों का प्रभाव इतना बढ़ा होता है कि यदि वह कह देते हैं कि अमुक व्यक्ति को अमुक समय कष्ट होगा और यदि वह अपने स्थान को छोड़ कर अमुक स्थान पर चला जावेगा तो ऐसी अवस्था में उस मनुष्य को अवश्य ही अपना स्थान छोड़ कर चले जाना पड़ता है।

वूडू मत का देश की राजनीति में भी बड़ा भारी प्रभाव है। हैटी की कोई भी सरकार इस मत को रोकने का साहस नहीं कर सकती। यद्यपि प्रेसीडेण्ट लोई बर्नो जो कि एक कट्टर रोमन कैथलिक था। उसने इस मत को निरुत्साहित करने का प्रयत्न किया। उसके बाद जब स्टेनियो विनसेंट सभापति हुआ तो उसमें वूडू की सहायता ली। वह बड़ा शक्तिशाली हो गया।

हैटी लोग बड़े कायर, डरपोक और अशिक्षित होते हैं। वह ९० प्रतिशत अशिक्षित हैं। उनमें उनके प्राचीन सूरवीरता के इतिहास होते हुये भी राष्ट्रीयता का भाव नहीं है। वह फ्रांसीसी तथा क्रेओले की मिश्रित भाषा का बोलचाल में प्रयोग करते हैं। हैटी एक सुन्दर आकर्षक जाति है। १०२०४ वर्गमील में ३० लाख हैटियन लोग निवास करते हैं जिसे मैरी लैंड कहते हैं। उसके रहने के स्थान का क्षेत्रफल समस्त द्वीप का केवल एक तिहाई है। अधिकांश हैटी निवासी किसान तथा गरीब हैं। वहां की सरकार का सालाना बजट एक करोड़ ७४ लाख रुपये का होता है। वहां प्रत्येक व्यक्ति के पीछे ५० सेण्ट (मुद्रा) चालू है।

हैटी की आर्थिक दशा कहवे पर निर्भर करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कहवा के मूल्य के घटने पर देश की स्थिति बड़ी जटिल हो जाती है।

१९२९ ई० में वहां औसत से २,७०,००,००० किलोग्राम्स कहवा की उपज हुई थी। इसका मूल्य उस समय लगभग ६ करोड़ रुपया था। आजकल उसी का मूल्य लगभग ढाई करोड़ होता है। १९३९-४० ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने हैटी की ५६ प्रतिशत कहवा खरीदी थी। योरुपीय कहवा के बन्द होने से संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने हैटी से कहवा लेनी आरम्भ कर दिया।

हैटी द्वीप से जब से अमरीकन सेना हटी तब से वहां के काले निग्रो तथा दोगले लोगों में राजनैतिक शक्ति के लिये झगड़ा होता चला आया है। दोगले लोगों की जनसंख्या केवल १० प्रतिशत है परन्तु वह पढ़े लिखे और रोज़गारी हैं। उन्हीं के हाथों में देश की लगभग समस्त राजनैतिक शक्ति है। काले लोग दोगलों तथा स्वेत जाति वालों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ काल में वहां एक नियम बनाया गया था जिसके अनुसार हैटी लोगों को खेती तथा व्यापार करने का अधिकार दिया गया था। दोगले लोगों को भिन्न भिन्न रोजगार करने के लिये कहा गया था। उसके बाद दोगलों ने उन्नति की। शिक्षा प्राप्त की और डाक्टर, वकील आदि बन गये।। पढ़े लिखे होने के कारण उन्होंने समाज, राजनीति और अर्थ-शास्त्र पर भी उनका प्रभुत्व हो गया। इसी कारण राजनीति क्षेत्र में उनका प्रभुत्व है।

स्टेनियो जोजेफ विसेट ११३० ई० में हैटी का सभापति बना। वह १९४८ ई० तक सभापति रहा। वह बड़ा तगड़ा, हँसमुख और परिश्रमी है। रूप देखने से जोजेफ ६० वर्ष का भद्र पुरुष नहीं प्रतीत होता है। बालपन में वह एक गरीब बालक था। किसी तरह उसने अपनी स्कूल शिक्षा समाप्त की। १८ वर्ष की अवस्था में उसने कानून की डिग्री प्राप्त किया। वह एक बड़ा विद्वान तथा गहरा संस्कृति का मनुष्य है। उसने कई पुस्तकें लिखी हैं। वह किसी भी प्रश्न पर सरलता पूर्वक साफ साफ भाषण दे सकता है। उसकी आदत पुस्तकों के पढ़ने की है। वह फ्रांसीसी भाषा बड़ी खूबी के साथ बोल सकता है। वह फ्रांसीसी एकाडमी का सदस्य भी है।

वह केन्सकोफ गांव का निवासी है यह गांव पोर्ट-औ-प्रिन्स के ऊपर ४५०० फुट की ऊँचाई पर बसा है। वहां स्त्रियां पहाड़ी टेढ़ी गली में सिरों पर कंधों पर और हाथों में बोझ तथा भरे बर्तन रखकर सरलता पूर्वक चली जाती हैं।

डाक्टर विनसेन्ट ने अपना सारा जीवन राजनैतिक सेवा में व्यतीत किया है। जब वह कानून का विद्यार्थी था तभी स्कूल इन्स्पेक्टर का काम करता था। उसके बाद वह पेरिस और बर्लिन राजदूत बना कर भेजा गया। जब वह हैटी लौटा तो गवर्नमेंट कमिश्नर, जज और सेनेटर रहा। उसके बाद सेनेट का सभापति बना। उसने १९२०-३० तक गरीबों की दशा में अपना राजनैतिक जीवन व्यतीत किया था।

आरम्भकाल में वह अमरीकन लोगों का विरोधी था और उनकी टीका टिप्पणी किया करता था परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि बिना संयुक्त राष्ट्र की सहायता के काम नहीं चल सकता तो वह संयुक्त-राष्ट्र अमरीका का सहकारी बन गया। आज वह अमरीका का बड़ा मित्र बिना है।

हैटी में राजनैतिक दल नहीं हैं। विनसेन्ट ने १० वर्ष तक अपने देश का शासन सेना पर अधिकार रख कर किया है। अब भी वह राजनैतिक कार्यों में लगा रहता है। उसे ८७ हज़ार रुपया सालाना वेतन मिलता था वह बड़ा दानी है। अपने रुपये से उसने एक दान सम्बन्धी संस्था स्थापित कर रक्खी है जिसका नाम कैसेल असिस्टेन्स (सहायक सभा) है। वह देहात में जाकर गरीब लोगों को रुपया बांटना पसन्द करता है। वह अब तक अविवाहित है। उसके घर की देखभाल करने वाली उसकी एक मात्र बहिन है। वह हैटियन मदिरा पीने का शौकीन है। वह फिलिप मेरिस सिगरेट पीता है। उसकी अँग्रेजी बहुत कमजोर है। अँग्रेजी के दैनिक पत्र को पढ़ लेता है।

१९४१ ई० में लोग कहते थे कि वह रूजवेल्ट की चापलूसी इस कारण कर रहा है कि वह तीसरी बार पुनः सभापति बनाया जावे। १९३५ ई० में वह दूसरी बार सभापति बनाया जा सकता था। १० मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४१ ई० को प्रतिनिधि सभा के सदस्यों ने बहुमत से उसका समय बढ़ाने का प्रस्ताव पास किया परन्तु उसने काम करने से इन्कार कर दिया और १५ अप्रैल १९४१ ई० को उसके स्थान पर डाक्टर एली लेस्कोट सभापति चुना गया।

लेस्कोट वाशिंगटन में हैटी राष्ट्र की ओर से मंत्री था। लेस्कोट का जन्म १८८३ ई० में हुआ। वह एक बड़ा वकील, शासक तथा कूटनीतिज्ञ है। वह कृषि, शिक्षा न्याय आदि के मन्त्री-पदों पर काम कर चुका था। जब १९३७ ई० डोमिनिकन में हैटी लोगों का हत्या काण्ड हुआ तो उसी ने दोनों राज्यों के मध्य समझौता कराया था।

हैटी में जर्मन प्रचार का भय नहीं है। वहां पर जर्मन व्यापार का प्रभुत्व अवश्य है। अपने समीपवर्ती राष्ट्रों की भांति हैटी भी संयुक्त राष्ट्र को सभी सुविधाएँ दे सकता है।

१९३९ ई० के पश्चात् योरुपीय मानचित्र में परिवर्तन

आस्ट्रिया में जो सफलता नाज़ी संस्था को प्राप्त हुई उससे सुडेटन के जर्मन लोगों को उत्साह मिला। उन्हें जर्मन धन तथा हिटलर के सहयोग की सहायता भी प्राप्त हुई। उन लोगों ने पहले स्वतंत्रता की मांग पेश किया और कहा कि वह जर्मन राएच से स्वतंत्रता पूर्वक मिल जाना चाहते हैं। १९३९ के ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में योरुप में लड़ाई छिड़ते २ रुक गई। म्युनिक में उस झगड़े का निपटारा हुआ और चेकोस्लोवेकिया की स्वतंत्रता का अपहरण नाज़ी जर्मन द्वारा हुआ। साल के अंत में जर्मनी सरलता पूर्वक अपनी सफलता प्राप्त करने पर उत्साहित हुआ। उसकी संख्या भी आस्ट्रिया के सुडेटन लोगों के मिल जाने से बढ़ गई।

हिटलर ने घोषणा की थी कि म्युनिक के फैसले के पश्चात् किसी की स्वतंत्रा का अपहरण नहीं करेगा और योरुप में अपना साम्राज्य ही बढ़ावेगा।

योरुप के निवासी जो युद्ध के विरुद्ध थे और शान्ति स्थापित करना चाहते थे उन्होंने देखा कि वह राज्य जो युद्ध की भली भांति तयारी कर चुके थे और लड़ने के लिये बिलकुल तत्पर थे कदाचित् न लड़ें। इँगलैंड और फ्रांस के लोगों को भी कुछ साहस हुआ कि वे शेर (जर्मनी) को कुछ भोजन देकर फुसलाने में समर्थ हुये हैं।

परन्तु इतिहास एक बार पुनः सिद्ध करना चाहता है कि शेरों को फुसलाना कठिन है। जिस समय कि प्रजातंत्र राज्य के राजनीतिज्ञ तथा मानने वाले म्युनिक निर्णय के फल से लाभ उठाने का प्रयत्न और उसका प्रचार कर रहे थे ठीक उसी समय योरुप के डिक्टेटर (एकाधिपत) जिनके अधिकार में लाखों गुलाम थे वे पूर्व निवासी राष्ट्रों (जिनसे वे द्वेष रखते थे) की स्वतंत्रता का अपहरण करने की योजना बना रहे थे। इस प्रकार १९३९ के उस समय ने योरुप के मानचित्र में कई परिवर्तन किये।

नाज़ी जर्मनी का प्रथम हमला चेकोस्लोवाकिया पर हुआ और उसके स्वतंत्र राज्य का अंत हो गया। बोहेमिया और मोराविया राएच के संरक्षता में आ गये। कुछ समय के पश्चात् स्लोवेकिया भी राएच में मिला लिया गया।

हिटलर के इस कार्य से संसार को धक्का पहुँचा। उसकी यह दोरंगी चाल अद्भुत हुई इससे संसार के प्रजातंत्र राज्य भयभीत हो गये। उन्होंने हिटलर के विरुद्ध आवाज़ उठाई और उसका विरोध किया परन्तु हिटलर ने कान तक न दिया। उसने जर्मन टैंकों की लम्बी कतारें देखी जिन्होंने असंख्य जर्मन पैदल सेना तथा जर्मन वायुयानों के जत्थों को इधर उधर घूमते देखा। उसे विश्वास हो गया कि संसार के प्रजातांत्रिक राज्य उसे कभी भी पराजित करने में सफल न होंगे।

प्रेग सम्मेलन के एक सप्ताह पश्चात् ही हिटलर ने मेमेलैंड के रहने वालों से स्वयम् कहा कि वह राएच में सम्मिलित कर लिये गये। उसके पश्चात् पोलैंड की बारी आई परन्तु इसी बीच मुसोलनी ने गुड फ्राइडे के त्यौहार के उपलक्ष में अलबानिया के स्वतंत्र राज्य के लेने की योजना तयार की। १५ दिन के भीतर ही इटली के सम्राट् को अलबानिया का राजा बना दिया और अलबानिया के स्वतंत्र राज्य का अंत हो गया। यह राज्य एड्रियाटिक सागर पर स्थित था।

[illegible] ग्रीष्म काल पर डैञ्जिग और पोलिश कारीडर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चर्चा पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर होती रही। राजनीतिज्ञ अपना कार्य करते रहे।

एकाएक पहली सितम्बर सन् १९३९ को जर्मन सेनाओं ने पोलैंड पर १२ जगहों से आक्रमण कर दिया। इसके दो दिन पश्चात् ३ सितम्बर को इङ्गलैंड और फ्रांस ने जर्मनी पर युद्ध घोषणा कर दिया। १५ दिन के पश्चात् रूस ने भी पोलैंड पर आक्रमण किया। उसने पीठ की ओर से पोलैंड पर आक्रमण किया था जिसका बड़ा प्रभाव पड़ा। २९ सितम्बर को जर्मनी और रूस ने मिल कर पोलैंड की स्वतंत्रता का अन्त कर दिया और उसे चतुर्थ बार आपस में बांट लिया। पोलैंड के यह शत्रु उसके १८ वीं शताब्दी के शत्रुओं से कहीं भयानक तथा निर्दयी सिद्ध हुये।

पोलैंड के इस बटवारे के कुछ ही समय पश्चात् रूस ने एस्टोनिया, लैटविया और लिथुवानिया के बाल्टिक राज्यों को रूसी साम्राज्य में मिला लिया। यद्यपि वे नाम के लिये योरुप के मान चित्र पर हैं परन्तु उनकी स्वतंत्रता ही क्यों है जब कि उन राज्यों में रूसी किले बने हैं। और वहां पर रूसी सेना डटी हुई है।

इसके बाद स्टैलिन की आँखें फिनलैंड की ओर झुकीं। जब फिनलैंड ने स्टैलिन की मांगों को ठुकरा दिया तो उसने लाल सेना को फिनलैंड की ओर रवाना कर दिया।

रूसी सेना का सामना फिनलैंड की सेना ने डट कर किया और रूस को भारी धक्का पहुँचाया परन्तु गरीब लोमड़ी की बिसात शेर के सामने क्या है? फिनलैंड और रूस में आखिर संधि हो गई। स्टैलिन की माँगें स्वीकार की गईं। फिनलैंड का राज्य (जिसका लगभग आधा रूस के हाथ में चला गया) नाम के लिये चित्र में रह गया। यह घटना १९४० ई० में घटी।

फिनलैण्ड के अन्त के कुछ समय पश्चात् ही जर्मनों ने डेनमार्क पर छापा मारा और रातों रात उस पर अधिकार करते नार्वे पहुँचे। नार्वे की लोहे की खानों पर हिटलर की दृष्टि पहले से ही थी। उसका भी अन्त हो गया। वहाँ पर भी जर्मन अधिकार हो गया और नार्वे के स्वतंत्र राज्य का भी योरुप के मान चित्र से नाम मिट गया स्वीडन ने जर्मन शर्तें बिना युद्ध लड़े ही स्वीकार कर लिया।

नार्वे अपहरण के पश्चात् जर्मनी ने हालैण्ड लक्सेमबर्ग और बेल्जियम पर ११ मई सन् १९४० को आक्रमण किया। लक्सेमबर्ग छोटा स्वतंत्र राज्य जर्मन राज्य में जर्मन सेना के घुसने के पहले ही मिला लिया गया। ४ दिन युद्ध करने के पश्चात् हालैंड ने अपने अस्त्र रख दिये। २८ मई को बेल्जियम ने भी जर्मनी के सामाने घुटने टेक दिये।

जर्मन सेनायें मैजिनो लाइन में मार्ग बनाकर फ्राँस में प्रवेश कर गईं वे बेल्जियम फ्राँस की सीमा होकर भी फ्रान्स के भीतर घुसीं। १४ जून तक फ्रान्स ने दिलेरी के साथ जर्मनी का सामना किया। ५ जून को फ्रान्स पर आक्रमण हुआ था १७ जून को फ्रान्स के पैर उखड़ गये। और उसने जर्मन शक्ति के सामने अपना सिर झुका दिया २२ जून को फ्रान्स और जर्मनी के मध्य चणिक संधि हुई। फ्रान्स के प्रजातंत्र राज्य का भी अंत हो गया।

अब उसके पश्चात् जर्मनी ने इङ्गलैंड पर आक्रमण करने की योजना किया। वहाँ पर हवाई हमले किये गये। रूमानिया पर भी जर्मनी ने अपना प्रभुत्व जमा लिया। वहाँ जर्मन सेना पहुँचा दी गई। अँग्रेज़ी जहाजों पर अधिकार कर लिया गया। इटली भी जर्मनी के साथ मिल गया। इटली ने यूनान पर हमला किया। यूनानी लोगों को अंग्रेज़ अपनी पूरी शक्ति से सहायता देते रहे। यूनानी वीरता के साथ इटली की सेना का सामना करते रहे। वीर यूनानी लोगों ने इटली की सेनाओं को कई स्थानों पर बुरी तरह हराया। इटली की हार तथा शोचनीय स्थिति देख कर जर्मनी आगे बढ़ा। १ मार्च १९४१ ई० को बल्गेरिया ने त्रिशक्ति-संधि पर हस्ताक्षर कर दिये। उसी दिन बल्गेरिया की रक्षा करने के लिये जर्मन सेनाओं ने वहाँ प्रवेश किया। उसके बाद जर्मन सेनायें यूनान तथा योरुपीय टर्की की सीमा पर डटा दी गईं। २५ मार्च को स्वेकोविच (यूगोलाविया) सरकार ने जर्मनी के प्रभुत्व में आकर वियना में जाकर त्रिराष्ट्र-संधि पर हस्ताक्षर कर दिये। इससे यूगोस्लोविया में असंतोष फैल गया। सेना ने बगावत का झंडा उठाया। आखिर नाबालिग राजकुमार पिटर ने राज्य-शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। जनरल सिमोविया प्रधान मन्त्री बनाया गया। जर्मनी ने यूगोस्लाविया से उसकी नीति के सम्बन्ध में साफ साफ उत्तर मांगा। साफ उत्तर न मिलने पर ६ अप्रैल को यूगोस्लाविया से उसकी नीति के सम्बन्ध में साफ साफ उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांगा। साफ उत्तर न मिलने पर ६ अप्रैल को यूगोस्लाविया तथा यूनान पर आक्रमण कर दिया।

यूगोस्लाविया की सेना कुछ दिनों में ही भाग खड़ी हुई। उसके मित्र प्रान्तों पर बलगेरिया तथा हँग्री ने अधिकार कर लिया और क्रोशिया का एक नया राज्य इटैलियन राजवंश के ड्यूक को राजा बना कर स्थापित किया गया।

यूनान की सेनाएँ भी जर्मन सेनाओं का सामना न कर सकीं। २३ अप्रैल को वहां की सरकार भाग खड़ी हुई। २ मई १९४१ ई० को वहां से ब्रिटिश सेनायें भी हटा ली गईं। यूनान पर भी जर्मनी का अधिकार हो गया। इस प्रकार समस्त बालकन प्रदेश पर जर्मनी का अधिकार हो गया।

भूमध्य सागर में यूनान के ६० मील दक्षिण-पूर्व की ओर क्रीट का द्वीप है। इसकी लम्बाई १५० मील और अधिक से अधिक चौड़ाई ४० मील और कम से कम ८ मील है। केनिया रौटियो और कैंडिया यहां के मुख्य बन्दरगाह थे। केनिया ही क्रीट की राजधानी है। यूनान छोड़ कर वहां की सरकार क्रीट चली गई थी। २२ मई १९४१ ई० को जर्मनी ने अपने विमानों तथा गुब्बारों की सेना द्वारा क्रीट पर भी धावा बोल दिया। आस्ट्रेलियन, यूनानी तथा ब्रिटिश सेनाओं ने डट कर जर्मन सेना का सामना किया परन्तु जर्मन हवाई आक्रमण का बेग न संभाल सकीं और यूनान का राजा तथा सरकार क्रीट छोड़ कर मिस्र चली गई। १ जून १९४१ ई० को वहां से ब्रिटिश तथा यूनानी सेना भी हटा ली गई। क्रीट की स्थिति रूम सागर में सामरिक महत्व रखती है। यहां से मिस्र १५ घंटे में विमानों द्वारा जाया जा सकता है। इस प्रकार एजियन सागर का फाटक क्रीट भी जर्मनी के अधिकार में चला गया।

मई सन् १९४१ ई० में बालकन राष्ट्रों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् एकाएक हिटलर ने रूसी-जर्मन संधि तोड़ दिया। २२ जून १९४१ ई० को जर्मन सेनाओं ने रूस पर आक्रमण कर दिया। हंग्री, रूमानिया और फिनलैंड ने रूस पर आक्रमण होने में जर्मनी का साथ दिया। मुसोलिनी ने भी अपनी एक सेना रूसी सीमा पर लड़ने के लिये भेज दी। प्रबल विरोध होने पर भी जर्मन शक्तिशाली सेनाओं ने रूसी पोलैंड, बेसारबिया, बुकोविना और लिथुवानिया आदि पर शीघ्र ही अधिकार कर लिया।

१२ जुलाई ११७१ ई० को ब्रिटेन और रूस के मध्य नेक महत्वपूर्ण समझौता हुआ और यह निश्चय हुआ कि जब तक युद्ध चलता रहेगा तब तक एक दूसरे के परामर्श के बिना वह जर्मनी से अलग कोई समझौता न करेंगे और एक दूसरे को पूर्णरूप से सहायता पहुँचाते रहेंगे। इसी समझौते के अनुसार ब्रिटिश तथा रूसी सेनाओं ने मिलकर ईरान पर अधिकार जमाया और वहाँ से जर्मन प्रभाव तथा षड्यन्त्र का अन्त कर दिया।

मास्को में रूसी-ब्रिटिश-अमरीकन राजदूतों की सभा हुई। उसके अनुसार इङ्गलैण्ड तथा अमरीका रूस को सहायता पहुँचा रहे हैं। रूसी सेना डट कर जर्मनी का सामना कर रही है। जितनी शूरवीरता के साथ रूसी सेनाओं ने जर्मन सेनाओं का सामना किया उसका संसार के इतिहास में अब तक कोई उदाहरण नहीं है। फिर भी एक के बाद दूसरे रूसी कारखाने वाले नगर जर्मनी के हाथों में चले जा रहे हैं।

यूक्रेन के उपजाऊ तथा कारखाने वाले प्रान्त पर भी जर्मनी का अधिकार हो चुका है। काला सागर तट के बन्दरगाह ओडेसा पर बलगेरिया की सेना ने अधिकार कर लिया है। क्रीमिया प्रान्त पर जर्मन सेनायें बढ़ चुकी हैं। मास्को नगर से रूसी सरकार हटाई जा चुकी है। मास्को और लेनिनग्राड नगरों का युद्ध चल रहा है। इन नगरों को जर्मन सेनाएँ घेरे हुये हैं। पूर्व की ओर साइबेरिया प्रान्त पर जापान आक्रमण करने की तयारी कर रहा है। फिनलैण्ड ने भी रूसी-फिनिश संधि तोड़ कर अपने खोये हुये प्रान्त को ले लिया है।

इस प्रकार हमने देखा कि १९३९ ई० से अब तक योरुपीय राजनैतिक मानचित्र में कितने भारी परिवर्तन हो चुके हैं। भविष्य में इस से भी भीषण परिवर्तनों की आशा की जाती है।

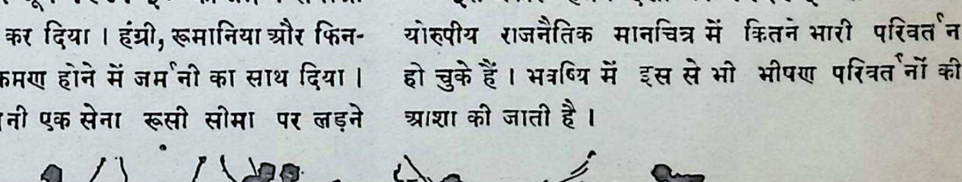

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

करुण तरङ्गिणी—लेखक पं० गांगेय नरोत्तम-शास्त्री, प्रकाशक श्री मकरन्द-साहित्य-मन्दिर, गांगेय भवन, २८० चित्तरञ्जन एवेन्यू, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या १०२ (डबल क्राउन सोलह पेजी) मूल्य सजिल्द, एक रुपया।

इस सचित्र काव्य में प्रवासी के उद्गार, घायल कोकिल, मझधार की नाव, मेरा तपोवन, हम वन-वासी फूल आदि विविध शीर्षकों पर यशस्वी कवि ने भावनापूर्ण कविता की है। पुस्तक को पढ़ने से सात्विक भाव जाग्रत होते हैं।

नाम-माहात्म्य का श्री तीर्थांक। सम्पादक श्री दानविहारीलाल शर्मा और श्रीरामदास शास्त्री साहित्य-रत्न, प्रकाशक भजनाश्रम वृन्दावन। नाम-माहात्म्य चार वर्ष से प्रकाशित हो रहा है। भक्ति पूर्ण भावों से प्रेरित होकर यह मासिक पत्र हिन्दू समाज में धर्म का ठोस प्रचार कर रहा है। श्री तीर्थांक इसी का विशेषांक है इस वृहद् विशेषांक में हिन्दू-तीर्थों पर अद्भुत प्रकाश डाला गया है। इसकी पृष्ठ संख्या २८८ (डबल क्राउन अठ पेजी) और चित्र संख्या ५० है। इस विशेषांक का मूल्य १) रु० है जो आजकल कागज की महंगी के समय में कुछ भी नहीं है। फिर भी पत्र का वार्षिक मूल्य केवल १।) भेजने वालों को यह उसी चन्दे में मिल सकता है।

माधुरी—विदेशांक—हिन्दी संसार के प्रतिष्ठित पत्र माधुरी ने अपने बीसवें वर्ष का प्रथम खंड विदेशांक नाम से प्रकाशित किया है। श्री ज्ञान स्वरूप भटनागर बी० ए० इस अंक के विशेष सम्पादक हैं। प्रधान सम्पादक श्री रूपनारायण पाण्डेय हैं। प्रकाशक नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। वार्षिक मूल्य ६।) इस अंक का १।)। पृष्ठ संख्या ३५४ (डबल क्राउन अठ पेजी)। इस विशेषांक में २ रंगीन और कई एक रंगे सादे चित्र और नकशे हैं। इस वृहद् विशेषांक में सोवियट की वैदेशिक नीति, सामन्तवादी जापान, आयरलैंड, दक्षिण अफ्रीका के भारतीय, अफगानिस्तान, विदेशी राष्ट्र आदि कई लेख परिश्रम के साथ राजनैतिक दृष्टि से लिखे गये हैं। इनके अतिरिक्त मनोरंजन के लिये भी बीच बीच में कहानी, नाटक और कविता का सम्मिश्रण है। अंक उपयोगी और सामयिक हैं।

प्रभु मति के दोहे—लेखक तथा प्रकाशक श्री प्रभु लाल अग्रवाल सिकन्दराबादी, हाल हापुड़, जिला मेरठ। इस पुस्तक में महाजनी हिसाब और गणित के दूसरे सरल ढंग और गुर दिये गये हैं। इस पुस्तक में रोजमर्रा काम आने वाले गणित का सरल ढंग दिया गया है। गणित के अतिरिक्त ज्योतिष आदि की कुछ और भी आवश्यक जानकारी है। पृष्ठ संख्या १९२ (डबल क्राउन सोलह पेजी) और मूल्य १) रु० है।

हिन्दी शिक्षण पत्रिका—के सातवें वर्ष का बारहवां अंक स्वर्गीय डा० रवीन्द्र नाथ ठाकुर का भेंट अंक है। श्री तारा बहन मोडक, श्री काशीनाथ त्रिवेदी और श्री वंशीधर इसके सम्पादकत्रय हैं। इस बाल पत्रिका के सभी लेख शिक्षाप्रद होते हैं। प्रस्तुत अंक में रात रानी, डा० रवीन्द्र नाथ ठाकुर, मामा कंस, गिजुभाई क्या थे?, दलपत तिवारी, माता मोण्टी सोरी, आओ प्यारे बच्चो! आओ! बापू आदि सभी लेख रोचक और शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका का वार्षिक मूल्य केवल १) रु० है।

संगीत-कला—(विलावल--अंक) (जनवरी-फर्वरी १९४१) सम्पादक श्री नन्दलाल शर्मा, प्रकाशक संगीत कलाभवन लश्कर, ग्वालियर। इस संयुक्त विशेषांक में रायल साइज के २४० पृष्ठ तथा कई चित्र हैं। इसका वार्षिक मूल्य २।) रु० है। इस विशेषांक का प्रधान विषय तो विलावल राग का दिग्दर्शन है। लेकिन पाठकों के मनोरंजन और शिक्षण के लिये इसमें नृत्य वाद्य आदि सभी विषय सम्मिलित कर दिये गये हैं। भारतवर्ष में संगीत-कला को पुनर्जीवित करने का यह प्रयत्न सर्वथा सराहनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्ववाणी—संरक्षक सुन्दरलाल जी, सम्पादक तथा प्रकाशक श्री विश्वम्भर नाथ, विश्ववाणी प्रेस, साउथ मलाका, इलाहाबाद। वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति का ।।≈) हिन्दी में यह उच्च कोटि की पत्रिका है। जनवरी १९४१ से इसका जन्म हुआ है। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर प्रकाश डालने वाले और उनको सुलझाने वाले लेख रहते हैं। हिन्दू मुस्लिम एकता को बढ़ाने में यह एक आदर्श पत्र है। विश्व की सभी संस्कृतियों के प्रति इसका समान सत्कार है। इसीसे पत्र सचमुच विश्ववाणी है।

योरुपीय राजधानियों और मुख्य नगरों के बीच की दूरी

लन्दन से पेरिस	२०५	मील
,, बर्लिन	६१०	,,
,, कोलोन	३१०	,,
,, फ्रैंकफोर्ट	४००	,,
,, प्रेग	६२०	,,
,, वियना	८००	,,
,, लियोन्स	४८०	,,
,, मारसिलीज	६६०	,,
,, वार्सा	९५०	,,
,, हम्बर्ग	४६०	,,
,, हनोवर	४४०	,,
,, रोम	९२०	,,
,, बुडापेस्ट	९२०	,,
,, मास्को	१६५०	,,
,, बेलग्रेड	११५०	,,
बर्लिन से रोम	७५०	,,
,, प्रेग	१७५	,,
,, बुडापेस्ट	४५०	,,
,, वियना	५००	,,
,, बुखारेस्ट	८५०	,,

पेरिस से बर्लिन	६००	मील
,, ऐम्सटर्डम	२६०	,,
,, रोम	७००	,,
,, प्रेग	५८०	,,
,, वियना	६५०	,,
,, वार्सा	८५०	,,
,, लेनिनग्राड	१३५०	,,
,, मास्को	१६००	,,
रोम से प्राग	६००	,,
,, वियना	२४०	,,
लेनिनग्राड से मास्को	४००	,,
,, वार्सा	६००	,,
,, बुखारेस्ट	११००	,,
,, बुडापेस्ट	१२५०	,,
,, बर्लिन	८५०	,,
,, बेलग्रेड	११००	,,
,, प्रेग	१०००	,,

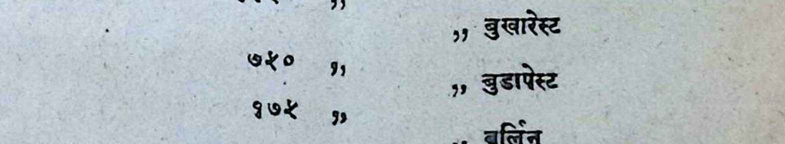

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

दिसम्बर १९४१

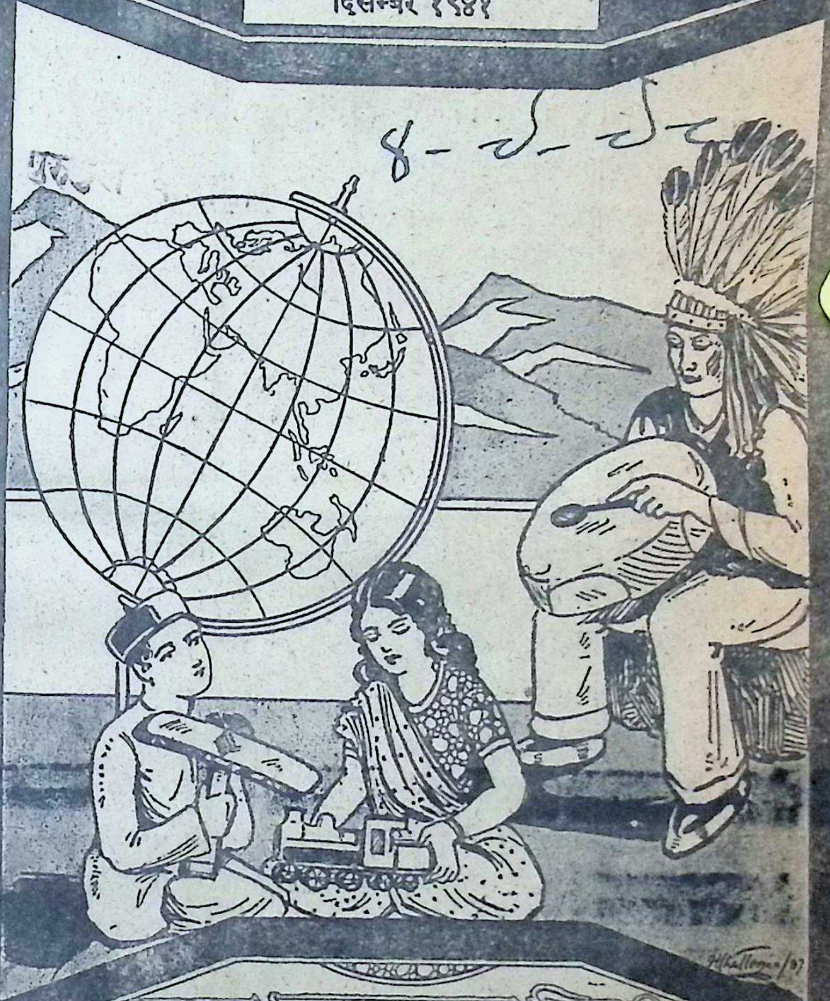

सम्पादकः रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

आप को यह जान कर हर्ष होगा कि अब भूगोल कार्यालय का निजी भवन कक्कर घाट, ३ मीरापुर रोड पर तयार हो गया है। अब तक भूगोल कार्यालय जमुना क्रिश्चियन हाई स्कूल के सामने जमुना रोड २४२ नम्बर पर था। कार्यालय का उद्घाटन बसन्त पञ्चमी २१ जनवरी १९४२ को उपर्युक्त स्थान पर होगा। अतएव भविष्य में पत्र व्यवहार मैनेजर, भूगोल कार्यालय ३ मीरापुर रोड, इलाहाबाद के पते पर करना चाहिये।

भवदीय

मैनेजर

विषय-सूची

विषय				पृष्ठ
१—उत्तरी ध्रुव की विजय	...	...	...	१
२—हिटलर के इंजीनियर	...	...	...	६
३—पथरक्षक जहाजों के काम की गुप्त बातें	...	...	...	७
४—जीवन नौका	...	...	...	८
५—जर्मनी के तेल का व्यय	...	...	...	९
६—वेंकूवर बन्दर गाह ...	...	...	...	१०
७—अफ्रीका का गैंडा	...	...	...	
८—नार्वे की एक कहानी (पवनदेव)	...	...	...	१७
९—युद्ध के कारण भीषण हानि	...	...	...	१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] पौष, सं० १९९८, दिसम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ८

उत्तरी ध्रुव की विजय

रिअर ऐडमिरल पीरी को उत्तरी ध्रुव की विजय का सौभाग्य प्राप्त है। राबर्ट पीरी अमरीका का निवासी था। उसका जन्म १८५६ ई० में हुआ और वह १९२० ई० तक जीवित रहा। उसने आर्कटिक वृत्त की खोज किया और उत्तरी ध्रुव में ६ अप्रैल सन् १९०९ ई० को पहुँचा।

जब राबर्ट पीरी ३० वर्ष का हुआ तो उसे ध्रुव की पता लगाने की चिन्ता उत्पन्न हुई। तेईस वर्ष की अवस्था से ५३ वर्ष की अवस्था तक में उसने आर्कटिक प्रान्त की आठ बार यात्रा की। प्रत्येक बार वह कुछ न कुछ अधिक उत्तर की ओर गया और खोज करके वापस हुआ। आठवीं बार उसने अंतिम यात्रा उत्तरी ध्रुव की किया जिसमें उसे सफलता प्राप्त हुई।

पीरी का मुख्य ध्येय उत्तरी ध्रुव की खोज थी परन्तु खोज के साथ ही साथ उसने और भी बहुत सी खोजें कीं। उसने हज़ारों मील लम्बे चौड़े आर्कटिक प्रान्त का पता लगाया और उसका मानचित्र तयार किया। राबर्ट पीरी ने ही आइसलैंड की खोज को और मालूम किया कि वह एक बड़ा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल ८,२७,००० वर्गमील है। आइसलैण्ड द्वीप के तटों के भ्रमण करने में उसे बर्फीली पहाड़ियों, कंदराओं, तैरती बरफ की विशाल चट्टानों तथा बर्फीले तूफानों आदि का सामना करना पड़ा था। उसी ने पता लगाया कि उत्तरी अक्षांशों में उत्तरी ध्रुव से १२०० मील की दूरी पर एस्किमो जाति के लोग निवास करते हैं जो शिकार करने और मछली मारने पर ही अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

पीरी की वीरता का पता इसी से चलता है कि जब उसके जहाज़ ने एक बड़े बरफ के चट्टान से टक्कर खाया और उसी दुर्घटना में उसका पैर टूट गया तो भी उसने अपनी योजना नहीं बदली और डाक्टरों के मना करने पर भी वह अपनी उत्तरी ध्रुव की यात्रा जारी रखने पर ही डटा रहा। कुछ दिनों के पश्चात् वह स्मिथ साउण्ड में मेविल्ले की खाड़ी में पहुँचाया गया। उसके बाद उसने अपने जहाज़ को वापस कर दिया और अपना शीत काल एस्किमों के मध्य व्यतीत करने के लिये रहने लगा।

जैसे ही पीरी बाहर निकलने योग्य हो गया वह शिकार करने के लिये जाने लगा। वह दरियाई घोड़ों से किस प्रकार बाल बाल बचा इसका वर्णन उसने स्वयम् किया है। जब पीरी [illegible] बोट पर शिकार के लिये जा रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ दरियाई घोड़े बरफ पर सो रहे थे। पीरी की नाव पर एस्किमो थे। एक एस्किमो ने भाले द्वारा एक दरियाई घोड़े पर वार किया इतने में सभी दरियाई घोड़ों ने नाव को चारों ओर से घेर लिया। वह अपने दांतों से उलटना चाहते थे। यदि वह नाव के उलटने में सफल होते तो शायद ही कोई व्यक्ति जीवित बचता परन्तु जो दरियाई घोड़े नाव के समीप आते थे उन पर पीरी और उसके साथी गोली चलाते जाते थे। चोट खाकर वह पानी के बाहर भाग जाते थे और उनके स्थान पर दूसरे दरियाई घोड़े आ जाते थे। इसी प्रकार लड़ाई कुछ स्थान तक चलती रही। आखिरकार पीरी की नाव किनारे लगी और उनकी जान बची।

वसंत ऋतु के आते ही पीरी एक नार्वे निवासी साथी के साथ ग्रीनलैण्ड के बर्फीले मैदान को पार करने के लिये चल पड़ा। उस समय तक एस्किमो लोग भी ग्रीनलैण्ड के आरपार का पता न लगा सके थे। २७ दिन तक यात्रा करने के बाद पीरी की भोजन सामग्री समाप्त हो गई। वह दूसरे तट की ओर शीघ्रता पूर्वक बढ़ रहे थे जिससे वहां पर सील मछलियां मिलें और वह अपनी भूक को शान्ति करें आखिरकार वह बरफ की पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। वह चोटी पर खड़े विस्मय पूर्ण दृष्टि से बरफ के मरुप्रदेश का अवलोकन करने लगे। उन्हें नीचे एक बड़ा विशाल मैदान दिखाई पड़ा। वह मैदान पौदों तथा वृक्षों से भरा था और बीच बीच में बरफ की सफेद चट्टानें दिखाई पड़ रही थीं। बनस्पति के मैदान में लोमड़ियों का समूह चर रहा था।

यह ग्रीनलैंड का उत्तरी भाग था। इस भाग में बरफ की चोटियों और विशाल हिमानियों के बीच में एक उपजाऊ घाटी थी। इस घाटी को एस्किमो लोग भी न जानते थे।

इस खोज से पता चल गया कि ग्रीनलैण्ड एक द्वीप है और उसके तथा उत्तरी ध्रुव के मध्य बरफ से ढका हुआ समुद्र है।

ध्रुव की यात्रा

जुलाई १९०८ ई० को पीरी उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिये रूज़वेल्ट नामक ज़हाज़ में रवाना हुआ। शेरीडन अंतरीप में उसने अपना शीतकाल व्यतीत किया। यह स्थान उत्तरी ध्रुव से केवल ४५० मील दूर है। इस स्थान पर तट से १५० गज़ की दूरी पर जहाज़ बरफ के मध्य फँसा था। तट, जहाज़ और चारों ओर वहां के जगत में बरफ ही बरफ थी। शीत हवाओं के झोंके तथा तूफान चलते थे। वहां का ताप शून्य तथा शून्य से ६० अंश नीचे था। ज्वार की चाल के साथही साथ खाड़ी में बरफ की विशाल शिलाओं के घरघराहट की भयानक आवाज़ होती थी।

जब बसंत ऋतु आया तो वहां से ९० मील की दूरी पर कोलम्बिया अंतरीप में अड्डा बनाया गया। वहां ७

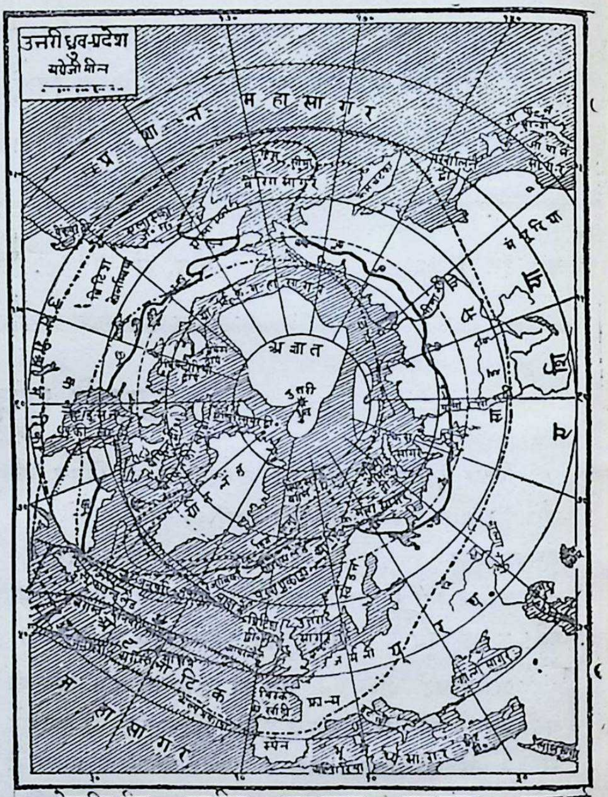

ठोसहिम-सीमा वृक्षसीमा परम प्रकाश अल्प प्रकाश व्यापार मार्ग हिम-सीमा और बस्तियाँ स्पिट्सबर्गन में कोयले की खानें

पीरी के आदमी, ५९ एस्किमो, १४० कुत्ते और २८ स्लेज (बरफ पर चलने वाली) गाड़ियां इकट्ठा की गईं। प्रत्येक स्लेज़ गाड़ी में भोजन बनाने के बर्तन, कुत्ते, ४ मनुष्य और ५० या ६० दिन के भोजन का सामान रक्खा गया।

पहली मार्च को बरफ का तूफान आया और उड़ती बरफ, आदमी तथा कुत्ते आंखों से ओझल हो गये। धीरे धीरे यह समूह रोज़ाना की कठिनाइयों का सामना करता हुआ आगे बढ़ता गया और ८७ उत्तरी अक्षांश पर पहुँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां ६ महीने तक दिन रहता है। इस प्रकार एक मास तक यात्रा जारी रही और एक के बाद दूसरा समूह रोज़ाना लौटता गया। आखिर पीरी उसका नौकर हेनसन और चार एस्किमो रह गये। उसके पास पांच स्लेज़ गाड़ियां, चालीस चुने कुत्ते और चालीस दिन के लिये भोजन सामग्री थी जब कि वह ध्रुव के अंतिम १३३ मील की यात्रा के लिये चला था।

दूसरी अप्रैल को आधी रात के बाद उन लोगों ने यात्रा आरम्भ किया। पीरी सबसे आगे चल रहा था। शीत ध्रुव प्रदेश की हवा चल रही थी। बरफ पर ही यात्रा करनी थी दूसरे दिन मार्ग में कुछ पानी होने के कारण उनकी यात्रा रुक गई थी। दो दिन के बाद वह एक ऐसे खुले जलाशय में पहुँचे जहां बरफ की एक विशाल चट्टान थी। उस विशाल हिमानी को पार करके जैसे ही अंतिम स्लेज गाड़ी पार हुई वैसे ही धड़ाके के साथ हिमानी चकनाचूर हो गई। यदि एक मिनट पहले हिमानी चकनाचूर होती तो एक भी व्यक्ति जीवित न रहता। फिर भी वह २५ मील प्रति दिन की चाल से बढ़ते ही चले गये।

६ अप्रैल १९०९ ई० को पीरी और उसके साथी पोल पर जा खड़े हुये। यह उत्तरी गोलार्द्ध का वह स्थान था जिसका उत्तर, दक्षिण और पश्चिम संसार में नहीं है। आर्कटिक प्रदेश की यात्रा में पीरी एक रेशमी झंडा अपने शरीर में लपेटे था। यह झण्डा उसकी स्त्री ने उसे दिया था। इस झण्डे को निकाल कर पीरी ने ध्रुव की ऊँची बरफ की चट्टान पर गाड़ दिया।

ध्रुव के समीपवर्ती स्थानों में पीरी ने …

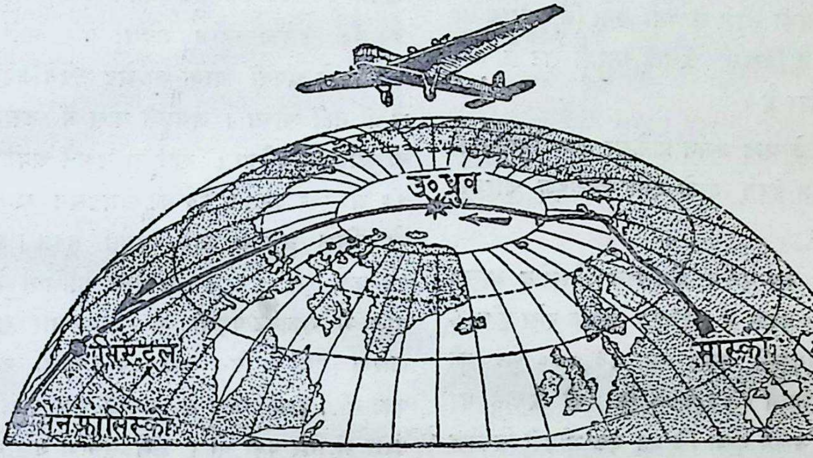

व्यतीत किये। ध्रुव से पांच मील की दूरी पर उसने सूराख करके ९००० फुट की गहराई की आवाज़ सुनी फिर भी तह का पता न चला। इस चार सौ वर्षों के कठिन परिश्रम के पश्चात् पीरी उत्तरी ध्रुव पर पहुंचा। चार सौ वर्ष के बीच में ७५५ आदमी उत्तरी ध्रुव के पता लगाने वाले नष्ट हो चुके थे।

वायुयान द्वारा ध्रुव की यात्रा

यूं तो वायुयान द्वारा भी कितने ही सज्जनों ने उत्तरी ध्रुव पहुंचने का प्रयत्न किया परन्तु सबसे पहले आर० ई० बोर्ड वायुयान द्वारा वहां पहुँचा था। वह स्पिट बर्मेन से ९ मई १९२६ ई० को उड़ा था। वह उत्तरी ध्रुव पहुँच कर १५ घंटे में वापस चला आया। उसके दो दिन के पश्चात् रोलड अमंडसेन अम्बेर्टो नोबाइल और लिंकन एल्सवर्थ स्पिटबर्गन से नोर्गे नामक इटली के विमान पर रवाना हुये और १६ घंटे में ध्रुव पर पहुँचे। उसके तीन घंटे के बाद अलास्का में उन्होंने प्वाइन्ट बैरो बनाया।

सर हर्बर्ट विल्किन्स ने अलास्का के अधिकांश अनजान स्थानों की खोज की थी। वह १९२८ ई० में अलास्का से स्पिटबर्गन को उड़ा और वहां २४ घंटे में पहुँचा था। यह दूरी १२०० मील की थी। उसी साल इटैलो नामक विमान में जनरल नोबाइल ध्रुव के लिये उड़ा। वह ब्रिडजेमन के अंतरीप ग्रीनलैण्ड के सबसे अधिक उत्तरी भाग में है। उसने बहुत से अजनबी प्रदेश का भ्रमण किया था। वह ध्रुव पर सरलता पूर्वक पहुँच गया था। लौटती बार अचानक दुर्घटना हुई और उसके जीवन का अन्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी ध्रुव और अंटार्कटिक

जब पीरी के उत्तरी ध्रुव की खोज करने का समाचार संसार को विदित हो गया तो दक्षिणी ध्रुव की खोज करने की प्रबल इच्छा लोगों के हृदय में उत्पन्न हुई खोज करने वाले अँग्रेज़ों ने पहले ही विशाल अंटार्कटिक प्रदेश के किनारों की खोज कर ली थी ।

१६०१ ई० में कैप्टन आर० एफ० स्काट अपने समूह के साथ डिस्कवरी नामक जहाज में रवाना हुआ । यह जहाज़ बर्फीले प्रदेश की यात्रा के लिये खास तौर से तयार किया गया था । स्काट ने अंटार्कटिक में अपनी दो ऋतुयें व्यतीत कीं और किंग एडवर्ड सप्तम लैण्ड का पता लगाया और जहां पर ठहरा था वहां से ४०० मील तक की यात्रा किया । उसकी खोज से पता लगा कि अंटार्कटिक प्रदेश में एक पठार है जिसकी ऊँचाई समुद्री तट के आगे १० हज़ार फुट से ऊपर है ।

स्काट की खोज के बाद जर्मन प्रोफेसर वान ड्रियाल्स्की तथा फ्रान्सीसी खोज करने वाले जान बैपटाइज़ चारकाट ने अपनी खोजें कीं ।

१६०७ ई० में सर एर्नेस्ट शेक्लेटन निमरोद नामक जहाज़ में अंटार्कटिक प्रदेश में पहुँचा । उसने रास द्वीप के राडस नामक ज्वालामुखी पर्वत का १६,७०० फुट की ऊँचाई तक पता लगाया । १३,७०० फुट की ऊँचाई पर जब यह पहुंचा तो उसने देखा कि वह एक भीतरी विशाल प्राचीन ज्वालामुखी पर्वत के मुख पर खड़ा है । उसने दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रस्थान किया और ८८°२३ दक्षिणी अक्षांश तक पहुँचा यह स्थान दक्षिणी ध्रुव से १२० मील की दूरी पर था । भोजन की कमी और बर्फीली आँधियों के कारण उसे विवश होकर लौटना पड़ा । इस यात्रा से सिद्ध हो गया कि उनकी पूरी तयारी के साथ यात्रा की जावे तो दक्षिणी ध्रुव का पता लगाया जा सकता है ।

उसके बाद नार्वे के रोंल्ड अमंडसन तथा इंगलैंड के कैप्टन स्काट ने दक्षिणी ध्रुव की यात्रा को और उसका पता लगाया । अमंडसन १४ दिसम्बर १६११ ई० को और स्काट १६ जनवरी १६११ ई० को दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचा ।

अमंडसन को स्टाक की ध्रुव यात्रा की योजना का भली भांति पता लग चुका था । उसने शैक्लटन आदि के भूतपूर्व यात्रियों का भी भली भांति अध्ययन किया था इसलिये उसने समझ लिया था कि सबसे आसान मार्ग उसके लिये ह्वेल्स की खाड़ी और रास बैरियर की खाड़ी होकर है । यह स्थान शैक्लेटन वाले मार्ग से १०० मील अधिक ध्रुव के समीप है । अमण्डसन के लिये केवल एक खतरा था कि कहीं उसका अड्डा बर्फीली चट्टान की भांति बह न जावे । स्काट ने शेक्लेटन की भांति शंचूरिया के छोटे घोड़ों को अपनी यात्रा के लिये उपयुक्त समझा था परन्तु अमंडसन पीरी की उत्तरी ध्रुव की यात्रा से प्रभावित था इसलिये उसने कुत्तों की स्लेज गाड़ियों पर अपनी यात्रा निर्भर किया ।

अगस्त १६१० ई० को अमंडसन दक्षिण की ओर फ्रिडजॉफ नेनसन के पुराने फ्राम नामक जहाज पर चला । जब तक उसका जहाज मदीरा पार नहीं कर गया तब तक उसने अपनी यात्रा का भेद अपने जहाज के मल्लाहों से भी नहीं खोला । जनवरी मास में उसका जहाज ह्वेल्स की खाड़ी में पहुँचा । वहां पर उसने अपना अड्डा जमाया । १६ अक्तूबर १६११ ई० को अमंडसन चार स्लेज गाड़ियों पर दक्षिण ध्रुव की ओर रवाना हुआ । प्रत्येक गाड़ी में १३ कुत्ते जुते हुये थे । बर्फीली आंधियों के कारण उनकी यात्रा में रुकावट पड़ती थी । एक बार बर्फीले तूफान के कारण उन्हें ५ दिन तक अपनी यात्रा स्थगित भी करनी पड़ी थी । इसी बीच में उनकी एक गाड़ी हिमागार की दरार में गिर पड़ी थी । अमंडसन ने उसे शीघ्र ही निकाला यदि थोड़ी भी देर की जाती तो उसके आदमी तथा कुत्ते सदैव के लिये वहीं बरफ़ की तह में सो जाते । इस स्थान तक में वह शेक्लेटन के दक्षिणी स्थान को पार कर चुके थे ।

खोज करने वालों के मुँह बरफ से ढक रहे थे । शीत इतनी विकराल थी कि हवा के लगते ही मुंह पर बरफ जम जाती थी । जैसे जैसे वह ध्रुव के समीप होते जाते थे उन्हें चिंता ग्रसित करती जाती थी कि कहीं वह अपनी महान यात्रा में असफल न हो जांय और घर भी लौट कर न जा सकें । १४ दिसम्बर १६११ ई० को दोपहर के बाद तीन बजे स्लेज गाड़ी के कोचवान के मुख से अचानक आवाज़ निकली "हम दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच गये" । यह सुनते ही समूह के सभी लोग आनन्द से उछल पड़े । यह प्रथम खोज करने वाले थे जो दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचे थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमँडसन के चलने के पहले ही जून १९१० ई० में कैप्टन स्काट तेरानोवा नामक जहाज पर दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के लिये चल चुका था। भयानक बर्फीले तूफान का सामना करने के पश्चात् वह इवान्स की अंतरीप (रास द्वीप) में पहुँचे। वहीं पर उन्होंने अपना शीतकाल का अड्डा बनाया। कैप्टन स्काट विज्ञान सम्बन्धी खोज करने में लग गया। पहली नवम्बर १९११ ई० को वह ध्रुव की ओर चला। १५ नवम्बर को वह वनठान कैम्प नामक स्थान पर पहुँचा। यह स्थान इवाँस अंतरीप से १३० मील की दूरी पर है। इस स्थान पर वह एक दिन तक रुक रहे। खोज करने वालों के पास भोजन की कमी हो गई थी इसलिये उन्हें अपने घोड़ों को मार कर खाना पड़ा। ५ दिसम्बर को बर्फीले तूफान के कारण चार दिन तक यात्रा स्थगित रखनी पड़ी। जब यात्रा आरम्भ हुई तो गहरी, मुलायम बरफ के कारण स्थिति और भी अधिक जटिल हो गई थी। ९ दिसम्बर को बियर्डमोर हिमागार के समीप उन्हें अपने बचे हुये टट्टू भी मार डालने पड़े।

उस हिमागार पर चढ़ना बड़ा कठिन प्रतीत हुआ। हिमागार की दरार बड़ी खतरनाक थी। बड़े दिन के दिवस उनका एक साथी ५०फुट गहरी और ८ फुट चौड़ी दरार में जा गिरा। उसे उन्होंने अलपाइन की रस्सी से बाहर निकाला। पठार समाप्त होने के पश्चात् सहायक समूह वापस लौट पड़ा।

अब खोज करने वाले समूह में कैप्टन स्काट, डाक्टर ई० एच० विलसन, लेफ्टीनेन्ट एच० जी० बावर्स, कैप्टन एल० ई० ई० ओट्स और इवान्स शेष रह गये थे। ९ जनवरी १९१२ ई० को उन्होंने शैक्लेटन के पहुँचे हुये सबसे दक्षिणी स्थान को पार किया और १६ जनवरी को वह दक्षिणी ध्रुव पर जा पहुँचे। उस स्थान पर जैसे ही वह पहुँचे उन्होंने विस्मय और निराशापूर्ण एक स्लेज गाड़ी पर नार्वे के लोगों का काला झंडा देखा। यह झंडा अमँडसन का था। इस प्रकार स्काट दक्षिणी ध्रुव के प्रधान पारितोषिक से वंचित रहा और अमँडसन को दक्षिणी ध्रुव पर सर्व प्रथम पहुँचने का गर्व प्राप्त हुआ।

लौटते समय अंग्रेज़ महाशयों को ८०० मील तक अपनी गाड़ियाँ खींच कर लानी पड़ीं। इवाँस और ओट्स पाले तथा बरफ के कारण परेशान थे। फिर भी वह बियर्ड मोर हिमागार तक चले आये। आखिरकार इवाँस को इतना कष्ट पहुँचा कि उसकी मृत्यु हो गई। १८ दिन के बाद थके हुये लोग मध्यवर्ती बैरियर पर पहुंचे और उन्हें मालूम हुआ कि उनके पास तेल की कमी है। ओट्स को बरफ की सरदी के कारण बड़ी परेशानी थी। वह बहुधा बीमार रहता था। उसने देखा कि उसके कारण यात्रा में बाधा पड़ रही है और देरी होती जाती है। शायद उसके कारण अधिक देरी हो जावे और कैम्प पर आये हुये सहायक कुत्ते पुनः अड्डे को वापस चले जावें।

दूसरे दिन ओट्स सबेरे उठा। बर्फीला तूफान चल रहा था उसी दशा में वह बाहर घूमने चला गया। उसके साथियों ने मना किया परन्तु वह नहीं माना और वह फिर लौट कर नहीं आया और इस प्रकार उसके जीवन का अंत हो गया।

उसके बाद शेष व्यक्ति अपनी यात्रा कठिनाइयों का सामना करते हुये तय करते रहे। जब वह १९ मार्च को टोन कैम्प से ११ मील की दूरी पर पहुँचे तो एक बड़ा भयानक बर्फीला तूफान आया। आठ दिन तक लगातार तूफान चलता रहा और वह अपने डेरे से बाहर नहीं जा सके। २९ मार्च को स्काट ने अपनी अंतिम डायरी लिखी आठ महीने के बाद डेरे के अन्दर उनके मृतक शरीर तथा डायरी मिली। डायरी में लिखा था "यदि हम जीवित रहते तो हम अपने परिश्रम, कठिनाई, साहस और सहनशीलता का ऐसा इतिहास अंगरेज़ जाति को सुनाते जिससे उसका हृदय उछल पड़ता। यह पत्र तथा हमारे मृतक शरीर हमारी कहानी की कथा सुनायेंगे।"

यद्यपि दक्षिणी ध्रुव पर लोग पहुँच चुके थे फिर भी अन्टार्कटिक प्रदेश के बहुत से भाग का बिलकुल पता न था। १९११ ई० में सर डगलस मासन ने भ्रमण किया और विक्टोरियालैण्ड तथा कैसर विलियम द्वितीय लैण्ड के मध्यवर्ती प्रदेश की खोज की। आजकल उस भाग को जार्ज पञ्चम तथा क्वीन मेरी लैंड कहते हैं।

१९११ ई० में शैक्लेटन ने अंटार्कटिक प्रान्त का भ्रमण किया। उसने २८०० मील लम्बे प्रान्त की खोज की। वह एक द्वीप में पहुँचा जिसका पता संसार को न था। उस द्वीप का नाम उसने केर्ड तट रक्खा। उसके बाद उसका इडयोरेंस जहाज बरफ में फँस गया। उसका जहाज वेडेल सागर में फँसा था। वहीं जहाज़ नष्ट हो गया और वह लोग एलीफेण्ट द्वीप में पहुँचे। यह द्वीप शेटलैंड के दक्षिण की ओर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्लेटन ने सोचा कि वहां पर वह अपनी शीतकाल की ऋतु न व्यतीत कर सकेगा इसलिये वह एक नाव पर अपने कुछ चुने साथियों के साथ ७५० मील तक तूफानी समुद्र में दक्षिणी जार्जिया तक गया। मौसम खराब होने के कारण द्वीप के दक्षिणी भाग में उसे नाव ठहरानी पड़ी। वह उस द्वीप के तट का भ्रमण करते हुये उत्तर की ओर जाना चाहते थे। नाव खड़ी करके शैक्लेटन अपने दो साथियों को साथ लेकर द्वीप को पार करने के लिये चल पड़ा। वह ४००० फुट की ऊँचाई पर हिमागार और बरफ के मैदानों के मध्य ३६ घंटे तक लगातार चलता रहा।

३० मील की यात्रा के बाद उन्हें स्ट्रोमनेस व्हेलिंग स्टेशन मिला। स्टेशन पर पहुँचते ही उन्होंने दो बालकों को देखा जो उन्हें देख कर भाग खड़े हुये। शेक्लेटन आदि की सूरत बाल बढ़ने तथा कपड़ों की गंदगी आदि के कारण बिगड़ गई थी इसी कारण स्टेशन के प्रबन्धकर्ता ने भी नहीं पहचाना यद्यपि वह शैक्लेटन से परिचित था। शैक्लेटन के बोलने पर प्रबन्धकर्ता ने उसे पहिचाना और फिर उसे तथा उसके साथियों को भोजन तथा कपड़े दिये और एलीफेण्ट द्वीप में रुके लोगों को भी सहायता पहुँचाने का प्रबन्ध किया।

१९२१ ई० में शैक्लेटन फिर दक्षिण की ओर गया परन्तु इन्फ्लूएँज़ा से बीमार होगया और जार्जिया के दक्षिण जनवरी में उसकी मृत्यु हो गई। वहीं द्वीप में उसकी समाधि है।

उसके बाद से अंटार्कटिक प्रदेश का मानचित्र तथा चार्ट बनता चला आ रहा है। उसके बाद बिमानों की सहायता से १९२८-२९ में दक्षिण की चार यात्रायें की गईं। उनकी खोज से पता चलता है कि किंग एडवर्ड सप्तम के लैण्ड के पीछे बीर्डलैंड है। एडमिरल बीर्ड विमान द्वारा दक्षिणी ध्रुव गया था और वापस भी चला आया था। सर हर्बर विल्किंस ने बतलाया कि ग्राहमलैंड के दक्षिण हर्स्ट लैंड है। सर डगलस मासन ने पता लगाया कि हेम्पलैंड के पूर्व मेकराबर्स्टन लैंड हैं। इस प्रकार अंटार्कटिक प्रान्त का मानचित्र धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

हिटलर के इंजीनियर

समाचार पत्रों से विदित होता है कि समीपवर्ती भविष्य में हिटलर का जो आक्रमण रूस पर होगा वह सबसे अधिक विकराल तथा भयानक होगा। इस प्रकार के आक्रमण के लिये अधिक सैनिक तयारी की भी आवश्यकता है और इसी लिये रूसी आक्रमण में हिटलर का काफी समय लग रहा है।

इस आशय का ठीक ठीक पता जर्मन इंजीनियरिंग पत्र से पता चलता है। यह पत्र टाड-संस्था का समाचार विदित करता है। इंजीनियरों की टाड संस्था ने ही हिटलर की बड़ी मोटर वाली मज़बूत सड़कें तयार की। फ्रान्स के पतन होने के पश्चात् इस संस्था ने चीन तट पर क़िलों की जंजीर बनाई है। पूर्वी सीमा पर युद्ध होने के कारण यह संस्था जर्मन सेनाओं के साथ ही साथ पूर्व की ओर चली गई है।

यह संस्था इस समय मास्को तथा लेनिनग्राड को जर्मनी से मिलाने के लिये नई सड़कें तथा रेलवे लाइनें बना रही है। यह सड़कें तयार हो जाने पर लेनिनग्राड और मास्को का युद्ध फिर आरम्भ हो जावेगा।

लाखों की संख्या में चतुर सड़क बनाने वाले काम कर रहे हैं। उनकी सहायता के लिये बाल्टिक राज्यों के मज़दूर तथा स्वयम् सेवक हैं। सभी काम करने वालों को सड़क बनाने के आधुनिक औज़ार दिये गये हैं। सड़क बनाने वाले बर्मे, बिजली के हथौड़े और स्टीम रोलरों द्वारा नई सड़कें बनाई जा रही हैं।

यह संस्था रूसी रेलवे लाइनों को नैरो गाज (एक गाड़ी चलने वाली रेलवे) लाइन में बदल रही है। बर्लिन और स्मोलिस्क के मध्य सड़क तयार होने के कारण रात दिन रेलगाड़ियां चला करती हैं। जर्मन लोगों का कहना है कि पूर्वी युद्ध के समाप्त होने के पहले ही वह जर्मनी और रूस के मध्य कई रेलवे लाइनें बना सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ रक्षक जहाज़ों (केनवाय) की कुछ गुप्त बातें

पथ रक्षक सेना रायल नैवी द्वारा बनाई हुई योजना के अनुसार कार्य करती है। यह सेना नियत किये हुये बन्दरगाहों पर रक्खी जाती है। जिस मार्ग से होकर पथ रक्षक सेना को जाना होता है उस मार्ग पर पथ रक्षक सेना के जहाज़ अपने नियत बन्दरगाहों से धीरे धीरे एकत्रित होते हैं। पथ रक्षक सेना के जहाज़ों को ज्वार भाटा को गड़बड़ी के कारण एकत्रित होने में काफी समय लग जाता है और कभी कभी तो उन्हें तयार होने में महीनों का समय लग जाता है।

पथ-रक्षक सेना के जहाजों की चाल सब से कम चलने वाले जहाज के बराबर रखनी पड़ती है। इस लिये किसी भी पथ-रक्षक सेना के सभी जहाजों की चाल बराबर होनी आवश्यक होती है। इसी कारण बृटिश जहाजी बेड़े के पास तेज़ और सुस्त दोनों प्रकार की पथ-रक्षक जल सेनाएँ हैं। तेज़ चलने वाले पथ-रक्षक सेना के तेज जहाज १५ नाट वाले लाइनर जहाजों के साथ चलते हैं और सुस्त चलने वाले पथ रक्षक जहाज ९ नाट वाले जहाजों के साथ चलते हैं।

पथ रक्षक सेना वाले जहाजों में रोशनी के ऊपर पर्दे पड़े रहते हैं, प्रकाश किसी प्रकार भी बाहर से देखा नहीं जा सकता है। कैबिनों (छोटे कमरों) के भीतर जो लाइट (रोशनी) रहती है उससे और कैबिन के द्वार से बिजली की स्वीच का कुछ ऐसा सम्बन्ध रहता है कि द्वार खोलते ही कैबिन के भीतर का प्रकाश आप से आप बुझ जाता है।

पथ रक्षक जहाजों के पुल, पहिये वाले घर, इंजिन के स्थान आदि की रक्षा के लिये वहां पर बालू के बोरे रक्खे जाते हैं। जहाज के मालिक और उनकी स्त्री को टीन की टोपी दी जाती है। जहाज के समस्त मल्लाहों के पास गैस-मास्क (गैस से बचने का यंत्र) रहता है। उन लोगों के पास आग लगाने वाले बमों से बचने और हवाई आक्रमण से रक्षा करने के लिये प्रत्येक भांति के सामान रहते हैं।

पथ रक्षक जहाजों के अगले और पिछले भागों में जहाज का नाम लिखा रहता है जिससे जब डाक में जहाज ठहरता है तो बन्दरगाह के अफसर उसे भली-भांति जान सकें। जहाज का नाम काले तख्ते पर लिखा रहता है। जब जहाज चलने लगता है तो यह तख़्ता उतार कर रख लिया जाता है।

पथ-रक्षक वाले जहाजों में एक प्रकार की ख़तरे की घड़ी रहती है। इस घड़ी के चेहरे पर कुछ रुकने के चिन्ह लगे रहते हैं। इन रुकावट वाले चिन्हों का हिसाब ऐसा होता है कि प्रत्येक १० मिनट या जितने समय में इच्छा हो घंटी बजाई जा सकती है। सभी जहाजों की घड़ियां एक सी होती हैं। इस लिये जब पथ रक्षक सेना के जहाज घूमते हैं तो प्रत्येक जहाज के कप्तान को घंटी द्वारा संकेत कर दिया जाता है कि उसके जहाज को किस समय घूमना पड़ेगा। इस प्रकार से सभी जहाज सरलतापूर्वक बिना एक दूसरे से टक्कर खाये हुये घूम जाते हैं।

कुहरे के समय में जहाज अपने सामने वाले जहाज को भी नहीं देख सकते हैं इस लिये ऐसी दशा में एक दूसरे से लड़जाने का बड़ा भय रहता है। जहाजों के अपने बीच में लड़ने से बचने के लिये काफी दूरी रखनी पड़ती है। इसके लिये प्रत्येक जहाज के पिछले भाग में चमकदार रंग से रंगी हुई लकड़ी का एक लम्बा पीपा होता है। इस पीपे को फाग व्वाय कहते हैं। पीछे वाला प्रत्येक जहाज इस फाग-व्वाय के समीप रहने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार प्रत्येक न दिखलाई पड़ने वाले जहाजों का स्थान नियत रहता है। इस प्रकार जहाजों को रखना सरल कार्य नहीं है परन्तु प्रत्येक जहाज के कैप्टन को मालूम है। कि यदि ऐसे समय उसका जहाज अकेला हो जावेगा तो वह यू-बोट का शिकार अवश्य ही हो जावेगा।

प्रत्येक जहाज के ऊपर धुयें फेकने के लिये खास यंत्र जहाज के डेक पर होते हैं। जब शत्रु जहाज पीछा करता है तो इनके द्वारा घना धुंवा बाहर जहाज के पीछे फेंका जाता है जिससे शत्रु के जहाज से बचने में सहायता होती है।

पथ रक्षक सेना के साथ विध्वंस कारक और दूसरे बचाने वाले ज़हाज भी रहते हैं जो शत्रु-जहाज के आने पर उसका सामना करते हैं और पथ-रक्षक सेना को बचाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ रक्षक सेना पर शत्रु के आक्रमण का अधिक भय रहता है परन्तु फिर भी सामान ले जाने वाले जहाजों की रक्षा और किसी दूसरे रूप होनी कठिन है। अकेले जहाज की इस प्रकार रक्षा करना असम्भव है।

ब्रिटेन के कुछ व्यापारिक जहाजों में उनकी रक्षा के लिये युद्ध सामग्री तथा हथियार रहते हैं। बचाने वाले जहाजों की तोपों के साथ साथ व्यापारिक जहाज जब अपने बचाने वाले अस्त्रों का प्रयोग हवाई आक्रमण के समय करते हैं तो बम वर्षक वायुयानों के लिये कठिन हो जाता है कि वह जहाज पर ठीक निशाने पर बम गिरा सकें। इसी कारण बहुत से जल सेना के विशेषज्ञों का कहना है कि पथ रक्षक सेना से यू-बोटों और हवाई आक्रमण दोनों का भय कम हो गया है।

जीवन नौका

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि जीवन नौका किसे कहते हैं। यह एक बड़ी मजबूत नाव होती है जो तूफान या समय या संकट काल में मल्लाहों को डूबे हुये या फटे हुये जहाजों से बचाने के काम आती है।

शायद तुम्हें कभी ऐसा अवसर प्राप्त हो कि जब तुम देखो कि जीवन नौका समुद्र में उतारी जाती है। वह समुद्र में पहले अभ्यास के लिये उतारी जाती है। उसका दृश्य बड़ा सुहावना होता है।

यह नाव इतनी बड़ी है कि नाव खेने वालों के अलावा इसमें और भी बहुत से मनुष्यों का समावेश हो सके। जीवन नौका को बहुत मजबूत भी होना चाहिये जिससे वह उन बड़ी लहरों के धक्के को संभाल सके जिनके धक्के से बड़े बड़े जहाज चकनाचूर हो जाते हैं।

जीवन नौका बड़ी हल्की होती है। हल्के होने के कारण यदि यह उलट जाती है या इसमें बड़ी लहरों से पानी भर जाता है तो यह पुनः ठीक हो सकती है और डूबती नहीं है।

इस नाव के चारों ओर रस्सी के फंदे लगे रहते हैं। वह रस्सी द्वारा नाव में बँधे रहते हैं जिससे कि वह नाव से गिर न सकें। इस नाव की पालें छोटी परन्तु बड़ी मजबूत बनाई जाती हैं जिससे तेज हवा में भी फट न सकें।

जीवन नौका के मल्लाह चौड़ी पेटियां या जाकेट पहिनते हैं। पेटियों या जाकेट में कार्क के टुकड़े लगे रहते हैं। यदि कोई व्यक्ति समुद्र में अचानक गिर जाता है तो वह कार्कों के कारण डूबता नहीं है वरन् पानी पर तैरता रहता है।

कभी कभी जीवन नौका के मल्लाह उसें बन्दरगाहों पर यह दिखलाने के लिये उलट देते हैं कि वह स्वयम् कितनी जल्दी फिर ठीक सीधी हो जाती है। उस समय तुम देखोगे कि उसके आदमी पानी में भीग जाते हैं, उनके कपड़ों तथा शरीर से पानी चूता रहता है परन्तु फिर भी वह अपने स्थानों में चिपके रहते हैं। यह वहाँ देखने वाले बच्चों के लिये एक बड़ा उपहास होता है।

क्या तुम शीत काल की अँधेरी तूफानी रात में जीवन नौका के बहादुर मल्लाहों की दशा का अनुमान कर सकते हो? सचमुच ही वही समय होता है जब कि उनकी कुशलता तथा वीरता की पूर्ण परीक्षा होती है।

अँधेरी भयानक रात में जब कि किसी खतरे में पड़े हुये जहाज की रोशनी किनारे पर दिखाई पड़ती है तो शीघ्र ही जमामर्द मल्लाह जीवन नौका को निकालते हैं। वह अपनी कार्क वाली जैकेट पहिनते हैं, अपनी नौका को पानी में उतारते हैं और तूफान में अपना मार्ग समाप्त करके संकट में पड़े हुये जहाज के पास जा पहुँचते हैं।

जहाज़ के पास जाकर वह डूबते हुये जहाज़ के आदमियों को अपनी नावों में उतार उतार कर बैठाते हैं। तूफान के समय यह कार्य करना बड़ा कठिन है। जहाज़ के मनुष्यों को अपनी नावों में बैठा कर वह फिर किनारे की ओर अपनी नावें खे कर लाते हैं। इस प्रकार वह डूबते जहाज़ के मनुष्यों को बचाते हैं।

यह सोचने की बात है कि जीवन नौका के मल्लाह कितने बहादुर होते हैं जो अपना जीवन खतरे में डाल कर दूसरों का जीवन बचाते हैं। जिन लोगों के लिये वह अपना जीवन खतरे में डालते हैं शायद उन्हें कभी वह अपनी आंखों से भी नहीं देखे रहते हैं। जीवन नौका के मल्लाह आदर तथा कृपा के पात्र होते हैं।

जब हम किसी जीवन नौका के मनुष्य के अच्छे कार्यों (दूसरों के जीवन बचाने) का वर्णन पढ़ते हैं तो हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम होता है कि जीवन नौका के मनुष्य वैसे ही सूरमा होते हैं जैसे कि रण क्षेत्र के विजई सूरमा होते हैं।

मल्लाह अपने मोटे कपड़े तथा भारी बूट, जूतों के कारण शायद हमें सूरमा न प्रतीत हो तो यह सम्भव है क्योंकि किसी भी सूरमा को हम देखते ही नहीं पहिचान सकते हैं, किसी भी वस्तु को केवल देखने मात्र से ही उसके गुणों की पहिचान नहीं कर सकते हैं। गुणों की पहिचान तो परीक्षा के समय ही होती है।

जर्मनी के तेल का व्यय

जर्मनी रूस के तेल के कुवों पर अधिकार प्राप्त करने के लिये बढ़ रहा है और उसमें अपने तेल का व्यय कर रहा है। जर्मनी रूस में अपनी मशीन वाली सेना में कितना तेल व्यय कर रहा है इसका लेखा पहले कभी भी नहीं लगाया गया। उसके पास कितना तेल है वह कम है या अधिक, इस बात को किसी भी विदेशी (जर्मनी के भी कुछ गिने चुने लोगों को छोड़ कर) के लिये ठीक ठीक कहना असम्भव है।

फिर भी प्राप्त समाचारों पर अनुमान लगाना सम्भव है। यहां पर उन्हीं प्राप्त समाचारों पर अनुमान लगाये गये हिसाब का ब्योरा दिया जाता है।

इस समय जर्मनी अपनी पूर्वी सेना में ६ हजार ३ सौ टैंक, ७० हज़ार से अधिक लारियाँ तथा दूसरी गाड़ियाँ, ३७५० मोटर साइकिलें का प्रयोग कर रहा है। सेना को युद्ध सामग्री और रसद पहुँचाने के लिये भी बहुत सी लारियों का प्रयोग हो रहा है।

हिसाब लगाने से पता चलता है कि टैंकों के लिये ८,४०,००० मन और हथियार बन्द गाड़ियों, लारियों तथा मोटर साइकिलों के लिये ४६,००,००० मन माहवार लकड़ी की आवश्यकता है।

विमानों के खर्च का ब्योरा लगाने में इस बात का ध्यान रक्खा जा रहा है कि लफ्टवाफे के केवल ४००० विमान पूर्वी सीमा पर लड़ रहे हैं। इनमें से प्रत्येक विमान का प्रति घंटे आधा पौंड खर्च है।

यदि इनमें से एक हजार दो इंजिन वाले बम्ब वर्षक और एक हज़ार एक इंजिन वाले लड़ाका विमान हैं और वह तीन घन्टे प्रति दिन आते हैं तो उनका माहवारी खर्च २८,८०,००० मन होगा। २,८०,००० मन इसके अलावा लगभग २,८०,००० मन मोटर लकड़ी का प्रयोग लफ्टवाफे दूसरे सामान ले जाने वाले जहाजों का होगा।

इसी के साथ साथ बाल्टिक सागरी तथा काला सागरी जर्मन जहाजी बेड़े और रूमानी, हंगेरियन और फिनिश सेना का खर्च मिला कर लगभग १४,००,००० मन प्रति मास होगा। रूमानी, हंगेरियन और फिनिश सेनाओं को भी जर्मनी द्वारा सामग्री मिलती है।

रूसी आक्रमण में जर्मनी का माहवारी तेल का खर्च ८४,००,००० मन प्रति मास है। इसी में ४२०,००० मन लुब्रिकेटिंग तेल भी शामिल है।

जर्मनी ने जिन योरुपीय देशों पर अधिकार जमा रक्खा है वहाँ से उसको प्रति मास २५२,००,००० मन तेल प्राप्त हो सकता है। इस मात्रा में कच्चे तेल, Synthetic तेल और तेल के स्थान पर जलाई जाने वाली लकड़ी की मात्रा भी शामिल है।

इस प्रकार नाज़ी योरुप के पास १६८,००,००० मन तेल प्रति मास शेष रह जाता है। यह तेल वहां के नागरिकों के खर्च के लिये भी काफी नहीं है। फिर हिटलर को अधिकार किये हुये देशों की जर्मन सेना को भी तेल देना पड़ता है। उसे अटलांटिक सागरी युद्ध के लिये भी तेल पहुँचाना पड़ता है।

इससे प्रतीत होता है कि वह अपने जमा किये हुये तेल के भंडार से तेल निकाल रहा है। नाज़ी संस्था के प्रधान अफसरों ने कहा है कि हमारी आवश्यकता के लिये हमारे पास काफी तेल है अब भविष्य में चल कर यही देखना है कि उनके पास आवश्यकता के लिये काफी तेल है अथवा नहीं है।

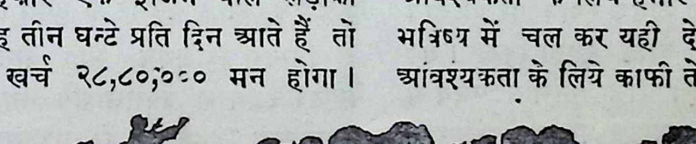

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेंकूवर का बन्दरगाह

वेंकूवर ब्रिटिश कोलम्बिया का व्यापारिक केन्द्र है। यह कनाडा का तीसरा बड़ा नगर है। यह नगर एक प्रायद्वीप पर स्थित है और जार्जिया जलडमरूमध्य के भीतर की ओर घुसा है। इस की बस्ती एक ओर और मुख्य नगर दूसरी ओर हैं। दोनों भागों के बीच में इंगलिश खाड़ी है। यहीं पर ९०० एकड़ लम्बा एक पुराना बन है जो स्टैनली पार्क के नाम से प्रसिद्ध है।

वेंकूवर की उत्पत्ति तथा उत्थान का इतिहास बड़ा अनोखा है। सोलहवीं सदी के अन्त में फ्रान्सिस ड्रेक उत्तरपूर्व के मार्ग का पता लगाता हुआ वाशिंगटन और ओरेगन खाड़ी के किनारे आ पहुँचा। उसने इस तट का नाम "नवीन अल्बियन" रक्खा था। १६७८ ई० में केप्टन कुक नूटका नामक स्थान पर (जो वेंकूवर द्वीप के पश्चिमी तट पर है) पहुँचा। इस समुद्री तट के पता लग जाने से फर (नमदा) का व्यापार होने लगा और उत्तरी प्रशांत महासागर में व्यापारिक जहाजों की दौड़ होने लगी। १७८८ ई० में कैप्टन जान मिअरेस ने फर (नमदा) के व्यापार का एक केन्द्र नूटका स्थान में खोला। कुछ समय के पश्चात् स्पेन वालों ने इस पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार नूटका स्पेन के जहाजी बेड़े का अड्डा होगया किन्तु १७९० ई० की नूटका की संधि के अनुसार यह अँग्रेजों के हाथ में आ गया।

इसके दूसरे बर्ष कैप्टन जार्ज वेंकूवर डिसकवरी और चैथम नामक जहाज ले कर वेंकूवर तट की ओर चला। वेंकूवर अप्रेल १७८९ को रवाना हुआ। इस सरकार की ओर से आज्ञा मिली थी कि वह किनारे किनारे पता लगावे कि कौन कौन से देश, नगर अथवा जगहें अँग्रेजों के पास हैं और उनपर अधिकार भी करता जावे। १३ जून १७९२ ई० को वेंकूवर प्रास्पेक्ट प्वाइन्ट नामक स्थान पर पहुँचा। इसका नाम वेंकूवर ने बुर्राड खाड़ी रक्खा। यह खाड़ी २० मील लम्बी है। आज वर्तमान समय में इस खाड़ी होकर १५००० जहाज प्रति वर्ष संसार के प्रत्येक भाग से आते जाते हैं।

बर्तमान समय में वेंकूवर बन्दरगाह में ५५ समुद्री जहाजी लाइनें हैं। १९३४ ई० में इस बन्दरगाह में १,१४,८८,३५२ टन (लगभग २१ करोड़ मन) सामान उतारा गया। यह हार्बर ४८ बर्गमील क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह दुनिया के बड़े प्राकृतिक बन्दरगाहों में गिना जाता है। इस बन्दरगाह का समुद्री तट ९८ मील है। समुद्री जहाजों के घाट, टर्मिनल्स (जहाजी तथा रेलवे अड्डे) गल्ला उतारने रखने के स्थान, सामान सुरक्षित रखने के लिये ठंडे स्थान, चीनी साफ करने के कारखाने, जहाजों के मरम्मत करने के स्थान, ड्राई डाक्स (सूखे घाट) आदि जगहें सभी तट पर स्थित हैं। इसके सिवा तेल साफ करने के कारखाने, लोहे के कारखाने, रेल तथा जहाजों के सामान तयार करने के कारखाने आदि भी हैं। वेंकूवर में रसाइन, कागज, तार आदि बनाने के भी बड़े बड़े कारखाने हैं।

बुर्राड खाड़ी के जङ्गली तट १८६२ इ० तक बेकार पड़े रहे। १८६२ ई० में जानमार्टन, सामब्राई हाऊस और विलियम हेलस्टोन नामक युवक यार्कशायर से आये। यह लोग ग्रेटईस्टर्न नामक स्थान पर उतरे। यह लोग ब्रिटिश कोलम्बिया की सोने की खानों में काम करने के लिये आये थे। मार्टन ने किनारे पर रात बिताई और वहीं रहने का पक्का इरादा किया। १८६३ में दो व्यक्ति वेस्ट मिनिस्टर बन्दरगाह से आये और बुर्राड खाड़ी के उत्तर की ओर बिजली द्वारा एक काठ कबार का कारखाना खोला। इस कारखाने के चारों ओर मूडी वाइल नामक गांव बस गया। दो वर्ष बाद कैप्टन स्टैम्प ने हेस्टिङ्गज नामक आरी से लकड़ी चीरने का कारखाना दक्षिणी किनारे पर स्थापित किया और ग्रैनवाइल नामक गांव बसाया। ग्रैनवाइल मूडीवाइल और हेस्टिङ्गज आज वेंकूवर के मुख्य जिले हैं।

मिस्टर विलियम सी० वान हार्न कैनेडियन पैस्फिक रेलवे के उपसभापति तथा जनरल मैनेजर जुलाई सन् १८८४ ई० में प्रशान्त महासागर के तट पर रेलवे के भूमि के लिये आए। वेंकूवर स्थान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हों ने रेलवे का अन्तिम स्टेशन बनाने के लिये बहुत उपयुक्त समझा। इस रेलवे के आने के कारण यह बन्दरगाह बहुत उन्नति कर गया। ब्रिटिश कोलम्बिया १८७१ ई० में संयुक्त कनैडा में शामिल हो गया और इस प्रकार डोमीनियन का एक प्रान्त बन गया। जब यह रेल मूडो बन्दरगाह पर पहुँची तो इसको पूरा करने की बात तै हुई। उसी समय वेंकूवर नगर बनाने की बात भी तै की गई और उसके लिये स्थान भी निर्णय किया गया।

१८८४ ई० में लाचलान ए० हेमिल्टन नामक युवक ने जङ्गल के बीच में सड़कें बनानी आरम्भ किया। जान डब्ल्यू स्टेवर्ट सिविल इञ्जीनियर की अध्यक्षता में पड़ताल आरम्भ हुई। तीन दिन के कठिन परिश्रम के बाद एक मील लम्बा मार्ग जङ्गल काट कर बनाया गया। एक मनुष्य के जीवन काल के भीतर ही वेंकूवर एक जङ्गल से एक व्यापारिक उन्नति शील नगर की अवस्था में बदल गया। अप्रैल ६ सन् १८८६ ई० के पार्लियामेंट के कानून के अनुसार वेंकूवर नगर को बनाने का निश्चय किया गया। १३ जून को जंगल के साफ करने को आग लगाई गई, वह आग कटे हुये बन से ३०० एकड़ के फासिले पर थी। गर्मी की आंधी चलने के कारण अग्नि का प्रकोप बढ़ा और कटी हुई लकड़ी भी जलने लगी। मीलों तक के हरे वृक्ष, डाल और पत्तियां सभी जल कर राख हो गईं। वेंकूवर के निवासी अपने अपने घरों को छोड़ कर पानी की ओर भागे। जो लोग पानी तथा नावों की ओर भागे वे तो बच गये शेष लोग जिन्होंने पांच मिनट की भी देरी की वे गर्मी और धुएँ के कारण बेसुध हो गये। ४० मिनट के भीतर ही सारा वेंकूवर जल कर राख हो गया। पत्थर और ईंटों के सिवा और कुछ न रहा। पश्चिम की ओर हेस्टिङ्गज मिल, एक या दो रहने के मकान और फाल्स खाड़ी पर आठ या दस झोपड़े रह गये। इस अग्निकांड के चार दिन के बाद ही वेंकूवर नगर के घर बनने आरम्भ हो गये।

इसी बीच कैनेडियन पैसिफिक रेलवे लाइन तयार हो गई और २३ मई सन १८८७ को पहली रेलगाड़ी मांट्रायल नगर से वेंकूवर को आई। वेंकूवर के घाट बाद में बनाये गये। मूडीवाइल उत्तरी वेंकूवर का जिला बनाया गया प्रशान्त महासागर के प्रसिद्ध जहाज इम्प्रेस आफ इन्डिया, इम्प्रेस आफ चाइना और इम्प्रेस आफ जापान वेंकूवर बन्दरगाह को उन्नतिशील बनाने में बड़े सहायक हुये हैं।

वेंकूवर का बन्दरगाह कई भागों में बंटा है। बाहरी बन्दरगाह इंगलिश खाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। भीतरी भाग में प्रथम नैरोज (संकरी खाड़ी) हो कर जाना पड़ता है। यह लाएन्सगेट (शेर द्वार) के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि यहाँ से दो पर्वतीय चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं जो शेरों की तरह हैं। इस के और द्वितीय नैरोज के मध्य में बन्दरगाह का मुख्य भाग है। यह भाग ५ मील लम्बा तथा २ मील चौड़ा है। द्वितीय नैरोज पर एक कल द्वारा उठने वाला पुल है। इस बन्दरगाह के आठ मील उत्तर की ओर मूडी बन्दरगाह है। बुर्राड खाड़ी ११ मील और आगे की ओर फैली है। फाल्स की खाड़ी के ऊपर भी एक पुल बना है।

वेंकूवर हार्बर कमीशन १९१३ ई० में स्थापित हुई। यह इंगलिश खाड़ी पर अटकिंसन से प्वाइन्ट ग्रे तक के तट का प्रबन्ध करती है।

इस बन्दरगाह के अधिकांश कारखाने तथा घाट बुर्राड खाड़ी के उत्तरी तथा दक्षिणी किनारे पर हैं। टर्मिनल्स में डाक (घाट) गोदाम घर और सामान लाने ले जाने के साधन हैं। वर्तमान समय में फायर प्रूफ (जिसमें आग न लग सके) घाट तथा गोदाम बनाये गये हैं। मुख्य मुख्य घाटों में मिला कर १६६९६४ वर्गफुट भूमि में छत है। दक्षिणी किनारे पर बी० सी० घाट कैनेडियन पैसिफिक रेलवे के घाट बन्दरगाह के कमिश्नर के अधिकार में हैं। इन घाटों में आधुनिक सामान उतारने तथा चढ़ाने वाली मशीनें हैं।

किनारे पर ७ गल्ला उठाने वाली कलें और १९ पृथ्वी के भीतर गल्ला रखने वाली कोठरियां (खत्ती) है। इन खत्तियों में १७०४३००० बुशेल १४०२४४०० मन व्यापारिक गल्ला तथा ६२५,००० बुशेल ५०००० मन खाने पीने का गल्ला रहता है। इन खत्तियों में साफ करने, सामान अन्दर रखने तथा बाहर लाने के लिये भी कलें हैं। अलबर्ट पूल एलिवेटर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गल्ले वाली लारियों के गल्ला उतारने के लिये मशीन है। यह मशीन १ घंटे में २१ मोटरों का गल्ला उतारती है। ला प्वाइन्ट में मछली के तेल रखने की टङ्की है। इस में १,७१,११२ टन (४६ लाख मन) तेल भरा जा सकता है। एक नया डाक (घाट) गरी, लकड़ी तथा साग (सरसों, अलसी आदि) के तेलों को उतारने चढ़ाने के लिये बनाया गया है। यहां पर ७ टङ्कियां हैं। उनमें ३०००० गैलन (८१००००० मन) तेल आ सकता है। यहां पर तेल भरने तथा निकालने के लिये दो पम्प लगे हैं। इन पम्पों का काम बिजली द्वारा होता है। इनमें प्रत्येक पम्प ६७५००० प्रति घंटा के हिसाब से भर सकता है।

फिश डाक का प्रबन्ध बन्दरगाह के कमिश्नर के हाथ में है। प्रशान्त महासागर तट पर यह घाट सब घाटों से अधिक आधुनिक है। यहां पर धुत्रां घर, बरफ के कारखाने पानी जमाने तथा बरफ रखने वाले कमरे हैं। यहां के कमरे कम्पनियों को मछली का व्यापार करने के लिये ठीके पर उठाये जाते हैं। इस घाट पर ६ बिजली की क्रेनें बोझ उठाने वाली मशीनें) हैं।

बेलण्टाइन का घाट ठोस पक्का बना हुआ है इस के कमरों की लम्बाई २६१० फुट है। बाहरी कमरों की गहराई ४५ फुट भीतरी कमरों की गहराई ३२ फुट है। लाप्वाइन्ट घाट भी पक्का है। उसके २५०० फुट कमरों की लम्बाई और भीतरी कमरों की गहराई ३५ फुट है।

कनेडियन पैस्फिक रेलवे के घाटों के कमरों की लम्बाई १४३० फुट से अधिक है। बी०सी० घाट के कमरों की लम्बाई २५१० फुट और गहराई ३५ फुट है। इसी प्रकार चीनी आदि दूसरे सामानों के रखने के लिये भी गुदाम बने हैं।

पिट्रौल पहुँचाने के लिये बन्दरगाह पर प्रबन्ध है। एक अग्निबोट (प्लूविथस) हर समय तयार खड़ा रहता है। इस की लम्बाई ९४ फुट चौड़ाई १७ फुट चार इञ्च है। इसमें चार फेंकने वाली मशीनें हैं जो २०० फुट ऊँचा पानी फेंक सकती हैं।

उत्तरी वेंकूवर की बुर्राड ड्राई डाक (सूखे घाट) में १०००५ टन के दो जहाजों के तयार करने के लिये स्थान है। इस सूखे में २०००० टन ([illegible]) मन का बोझ सँभालने वाला तैरता हुआ घाट है। इसकी लम्बाई ५५६ फुट ६ इञ्च और चौड़ाई ९८ फुट है। मुख्य घाट की लम्बाई सात सौ फुट और उसके सहायक की ४५ फुट है। इसमें दो हज़ार सात सौ मन वाली एक क्रेन है।

वेंकूवर बन्दरगाह लकड़ी का तेल सागौन का तेल और पिट्रोल भलीभांति पहुँचा सकता है। इन तेलों के पहुँचाने का प्रबन्ध जगह जगह पर भली भांति है। बुर्राड खाड़ी के उत्तरी तट पर इओको स्थान पर तेल साफ करने का इम्पीरियल कारखाना है। यहां पर १२७८५०० बैरेल (१२३६८७०००० मन) तेल रखने के टैङ्क बने हुये हैं और प्रति दिन १८००० बैरेल (१७५२४००० मन) तेल का काम होता है। ब्रिटिश कोलम्बिया शेल आयल कम्पनी के कारखाने ७० एकड़ भूमि में हैं। इसके सामने १७ सौ फुट गहरा पानी का समुद्र तट है।

स्टैनली पार्क की पूर्व की ओर जहाजी बेड़ों का अड्डा तथा जहाजी स्टेशन है। कोल बन्दरगाह पर तेलों के पाइप हैं इसके सिवा बोंडेड आएल तथा ड्यूटीपेड टैंक्स से कैनेडियन पैस्फिक रेलवे के घाटों तक तेल के नल लगे हुये हैं और चार जहाज एक के पश्चात् दूसरे भरे जा सकते हैं।

वेंकूवर से तीन फ्रीटकार (केराये पर चलने वाले जहाज) चला करते हैं। ये जहाज कनैडियन पैस्फिक तथा ग्रेट नदर्न पैस्फिक, ग्रेट ईस्टर्न रेलवे की ओर से चला करते हैं। पहले दो रेलों के जहाज बुर्राड खाड़ी तथा वेंकूवर द्वीप को जाते हैं। पैस्फिक ग्रेट ईस्टर्न का जहाज स्क्वैमिश (वेंकूवरद्वीप के उत्तरी किनारे पर) को जाता है। वेंकूवर बन्दरगाह से उत्तरी अमरीका की लकड़ी संसार भर में भेजी जाती है। बुर्राड खाड़ी के उत्तर की ओर ये लकड़ी के लट्ठे 'लूमर बूमिंग ग्राउन्ड' (लकड़ो सोखने की भूमि) में बन्दरगाह के मालिक की आज्ञा द्वारा रक्खे जाते हैं। इन लट्ठों के रखने में ब्रान्टन नामक नावें सहायता होती है। यह बन्दरगाह के कमिश्नर के अधिकार में है।

प्रास्पेक्ट प्वाइन्ट पर एक सिगनल स्टेशन है। यहां पर समुद्री सेना के पुराने रौटिंग (अफसर) रहते हैं जो जहाजों की देख भाल करते हैं। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई जहाज भीतर की ओर आने को होता है तो यहां लोग बन्दरगाह के मालिक के दफ़्तर में सूचना देते हैं।

वेंकूवर बन्दरगाह में जहाज समुद्री उथल पुथल होने पर भी आ सकते हैं। यह बन्दरगाह ऐसे स्थान पर स्थित है कि हर दशा में सुरक्षित रहता है और छोटे से छोटा जहाज सरलतापूर्वक आकर खड़ा हो सकता है। लहरों के होते हुये जहाजों पर बोझ लादा जा सकता है।

यद्यपि वेंकूवर बन्दरगाह को सभी प्राकृतिक सुविधाएं प्राप्त हैं तो भी बहुत समय तक वह योरुपीय व्यापारिक मार्ग से अलग रहा। १९१५ ई० में पनामा नहर खोली गई जिसके कारण वेंकूवर संसार भर का बन्दरगाह बन गया। पहले लिवरपूल से हार्न अंतरीप हो कर वेंकूवर की दूरी १४,५५८ मील थी किन्तु पनामा के खुल जाने से यह दूरी ५४७ मील कम हो गई है। इस कमी के हो जाने से कनैडा का गेहूँ बहुत बड़ी मात्रा में बाहर भेजा जाता है।

फरवरी सन् १६०९ ई० में पहले पहल मैक्सिको का गेहूँ आठ सौ बुशल (६४०० मन) वेंकूवर से रवाना किया गया। पनामा नहर के बन जाने पर १९१७ में ६९,०२९ बुशल (७९,३६७ मन) रवाना किया गया। जनवरी १८२१ में पहले पहल व्यापार का हिसाब लगाया गया तो मालूम हुआ कि कुल ५,७२,७४७ बुशल (४,५८,१९२ मन) गेहूँ बाहर गया। १९३२ के पश्चात् वेंकूवर बन्दरगाह से ९६-७२७२२ बुशल (७७४९८१७५ मन) गेहूँ बाहर भेजा जाने लगा। गेहूँ तथा दूसरे अनाज मिलाकर यह मात्रा १०५००६६२५ बुशल (८४२०५५४० मन) हो जाती है। यह उत्तरी अमरीका के सब से बड़ा गल्ले के व्यापार का बन्दरगाह है।

वेंकूवर बन्दरगाह से आठ समुद्री व्यापारिक मार्ग दुनिया के भिन्न भिन्न भागों को जाते हैं। पहला मार्ग योरुप को, दूसरा प्राचीन देशों (पूर्वी देश, चीन जापान आदि) को, तीसरा आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड हवाई तथा फिजी द्वीपों को, चौथा संयुक्तराष्ट्र तथा कनैडा के अटलांटिक तट को, पाँचवाँ मध्य तथा दक्षिणी अमरीका और पश्चिमी द्वीप समूह को, छठां कैलीफोर्निया को, सातवां दक्षिणी अफ्रीका को, और आठवाँ मार्ग अमरीका के तटीय बन्दरगाहों को जाता है।

संसार की सभी समुद्री जहाजी लाइनें वेंकूवर बन्दरगाह का प्रयोग करती हैं। ब्लूफेनल लाइन, ब्लू स्टार, कनैडियन पैस्फिक, फर्नेस डानाल्डसन, हरीसन और रायल मेल लाइनें प्रसिद्ध ब्रिटिश लाइनें हैं जो वेंकूवर बन्दरगाह का प्रयोग करती हैं। नार्थ जर्मनलाएड निपनयूसेनकैसा, कम्पेन जनरेल ट्रान्सअटलांटिक, नैवीगेजीओन लिबेरा ट्रीस्टना, हालैंड अमरीका, फ्रेडओलेसेन आदि लाइनों से जहाज भी आते जाते हैं। फ्रूट एक्सप्रेस लाइन और इम्पोरियल आयल लिमिटेड और बहुत सी अमरीकन तथा तटीय जहाजी लाइनों के जहाज भी जाते आते हैं।

इम्प्रेस आफ जापान (२६,०३२ टन) कनैडियन पैस्फिक लाइन के जङ्गी जहाजी बेड़े के झंडे का जहाज और प्रशान्त सागर का ब्लूरिबन्ड नामक सब से बड़े जहाज हैं जो इस बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं इस प्रकार योरुप अमरीका, जापान न्यूयार्क के सभी बड़े तथा छोटे जहाज इस बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं।

ये सभी जहाज इस बन्दरगाह में लाएन्सगेट (शेर द्वार) होकर आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

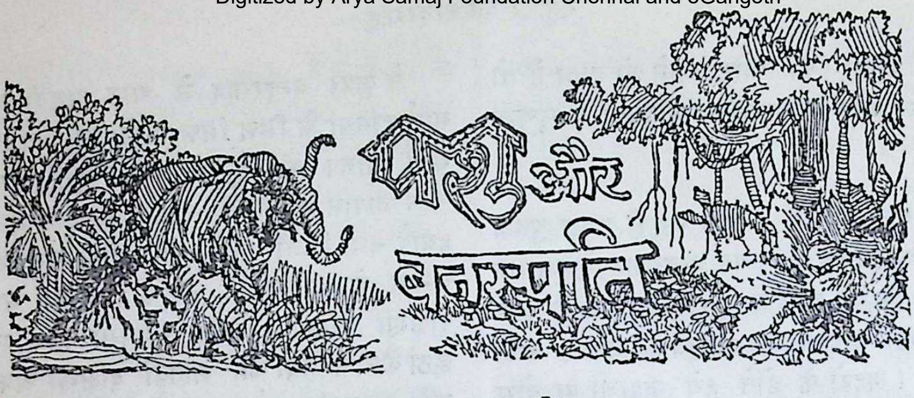

अफ्रीका का गैंडा

गैंडा अफ्रीका के बनों का एक प्रसिद्ध पशु है। यह बड़ा मोटा लम्बे थूथुन वाला होता है। यह झाड़ियों के बीच रहना पसंद करता है। गैंडे की सींगें छोटी और नुकीली होती हैं। सींगें सचमुच गुथे हुये बालों की होती हैं और वज़नी होती हैं। उनका मूल्य बहुत होता है। वह १५ रुपये प्रति पौंड के भाव से बिकती हैं। गैंडे की सींगों को पीस कर चीन में मादक पदार्थों में मिलाते हैं।

गैंडे के रहने के स्थान के चारों ओर घने झाड़ झंकाड़ तथा बनस्पति होती है। वह कंटीली झाड़ियों और पत्तियों तथा टहनियों को खाता है। शिकार मार कर खाना कभी पसंद नहीं करता है। जहां वह रहता है वहां बन में पतियों का सर्वनाश हो जाता है।

गैंडा बड़ा डरपोक जानवर होता है। उसे जैसे ही ख़तरे की आहट होती है वह या तो आक्रमण करता है या भाग निकलता है। वह भागने में अपनी थकाई का परिचय नहीं देता है।

पहिले अफ्रीका के बनों में बहुत गैंडे रहते थे परन्तु अब गैंडों की संख्या बहुत कम हो गई है। लोग इसका शिकार बहुत करते हैं। अफ्रीका के निवासी इसको एक बेकार पशु समझते हैं इसलिये वह इसका मारा जाना अच्छा समझते हैं। यदि गैंडों के मारे जाने का यही क्रम चलता रहा तो फिर अफ्रीका के बनों में उनका पाया जाना दुर्लभ हो जावेगा। गैंडा अफ्रीका निवासियों के माल को बड़ी हानि पहुँचाता है इसी कारण वह चाहते हैं कि गैंडों का नाम संसार से मिट जावे। गैंडे को अफ्रीका निवासी कफारू कहते हैं। इनकी संख्या तेज़ी के साथ घट रही है।

यदि किसी मनुष्य के गैंडे के जीवन का अध्ययन करना है तो उसे घने बन के भीतर जहां पर अभी मनुष्य लोग निवास नहीं करते हैं वहां जाकर करना होगा। गैंडा अपने स्वभाव का बड़ा पक्का होता है। वह दिन प्रति दिन लगभग एक ही समय अपने नियमानुसार काम करता है। गर्मी के समय दिन में वह वृक्षों की छाया में पड़ कर आराम करता है। अधिक गरम होने पर उठ कर पानी अथवा कीचड़ में नहाता है। दोपहर के पश्चात् जब गर्मी का समय व्यतीत हो जाता है तब वह भोजन की खोज में जाता है। चरने के लिये अपने नियमित २ फुट चौड़े मार्ग से होकर जाता है और अपने घर से पानी पीने के स्थान तक मार्ग बनाये रहता है। वह इसी मार्ग पर अपने पाखाना फिरने के लिये भी एक नियत स्थान बनाए रखता है। पानी पीने जाते समय ही नियमित स्थान पर पाखाना फिरता है। कभी कभी तो उसके पानी पीने का स्थान उसके रहने वाले स्थान से ५ या ६ मील की दूरी पर होता है। वह अपने मार्ग से दूर कभी न जावेगा और जिस स्थान पर रहेगा उसी के चारों ओर घूम घूम कर चर कर अपना पेट भरेगा। भोजन करने अथवा पानी पीने के पश्चात् वह शीघ्र से शीघ्र अपने घर को वापस लौट आना पसन्द करता है।

गैंडा डर जाने अथवा भय का कारण ज्ञात करने पर तेज़ी से भाग निकलता है और जब तक दूर नहीं निकल जाता है तब तक वह मुड़ कर नहीं देखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैंडे के मार्ग पर अथवा मार्ग के समीप मनुष्य का निवास स्थान बनाना ठीक नहीं है क्योंकि वह उसे उजाड़ डालने अथवा मनुष्य के मार डालने का प्रयत्न अवश्य करता है। रेना (गैंडे) के क्रोध का अन्दाज़ लगाना कठिन है। वह बड़ा नासमझ होता है। जब उसे किसी ख़तरे की आहट चिड़ियों द्वारा मालूम होती है तो उसका विश्वास न करके स्वयं उसके पता लगाने का प्रयत्न करता है। वह दूर तक सूंघ सकता है और किसी भी वस्तु को सूंघ अथवा सुन कर पता लगाने का प्रयत्न करता है। ठीक पता लगाने के लिये ख़तरे के समीप आता है और यदि उसे गंध द्वारा ख़तरे का पता लग जाता है तो फिर वह हमला करने तथा भाग जाने की चिंता में कुछ समय आगा पीछा सोचता रहता है। कभी कभी मनुष्य के समीप लगभग १२ गज़ पर आ जाता है और फिर भाग निकलता है और कभी कभी दूर से ही आक्रमण कर बैठता है। इसका शायद यह मतलब होता है कि यदि वह ख़तरे वाली वस्तु का ज्ञान कर लेता है तो आक्रमण करने का साहस करता है और यदि उसे ख़तरे वाली वस्तु का ज्ञान नहीं होता है तो फिर वह आक्रमण करने का साहस नहीं करता है।

कभी कभी गैंडा विपरीत वायु में आदमी के बिलकुल समीप आ फटकता है और मनुष्य को पार भी कर जाता है परन्तु पार करने पर जैसे ही उसे मानव गंध मिलती है वह आक्रमण न करके अपने पैरों को सिर पर रख कर अपनी प्राण रक्षा के लिये भागता है। गैंडा अपने शरीर को चोट खाने से बहुत बचाता है। परन्तु यदि वह घायल हो गया तो फिर बड़ा भयानक रूप धारण कर लेता है और अवश्य हमला करता है।

एक बार एक अंग्रेज़ महिला अफ्रीका के बन में घूम रही थी उसने अपने मित्रों से कहा कि मुझे तो बन में कोई भी ख़तरा नहीं मालूम होता। दो तीन दिन बाद एकाएक उससे एक गैंडे से भेंट हो गई। उस समय उसने एक छोटी रायफल से (जिसकी

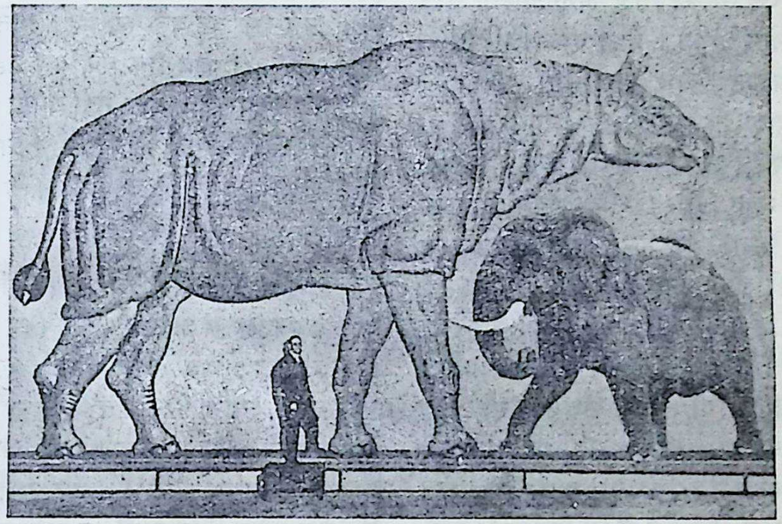

गैंडे का पूर्वज (गैंडे की जाति का एक जानवर)

चोट से गैंडा मर नहीं सकता था) गैंडे पर चोट की गैंडा घायल होकर उस पर टूट पड़ा और उसे मार डाला। उसके दूसरे दिन उसी मार्ग से मोटर द्वारा एक अंग्रेज व्यक्ति पत्नी सहित यात्रा कर रहे थे। गैंडे ने मोटर देख उस पर आक्रमण किया महिला की जान तो भाग्यवश बच गई परन्तु उसने अंग्रेज को मार डाला। इससे मालूम होता है कि घायल होने पर गैंडे का क्रोध बहुत बढ़ जाता है और वह बिना आगा-पीछा सोचे ही मनुष्य पर आक्रमण कर देता है।

यदि मनुष्य के पास बन्दूक नहीं होती तो गैंडे से बचने के लिये उसके पास केवल यही उपाय होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह पास वाले वृक्ष पर चढ़ जावे। वह बहुत तेज़ दौड़ता है और मनुष्य को गिराकर अपने सींगों से मार डालता है। गैंडा बहुधा आगे की ओर देखता हुआ भागता है इस लिये यदि मनुष्य चाहे तो किसी सथन पर सीधा लेट कर छिप सकता है और अपनी जान बचा सकता है। हाथी की तरह गैंडे से बचने के लिये भी वायु का ध्यान रखना चाहिये कि वायु द्वारा मनुष्य की गंध उसकी ओर न जावे यदि गंध न पावेगा तो कभी भी मनुष्य के होने का विश्वास न करेगा।

एक बार एक अंग्रेज व्यक्ति अफ्रीका के बन में गैंडे का चित्र खींचने के ध्यान से गया वह एक स्थान पर कमरा खड़ा करके उसका चित्र लेना चाहता था। उस समय गैंडा सो रहा था। एका एक चिड़ियों के शब्द से गैंडा जाग उठा और कुछ समय तक इधर उधर देखने के बाद फिर लेट गया परन्तु जैसे ही अंग्रेज महाशय फिर चित्र लेने को थे वैसे ही फिर चिड़ियों ने शोर मचा दिया। गैंडा इस बार उठा और स्वयम् पता लगाने के लिये चल पड़ा। वह अंग्रेज़ महाशय की ओर आया। अंग्रेज महाशय मैदान में थे। समीप कोई वृक्ष भी न था पास में बन्दूक भी न थी। वह बड़े हैरान हुये। आखिर उन्होंने मरने की बात सोची। उस समय गैंडा उनसे १५ गज़ की दूरी पर था। अंग्रेज़ महाशय ने, अपने कमरे को सामने करके किरकिराना आरम्भ किया। किरकिराहट का शब्द सुन कर गैंडा डरा और बाईं ओर भागा परन्तु फिर निश्चय करने की इच्छा से घूमा और अर्द्ध गोलार्द्ध बनाता हुआ फिर उतनी ही दूरी पर आ गया। अंग्रेज़ महाशय ने फिर उसी प्रकार किया वह फिर भागा इसी प्रकार गैंडे ने तीन बार किया। आख़िरकार अंग्रेज़ महाशय की भाग्य से वह भाग निकला और लगभग आध मील बेतहाशा भागने के बाद जंगल में जा रुका।

जब गैंडा अधिक गरम हो जाता है तो फिर वह पानी अथवा कीचड़ की ओर भागता है। वह कीचड़ में नहाना अधिक पसंद करता है। कीचड़ लगाने के बाद वह उसे साफ नहीं करता वरन् उसे सुखाने के लिये धूप में आकर सोने लगता है। वह अधिक तर लाल भूमि में लेटता है इस लिये सोते समय वह टूटी हुई चींटियों की पहाड़ी सा प्रतीत होता है।

गैंडों के बच्चे अपनी माता के साथ घर पर रहते हैं। जब तक वह बड़े नहीं हो जाते हैं घर से बाहर नहीं जाते हैं। जब तक बच्चे बड़े नहीं हो जाते हैं तब तक नर मादा के समीप नहीं जाता है और दिन भर घर के बाहर जंगल में घूमता रहता है। उस समय वह केवल रात में ही कुछ समय के लिये घर आता है।

दिन में गैंडे को सदैव शंका लगी रहती है। रात को वह स्वतंत्र हो जाता है और फिर खूब मौज उड़ाता है। गैंडे कई एक साथ साथ चलते हैं। वह पानी पीने वाले स्थानों पर रात में खुशी के साथ खेलते हैं। खेलते समय वह कुत्तों की भांति एक दूसरे को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं और गुर्राते तथा चिल्लाते हैं, उस समय वह सभी प्रकार भय भूल जाते हैं। तड़के पहर वह फिर घर की ओर चले जाते हैं। स्वेत गैंडे काले गैंडों से अधिक बड़े होते हैं और बहुत कम दिखाई पड़ते हैं।

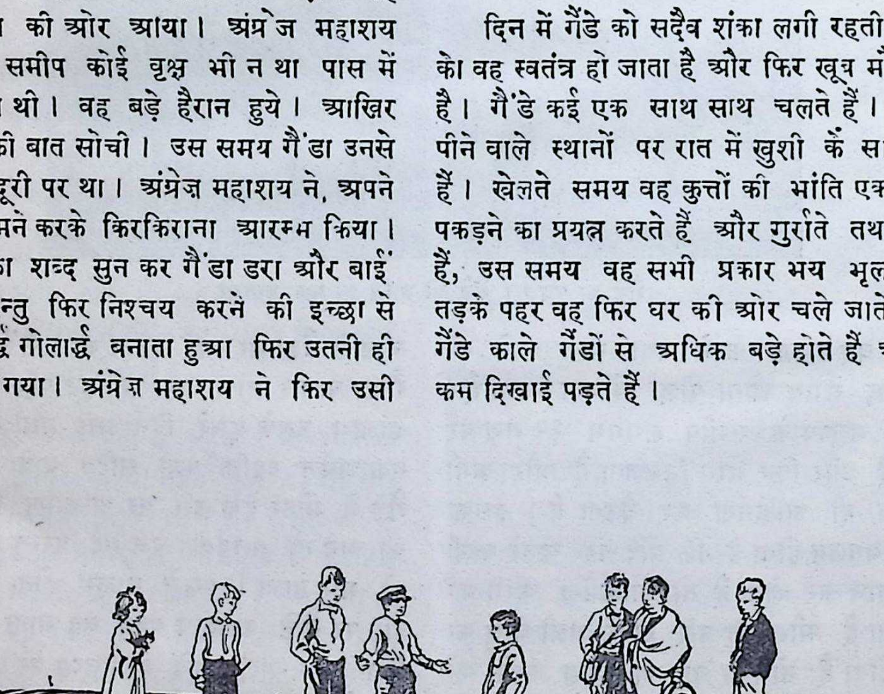

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

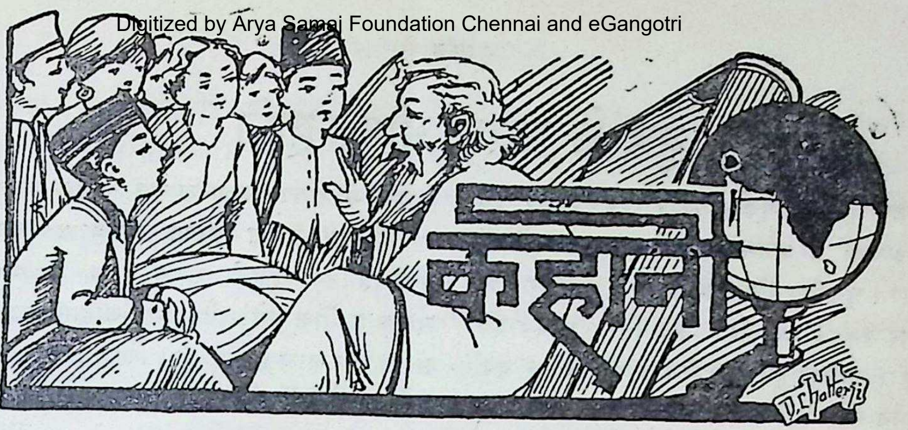

नार्वे की एक कहानी

पवन-देव

बहुत पुराने समय की बात है कि नार्वे में ओलफ नाम का एक राजा रहता था। एक दिन वह अपने महल से बाहर टहलने के लिये गया। टहलते टहलते वह मीलों दूर निकल गया। उसे मार्ग में बहुत से जंगल, ऊँचे पर्वत, घाटियां और झरने मिले।

यद्यपि मार्ग में उसे बहुत से सुन्दर स्थान मिले किन्तु उसने किसी को भी नहीं देखा। वह अपनी धुन में लगा हुआ था। वह सोच रहा था कि मैं ऐसा चर्च बनाऊँ जैसा संसार भर में न हो। उसके पास धन नहीं था। उसकी प्रजा बड़ी ग़रीब थी। इस कारण वह कर नहीं लगाना चाहता था।

चलते चलते उसे एक बड़ा देव मिला। वह बड़ा भयानक शरीर वाला तथा कुरूप था। राजा उससे डरा नहीं और वीरता के साथ उससे नमस्कार किया।

देव ने राजा से पूछा तुम बड़े दुखी तथा सोच में क्यों हो? मालूम होता है कि तुम स्वप्न देख रहे हो।

राजा ने अपने हृदय की बात देव से कही। देव राजा की बात सुन कर बड़े ज़ोर से हँसा और कहा महाराज मैं तुम्हारा बड़ा चर्च १ साल और १ दिन में बना सकता हूँ परन्तु तुम्हें मेरे यहां नौकरी करनी होगी।

यह सुन राजा चुप हो रहा। देव ने फिर कहा मैं स्वयम् उस बड़े गिरजाघर को तुम्हारी इच्छा के अनुसार बनाऊँगा तुम्हें उसमें कुछ व्यय न करना होगा। गिरजाघर इतना बड़ा होगा कि उसमें सात पादड़ी एक साथ अलग अलग बोल सकेंगे। तुम्हें केवल मेरी नौकरी करनी होगी और राज्य छोड़ देना होगा।

राजा अपनी प्रजा का बड़ा हितैषी था। उसने सोचा इतना बड़ा चर्च प्रजा के लिये बनवाना बड़ा जरूरी है। इस लिये उसने देव की बात मान ली।

थोड़े समय पश्चात् राजा को प्रतीत हुआ कि वह देव बड़ा बदमाश है। इसलिये वह उससे बचने का उपाय सोचने लगा।

एक दिन जब चर्च बन कर तयार होने का समय आया तो राजा फिर भ्रमण के लिये निकला। चलते चलते वह एक हरी पहाड़ी पर पहुँचा। पहाड़ी पर उसने एक नन्हें बच्चे के रोने का शब्द सुना। लड़के की माता ने कहा चुप रहो। कल तुम्हारे पिता पवन-देव घर लौटेंगे। वह तेरे लिये एक नौकर लावेंगे। वह नौकर ओलफ राजा है। ओलफ तेरा पलना झुलाया करेगा।

राजा समझ गया कि बोलने वाली देव की स्त्री है। वह देव का नाम सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। बात यह थी कि जो मनुष्य देव का नाम जानता था उस पर देव का कोई वश न रह जाता था।

राजा घर लौटा। गिरजाघर पूरा बन गया था। दूसरे दिन देव आया।

राजा ने देव को देखते ही कहा। ओ पवन देव गिरजे घर का गुम्बद सीधा नहीं है।

अपना नाम सुनते ही देव गिरजे की छत पर ज़ोर से गिरा। उसके गिरने से चर्च टूट गया। इस प्रकार राजा का गिरजा तो बर्बाद हो गया किन्तु उसकी स्वतंत्रता बनी रही। उसने बहुत समय तक सुख से राज्य किया। प्रजा भी उसके राज्य में बड़ी सुखी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के कारण भीषण-हानि

१४६६ वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर १९३० ई० तक में केवल २८७ वर्षों में शान्ति रही शेष ३११२ वर्षों में युद्ध होता रहा। बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पेला के कथनानुसार १५०० वर्ष ईसा के पूर्व से १८६० ई० तक में ८ हज़ार संधियां हुईं इन में कोई भी संधि २ वर्ष से अधिक समय तक नहीं चल सकी।

योरुपीय तीस वर्षीय युद्ध के आरम्भ होने के बाद १७०० बड़ी लड़ाइयां हुईं जिनमें सबसे अधिक भाग फ्रान्स ने लिया। फ्रान्स के साथ ही साथ आस्ट्रिया-हंग्री, ग्रेटब्रिटेन और १७४० ई० के बाद से प्रूशा ने युद्ध में भाग लिया। इस काल में फ्रान्स ने इंगलैंड के साथ १७३ वर्ष, प्रूशा और जर्मन साम्राज्य के साथ ८३ वर्ष और स्पेन के साथ ६२ वर्ष तक युद्ध किया। इस काल में सब से अधिक कालीन युद्ध फ्रान्स और इंगलैंड का सौ वर्षीय युद्ध हुआ। यह युद्ध १३३७ ई० में आरम्भ हुआ था। सब से अल्प कालीन युद्ध ६ दिन का हुआ जो सार्डीनिया और आस्ट्रिया के मध्य १८४८ ई० में हुआ था।

सभ्यता के कारण युद्ध का अंत नहीं होता

५०० वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर १९२५ ई० तक में यूनान, रोम, मध्य योरुप, जर्मनी, इटली, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, निदरलैंड्स, स्पेन और रूस ने ९०२ लगातार युद्धों में भाग लिया। बारहवीं और तेरहवीं सदी में रूम सभी राष्ट्रों से अधिक युद्धों में ग्रसित था। चौदहवीं सदी में इंगलैंड, पन्द्रहवीं-सोलहवीं-सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में आस्ट्रिया (होली रोमन साम्राज्य) और उन्नीसवीं सदी में फ्रान्स युद्ध में अधिक ग्रसित रहा। आधुनिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सभ्यता के उत्थान के साथ साथ युद्ध में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हो रही है। इस बात का सब से बड़ा प्रमाण १९१४ ई० तथा वर्तमान समय का महासमर है। आज पश्चिमी राष्ट्र अपने को संसार में सब से अधिक सभ्य समझते हैं परन्तु युद्ध की भीषण अन्यायपूर्ण, रोमाञ्चकारी तथा निर्दयता पूर्ण घटनाओं से सिद्ध होता है कि उनमें सभ्यता का लेश मात्र भी अंश नहीं है।

रसायनिक युद्ध

असभ्य जातियों के आक्रमण (३७५ ई०) और तीस वर्षीय युद्ध (१७१८-४८) के समय युद्ध में सम्मिलित सेनाओं की संख्या साधारण रूप से १५ हज़ार होती थी। १८ वीं सदी में यह संख्या बढ़कर ४० हज़ार हो गई। नैपोलियानिक युद्ध के समय सेना में ८० हज़ार तक सैनिक शामिल हुये और रूसो-जापानी युद्ध में सेना की संख्या एक लाख हो गई थी। लिप्ज़ग के युद्ध (१८१३) में ५ लाख सैनिकों ने और सेदान के युद्ध (१८७० ई०) में तीन लाख २० हजार मनुष्यों ने भाग लिया था। गत महायुद्ध के समय विटोरियो वेनेटो के चालीस मील इटैलियन रणस्थल में ४८४० तोपें लगाई गई थीं जिन से १६ दिन में ३० लाख बार गोले चलाये गये और उसमें ४५ करोड़ रुपया खर्च हुआ।

चीन में ग्यारहवीं सदी में धुआं तथा चिनगारियां फेंकने वाले अस्त्रों का प्रयोग आरम्भ हुआ। मुग़ल लोगों ने योरुप में आक्रमण करते समय तेरहवीं सदी में धुआँ और चिनगारी फेंकने वाले अस्त्रों का प्रयोग किया था। प्राचीन कालीन कलों के द्वारा दुर्गन्ध पूर्ण वस्तुओं के वर्तन शत्रु के बीच फेंके जाते थे और उनकी दुर्गन्ध के कारण शत्रु सेना पीछे हटने पर वाध्य होती थी। यही वास्तविक रसायनिक युद्ध का आरम्भ था।

आधुनिक रसायनिक वस्तुओं का वास्तविक व्यवहार गत महायुद्ध के समय हुआ था। गत महायुद्ध में ६ हज़ार भांति के रसायनों का प्रयोग हुआ था जिनमें केवल १२ भांति की रसायनें सफल सिद्ध हुईं। यद्यपि १९२१ ई० में वाशिंगटन की सभा में गैस सम्बन्धी युद्ध की अवहेलना सभी राष्ट्रों ने एक मत से की फिर भी प्रत्येक राष्ट्र भांति भांति की विषैली गैसों के तयार करने में व्यस्त रहा है। इटैली—अबीसोनियन युद्ध के समय (१९३५-३७) इटली ने विषैली गैसों का प्रयोग किया और जापान ने चीन में (१९३८-३९) में किया और अब भी कर रहा है।

बारूद तथा तोपों का आविष्कार

चीन ने छठीं सदी में बारूद का आविष्कार किया था परन्तु यह पहले केवल अग्निक्रीड़ा में प्रयोग की गई थी। १२२२ ई० में सर्व प्रथम मुग़ल सरदार कुबला खां ने हाथ से प्रयोग किये जाने वाले बारूद के गोलों का निर्माण किया। बारूद तयार करने की बिधि का उल्लेख नवीं सदी में ग्रोकस (बेज़नटाइन) नामक व्यक्ति ने कर दिया था। तेरहवीं सदी में रोगेर बेकन नामक व्यक्ति ने बारूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाई उसके बाद १३१३ ई० में फ्रीबर्ग नगर के बर्थोल्ड नामक साधु ने इसका पुनः निर्माण किया। "यूनानी अग्नि (ग्रीक-फाएर) आधुनिक बारूद की भांति ही एक वस्तु थी।

सेविले के घेरे में फ्रान्स में सर्व प्रथम १२४७ ई० में बारूद का प्रयोग किया गया। बारूद के निर्माण होने तथा तोपों के आविष्कार होने के कारण शूरवीरता और साहसपूर्ण युद्ध में भीषण रुकावट पड़ गई। क्रेसी (१३४६) के युद्ध में सर्व प्रथम बारूद का प्रयोग रणक्षेत्र में खुले तौर पर किया गया। दूसरी बार बारूद का प्रयोग जर्मनी में ईन्बेक (१३६५) की आध्यक्षता में किया गया। १८८२ ई० में बिना धुआं वाली बारूद तयार की गई।

१३३८ ई० में सर्वप्रथम समुद्री युद्ध में तोपों का प्रयोग गोलेबारी में किया गया। बेस्ट (१५१२) का युद्ध पहला युद्ध था जिसमें दोनों ओर से तोपों का प्रयोग हुआ। ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी दोनों जहाज़ों में आग लग गई और उनमें ६०० फ्रांसीसी तथा ५०० अँग्रेज़ों ने अपने प्राण गवांए। टर्की के राजा मुहम्मद द्वितीय ने एड्रियानोपुल के घेरे में गोलेबारी पर बहुत व्यय किया था। कहा जाता है कि उसने ३०० पौंड के वज़नी पत्थर तोपों में भरे थे जिनके धड़ाके का शब्द १३ मील घेरे में सुनाई पड़ता था। जब यह तोप बैलों द्वारा खींच कर कुस्तुन्तुनिया पहुँची तो फट गई जिससे उसका बनाने वाला मर गया।

१५६७ ई० में इटली के लोरिनी नामक व्यक्ति ने तोपों में पेंदों की ओर से गोले भरने की विधि का उल्लेख किया। १८५६ ई० में क्रप ने फौलाद फेंकने वाली तोप बनाई। १९०१ ई० तक में ऐसी तोपें तयार हो गईं जो ६ मील तक गोले फेंक सकती थीं। इन तोपों के प्रक्षेप-पथ की ऊँचाई ३ मील थी। गत महासमर में विगवर्थ नामक बड़ी तोप (जर्मन) ने ३०० बार गोले फेंके जो ८ मील ऊपर जाते थे और २५ मील की दूरी तक पहुँचते थे। यह तोप ३० पौंड का गोला फेंकती थी। जो ५००० फुट प्रति सेकेंड की चाल से तोप की नली को छोड़ता था। उसके १६ इञ्च के गोले फटने का धक्का उतना ही भीषण होता था जितना कि ६ मील प्रति घंटा चलने वाले चार रेल के डिब्बों का किसी ठोस पक्की दीवार पर हो सकता है। शायद संसार की सबसे बड़ी तोप संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पास है जो ३० मील तक गोले फेंक सकती है।

गत महायुद्ध में अस्त्र-शस्त्रों का बहुत व्यय हुआ था। १ जनवरी १९१७ ई० के बाद से केवल फ्रान्स के कारखानों में १ लाख ७५ हज़ार छोटे तथा ४० हज़ार बड़े बम्ब के गोले प्रति दिन तयार होते थे। जर्मन सीमा रण-स्थल पर ३० करोड़ हाथ से फेंकने वाले बम्ब के गोले पहुँचाये गये थे और वर्डून के ३० दिन के युद्ध में १३ लाख टन के फौलाद के गोले बर्साये गये थे।

आजकल युद्ध में टैंकों का प्रयोग बहुत हो रहा है। प्राचीन काल में महाभारत के भीषण संग्राम में ऐसे रथों का प्रयोग हुआ था जो भांति भांति के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे और आग पानी आदि उगलते थे। असीरिया की हीक्सोस नामक (घूमने वाली) जाति ने एक ऐसा रथ बनाया था जिसमें छुरी तथा भाले लगे थे। उसने मिस्री लोगों पर अधिकार प्राप्त करने के लिये उसका प्रयोग किया था। आज उन्हीं रथों को टैंक का रूप दिया गया है। १८८५ ई० में कोरेस ने एक अस्त्र-शस्त्र धारी गाड़ी बनाई। यह असफल रही क्योंकि इसमें बहुत अधिक जलाने की लकड़ी लाद कर चलना पड़ता था। १९०४ ई० में डैमलर की आर्मर्डकार संसार के सामने आई। १९१४ में फ्रान्सीसी लोगों ने सर्वप्रथम आर्मर्ड मोटर कार का प्रयोग किया।

१९३७ ई० के आरम्भ में रूस के पास ६ हज़ार से १० हज़ार तक और जर्मनी के पास ५ हज़ार टैंक थे। उस समय फ्रान्स के पास ४,५००, इङ्गलैंड और पोलैंड में से प्रत्येक के पास ६००, चेकोस्लोवाकिया के पास ३५०, इटली के पास ३२०, यूगोस्लोवाकिया के पास १२० और रूमानिया के पास ६० टैंक थे।

युद्ध द्वारा विध्वंस

तीस वर्षीय युद्ध (१६१८-१६४८) में जर्मनी के १ करोड़ २० लाख आदमी मारे गये। फ्रान्स की क्रान्ति और नैपोलियन युद्ध में फ्रांस की जन-संख्या बहुत घटी। नैपोलियन के रण-स्थल में एक करोड़ से अधिक मनुष्य मरे। नैपोलियन की ६ लाख की बड़ी सेना जो रूसी विजय के लिये चली थी उसमें से केवल २० हज़ार सैनिक लौट कर फ्रान्स पहुँचे थे। उस युद्ध में फ्रान्स के खज़ाने का १८ अरब ७५ करोड़ रुपया खर्च हुआ था।

अमरीका के गृह युद्ध (१८६१-६५) में ४० लाख सेना रणस्थल पर थी जिसमें उत्तरी राज्यों के ५ लाख आदमी मारे गये थे। इस गुलाम सम्बन्धी युद्ध में ११ अरब १० करोड़ रुपया खर्च हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीमिया की लड़ाई (१८५४-५६) में ५ अरब ५ करोड़ के लगभग रुपया खर्च हुआ था। इस युद्ध में १ लाख ५० हज़ार ब्रिटिश सैनिकों ने भाग लिया था जिनमें बीस हज़ार व्यक्ति मारे गये। भारतीय विप्लव (१८५७) और १८६० के चीनी युद्ध में ५२००० मनुष्य मारे गये। फ्रैंको-इटैलियन युद्ध (१८५९) में ५५ हज़ार और आस्ट्रो-प्रूशन युद्ध (१८६६) में ४ लाख मनुष्य मारे गये तथा घायल हुये। १८५९ ई० के रूस और टर्की के युद्ध में १२ लाख ५० हजार मनुष्य मारे गये थे। १८७०-७१ ई० के फ्रांस तथा प्रूशा की लड़ाई में २ लाख ९० हजार आदमी मारे गये और ७ अरब ५९ करोड़ रु० खर्च हुआ। १८९८ ई० के स्पेन और अमरीका के युद्ध में संयुक्त राष्ट्र अमरीका को ७५ करोड़ और स्पेन को ४ लाख २५ हजार रुपया प्रति दिन व्यय करना पड़ता था।

गत महायुद्ध का व्यय

कुछ लोगों के अनुमानानुसार गत महासमर में १२ खरब रुपये का व्यय हुआ था। एक करोड़ से अधिक मनुष्य रणस्थल में खेत रहे थे। २ करोड़ मनुष्य घायल हुये थे और एक करोड़ मनुष्य इन्फ्लूएञ्जा की बीमारी में मरे थे (जो युद्ध के कारण ही उत्पन्न हुई थी)। गत महासमर में ७ करोड़ व्यक्तियों ने रणक्षेत्र में भाग लिया था।

युद्ध काल में सामान तयार न होने के कारण जो हानि हुई उसका लेख लगाना कठिन है। १९१९-२७ तक में सामान तयार न होने के कारण छः खरब ३७ अरब पचास करोड़ रुपये की हानि का अनुमान किया जाता है। युद्ध कालीन वर्षों में जर्मनी में पैदा होने वाले बच्चों में तीस लाख की कमी हुई। क्षणिक संधि होने के ५ वर्ष बाद मध्यवर्ती राष्ट्रों ने सत्तर लाख व्यक्तियों को युद्ध सम्बन्धी पेन्शन दी।

गत महायुद्ध समाप्त होने पर ब्रिटिश सरकार ने युद्ध की बची हुई सामग्री को बेंच दिया और उसे ९ अरब ९७ करोड़ पचास लाख रुपये मूल्यरूप में प्राप्त हुये।

१९३५-३६ ई० में इटली ने अबीसीनिया की विजय के लिये ३ लाख पचास हजार सेना भेजी। सेना के साथ ही साथ ५ करोड़ तीस लाख फुट डेरे बनाने का कनवस, ६ करोड़ बीस लाख फुट कपड़ा, ८७ हजार घोड़े-ऊँट, १३५०० मोटरगाड़ियां, ग्यारह हजार पांच सौ मशीन गनें, चार लाख पचास हजार राइफलें, आठ सौ तोपें और ३ सौ टैङ्क आदि सामान [illegible]

के युद्ध में पचपन सौ टेलीफोन (दो हजार मील तार) और १८१ बेतार के तार के सेट प्रयोग किये गये थे।

संसार के बड़े राष्ट्रों की सैनिक शक्ति

जनवरी १९३८ ई० में ब्रिटिश सेना में ५ लाख सैनिक तथा अफसर थे। सभी स्थाई सैनिकों को मिलाकर यह संख्या ६ लाख २१ हजार थी। ब्रिटिश भारत में उस समय २ लाख दस हजार सेना थी जिसमें एक लाख ५५ हज़ार के लगभग भारतीय सैनिक थे।

१९३८ ई० के आरम्भ में रायल हवाई सेना में १५०० से १७५० के लगभग विमान थे। उस समय ब्रिटिश हवाई सेना में ६२.९०० मनुष्य काम कर रहे थे।

१९३८ ई० में रायल जल सेना में १ लाख २० हजार व्यक्ति काम कर रहे थे जिनमें जहाज चलाने वालों की संख्या ६० हजार थी। उस समय उसके जहाजों की संख्या २८० थी जिसमें १५ लड़ाका (बैटिल क्रूशियर) जहाज, ६ विमान ढोने वाले जहाज, ५४ (क्रूशियर छोटे लड़ाका जहाज १९३ विध्वंसकारक जहाज और ५२ सबमरीन (पनडुब्बे) जहाज थे। सभी प्रकार के जहाज़ों का सामूहिक भार १२ लाख ग्यारह हजार ४२० टन था। जहाजों में सत्रह सौ पचीस तोपें और १८०९ टारपिडो ट्यूब थे।

सेना पर ब्रिटिश सरकार ने १९३७-३८ में ३ अरब ९३ करोड़ रुपया और १९३८-३९ ई० में ४ अरब ९० करोड़ ४० लाख रुपया व्यय किया। इस व्यय में पेन्शन का रुपया शामिल नहीं है। १९३७ ई० में इंगलैंड के खज़ाने को आज्ञा मिली कि वह ६ अरब रुपया ऋण ले कर ब्रिटेन की रक्षा में व्यय कर सकता है।

१९३७ में फ्रांस की सेना में ६ लाख ९२ हजार आठ सौ साठ सैनिक थे जिनमें से चार लाख ८६ हजार सेना फ्रान्स में, ८५ हजार अलजीरिया और ट्यूनिस में, ४८ हजार मराक्को में बारह हजार लेवान्त में और ६० हज़ार कालोनीज और चीन में थी। हवाई सेना में ८ लाख तीस हजार आदमी थे। विमानों की संख्या ठीक ठीक ज्ञात नहीं है परन्तु हवाई शक्ति पर १९३९ ई० में १० करोड़ रुपया खर्च किया गया। फ्रान्स के कारखानों ने पांच सौ विमान प्रति दिन तयार करने का वचन किया। १९३८ ई० में फ्रांस की जलसेना में १७४ जहाज थे जिनका भार ५ लाख ५२ हजार टन था। १९१९ ई० में [illegible] जहाज बनने के लिये पड़े थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की शक्ति

१९१३ ई० में जर्मनी के पास आठ लाख सेना और १० लाख टन के जहाज थे। वह सेना पर एक अरब ३५ करोड़ सालाना व्यय कर रहा था! १९३८ ई० में जर्मनी के पास ३७ पानी पर चलने वाले जहाज ७२ सबमरीन (पनडुब्बा जहाज) थे। १९३८ ई० में जर्मन सरकार ने घोषित किया कि वह अपने लड़ाका तथा सबमरीन जहाजों की संख्या बढ़ावेगी। अब जर्मनी की शक्ति का अन्दाज करना कठिन है। कुछ लोगों का कहना है कि उसके पास ३० हजार विमान तथा १५ हजार टैंक हैं।

रूसी सेना

रूस की जनसंख्या १८ करोड़ है। १९३६ ई० में उसके पास काम करने वाली सेना में १३ लाख सैनिक थ। उनके बाद उसके सेना में बड़ी वृद्धि हुई है। १९३५-३८ के मध्य रूस में ५३ लाख ६० हजार मनुष्यों को सैनिक शिक्षा दी गई।

रूसी हवाई सेना में १९३१ ई० में ७५० विमान १९३६ ई० में यह संख्या बढ़ कर तीन हजार होगई। उसकी जलसेना में १८६ जहाज थे जिनका भार २९०, ५८९ टन था। १९३८ ई० में रूसी जहाजों की संख्या बढ़ाने और उन्हें आधुनिक बनाने की घोषणा की गई। आज रूप के पास लगभग तीस हज़ार विमान और लगभग पन्द्रह हजार टैंक है। पर यह संख्या अप्रमाणित हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की शक्ति

१९३७ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका की सेना में १ लाख ८० हजार सैनिक थे। जल, स्थल और हवाई सेना मिलाकर हवाई सैनिकों की संख्या १८७४२ थी। संयुक्तराष्ट्र के नैशनल गार्ड की संख्या १ लाख ९० हजार और स्थाई सैनिकों की संख्या १ लाख १२ हजार है। कुल ४ लाख ८५ हजार सेना है।

१९३८ ई० के अंत में अमरीका ने ५३२० विमान अपनी सेना में रखने का निश्चय किया। उसने सोचा कि यदि उसके पास इस संख्या के दूने जहाज हो जायँ तो फिर उसका कोई राष्ट्र कुछ बिगाड़ न सकेगा। १९४२ तक में अमरीका ने जर्मनी के बराबर हवाई शक्ति तयार करने का निश्चय किया है।

संसार में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जलसेना का दूसरा नम्बर है! उसकी जलसेना में ३३४ जहाज हैं (८३ जहाज तयार हो रहे हैं) सभी जहाजों का भार १४,२७,१२५ टन है। जहाजों में २ हज़ार तोपें और २२५० टारपिडो ट्यूब हैं। २४ तोपें १६ इंच वाली और १२४ तोपें १२ इंच वाली हैं। वहां १७ लड़ाका जहाज, २५१ विध्वंस कारक जहाज १०६ सबमरीन ३७ क्रूशियर और ६ विमान ढोने वाले जहाज हैं।

जलसेना में ५८४ विमानों से अधिक भार वाले समुद्री वायुयान हैं। सबसे बड़ा समुद्री वायुयान "मकोन" ७८५ फुट लम्बा है। उसमें ६५ लाख घन फुट सामान रखने का स्थान है १९३८ ई० में संयुक्त राष्ट्र को जलसेना में १ लाख १५ हज़ार व्यक्ति थे। इसमें जहाज चलाने वालों की संख्या सम्मिलित नहीं है।

राष्ट्र की रक्षा के लिये १९३७-३८ में अमरीका ने ३ अरब रुपया सेना के लिये और बढ़ा दिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जनसंख्या १४ करोड़ है इसलिये स्वतंत्र राज्यों में वह रूस को छोड़ कर सब से बड़ी सेना तयार कर सकता है।

चीन-जापान

१९३७ ई० में जापान ने चीन पर आक्रमण किया। युद्ध आरम्भ होने के पश्चात् से जापान की सैनिक शक्ति का पता नहीं लग पाया है। १९३६ ई० में उसके पास २ लाख ५० हजार स्थाई सेना थी परन्तु उसी वर्ष ६ लाख ३० हज़ार ८०२ मनुष्य सैनिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये बुलाये गये थे। जुलाई १९३८ में चीन में जापान की १० लाख सेना थी। उस समय तक उसके ९० हज़ार सैनिक मर चुके थे और १ लाख घायल हो चुके थे। उस समय चीन की सेना में २५ लाख सैनिक थे।

१९३५ ई० में जापान की हवाई सेना में १ हज़ार २५ विमान थे। तीन साल के भीतर विमानों की संख्या ४ हज़ार हो गई होगी। १९३७ ई० में वहां की जलसेना में २४२ जहाज थे (११ जहाज बन रहे थे) उन जहाजों का सामूहिक भार ९ लाख ६ हज़ार ४ सौ ३० टन था। उस समय उसके १० लड़ाका जहाजों में १६ इँच वाली तोपें और ७८ जहाजों में १४ इंच वाली तोपें लगी थीं। क्रूशियर जहाजों की संख्या ४२, विध्वंसकारक की १२३ और सबमरीनों (पनडुब्बों) की ६२ थी।

इटली

इटली के पास ५ लाख सेना थी। उसने अबीसीनिया और स्पेन के गृह युद्ध की लड़ाइयों में अपनी सेना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113728
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बढ़ा ली है। १९३४ ई० में इटली के पास १८६० विमान और उनमें २४,८६० काम करने वाले सैनिक थे। युद्ध के कारण उसकी हवाई शक्ति में भी वृद्धि हुई है।

१९३८ ई० में इटली के पास २७२ जहाज थे जिनमें ६ लड़ाका जहाज, २२ क्रूशियर (छोटे लड़ाका जहाज) एक विमान ढोने वाला जहाज, १३८ विध्वंसकारक जहाज और १०५ पनडुब्बे जहाज थे। इन सब जहाजों का भार ५ लाख ६० हज़ार टन था।

शस्त्रधारी सेना पर व्यय

१९३२ ई० में शस्त्रधारी सेना का व्यय १५ देशों में बढ़ा, ६ देशों में समान रहा और ३७ देशों में घटा। १९३५ ई० में शस्त्रधारी सेना पर ४१ देशों में व्यय बढ़ा, दो में समान रहा और १५ में कम हुआ। १९३७ ई० में ४९ देशों में सेना का व्यय बढ़ा, एक में समान रहा और आठ में कम हुआ।

१९३२ ई० में ग्रेट ब्रिटेन संसार के शस्त्रधारी सेना के लिये एक तिहाई शस्त्र दे रहा था। इस प्रकार संसार की शस्त्रधारी सेना का व्यय २१ अरब ८१ करोड़ रुपये (१९३२ ई० में) से बढ़ कर ३६ अरब रुपया १९३८ ई० में हो गया। यह व्यय १९१३ ई० के सेना के व्यय का तिगुना था।

१९३२ ई० में योरुपीय सेना का व्यय संसार की सेना के व्यय का ३० प्रतिशत था, १९३७ ई० में यह व्यय बढ़ कर कुल का ६३ प्रतिशत हो गया। १९२२-३७ ई० के मध्य ब्रिटिश सैनिक व्यय बढ़कर तिगुना हो गया था। रूस में १९३२ और १९३७ के बीच में सेना का व्यय १५०० प्रतिशत बढ़ गया था। फ्रान्स में सेना के व्यय में कमी हुई परन्तु जर्मनी, इटली, जापान और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सैनिक व्यय बहुत बढ़ा। संयुक्त राष्ट्र की सेना का खर्च १९३२-३३ ई० में १ अरब ८५ करोड़ था। १९३७ और १९३८ ई० में यह बढ़ कर ३ अरब हो गया।

१९३८ ई० में शस्त्रधारी सेना का सालाना व्यय प्रति मनुष्य जर्मनी में १८० रु०, ब्रिटेन में १०५ रु०, रूस में ९० रु०, फ्रान्स और जापान में ७५ रु० इटली में ४५ रु० और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ३० रु० के लगभग था। उस वर्ष जर्मनी ने इंगलैण्ड के सैनिक व्यय का ढाई गुना और रूस ने तीन गुना अपनी सेना पर खर्च किया।

नीचे दी गई तालिका से पता चलता है कि योरुपीय राष्ट्रों का सैनिक व्यय उनकी राष्ट्रीय आय का कितना प्रति शत १९१३ और १९३८ ई० के मध्य बढ़ा :—

देश	१९१३	१९३८
रूस	५ प्रति शत	२२ प्रति शत
जर्मनी	४ ,,	१५ ,,
फ्रान्स	६ ,,	१० ,,
इटली	३ ,,	६ ,,
इँगलैण्ड	५ ,,	७ ,,

१९३१ ई० में संसार, शस्त्रधारी सेना पर २१०,००० रुपये प्रति मिनट व्यय कर रहा था। इस व्यय के १/७ भाग का उत्तरदायी इङ्गलैंड था। उसके बाद सभी राष्ट्रों की सेना में वृद्धि हुई। संसार की जलसेना के जहाजों का भार ५२ लाख ९९ हज़ार टन (१९३२) से बढ़ कर १९३७ ई० में ६६ लाख ७७ हज़ार टन हो गया।

गत महायुद्ध के २५ वर्ष पूर्व इंगलैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी, आस्ट्रिया-हँग्री, रूस और इटली का सालाना सैनिक व्यय १ अरब ९५ करोड़ था। बाद को वह बढ़ कर ६ अरब ७५ करोड़ रुपया हो गया था। उपरोक्त राष्ट्रों ने १८८९-१९१४ ई० के मध्य ९१ अरब ५० करोड़ रुपया व्यय किया था।

१९१४ ई० के महासमर के पश्चात् संसार के प्रधान राष्ट्रों ने सोचा कि वह शस्त्रधारी सेना में कमी करें। इसी कारण १९१९ ई० की वर्साई की संधि तथा समझौते में सेना घटाने की शर्तें रक्खी गई परन्तु किसी राष्ट्र ने भी अपनी सेना को बढ़ाने में कमी नहीं की। जर्मनी वर्साई की संधि के कारण सेना बढ़ाने से मजबूर था। उसके बाद अशस्त्रीकरण सम्मेलन हुआ जिसमें कहा गया कि सभी राष्ट्र अपनी सैनिक शक्ति को कम करें परन्तु किसी ने ध्यान न दिया।

जर्मनी ने १९१९ ई० के पश्चात् से अपनी शक्ति बढ़ानी आरम्भ की। नाज़ी दल वहां धीरे धीरे शक्ति पकड़ रहा था। हिटलर नाज़ी दल का प्रधान है। ३० जनवरी १९३३ ई० को हिटलर जर्मनी का चान्सलर बना। २१ अक्तूबर को जर्मनी राष्ट्र संघ से अलग हो गया। २५ जुलाई १९३४ ई० को हिटलर जर्मनी का चान्सलर और सभापति बना। १६ मार्च १९३५ ई० को हिटलर ने वर्साई की संधि का भंग करके जर्मनी में अनिवार्य सैनिक शिक्षा का संचालन किया। ७ मार्च १९३६ ई० को हिटलर ने लोकार्नो संधि भंग की और जर्मन सेनाओं ने राइन प्रान्त पर अधिकार जमाया। २५ नवम्बर १९३७ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113728

जापान और जर्मनी के मध्य संधि हुई। ६ नवम्बर को इटली भी उन्हीं के साथ मिल गया। उसके पश्चात् १२ मार्च सन् १९३८ ई० को आस्ट्रिया पर, ३० सितम्बर को सुडेटनलैंड पर और १४ मार्च को चेकोस्लोवेकिया के समस्त भाग पर हिटलर ने अधिकार जमा लिया।

१ सितम्बर १९३९ ई० को जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया। ३ सितम्बर को फ्रान्स और इङ्गलैण्ड ने जर्मनी पर युद्ध घोषणा की। इस प्रकार दूसरे महासमर का श्रीगणेश हुआ।

आज इंगलैण्ड, रूस, जापान, संयुक्त राष्ट्र अमरीका आदि की सैनिक शक्ति का अन्दाज लगाना कठिन है। जर्मनी की सैनिक शक्ति का अन्दाज़ लगाना तो और भी कठिन है। उसने धीरे धीरे समस्त योरुप पर अधिकार जमा लिया है। फ्रान्स जैसा शक्तिशाली राष्ट्र उसके पैरों से कुचला जा चुका है। पोलैण्ड, लक्सेमबर्ग, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम, यूगोस्लाविया, रूमानिया, यूनान आदि देशों पर उसका अधिकार जम चुका है। पहले रूस जर्मनी का सहायक सा था परन्तु आज उसी रूस और जर्मनी के मध्य युद्ध चल रहा है। वर्तमान युद्ध के रहस्य का पता लगाना कठिन है। इसमें मित्र शत्रु तथा शत्रु मित्र होते दिखाई पड़ रहे हैं।

वर्तमान महासमर की भीषणता का अनुमान लगाना कठिन है। इसके द्वारा जो हानि हुई है उसका अनुमान लगाना तो और भी अधिक कठिन है। गत महायुद्ध में विमानों तथा टैंकों का प्रयोग बाद में हुआ परन्तु आधुनिक महासमर में पहले बम्बवर्षक विमान ही आक्रमण करते हैं उसके बाद टैंकों की सेना बढ़ती है।

लगभग सभी योरुपीय राजधानी वाले नगरों पर बम्ब वर्षा हो चुकी है और हो रही है। कारखाने वाले नगरों का सत्यानाश हो रहा है। सहस्रों वर्ष की नागरिक संस्कृति तथा सभ्यता बमों द्वारा मिटाई जा रही है। समुद्र में भी समुद्री युद्ध चल रहा है। करोड़ों टन के सामान तथा जहाज डुबाये जा चुके हैं और प्रति दिन डुबाये जा रहे हैं। जर्मनी का कहना है कि युद्ध आरम्भ होने से अप्रैल १९४१ तक में उसने इंगलैंड मित्र राष्ट्र तथा तटस्थ राष्ट्रों के एक करोड़ १० लाख टन के जहाज डुबाये हैं।

मैजिनो, सीजफ्रीड, मैनरहीम तथा मास्को और लेनिनग्राड आदि लाइनों के बनाने में बड़ा धन व्यय किया गया है। केवल चेकोस्लोवेकिया की मैजिनो लाइन के बनाने में ७५ करोड़ रुपया खर्च हुआ है।

इंगलैंड के लन्दन, लिवरपूल, साउथैम्पटन, लीथ यार्कशायर, लंकाशायर, डोवर, न्यूकैसिल आदि नगर बम्बवर्षा कर के नष्ट कर दिये गये हैं। ब्रिटिश बम्बवर्षक वायुयानों ने भी जर्मन तथा जर्मन अधिकार किये हुये नगरों को बम्ब वर्षा कर के खण्डहर बना दिया है। युद्ध से रक्षा करने के लिये प्रत्येक योरुपीय राष्ट्र ने अपने अपने देश में करोड़ों रूपये खर्च में लगा दिये परन्तु कोई भी अपनी रक्षा न कर सका और सभों को जर्मन सत्ता के सामने सिर झुकाना पड़ा। आज युद्ध काल में संसार के जिस किसी राष्ट्र के बजट का अध्ययन किया जाय उसी से पता चलता है कि अधिक से अधिक रूपया सेना की तयारी में लगाया जा रहा है। उदाहरण के रूप में अलास्का को ही ले लीजिये। अभी हाल में अलास्का में युद्ध की कोई सम्भावना नहीं है फिर भी वहां १२ करोड़ ५० लाख रूपया सेना की तयारी तथा रक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिये दिया गया है। स्वीडन देश अब तक तटस्थ बना है और नार्वे तथा फिनलैंड में युद्ध होते हुये भी उसने अपनी तटस्थता नहीं छोड़ी परन्तु आज वह भी अपनी सेना की तयारी में लगा है और उसने सेना के लिये २ अरब ११ करोड़ २७ लाख पचास हजार रूपया इस वर्ष व्यय करने का निश्चय किया है। स्वीडन की प्रजा ने भी अपनी सरकार की तयारी में हाथ बटाया है और सेना के लिये १ अरब २६ करोड़ ५६ लाख रूपया दिया है।

अलास्का तथा स्वीडन के सैनिक व्यय को देखकर ही हम दूसरे राष्ट्रों के फौजी खर्च का अन्दाज भलीभांति लगा सकते हैं। आधुनिक महासमर में विमानों, टैंकों और बम्बवर्षकों और गोलों की बड़ी आवश्यकता है। साथ ही साथ मोटर लारियों को रसद तथा अस्त्र-शस्त्र लेकर सेना के साथ चलना पड़ता है। मोटर साइकलों की भी सेना चलती है। टैंकों की एक एक टोली में हज़ारों टैंक रहते हैं। इससे केवल तेल के व्यय का अनुमान किया जा सकता है। तेल के सिवा और भी भिन्न भिन्न खर्च हैं। प्रत्येक बम्ब के गोले तयार करने में सैकड़ों रूपये लग जाते हैं। आज करोड़ों गोले केवल रूस में गिराये जा चुके हैं।

रूसी मैदान में रूस और जर्मनी की सेनाओं का जोड़ लगभग २ करोड़ के है। जापान की दस लाख सेना थाई देश और इण्डोचीन में है। इसलिये ऐसी बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना को केवल खिलाने पिलाने में बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।

आधुनिक महासमर में मरने वाली सेना की अनुमान करना बहुत कठिन है। यह संख्या युद्ध के पश्चात् ही बताई जा सकती है फिर भी मरने वालों की संख्या कम से कम एक और दो करोड़ के बीच में होगी। युद्ध के लिये रूस, जर्मनी, इङ्गलैंड, अमरीका और जापान ने नये नये जहाज तथा विमान बनाये हैं। आठ आठ इञ्जिन के विमान रूस तथा जर्मनी में तयार किये गये हैं। इन विमानों में आगे, पीछे, दाएं और बाएँ मशीन गनें अथवा छोटी तोपें लगी रहती हैं। एक बड़े सेना ले जाने वाले विमान में १८ या २० सुसज्जित सैनिक जा सकते हैं। इन विमानों के तयार करने में बड़ा धन लगाया गया है।

यदि युद्ध पर आर्थिक दृष्टि डाली जाय तो पता चलेगा कि आज संसार के प्रायः सभी कारखाने युद्ध के लिये किसी न किसी प्रकार की सामग्री तयार कर रहे हैं। यह समस्त सामग्री संसार के सर्वनाश के हेतु तयार की जा रही है जिससे प्रायः किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं है। इसके विपरीत साधारण जीवन निर्वाह की बहुत कम वस्तुएँ तयार हो रही हैं और थोड़ी बहुत जो कुछ तयार भी होती हैं वह सामुद्रिक तथा हवाई युद्ध की भीषणता के कारण समस्त संसार में नहीं पहुँच सकतीं। इसी कारण समस्त वस्तुओं का मूल्य दुगुना तिगुना हो गया है। कितने ही कारखानें टूटे जा रहे हं।

इस प्रकार हमने देखा कि युद्ध से आरम्भ काल से ही भीषण हानि होती चली आ रही है और जैसे जैसे संसार में कला कौशल की उन्नति होती है और विज्ञान का विकास होता जाता है वैसे वैसे युद्ध की भीषणता भी बढ़ती जाती है और अधिक हानि भी होती जाती है। इस लिये अब भी यदि मानव जाति अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा चाहती है तो उसको चाहिये कि वह ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय नियम निर्माण करे जिससे युद्ध की सम्भावना सदैव के लिये जाती रहे।

देश-दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।≈) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २३० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२९, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग २८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिश्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ९० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1939-2003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar